27

सन् 1961-62

LAC G.C. Sharma F II E
No 4 Sqdn T/2
Air Force ~~Tambaram~~ Tambaram
Madras

Pt. Shyam Sunder Sharma
House No. 436
Ward No. 3
Mehrauli Delhi

॥ ॐ ॥



दुरन्तरमानतमोवितान-निवारकं पण्डितमण्डलीष्टम् ।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु ॥



श्रीगणेशाय नमः

श्रीलक्ष्म्यै नमः

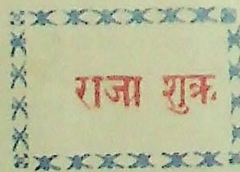
श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"



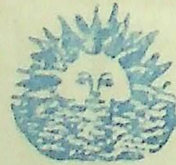
पंवारकुलभूषण श्रीमद्राजर्षि
श्री १०५ दुर्गासिंह जी बहादुर,
C. I. E. सोलन ।

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥



राजा शुक्र



मन्त्री गुरु

बघाटमहीमहेन्द्रधर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

श्याम सुन्दर शर्मा

कृष्णढौया (हापड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयं

अकवृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं च

बृहज्ज्योतिष सम्मेलन के अध्यक्ष
पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक



"बजरत्नराजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

BAGHAT

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम्

PANCHANG

श्री विक्रमार्कीय सं० २०१८ शाक १८८३, सन् १९६१-६२ ई०, जय हिन्द सं० १४ (१५ अगस्त से १५)

पञ्चाङ्गप्रवर्तकाः—स्व० गणकचक्रचूडामणि श्री गोविन्द सदाशिव 'आप्टे', श्री पं० केदारनाथ 'सिद्धान्तपञ्चानन' शिष्याः पं० श्री मुकुन्दवल्लभशर्माणो ज्योतिषाचार्याः

पञ्चाङ्गकर्तारः—प्रवर्तकतनयाः—श्रीसत्यव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्याचार्यः, श्री प्रियव्रत शर्मा शास्त्री, साहित्य-ज्योतिषाचार्यः, श्री शक्तिधर शर्मा शास्त्री च

बांकीपुर पटना ■ मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, बंगलो रोड, जवाहरनगर दिल्ली-६  पो० बा० ७५ वाराणसी

वि० सं० २०१९ का ... अगस्त में प्रकाशित हो जावेगा ।

विषयसूची

आशीराशंसना

जयन्ति श्री महाविद्यापादपङ्कजरेणवः।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥ १ ॥
श्रीदुर्गासिंहवर्माख्यो राजा राजगणैर्युतः।
सनातनीं धर्मधुरं वहन् भागवतोत्तमः ॥ २ ॥
वघाटेशः सोलनाख्ये† राजधान्याममुत्रारधीः।
राजते धर्ममार्तण्डो गोद्विजगणपूजकः ॥ ३ ॥
निर्देशात्तस्य राजर्षेरिदं पंचाङ्गमुत्तमम्।
प्रसृत्य मार्तण्डसमम्ज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥ ४ ॥

† पूर नवपलान्यस्ति रेखातः सोलनं पुरम्।
यत्र व्यङ्गुलाद्रि (७।११)-मितांगलपलभ्रा ॥

श्री १००८ आनन्दमयी माँ



मात्रे भवार्तिघनपाशविमुक्तिदायै।
श्रद्धावनम्रमनसां शरणागतानाम् ॥
ज्ञानञ्च भक्तिममितां सततं ददत्यै।
आनन्दसान्द्रघनविग्रहकायै नमस्ते ॥

कुण्डली आदि विचार, वर-वरण-मन्त्र-दीक्षादि मुहूर्त

पृष्ठाङ्क | श्र.=श्रविष्ठा (पंजाबी ताराव)। | वा.=वार।
वि.=विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ,

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त किये गये ज्ञातव्य कुछ सांकेतिक शब्द

अ.=अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र), अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.=अंग्रेजी (तारीख--मास), अंश।
आव=आवश्यकता में।
उ.=उपरान्त, उदित, उत्तर।
क.=करण, कर्क, कला।
कृ.=कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)।
क्रां.सा.=क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.=गोधूलि (लग्न)।
घ.=घड़ी।
घं.=घण्टा।
चौ.=चौर (बाण)।
ति.=तिथि।
द.=दक्षिण।
दा.=दान-पूजन।
दि.=दिन।
दि. मा.=दिनमान।
न.=नक्षत्र।
निं.=निम्बार्कों के लिए।
नृ.=नृप (बाण)।
प.=पल, परिघ (योग), पश्चिम।
प.=पर्व।
प्रा.=प्रारम्भ।
भ.=भद्रा, भरिणी (नक्षत्र)।
भा.=भारतीय, भाद्रपद।
मा.=मार्गी।
मि.=मिनट, मिथुन।
मृ.=मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.=यावत् (=तक)।
रा.=राष्ट्रीय (भारतसरकार द्वारा संचालित तारीख-मास), रात्रि, राशि, राहु।
रो.=रोग (बाण), रोहिणी।
ल.=लग्न।
व.=वक्री, वक्रगति से, वणिक्-वज्र-वरीयान् (योग), वरुण (ग्रह)।
वा.=वार।
वि.=विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि.मु.=विवाह मुहूर्त।
वै.=वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र.=व्रत,
व्र.स.=व्रत सब के लिए।
शु.=शुक्ल पक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), शुभ-शुक्ल (योग)।
स.=समाप्त।
सं.=संक्रान्ति (सौर), संवत्।
सा.का.=साम्पातिक काल।
श्रा.=श्रावण।
स्मा.=स्मार्तों के लिए।

नोट:—जिस सांकेतिक शब्द को अनेक अर्थों में प्रयुक्त किया गया है, उसका विशेष स्थल पर उपयुक्त अर्थ प्रसंगवश जाना जा सकता है।

इस पञ्चाङ्ग के प्रयोग के लिये आवश्यक निर्देशन

(१) इस पंचांग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६°।३०′ एवं उत्तर अक्षांश ३१° के आधार पर किया गया है, अतः यहाँ जहाँ विशेष निर्देश न किया गया हो 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(२) यहाँ सर्वत्र निरयण पद्धति को अपनाया गया है, जहाँ सायन गणना की गई है, वहाँ निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक मान हैं।

(३) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सम्मुख दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ४ चन्द्रवार के आगे ३२।५८ लिखा है। इसका अभिप्राय है—यह तिथि (चतुर्थी) चन्द्रवार को सूर्योदय के ३२ घड़ी ५८ पल बाद समाप्त होगी और उसी समय पंचमी आरम्भ हो जाएगी।

(४) इस पंचांग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(५) "चन्द्र संचार" वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए घड़ी पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ४ चन्द्रवार (सं. २०१८) को 'चन्द्र सञ्चार' में वृष ५८।३० लिखा है। इसका अभिप्राय है कि चन्द्रमा इस दिन सूर्योदय के ५८ घड़ी ३० पल बाद वृष में प्रविष्ट होगा और इससे पूर्व वह मेष में ही था।

(६) चन्द्र संचार से आगेवाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जो कि भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं। ये काल सूर्यकेन्द्र के उदयास्त को बतलाते हैं।

(७) सूर्योदयास्त वाले कालमों के आगे अन्तिम कालम में दिया गया दैनिक स्पष्ट सूर्य सूर्योदयकालिक एवं सूर्यसिद्धान्तीय है। पंक्तियों वाले दृश्य सूर्य से इसका कुछ अन्तर रहता है।

(८) लस्टर में पंचक एवं भद्रा की समाप्ति तथा प्रारम्भ, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-पादप्रवेश आदि के सभी काल घटी पलों में हैं, जो सूर्योदय के बाद का काल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ४ चन्द्रवार को लस्टर में शुक्र वक्री ४७।१७ लिखा है। इसका अभिप्राय है—इसदिन सूर्योदय के ४७ घड़ी १७ पल बाद शुक्र वक्री होगा। इसी प्रकार चैत्र शु. १३ गुरुवार को 'रेवती में सूर्य ५०।५२' लिखा है, जिसका अभिप्राय है, कि सूर्य इस दिन सूर्योदय के बाद ५० घड़ी ५२ पल पर रेवती में प्रविष्ट होगा।

(९) भारत के किसी भी स्थान पर चन्द्रदर्शन होने पर लस्टर में चन्द्रदर्शन लगा दिया गया है।

(१०) यहाँ दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य स्पष्ट हैं।

(११) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्ट ग्रहों के नीचे दैनिक गति, उससे नीचे मार्गी या वक्री, उससे नीचे उदित या अस्त, फिर चरणसहित नक्षत्र (जिसमें ग्रह है) और फिर सबसे नीचे ग्रह जिस नाड़ी में है उसका निर्देश किया गया है।

(१२) पंक्तियों की सभी कुण्डलिएं सूर्योदयकालिक हैं।

(१३) दैनिक स्पष्ट ग्रहों के साथ दिया गया साम्पातिक काल उक्त रेखांश एवं अक्षांश-सम्बन्धी स्थल के स्थानीय मध्यमकाल ० घं. ० मि. का है।

—ग्रहण-निर्णय—

(सं. २०१८)

सं. २०१८ में तीन ग्रहण (२ सूर्य के एवं १ चन्द्र का) होंगे। ये तीनों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) **कंकण सूर्यग्रहण, ११ अगस्त १९६१ ई.**—यह ग्रहण अफ्रीका एवं मेडागास्कर के दक्षिणी भाग, दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी भाग तथा एण्टार्कटिका के उत्तरी भाग में दृश्य होगा। ग्रहण का कंकण स्वरूप अफ्रीका से नीचे समुद्र में एवं एण्टार्कटिका के थोड़े से भाग में देखा जा सकेगा।

(२) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, २६ अगस्त १९६१ ई.**—यह चन्द्रग्रहण ७ बजकर ४ मि. (भा. स्टै. टा.) पर प्रारम्भ होकर १० बजकर १२ मिनट (भा. स्टै. टा.) पर समाप्त होगा। इस दिन भारत में सर्वत्र ७घं. ४ मि. (भा. स्टै. टा.) से पूर्व ही चन्द्र अस्त हो जाएगा, अतः यह ग्रहण भारत में नहीं देखा जा सकेगा। इस ग्रहण को फारस, अरब, तुर्की, योरोप, अफ्रीका आदि राष्ट्रों में देखा जा सकता है। इस ग्रहण में चन्द्रमा का परम ग्रास .९९ (चन्द्र-व्यास=१) होगा।

(३) **खग्रास सूर्यग्रहण, ५ फरवरी १९६२ ई.**—यह ग्रहण अष्टग्रही योग के दिन जावा, आस्ट्रेलिया, [illegible] अमेरिका के पश्चिम-दक्षिण एवं उत्तरी प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। इस खग्रास-ग्रहण की मध्यरेखा बोर्नियो से प्रारम्भ होकर उत्तरी प्रशान्त महासागर में से गुजरती हुई मक्सिको से पश्चिम में समुद्र के भीतर समाप्त हो जाती है। भूमण्डल पर इस ग्रहण के स्पर्श सम्मीलन उन्मीलन, एवं मोक्ष के काल तथा तथा खग्रास मार्ग की मध्यरेखा के रेखांश एवं अक्षांश नीचे दिए जा रहे हैं—

	घं. मि.		रेखांश (ग्रीन्विच से)	अक्षांश
			—खग्रास मार्ग की मध्यरेखा—	
भूमण्डल पर प्रथम स्पर्श	३। १	भा. स्टै. टा. ता. ५-२-६२	+११६°.७	—०.२
„ खग्रासारम्भ	४। १		+१५१.९	—७.४
„ खग्रास समाप्ति	७।२६		+१६१.३	—७.६
„ मोक्ष	८।२६		+१६८.९	—६.७
			+१७५.१	—५.०
			—१७८.४	—२.६
			—१७२.३	+०.४
			—१६६.२	+४.०
			—१५७.४	+९.०
			—१२१.८	+२३.२

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग की भविष्यवाणियों की सत्यता

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गीय गणित की शुद्धता एवं व्यापारिक, राजनैतिक तथा दैशिक भविष्यवाणियों की सत्यता से प्रसन्न होकर गुणज्ञ विद्वज्जन तथा अनेकों व्यापारी लोग प्रशंसा भरे पत्र भेजते रहते हैं। हम उनका हृदय से धन्यवाद करते हैं। इस नये पंचांग के प्रकाशित होने तक संवत् २०१७ विक्रमी के श्रीमार्तण्डपंचांग की ज्योतिष शास्त्र द्वारा निर्णीत भविष्य-वाणियों की सत्यता के कुछ नमूने पृष्ठ, कालम, पंक्ति एवं उद्धरण सहित नीचे दिये जा रहे हैं।

(१) **मेडागास्करादि द्वीपों को फ्रांस ने स्वाधीन किया।** "फ्रांस.......किसी अपने स्वाधीन देश को स्वतन्त्र करके यशस्वी बनेगा।" (पृष्ठ ३, कालम दूसरा, पंक्ति ६)।

(२) **तिब्बत की प्रजा में भय-अशांति**—"तिब्बत की प्रजा में भय अशांति बनी रहेगी।" (पृष्ठ ३ कालम दूसरा-पंक्ति ८) तदनुसार इस वर्ष भी तिब्बती लोग चीनियों से भयभीत होकर इधर उधर भागते फिरते रहे हैं।

(३) **गुड़ शक्कर के व्यापारियों को भारी हानि**—हमने "भारत का व्यापार" शीर्षक में (पृष्ट ३ कालम दूसरे में) इस वर्ष गुड़, खाण्ड, शक्कर के व्यापारियों को भारी हानि उठाने का संकेत किया था। तदनुसार इस वर्ष गुड़, खांड के व्यापारी भारी घाटे में रहे हैं।

(४) **चिली में भूकम्प से ७ हजार जन मृत्यु**—ज्येष्ठ कृष्ण के पक्ष फल में लिखा था कि "किसी दुर्घटना से जनहानि हो।" (पृष्ट ४२) तदनुसार २१ मई ज्येष्ठ कृष्ण ११ को चिली में भूकम्प की दुर्घटना से भारी जन-हानि हुई।

(५) **तुर्की के शासक राष्ट्रपति को भय**—ज्येष्ठ शुक्ल के पक्षफल में लिखा था कि "पाश्चात्य राष्ट्रों के शासकों में भय हो।" (पृष्ठ ४३) तदनुसार इसी पक्ष में तुर्की में सैनिक शासन हुआ, और वहाँ के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि बन्दी बने।

(६) पटियाला प्रांत व रोहतक आदि में भीषण बाढ़—भाद्रपद शुक्ल के पक्षफल में लिखा था "कहीं वृष्टि विशेष हो। कहीं नदी नालों से हानि हो।" (पृष्ठ ४९) तदनुसार इसी पक्ष में पटियाला प्रान्त व रोहतक आदि में जो जल से भारी हानि हुई है, वह किसी से छिपी नहीं है।

(७) श्री फिरोज गांधी की मृत्यु—भाद्रपद शुक्ल पक्ष के फल में लिखा था—"ति. अष्टमी से २४ दिन के अंदर किसी बड़े ख्यातनामा पुरुष की मृत्यु हो।" (पृष्ठ ४९) तदनुसार ठीक २४ दिन के भीतर ८ सितंबर को भारतमंत्री श्री नेहरू जी के जामाता यशस्वी, संसद-सदस्य, देशभक्त नेता श्री फिरोजगांधी की असामयिक मृत्यु हुई।

(८) नेपाल म भय-चिंता—"यहाँ की राजसत्ता में एक बार भय-चिन्ता बने।" (पृष्ठ ३ कालम २) तदनुसार ग्रीष्म ऋतु में चीन द्वारा सीमातिक्रमण का भय प्रजा व राजसत्ता में व्याप्त हुआ था यह सब को विदित है।

इसी प्रकार अन्य दैशिक, राजनैतिक तथा वार्षिक व मासिक तेजी मन्दी आदि की भविष्य-वाणियाँ ९० प्रतिशत सत्य रहती हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि सदा की भांति भविष्य में भी इस पंचांग की भविष्यवाणियाँ यथार्थता से कदापि च्युत नहीं होंगी। श्रीमार्तण्डपंचाङ्ग की लोकप्रियता एवं ...। का रहस्य इसकी गणित-शुद्धता के साथ भविष्यवाणियों में गणमान्य व्यक्तियों की ...रुचि है।

आकाशी कौंसिल का विचार सं० २०१८

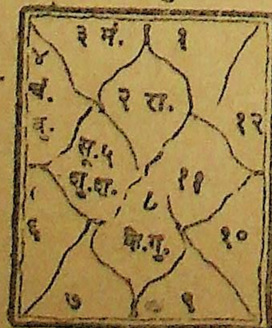
स्वतन्त्र भारत का जन्मलग्न



१५ अगस्त शुक्रवार १९४७ इष्ट ४५।२०

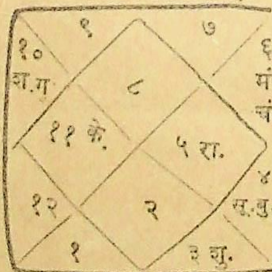
विमृश्य ग्रहसंस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये हृद्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा धर्म्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते॥

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुण्डली

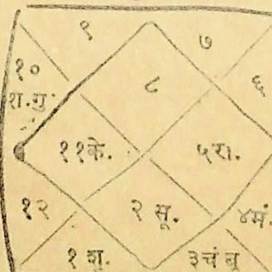


ग्रह भावस्पष्टानुसार यहाँ सू. शु. गु. श. चल गये हैं

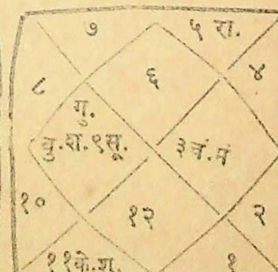
स्वतन्त्र भारत के १५ वें वर्ष-प्रवेश की कुण्डली



मुस्लिम राष्ट्रों के नववर्ष प्रवेश की कुण्डली



युरोपीय राष्ट्रों के नववर्ष-प्रवेश की कुण्डली



पाठको! जिस तरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासन-मण्डलमें प्रधानमन्त्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत-प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पांच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है, और उन अधिकारप्राप्त व्यक्तियों की योग्यता अयोग्यता सच्चरित्रता दुश्चरित्रता निःस्वार्थता एवं स्वार्थपरायणतादि गुणावगुणों के अनुसार जसे शासनयन्त्र पर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहोंकी परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्भुतशक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशी कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट फेर तथा अघटित घटनाएं घटित होती हैं। वह त्रिकालज्ञ महर्षियों के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती है।

इस वर्ष की आकाशी कौंसिल से ज्ञात होता है कि यह वर्ष ऐतिहासिक माना जायगा। जनता में शंका एवं कम परिश्रम से विशेष लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। मध्य वर्ग की जनता आर्थिक व खाद्यसंकट का विशेष अनुभव करेगी। नीचराशिस्थ गुरु-शनैश्चर से सम्बन्ध करता हुआ धर्मस्थान को देख रहा है। जो धार्मिक स्थानों के विषय में निर्धारित सरकारी नीति से धार्मिक क्षेत्रों में असंतोष उत्पन्न होना सूचित करता है। शनि-गति-वशात् इस वर्ष औद्योगिक दृष्टि से भारत अच्छी उन्नति की ओर अग्रसर होगा। अनेक लोह प्रधान कारखानों की उन्नति होगी। भारतीय नव वर्षारंभ व राजा, मंत्री आदि के फलों को देखते हुए इस विक्रमी वर्ष का पूर्वार्ध आश्विन तक प्रायः भारतीय जनता के लिए शुभफलप्रद होगा। इस वर्ष के राजा व धान्येश शुक्र और मंत्री गुरु बने हैं जो भारतीय जनता की रुचि धर्म दान की ओर करेंगे। राजा मंत्री का पद शुभ ग्रहों को प्राप्त होना सुख समृद्धि देने वाला माना जाता है।

वर्षारम्भ कुण्डली और वर्ष के मुख्याधिकारियों को देखते हुए अभी बड़े विश्व-युद्ध का योग नहीं है। वर्ष के उत्तरार्द्ध से अकाल व रोगों से कहीं नर व पशु पीड़ित हों, मृत्यु भी हो और तीनों प्रकार के यानों की अनेक भयप्रद दुर्घटनाएं हों।

विश्वभविष्य

इस वर्ष क्रूरत्रयी (शनि, भौम, केतु) के प्रभाव से अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों से व घृणास्पद रंग-

(८) लस्टर में पंचक एवं भद्रा की समाप्ति तथा प्रारम्भ, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-पादप्रवेश आदि के सभी काल घटी पलों में हैं, जो सूर्योदय के बाद का काल बतलाते हैं। जैसे—चैत्र शुक्ल ४ चन्द्रवार को लस्टर में शुक्र वक्री ४७।१७ लिखा है। इसका अभिप्राय है—इसदिन सूर्योदय के ४७ घड़ी १७ पल बाद शुक्र वक्री होगा। इसी प्रकार चत्र शु. १३ गुरुवार को 'रेवती में सूर्य ५०।५२' लिखा है, जिसका अभिप्राय है कि सूर्य इस दिन सूर्योदय के बाद ५० घड़ी ५२ पल पर रेवती में प्रविष्ट होगा।

(९) भारत के किसी भी स्थान पर चन्द्रदर्शन होने पर लस्टर में चन्द्रदर्शन लगा दिया गया है।

(१०) यहाँ दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य स्पष्ट हैं।

(११) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्ट ग्रहों के नीचे दैनिक गति, उससे नीचे मार्गी या वक्री, उससे नीचे उदित या अस्त, फिर चरणसहित नक्षत्र (जिसमें ग्रह है) और फिर सबसे नीचे ग्रह जिस नाड़ी में है उसका निर्देश किया गया है।

(१२) पंक्तियों की सभी कुण्डलिएं सूर्योदयकालिक हैं।

(१३) दैनिक स्पष्ट ग्रहों के साथ दिया गया साम्पातिक काल उक्त रेखांश एवं अक्षांश-सम्बन्धी स्थल के स्थानीय मध्यमकाल ० घं. ० मि. का है।

—ग्रहण-निर्णय—

(सं. २०१८)

सं. २०१८ में तीन ग्रहण (२ सूर्य के एवं १ चन्द्र का) होंगे। ये तीनों ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) **कंकण सूर्यग्रहण, ११ अगस्त १९६१ ई.**—यह ग्रहण अफ्रीका एवं मेडागास्कर के दक्षिणी भाग, दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी भाग तथा एण्टार्क्टिका के उत्तरी भाग में दृश्य होगा। ग्रहण का कंकण स्वरूप अफ्रीका से नीचे समुद्र में एवं एण्टार्क्टिका के थोड़े से भाग में देखा जा सकेगा।

(२) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, २६ अगस्त १९६१ ई.**—यह चन्द्रग्रहण ७ बजकर ४ मि. (भा. स्टै. टा.) पर प्रारम्भ होकर १० बजकर १२ मिनट (भा. स्टै. टा.) पर समाप्त होगा। इस दिन भारत में सर्वत्र ७घं. ४ मि. (भा. स्टै. टा.) से पूर्व ही चन्द्र अस्त हो जाएगा, अतः यह ग्रहण भारत में नहीं देखा जा सकेगा। इस ग्रहण को फारस, अरब, तुर्की, योरोप, अफ्रीका आदि राष्ट्रों में देखा जा सकता है। इस ग्रहण में चन्द्रमा का परम ग्रास .९९ (चन्द्र-व्यास=१) होगा।

(३) **खग्रास सूर्यग्रहण, ५ फरवरी १९६२ ई.**—यह ग्रहण अष्टग्रही योग के दिन जावा, आस्ट्रेलिया, बोर्नियो, न्यू गिनी, [illegible] अमेरिका के पश्चिम-दक्षिण एवं उत्तरी प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। इस खग्रास-ग्रहण की मध्यरेखा बोर्नियो से प्रारम्भ होकर उत्तरी प्रशान्त महासागर में से गुजरती हुई मक्सिको से पश्चिम में समुद्र के भीतर समाप्त हो जाती है। भूमण्डल पर इस ग्रहण के स्पर्श सम्मीलन उन्मीलन, एवं मोक्ष के काल तथा तथा खग्रास मार्ग की मध्यरेखा के रेखांश एवं अक्षांश नीचे दिए जा रहे हैं—

	घं. मि.	
भूमण्डल पर प्रथम स्पर्श	३। १	भा. स्टै. टा.
,, खग्रासारम्भ	४। १	ता. ५-२-६२
,, खग्रास समाप्ति	७।२६	
,, मोक्ष	८।२६	

—खग्रास मार्ग की मध्यरेखा—

रेखांश (ग्रीन्विच से)	अक्षांश
+११६°.७	—०.२
+१५१.९	—७.४
+१६१.३	—७.६
+१६८.९	—६.७
+१७५.१	—५.०
—१७८.४	—२.६
—१७२.३	+०.४
—१६६.२	+४.०
—१५७.४	+९.०
—१२१.८	+२३.२

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग की भविष्यवाणियों की सत्यता

श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गीय गणित की शुद्धता एवं व्यापारिक, राजनैतिक तथा दैशिक भविष्यवाणियों की सत्यता से प्रसन्न होकर गुणज्ञ विद्वज्जन तथा अनेकों व्यापारी लोग प्रशंसा भरे पत्र भेजते रहते हैं। हम उनका हृदय से धन्यवाद करते हैं। इस नये पंचांग के प्रकाशित होने तक संवत् २०१७ विक्रमी के श्रीमार्तण्डपंचांग की ज्यौतिष शास्त्र द्वारा निर्णीत भविष्य-वाणियों की सत्यता के कुछ नमूने पृष्ठ, कालम, पंक्ति एवं उद्धरण सहित नीचे दिये जा रहे हैं।

(१) **मेडागास्करादि द्वीपों को फ्रांस ने स्वाधीन किया।** "फ्रांस....... किसी अपने स्वाधीन देश को स्वतन्त्र करके यशस्वी बनेगा।" (पृष्ठ ३, कालम दूसरा, पंक्ति ६)।

(२) **तिब्बत की प्रजा में भय-अशांति**—"तिब्बत की प्रजा में भय अशांति बनी रहेगी।" (पृष्ठ ३ कालम दूसरा-पंक्ति ८) तदनुसार इस वर्ष भी तिब्बती लोग चीनियों से भयभीत होकर इधर उधर भागते फिरते रहे हैं।

(३) **गुड़ शक्कर के व्यापारियों को भारी हानि**—हमने "भारत का व्यापार" शीर्षक में (पृष्ट ३ कालम दूसरे में) इस वर्ष गुड़, खाण्ड, शक्कर के व्यापारियों को भारी हानि उठाने का संकेत किया था। तदनुसार इस वर्ष गुड़, खांड के व्यापारी भारी घाटे में रहे हैं।

(४) **चिली में भूकम्प से ७ हजार जन मृत्यु**—ज्येष्ठ कृष्ण के पक्ष फल में लिखा था कि "किसी दुर्घटना से जनहानि हो।" (पृष्ट ४२) तदनुसार २१ मई ज्येष्ठ कृष्ण ११ को चिली में भूकम्प की दुर्घटना से भारी जन-हानि हुई।

(५) **तुर्की के शासक राष्ट्रपति को भय**—ज्येष्ठ शुक्ल के पक्षफल में लिखा था कि "पाश्चात्य राष्ट्रों के शासकों में भय हो।" (पृष्ठ ४३) तदनुसार इसी पक्ष में तुर्की में सैनिक शासन हुआ, और वहाँ के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि बन्दी बने।

(६) पटियाला प्रांत व रोहतक आदि में भीषण बाढ़—भाद्रपद शुक्ल के पक्षफल में लिखा था "कहीं वृष्टि विशेष हो। कहीं नदी नालों से हानि हो।" (पृष्ठ ४९) तदनुसार इसी पक्ष में पटियाला प्रान्त व रोहतक आदि में जो जल से भारी हानि हुई है, वह किसी से छिपी नहीं है।

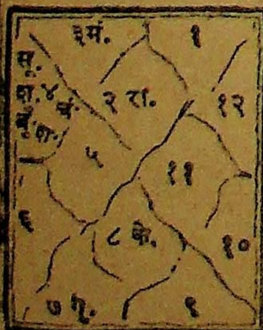
(७) श्री फिरोज गांधी की मृत्यु—भाद्रपद शुक्ल पक्ष के फल में लिखा था—"ति. अष्टमी से २४ दिन के अंदर किसी बड़े ख्यातनामा पुरुष की मृत्यु हो।" (पृष्ठ ४९) तदनुसार ठीक २४ दिन के भीतर ८ सितंबर को भारतमंत्री श्री नेहरू जी के जामाता यशस्वी, संसद-सदस्य, देशभक्त नेता श्री फिरोजगांधी की असामयिक मृत्यु हुई।

(८) नेपाल म भय-चिंता—"यहाँ की राजसत्ता में एक बार भय-चिन्ता बने।" (पृष्ठ ३ कालम २) तदनुसार ग्रीष्म ऋतु में चीन द्वारा सीमातिक्रमण का भय प्रजा व राजसत्ता में व्याप्त हुआ था यह सब को विदित है।

इसी प्रकार अन्य दैनिक, राजनैतिक तथा वार्षिक व मासिक तेजी मन्दी आदि की भविष्य-वाणियाँ ९० प्रतिशत सत्य रहती हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि सदा की भांति भविष्य में भी इस पंचांग की भविष्यवाणियाँ यथार्थता से कदापि च्युत नहीं होंगी। श्रीमार्तण्डपंचाङ्ग की लोकप्रियता एवं ... का रहस्य इसकी गणित-शुद्धता के साथ भविष्यवाणियों में गणमान्य व्यक्तियों की ...भरुचि है।

आकाशी कौंसिल का विचार सं० २०१८

स्वतन्त्र भारत का जन्मलग्न



ता. १५ अगस्त शुक्रवार सन् १९४७ इष्ट ४५।२०

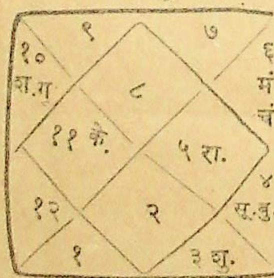
विमृश्य ग्रहसंस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा धर्म्मोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते॥

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुण्डली

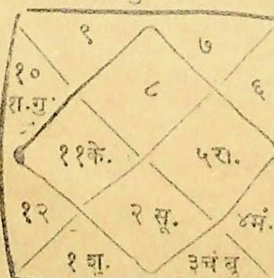


ग्रह भावस्पष्टानुसार यहां सू. शु. गु. श. चल गये हैं

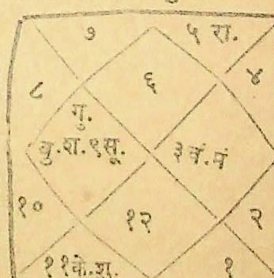
स्वतन्त्र भारत के १५ वें वर्ष-प्रवेश की कुण्डली



मुस्लिम राष्ट्रों के नववर्ष प्रवेश की कुण्डली



युरोपीय राष्ट्रों के नववर्ष-प्रवेश की कुण्डली



पाठको! जिस तरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासन-मण्डल में प्रधानमन्त्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत-प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पांच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है, और उन अधिकारप्राप्त व्यक्तियों की योग्यता अयोग्यता सच्चरित्रता दुश्चरित्रता निःस्वार्थता एवं स्वार्थपरायणतादि गुणावगुणों के अनुसार जैसे शासनयन्त्र पर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहोंकी परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्भुतशक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशी कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट फेर तथा अवटित घटनाएँ घटित होती हैं। वह त्रिकालज्ञ महर्षियों के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती है।

इस वर्ष की आकाशी कौंसिल से ज्ञात होता है कि यह वर्ष ऐतिहासिक माना जायगा। जनता में शंका एवं कम परिश्रम से विशेष लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। मध्य वर्ग की जनता आर्थिक व खाद्यसंकट का विशेष अनुभव करेगी। ...राशिस्थ गुरु-शनैश्चर से सम्बन्ध करता हुआ धर्मस्थान को देख रहा है। जो धार्मिक स्थानों के विषय में निर्धारित सरकारी नीति से धार्मिक क्षेत्रों में असंतोष उत्पन्न होना सूचित करता है। शनि-गति-वशात् इस वर्ष औद्योगिक दृष्टि से भारत अच्छी उन्नति की ओर अग्रसर होगा। अनेक लोह प्रधान कारखानों की उन्नति होगी। भारतीय नव वर्षारंभ व राजा, मंत्री आदि के फलों को देखते हुए इस विक्रमी वर्ष का पूर्वार्ध आश्विन तक प्रायः भारतीय जनता के लिए शुभफलप्रद होगा। इस वर्ष के राजा व धान्येश शुक्र और मंत्री गुरु बने हैं जो भारतीय जनता की रुचि धर्म दान की ओर करेंगे। राजा मंत्री का पद शुभ ग्रहों को प्राप्त होना सुख समृद्धि देने वाला माना जाता है।

वर्षारम्भ कुण्डली और वर्ष के मुख्याधिकारियों को देखते हुए अभी बड़े विश्व-युद्ध का योग नहीं है। वर्ष के उत्तरार्द्ध से अकाल व रोगों से कहीं नर व पशु पीड़ित हों, मृत्यु भी हो और तीनों प्रकार के यानों की अनेक भयप्रद दुर्घटनाएं हों।

विश्वभविष्य

इस वर्ष क्रूरत्रयी (शनि, भौम, केतु) के प्रभाव से अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों से व घृणास्पद रंग-

भेदनीति से राष्ट्रों में आन्तरिक अशांति रहेगी। परस्परविरोधी हलचलें व राजनैतिक उलट फेर होंगे। शीतकाल में किसी उत्पात के कारण कई प्रान्तों की काया पलट, कहीं कोई जनपद या नगर भूमिसात् हो। विश्व के कोई राजा, शासक या जनता बेघरबार होकर इधर, उधर भागती फिरे। कहीं नदियों के बहाव का रास्ता बदले। कहीं सूखी जगह झीलवत् हों और कहीं जलाशय सूख जाएं। कहीं, बिजली उपल वृष्टि से महाभय हो। बाल वृद्धों को विशेष रोग भय भी हो। कहीं उत्पात के कारण दूर तक दीपक न जले। भाद्रपद के बाद किसी बड़े पुरुष का स्वास्थ्य बिगड़े या उसकी मृत्यु हो। किन्हीं दो राष्ट्रों में राजनैतिक मित्रता आन्तरिक शत्रुता में और कहीं शत्रुता मित्रता में परिणत होगी। नव-स्वतंत्रता-प्राप्त देशों को भारी भारी कठिनाइयें सहन करनी पड़ें। किन्हीं दो देशों की समस्या के हल से कहीं खुशी व कहीं नाराजी हो। जल राशि मकर में अग्नितत्त्व-प्रधान मंगल के साथ शनि का संबंध होना विश्व में जल व अग्नि-प्रधान उपद्रवों एवं कहीं एकदेशीय युद्ध का सूचक है। भारत का वायव्य भाग, तथा पश्चिमी पंजाब सिंध व बिहार, नेपाल, भूटानादि तथा चीन में महाभय हो। पौष शुदी १ से माघ शुदी १५ तक कहीं चल अचल सम्पत्ति की भारी हानि के साथ प्राणियों की भी हानि हो। कहीं गिरिशृङ्ग आदि टूटें, मीनार गिरें। पौष में शुक्र शनि दोनों एक राशि मकर में अस्त होते हैं—

"शुक्रसौर्योर्द्वयोरस्त मेकराशौ यदा भवेत्।
अन्नपीड़ा तथा युद्धं देशे देशे च विग्रहः॥"

अन्यच्च—"शशिसूर्यसमायोगे पञ्चग्रहसमन्विते।
महारोगभयं राष्ट्रे राजयुद्धं भविष्यति॥
जायते जननाशश्च मंत्रिणो मरणं भवेत्॥" (वसिष्ठः)

भारत—इस वर्ष वर्षेशादि लग्नों को देखते हुए ज्ञात होता है कि वर्ष के पूर्वार्ध में भारत विकासोन्मुख रहेगा। अन्य राष्ट्रों से भी सहानुभूति का पात्र बनता हुआ वहाँ से अच्छी सहायता प्राप्त करेगा। कहीं प्रान्तीय सरकारों की जगह राष्ट्रपति के शासन होने के योग हैं। वर्ष में कई बार राष्ट्रपति के अध्यादेश लागू होंगे। कहीं राजनैतिक परस्परविरोधी दलों के संघर्ष से जनता को हानि पहुँचेगी। शीतकालिक सरकारी समारोह गतवर्ष की अपेक्षा फीके रहेंगे। प्रचलित योजनाओं में बाधा व कहीं अराजकता जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। मार्गशीर्ष के बाद शासक-वर्ग को किसी विशिष्ट व्यक्ति के वियोग का भय है। शनैश्चर-दृष्टि-वशात् भारत को पूर्वोत्तर से भय रहे।

भारत सरकार—इस वर्ष भारत की राजसत्ता के लिये ग्रहस्थिति साधारणतया ठीक है। शासक-वर्ग बहुधा हैरान व परेशान रहेगा। सेनाध्यक्ष भौमपति-वशात् सरकार का सैनिक-सामग्री पर विशेष खर्च बढ़ाएगा। सरकार की खाद्य-नीति सफल नहीं होगी। विदेश-नीति में कुछ महत्त्व के फेरफार करने को बाध्य होना पड़ेगा। मुद्रा में कुछ और परिवर्तन का योग है। इस वर्ष प्रधान शासक व नेताओं को भयप्रद योग है। इसलिये अंगरक्षकों का सावधान रहना कल्याणप्रद है। यहाँ शनैश्चर का केतु से युक्त होना भारतसरकार की आर्थिक कठिनाई का द्योतक है। साथ ही श्रमजीवियों की किसी समस्या को हल करने की चिन्ता रहेगी। सरकार को इस वर्ष जन-जीवनोपयोगी कई वस्तुओं पर नियंत्रण करना पड़ेगा, फिर भी जनता कष्ट में रहेगी। ज्येष्ठ या भाद्रपद के करीब नगररक्षक पुलिस और राजनैतिक संस्थाओं को [illegible] सेनाध्यक्ष को इधर उधर की दौड़ भाग करनी पड़ेगा। कई जगह बड़े पदाधिकारियों का छोटे कर्मचारियों से बिगड़ेगी। इस वर्ष भारत के कर्णधारों की संसार में प्रतिष्ठा वृद्धि होगी।

—अन्य राष्ट्र—

रूस—इस वर्ष इस देश का बल व प्रभाव बढ़ेगा। वैज्ञानिक उन्नति भी विशेष होगी। प्रजा के किसी संघ पर दण्डनीति का भारी बर्ताव होगा। प्रधानमन्त्री ख्रुश्चेव के विचारों की यहाँ विजय रहेगी।

ब्रिटेन—भारत से व्यापार में वृद्धि होगी। प्रजा में किसी न किसी प्रकार का भय व्याप्त रहेगा।

अमेरिका—इस वर्ष इस देश की प्रजा व शासक-वर्ग में कुछ हैरानी रहेगी। यहाँ के शासक लोग विश्व-शांति की योजना में उत्साह दिखाएंगे। देशरक्षा के उपाय में विशेष खर्च होगा।

पाकिस्तान—इस वर्ष यहाँ की वर्षकुण्डली को देखते हुए ज्ञात होता है कि यहाँ २३ वैशाख के बाद किसी समस्या के सुलझने से प्रसन्नता हो। जीवनोपयोगी अन्नादि वस्तुओं की महर्घता से भारी कष्ट होगा। इधर उधर से अन्न का आयात भी करना पड़ेगा, और भारत से सम्बन्ध साधारणतया अच्छे रहेंगे, यहाँ कहीं उत्पात से हानि हो।

अरब—इस वर्ष अरब गणराज्य परस्पर एकता के सूत्र में बंधेंगे। मिश्र में प्रजा का स्तर ऊँचा होगा। अकाल से कष्ट होगा।

नेपाल—बर्मा—इस वर्ष नेपालादि पर्वतीय राज्यों की जनता को हैरानी व कष्ट सहन करने पड़ेंगे। आर्थिक स्थिति खराब रहेगी। विशेष कारण-वश बर्मा की जनता शस्त्र-संग्रह अधिक करेगी।

चीन—चीन की वर्षकुण्डली को देखते हुए मालूम होता है कि इस वर्ष इस देश में महामारी व प्रकृतिप्रकोपों से जनता का संहार हो। खाद्यसमस्या का संकट भी शासकों को हैरान करेगा।

जापान—इस वर्ष प्रकृतिकोप से भय हो। अमेरिका के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे, कुछ कटुता बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति कुछ ठीक रहेगी।

—व्यापारिक जगत्—

इस वर्ष की आकाशीय ग्रहस्थिति को देखते हुए ज्ञात होता है कि इस विक्रमी वर्ष के उत्तरार्ध में अन्न की विशेष तेजी रहेगी। व्यापार में प्रायः कई अन्नादि वस्तुओं पर सरकारी नियंत्रण रहेगा। प्रथम ज्येष्ठ शुदी दशमी के बाद अन्त में कुछ मन्दी आने पर गृहस्थों को चाहिये कि अपने गृहस्थ के जीवनोपयोगी अन्न वर्ष भर के लिये संग्रह करके रखें, ताकि आगे अपने परिवार को कष्ट का सामना न करना पड़े। समय पर मक्का, बाजरा भी संग्रह करना ठीक रहेगा। व्यापारेश बुध की गतिको देखते हुए ज्ञात होता है कि इस वर्ष भारतकी आर्थिक समस्या अधिक उलझी रहेगी, जिससे यहाँ के व्यापार पर बुरा असर पड़ेगा। चोर बाजारी भी विशेष चलेगी। भाद्रपद मास के पूर्व ही जीरा, हल्दी, पारा, शीशा, कस्तूरी, गुड़, हींग इनके संग्रह करने वाले व्यापारियों को तीन मास के बाद अच्छा लाभ रहेगा। इस वर्ष व्यापारियों को [illegible] करना लाभप्रद [illegible] राजकीय अंकुश भी पूर्णरूप से रहेगा। अतः अन्न [illegible]

का व्यापार विचार से करें। इस विक्रमी वर्ष के उत्तरार्ध में [illegible] की अधिक संभावना रहेगी।

का व्यापार विचार से करें। इस विक्रमी वर्ष के उत्तरार्ध में मकई, बाजरा, ज्वार, कोदव (कोदा) जैसे अन्न की भी कदर बढ़ेगी। सरकार को अन्न का आयात बाहर से करना पड़ेगा।

सरसों मूंगफली आदि—वैशाख कृ. ३० से प्रथम ज्ये. सुदी ११ तक तेल, मूंगफली, सरसों आदि में तेजी अच्छी रहेगी। प्रथम ज्ये. सु. १२ से द्वि. ज्ये. सु. ९ तक मंदी का प्रभाव रहेगा। फिर द्वि. ज्ये. शुक्ल १० से आषाढ़ कृ. ९ तक एक तेजी का उछाला आवेगा। आषाढ़ कृ. १० से आषाढ़ शुक्ल ६ तक घटा-बढ़ी से मंदी रहेगी। आषाढ़ शुक्ल ७ से आश्विन शुक्ल ५ तक मंदी के रिएक्शनों के साथ तेजी रहेगी। मार्ग. सु. १० से पौष कृ. ५ तक तेल, मूंगफली व सरसों में तेजी रहेगी। पौष कृ. १४ से आगे सरसों, मूंगफली, अलसी-तिलहन व तिल, तेल के भावों में और भी तेजी रहेगी। पौष कृ. ७ के बाद प्रायः सभी जीवनोपयोगी वस्तुएं खास कर तेज रहेंगी।

औषधियें—इस वर्ष औषधियों के भावों में तेजी रहेगी। कुछ औषधियों के आयात पर नियंत्रण संभव है। अतः औषधियों को ज्येष्ठ तक सस्ते मूल्य में संग्रह करने से उत्तम लाभ मिलेगा। इस वर्ष डाक्टर वैद्य व जर्राह लाभ में रहेंगे।

काष्ठ आदि—इस वर्ष लकड़ी कोयले के भाव में अच्छी तेजी रहेगी। घृत का भाव वैशाख से ही तेज रहेगा। रंग के व्यापारियों को इस वर्ष बड़ी सावधानी से काम करना चाहिये। असावधानी से हानि हो सकती है, क्योंकि रंग के भाव में बहुत उतार चढ़ाव चलेगा।

धातु बाजार—लोहा, जस्ता, तांबा, पीतल आदि धातुएं कार्तिक से पौष तक मन्दी रहेंगी। इस मंदी में प्रत्येक धातु खरीदकर रखनेवाले व्यापारी आगे कुछ समय के बाद भारी लाभ प्राप्त कर सकेंगे। फरोख्त करने का समय पत्र द्वारा हमसे पूछें।

सोना चान्दी—इस वर्ष सोना, चाँदी के नये भाव देखने पड़ेंगे। आषाढ़ से भाद्रपद तक भयंकर अचिन्तित घटाबढ़ी होगी परिणाम तेजी का रहेगा। जनता की मनोवृत्ति सुवर्ण संग्रह की तरफ विशेष रहेगी। प्रथम ज्येष्ठ सुदी १२ से आषाढ़ सुदी १५ तक सुवर्ण में तेजी का असर अच्छा रहेगा। द्वितीय ज्येष्ठ कृ. ८ के बाद शुद्ध ज्ये. शु. ४ तक चांदी में मंदी का खासा उछाला आएगा। उसके बाद श्रावण कृ. ६ तक अच्छी तेजी रहेगी। तदनन्तर भाद्रपद सुदी ७ से आश्विन कृ. ३० तक और कार्तिक कृ. १३ से मार्ग कृ. ७ तक चांदी में मंदी का वातावरण रहेगा।

रुई—इस वर्ष रुई के बाजार में गुरु-शनि की स्थितिवशात् जनरल लाइन प्रायः तेजी की तरफ रहेगी। भारत को रुई का आयात विदेशों से भी करना पड़ेगा। फसल के समय पर रुई संग्रह करने से व्यापारियों को लाभ रहेगा। वैशाख कृष्ण व आषाढ़ कृष्ण के शु में आगे ई की मन्दी का ध्यान रखकर सौदा करने से एक मास के अन्दर अच्छा लाभ मिलेगा। ऐसे ही पौष सुदी में आगे तेजी का ध्यान रख कर रुई का व्यापार करें तो २५ दिन में लाभ मिले।

मिर्च, मसाला में कार्तिक तक अच्छी तेजी रहेगी। चतुष्पदों में इस वर्ष बैल, घोड़े तेज रहेंगे।

शेयर—द्वितीय ज्येष्ठ शुदी १४ से शेयर बाजार में गरमी रहेगी। सिमेंट भी कुछ तेज रहेगा। टाटा आर्डीनरी के भाव भी ऊँचे रहेंगे।

विशेष—प्रथम ज्येष्ठ कृ. ४ (४-५-६१) से वायदा व्यापार में किसी घटना वश या किसी अफवाह के कारण ऐसा वातावरण बने जो कि वायदा बाजार को तेजी से यकायक मोड़ कर विशेष मन्दे की ओर ले पटकेगा। यहां बहुत से व्यापारियों को हानि होगी। सावधानी से काम करें। वायदा व्यापारियों को प्रायः आश्विन तक सावधानी से व्यापार करना चाहिये इस समय में लाभ का कम और हानि की अधिक संभावना रहेगी।

खांड गुड़ शक्कर—इस वर्ष भी गुड़, खांड, शक्कर के व्यापार में विशेष सावधानी की जरूरत है। भारी घटा-बढ़ी होगी। जो व्यापारी लाभ उठाना चाहें वे हमसे प्रत्यक्ष मिलें या पत्रव्यवहार करें। हम सामयिक शकुनविचार और ग्रहस्थिति को मिला कर अच्छा लाभ का मौका बतला सकेंगे।

भारत की वर्षा वायु पर ग्रहों का प्रभाव—इस वर्ष पहिले वर्षा ऋतु में अनियमितता रहकर फिर वर्षा ठीक रहेगी। द्वितीय ज्ये. सुदी १३ आषाढ़ सुदी ४ तक बहुत जगह बीज बिजाई के योग्य अच्छी वर्षा हो जायेगी। आषाढ़ सु. ५ से श्रावण कृष्ण ८ तक वर्षा की कमी बहुत जगह रहेगी। वहां कृषक-वर्ग चिन्तातुर रहेगा। श्रावण कृष्ण १० से श्रावण सुदी ३ तक वर्षा अच्छी होगी। श्रावण सुदी ५ से भाद्रपद कृ. ५ तक कहीं कहीं फूटे घड़े की तरह वृष्टि होगी, कहीं सूखा कहीं जल से फसल को हानि पहुँचे। भाद्र कृ. ६ से आश्विन कृ. २ तक बहुत-जगह वर्षा की कमी रहेगी। कहीं तो वर्षा का बिल्कुल अभाव ही रहेगा। आश्विन कृष्ण ३ से आश्विन सुदी १ तक कहीं कहीं खण्डवृष्टि होती रहेगी। आगे आश्विन सु. १५ तक कहीं-कहीं मामूली बूंदाबांदी करती हुई वर्षा ऋतु समाप्त होगी। माघ कृ. १२ से माघ सुदी ९ तक प्रायः सभी ग्रह अमृत नाड़ी में हैं, और मंगल जल नाड़ी में है अतः इस अवधि में उत्तर भारत में बहुत जगह हानिकारक वर्षा होगी।

विशेष ध्यान देने योग्य—माघ कृष्ण १३ शनिवार (३ फरवरी) से माघ शुक्ल १ चन्द्रवार (५ फरवरी) तक कहीं भारी वृष्टि से, कहीं भकम्प से, कहीं प्रचण्ड वायु के प्रकोपसे छतों की टीन व छप्पर उड़ने से एवं कहीं अन्य उत्पात से हानि का भय है।

गोल एवं अष्टग्रही (कूट)-योग

२४ जनवरी १९६२ को मध्याह्न के समय मंगल मकरस्थ सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवं केतु के साथ राशि सम्बन्ध करके गोल योग बनाएगा। इसके अनन्तर ३ फरवरी १९६२ को १७ घं. ३७ मि. (I. S. T.) पर चन्द्रमा भी इन सात ग्रहों के साथ मकर में आ मिलेगा। इस प्रकार इस दिन कूट-योग प्रारम्भ होगा। यह योग ५ फरवरी १९६२ को शाम के ९ घं. ४५ मि. (I. S. T.) तक, जबकि चन्द्रमा अन्य सात ग्रहों से पृथक् होता हुआ कुम्भ में प्रविष्ट होगा, रहेगा। इसके बाद पुनः गोल-योग बनेगा, जो ९ फरवरी १९६२ के मध्याह्न तक, जबकि शुक्र मकर को छोड़ेगा, रहेगा।

५ फरवरी १९६२ को ५ घं. ४० मि. (I.S.T.) पर दर्शान्त (सूर्य चन्द्र का शून्य अन्तर) होगा। इस समय के स्पष्ट निरयण भूमध्य स्पष्ट ग्रह एवं उनके शर आदि इस प्रकार हैं—

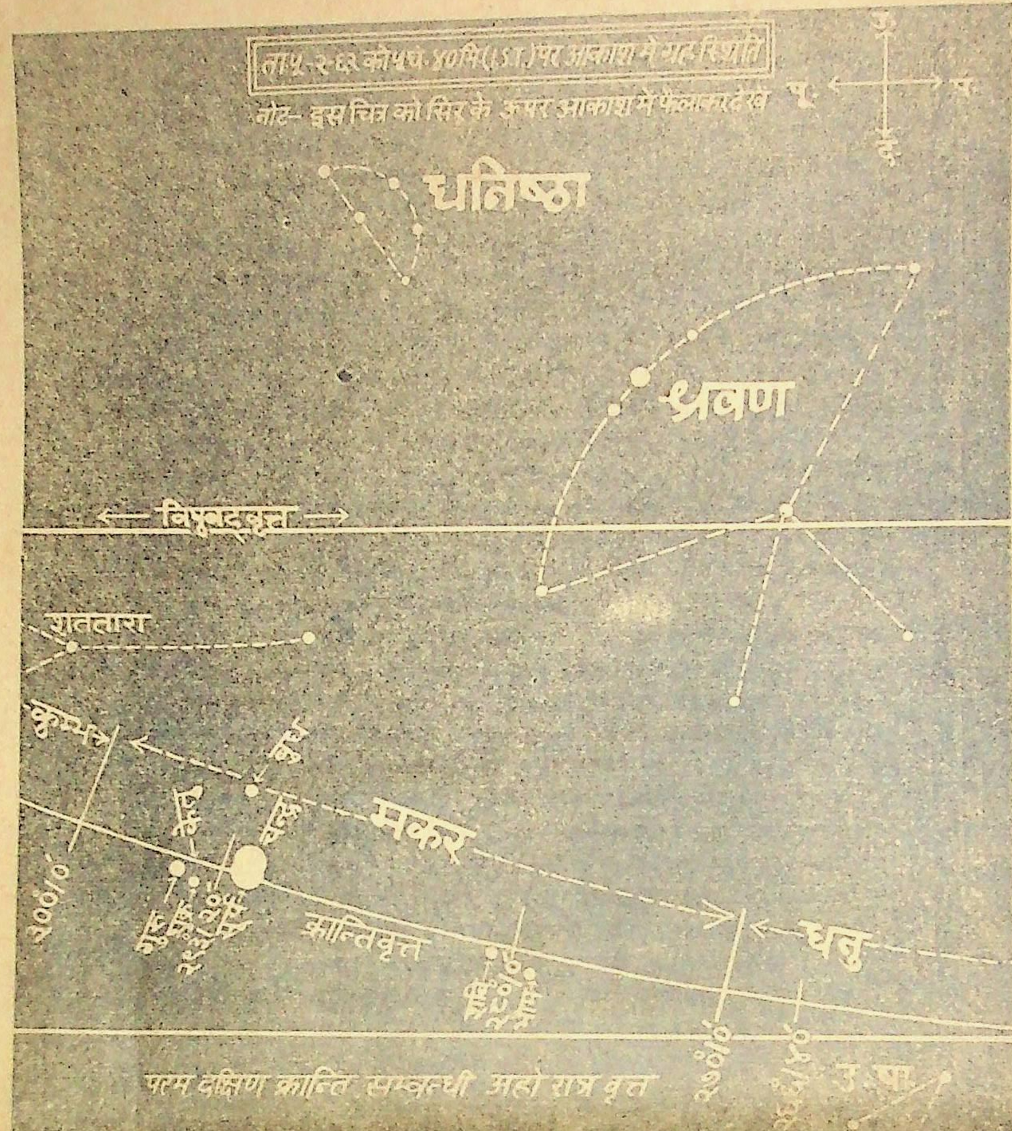
ग्रह→	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	के.
रा.	९	९	९	९	९	९	९	९
अं.	२२	२२	९	२३	२५	२४	१०	२८
क.	२८	२८	३	४०	१९	२९	२४	४९
वि.	३	३	९	१	२३	४८	२९	४८
नक्षत्र	श्रव.	श्रव.	उ.षा.	धनि.	धनि.	धनि.	श्रव.	धनि.
नाडी	अमृत	अमृत	जल	अमृत	अमृत	अमृत	अमृत	अमृत
	...	+०°१३′	−१°१०′	+३°१३२′	−०°१४१′	−१°१८′	−०°१२२′	...

आकाश में अष्टग्रह योग दर्शन

ग्रह स्थिति देखने से स्पष्ट है कि यह अष्ट-ग्रह-युति १६°।१६′ के भीतर २ होगी। ४-५ फरवरी को सभी ग्रह सूर्य के निकटस्थ होने के कारण सूर्य प्रकाश में लुप्त रहेंगे, उनके बिम्ब आकाश में नेत्रों से दिखाई नहीं देंगे।

हमारे सौर परिवार के आकाशस्थ ग्रहों के भ्रमण का प्रभाव विश्व पर समष्टि व व्यष्टि रूप से अवश्य पड़ता है। इसीलिये शास्त्रों में लिखा है कि—"ग्रहाधीनं जगत्सर्वम्।" ज्योतिष शास्त्र से सिद्ध है कि हमारा भूखण्ड ग्रहों के आकर्षण विकर्षण के कारण यथास्थान स्थित है। परन्तु यदि वे सभी ग्रह एक ही स्थान पर स्थित हो जायें तो आकर्षण विकर्षण का तारतम्य बिगड़ जाने के कारण जिस भूपृष्ठ के बिन्दु पर आकर्षण का धक्का लगता है, उसी स्थान पर भूगर्भस्थ ज्वालामुखी आदि भड़क कर भूकम्पादि से महान् नाश का दृश्य उपस्थित कर देता है—यह खगोल-सम्बन्धी वैज्ञानिक तथ्य है। प्रभु-कोप-जनित भूकम्प जैसी विनाशकारी शक्ति के आगे आज का महा-वैज्ञानिक भी उतना ही असहाय है, जितना की एक ज्ञानशून्य मानव सृष्टि के आदि में था। ग्रहगतिजन्य हलके भूकम्प की शक्ति भी जापान के हेरोशिमा शहर को नष्ट करने वाले परमाणु बम से कहीं अधिक होती है। ऐसे उत्पात के समय मनुष्य को सोचने व भागने को भी समय नहीं मिलता। भागे तो जाय भी कहाँ, उस समय तो एक ईस्वर ही अनन्य शरण होता है। सप्तग्रही व अष्टग्रही योग के समय इन ग्रहों के साथ चन्द्रमा के संयोग होने पर जहाँ तहाँ कहीं न कहीं भूकम्प का खतरा अवश्य होता है। इस वर्ष अष्टग्रही-योग मकर राशि पर बना है (इस योग के समय खगोल में जैसी ग्रहस्थिति होगी उसका प्रदर्शन चिरंजीव प्रियव्रत ने चित्र द्वारा किया है)।

इस अष्टग्रही का फल जिस राष्ट्र वा देश में हिंसा, ठगी, चोरी, नास्तिकता, अनाचार, पाप, व्यभिचारादि की वृद्धि होगी, वहीं होगा—अन्यत्र नहीं। **कुछ ज्यौतिषशास्त्रानभिज्ञ व्यक्ति इस अष्टग्रही का फल प्रलय से समस्त विश्व का नाश, और विश्वयुद्ध से सम्पूर्ण जगत् का संहार बतलाते हैं—यह गलत है।** क्योंकि सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्ततत्त्वविवेकादि ग्रन्थों के अनुसार जिस समय सभी ग्रह उच्चपातों सहित मेषादि में होते हैं तभी प्रलय होती है। यदि मनुष्य की मध्यमायु सौ वर्ष की मान ली जाय तो मनुष्य अब से आगामी प्रलय तक दो करोड़ चौंतीस लाख सत्तर हजार पाँच सौ नौ बार जन्म ले सकता है। अतः इस अष्टग्रही की स्थिति से प्रलय की आशङ्का नहीं करनी चाहिये। यह अष्टग्रही योग कन्या राशि में स्वतन्त्र भारत के समय आज से करीब आठ सौ वर्ष पूर्व भी आ चुका है। जिसके फल से भारत पर अनेक उत्पात व यवनों के भयंकर आक्रमण हुए हैं। जिससे भारतीय जनता को असह्य कष्ट व निरपराध असंख्य व्यक्तियों को मौत के घाट उतरना पड़ा और जबरदस्ती धर्मपरिवर्तन भी हुआ। साथ ही यह देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा गया था। उस समय यह योग अग्निकारक राहु के साथ बना था और इस वर्ष यह उत्पातकारक केतु के साथ बना है। यह कुछ अन्तर है। इस वर्ष इस दिन खग्रास सूर्यग्रहण भी है जो भारत में



ही है। सात ग्रह इकट्ठे होने से गोल योग माना जाता है। जिसका फल इस प्रकार है—

"सप्त ग्रहा यदैकत्र गोलयोगस्तदा भवेत्।
दुर्भिक्षं राष्ट्रपीड़ा च तस्मिन् योगे न संशयः॥"

चण्डेश्वर ग्रंथ में अष्टग्रही का फल ऐसे लिखा है—

"राहुर्मन्दो महीजो रविशशिभृगवो, वाक्पतिश्चन्द्रपुत्रो।
यद्येते चैकराशौ ग्रहगणसहिताः संगताः स्यु स्तदा स्यात्॥
हाहाकारः समन्तात् पुरनगरलयश्छत्रभंगो नृपाणाम्।
प्रालेयो (=हिमपातः) भूमिकम्पो मनुजहतिकरः सर्वसंहारकारी॥"

अर्थात्—राहु, शनि, मंगल, सूर्य, चन्द्र, शुक्र, गुरु एवं बुध ये आठों ग्रह एक ही राशि पर इकट्ठे हो जायें तो संसार में कहीं हाहाकार मचता है। कहीं नगर ग्रामों का विनाश, कहीं छत्रभंग, कहीं भयंकर हिमपात एवं भूकम्प से असंख्य प्राणियों का संहार होता है। स्मरण रहे कि संवत् १९९० की माघ की अमावस्या (१५ जनवरी सन् १९३४) को दिन के करीब ३ बजे ६ ग्रहों के साथ सातवाँ चन्द्रमा जिस क्षण मिला ठीक उसी क्षण बिहार, बंगाल, व नेपाल में अत्यन्त भीषण भूकम्प आया था। जिससे वहाँ जन, धन, स्थावर, सम्पत्ति का महाविनाश हुआ था। हमने अपनी जन्त्री पत्री में इस भूकम्प की भविष्यवाणी स्पष्ट शब्दों में एक वर्ष पूर्व ही कर दी थी। उस समय हमारी भविष्यवाणी पर भारत के वर्तमान राष्ट्रपति श्री डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी आश्चर्य प्रकट किया था और उन्होंने गत ९ दिसंबर सन् १९५५ को राष्ट्रपति भवन देहली में विद्वन्मण्डल के सम्मुख हमारी इस भविष्यवाणी की चर्चा प्रशंसा भरे शब्दों में की थी। इस होने वाले अष्टग्रही योग के फलस्वरूप इस योग से कुछ मास पूर्व और बाद भी १९६५ तक विश्व के राष्ट्रों पर अनेक भय व समस्याएं रहेंगी।

आने वाले भयानक संकटों से रक्षा के उपाय—पाठको! हम कई वर्ष पूर्व अपने इस पंचांग में अष्टग्रहीजन्य भविष्य और शास्त्रीय संकेत कर चुके हैं। यह योग विश्व में कहीं-कहीं भयानक प्राकृत-प्रकोप भूकम्पादि व महामारी कहीं कुछ युद्ध आदि से नर-संहार करनेवाले हैं। चिरकाल पूर्व इस अशुभ अष्टग्रही फल को लिख कर जनता को जतलाने का हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं है, कि हम जनता या किसी शासक-वर्ग को आतंकित करें—अपितु—हमारे इस संकेत का यही भाव है कि भावी अष्टग्रहों के अशुभ फलों से विश्व की जनता को अवगत कराकर उससे बचने का उपाय बतलाया जाए। हम नहीं चाहते कि कोई भी व्यक्ति इस फल से अचेत होकर समय पर कष्ट भोगे। इस योगके संकट को दूर करने के लिए, आश्विन शुक्ल नवरात्रों से ही वैयक्तिक रूप से अपने-अपने घरों में कलशस्थापन पूर्वक नवार्ण मंत्र से सम्पुटित दुर्गापाठ की कम-से-कम नवावृत्ति अवश्य कराएं। तदनन्तर यथाविधि हवन, कन्या, बटुक पूजन करें, और भारत के प्रत्येक ग्राम व नगर वासी एकत्र होकर यथाशक्ति, भक्तिभावपूर्वक शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लक्षचंडी आदि करवाएं। विश्व की सब सरकारों को भी चाहिये कि अपनी प्रजा के कल्याणार्थ अपने-अपने सम्प्रदायानुसार जप, पाठ, शांतियज्ञ व सामूहिक धार्मिक अनुष्ठान कराएं। बच्चों व गरीबों को अन्नदानादि से सन्तुष्ट करें। हमारा तो यही विचार है कि प्रत्येक शहर व ग्राम के मुहल्लों में शांतियज्ञों के अतिरिक्त आडम्बररहित प्रभुकीर्तन तथा जगन्माता महाकाली प्रीत्यर्थ अखण्ड जप तथा जागरण होते रहें। विशेष कर माघ कृष्ण में—माघ कृष्ण ९ से माघ शुक्ल १ प्रतिपदा तक देवस्थानों में अखण्ड कीर्तन बड़े जोर-शोर से होने चाहिये। साथ ही श्रीचण्डी, वाल्मीकि रामायण, तुलसी-कृत रामायण, तथा श्री ग्रन्थ-साहब जी के अखण्ड पाठ भी अपनी श्रद्धाभक्ति के अनुसार प्रेमपूर्वक करें।

इस्लाम के मानने वाले भाई भी अपने धर्म के अनुसार विधिपूर्वक इबादत करें। जहाँ भी भगवान् का कीर्तन, स्मरण, पाठादि होंगे। वहाँ कोई भी उत्पात प्रजा का बाल बांका नहीं कर सकते। भगवान् के भक्तों का कभी नाश नहीं होता। गीता में भगवान् ने कहा है कि——हे अर्जुन "न मे भक्तः प्रणश्यति"। जिस घर ग्राम व देश में उपरोक्त सदुपदेश का यथासामर्थ्य पालन होगा, वहाँ प्रभु की सुदृष्टि कोई अनिष्ट नहीं होने देगी—इसमें कोई संशय नहीं। श्री तुलसीदास जी ने अपनी रामायण में लिखा है कि—"सकल विघ्न व्यापहि नहि ताहीं। राम कृपा सुविलोकित जाहीं॥"

किन-किन राशि वालों को विशेष भय—यह अष्टग्रही योग जिन देशों, नगरों, व्यक्तियों की राशि से सातवें, नवम में विशेष कर पहले व चौथे, आठवें, बारहवें होगा, उनके लिए शास्त्रों में विशेष अरिष्ट लिखा है। उन देश एवं नगर वासियों को सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से स्व-स्व-धर्मानुसार धार्मिक कृत्य अवश्य करने चाहिएं। और यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, सुवर्ण चांदी व काल चक्रादि का दान भी करें। अत्रि-संहिता में लिखा है कि—दान के समान कल्याण-कर्त्ता मित्र इस लोक एवं परलोक में कोई भी नहीं—"नास्ति दानात्परं मित्रमिह लोके परत्र च"

अष्टग्रही की शांति में यह संकल्प पढ़ें—"ओं अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुक-गोत्रोऽमुकशर्माऽहं मम श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये अस्मिन्पुण्याहे मम जन्मराशौ जन्म-नक्षत्रे वा जन्मराशेः सकाशाद्वा चतुर्थाष्टमद्वादशपंचमाद्यनिष्टस्थानस्थिताः सूर्यादयः—अष्ट-ग्रहा स्तः सूचितं सूचयिष्यमाणं च सर्वमरिष्टजातं परिहर्तुं सर्वदा तृतीयैकादशशुभ-स्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं तथा दशान्तर्दशोपदशादिनदशाजनितपीडाल्पायुर्धननाशस्थान-नाशमानहानि-महारोग-दुर्भिक्ष-जल-भूकम्पादि- महाभयाधिदैवाधिभौतिकाध्यात्मिकजनित-क्लेशनिवृत्तिपूर्वकशरीरारोग्यार्थम्, परमैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थम्, श्रीसूर्यादिग्रहप्रसादार्थं च सनवग्रहमखां सूर्याद्यष्टग्रहयोगशांतिमहं करिष्ये।"

अनिष्ट फलवाली राशि वाले जो मनुष्य दान शांति नहीं करेंगे वे अशुभ फलों के अवश्य भागी होंगे।

"ये च न प्रतिकुर्वन्ति क्रियया श्रद्धयान्विताः। नास्तिक्याद्वा विमोहाद्वा विनश्यन्त्येव तेऽचिरात्॥"

१४ जुलाई १९६० को इटली के रहस्यवादियों ने प्रलय की निराधार अशास्त्रीय भविष्यवाणी करके विश्व को व्यर्थ में ही आतङ्कित कर डाला था। उस समय मुझसे भी अनेक महानुभावों ने इस विषय में पूछताछ की थी, मैंने उन्हें इस भविष्यवाणी की अशास्त्रीयता बतला कर आश्वासित किया था।

विज्ञ महोदयो! इस वर्ष में घटित होने वाली राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संसार से सम्बन्धित घटनाओं का ज्योतिर्विज्ञानदृष्ट्या और प्रभकृपावशात् जो शुभाशुभ दीख पड़ा वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार लिख दिया है। आगे "कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ" भविष्य के निर्माता सर्वान्तर्यामी श्री प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल माया के सम्मुख अस्मदादि अल्पज्ञ व्यक्ति भविष्य लेखन की क्या क्षमता रख सकता है। "तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

"अघटितमपि घटयति सुघटितमपि दुर्घटीकुरुते।
विधिरेव तानि घटयति यानि पुमान् नैव संघटते॥"

श्रीमार्त्तण्ड भवन
मु० पो० कुराली,
आश्विनकृष्ण १० गुरुवार (सं० २०१७)

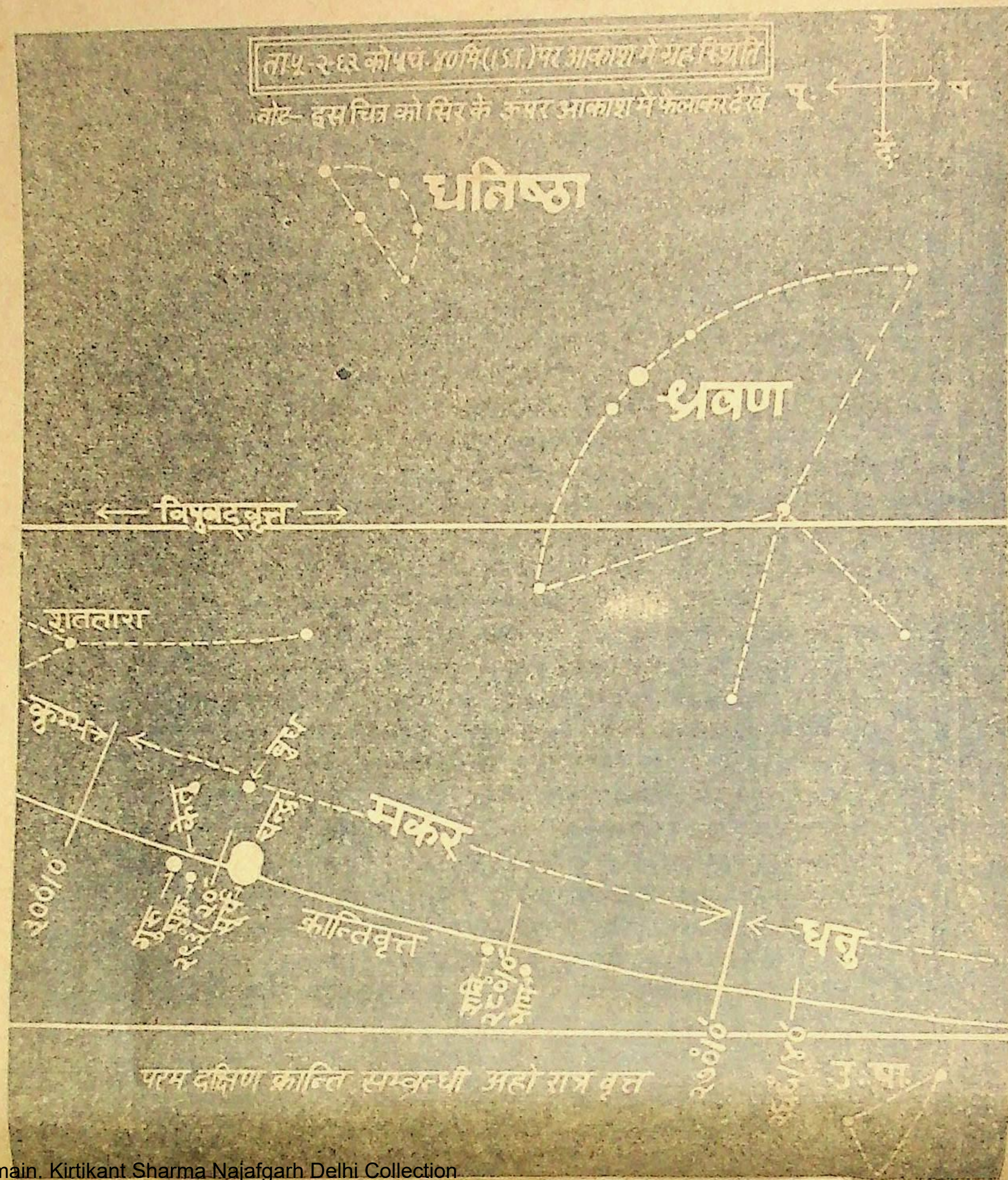
शुभेच्छु:—
श्री बघाटनरेशाश्रित
मुकुन्दवल्लभ

आकाश में अष्टग्रह योग दर्शन

ग्रह स्थिति देखने से स्पष्ट है कि यह अष्ट-ग्रह-युति १६।१६ के भीतर २ होगी। ४-५ फरवरी को सभी ग्रह सूर्य के निकटस्थ होने के कारण सूर्य प्रकाश में लुप्त रहेंगे, उनके बिम्ब आकाश में नेत्रों से दिखाई नहीं देंगे।

हमारे सौर परिवार के आकाशस्थ ग्रहों के भ्रमण का प्रभाव विश्व पर समष्टि व व्यष्टि रूप से अवश्य पड़ता है। इसीलिये शास्त्रों में लिखा है कि—"ग्रहाधीनं जगत्सर्वम्।" ज्योतिष शास्त्र से सिद्ध है कि हमारा भूखण्ड ग्रहों के आकर्षण विकर्षण के कारण यथास्थान स्थित है। परन्तु यदि वे सभी ग्रह एक ही स्थान पर स्थित हो जायें तो आकर्षण विकर्षण का तारतम्य बिगड़ जाने के कारण जिस भूपृष्ठ के बिन्दु पर आकर्षण का धक्का लगता है, उसी स्थान पर भूगर्भस्थ ज्वालामुखी आदि भड़क कर भूकम्पादि से महान् नाश का दृश्य उपस्थित कर देता है—यह खगोल-सम्बन्धी वैज्ञानिक तथ्य है। प्रभु-कोप-जनित भूकम्प जैसी विनाशकारी शक्ति के आगे आज का महा-वैज्ञानिक भी उतना ही असहाय है, जितना की एक ज्ञानशून्य मानव सृष्टि के आदि में था। ग्रहगतिजन्य हलके भूकम्प की शक्ति भी जापान के हेरोशिमा शहर को नष्ट करने वाले परमाणु बम से कहीं अधिक होती है। ऐसे उत्पात के समय मनुष्य को सोचने व भागने को भी समय नहीं मिलता। भागे तो जाय भी कहाँ, उस समय तो एक ईश्वर ही अनन्य शरण होता है। सप्तग्रही व अष्टग्रही योग के समय इन ग्रहों के साथ चन्द्रमा के संयोग होने पर जहाँ तहाँ कहीं न कहीं भूकम्प का खतरा अवश्य होता है। इस वर्ष अष्टग्रही-योग मकर राशि पर बना है (इस योग के समय खगोल में जैसी ग्रहस्थिति होगी उसका प्रदर्शन चिरंजीव प्रियव्रत ने चित्र द्वारा किया है)।

इस अष्टग्रही का फल जिस राष्ट्र वा देश में हिंसा, ठगी, चोरी, नास्तिकता, अनाचार, पाप, व्यभिचारादि की वृद्धि होगी, वहीं होगा—अन्यत्र नहीं। **कुछ ज्योतिषशास्त्रानभिज्ञ व्यक्ति इस अष्टग्रही का फल प्रलय से समस्त विश्व का नाश, और विश्वयुद्ध से सम्पूर्ण जगत् का संहार बतलाते हैं—यह गलत है।** क्योंकि सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्ततत्त्वविवेकादि ग्रन्थों के अनुसार जिस समय सभी ग्रह उच्चपातों सहित मेषादि में होते हैं तभी प्रलय होती है। यदि मनुष्य की मध्यमायु सौ वर्ष की मान ली जाय तो मनुष्य अब से आगामी प्रलय तक दो करोड़ चौंतीस लाख सत्तर हजार पाँच सौ नौ बार जन्म ले सकता है। अतः इस अष्टग्रही की स्थिति से प्रलय की आशङ्का नहीं करनी चाहिये। यह अष्टग्रही योग कन्या राशि में स्वतन्त्र भारत के समय आज से करीब आठ सौ वर्ष पूर्व भी आ चुका है। जिसके फल से भारत पर अनेक उत्पात व यवनों के भयंकर आक्रमण हुए हैं। जिससे भारतीय जनता को असह्य कष्ट व निरपराध असंख्य व्यक्तियों को मौत के घाट उतरना पड़ा और जबरदस्ती धर्मपरिवर्तन भी हुआ। साथ ही यह देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा गया था। उस समय यह योग अग्निकारक राहु के साथ बना था और इस वर्ष यह उत्पातकारक केतु के साथ बना है। यह कुछ अन्तर है। इस वर्ष उस दिन खग्रास सूर्यग्रहण भी है जो भारत में



यह कुछ अन्तर है। इस वर्ष इस दिन खग्रास सूर्यग्रहण ...

ही है। सात ग्रह इकट्ठे होने से गोल योग माना जाता है। जिसका फल इस प्रकार है—

"सप्त ग्रहा यदैकत्र गोलयोगस्तदा भवेत्।
दुर्भिक्षं राष्ट्रपीड़ा च तस्मिन् योगे न संशयः॥"

चण्डेश्वर ग्रंथ में अष्टग्रही का फल ऐसे लिखा है—

"राहुर्मन्दो महीजो रविशशिभृगवो, वाक्पतिश्चन्द्रपुत्रो।
यद्येते चैकराशौ ग्रहगणसहिताः संगताः स्युस्तदा स्यात्॥
हाहाकारः समन्तात् पुरनगरलयश्छत्रभंगो नृपाणाम्।
प्रालेयो (=हिमपातः) भूमिकम्पो मनुजहतिकरः सर्वसंहारकारी॥"

अर्थात्—राहु, शनि, मंगल, सूर्य, चन्द्र, शुक्र, गुरु एवं बुध ये आठों ग्रह एक ही राशि पर इकट्ठे हो जायँ तो संसार में कहीं हाहाकार मचता है। कहीं नगर ग्रामों का विनाश, कहीं छत्रभंग, कहीं भयंकर हिमपात एवं भूकम्प से असंख्य प्राणियों का संहार होता है। स्मरण रहे कि संवत् १९९० की माघ की अमावस्या (१५ जनवरी सन् १९३४) को दिन के करीब ३ बजे ६ ग्रहों के साथ सातवाँ चन्द्रमा जिस क्षण मिला ठीक उसी क्षण बिहार, बंगाल, व नेपाल में अत्यन्त भीषण भूकम्प आया था। जिससे वहाँ जन, धन, स्थावर, सम्पत्ति का महाविनाश हुआ था। हमने अपनी जन्त्री पत्री में इस भूकम्प की भविष्यवाणी स्पष्ट शब्दों में एक वर्ष पूर्व ही कर दी थी। उस समय हमारी भविष्यवाणी पर भारत के वर्तमान राष्ट्रपति श्री डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी आश्चर्य प्रकट किया था और उन्होंने गत ९ दिसंबर सन् १९५५ को राष्ट्रपति भवन देहली में विद्वन्मण्डल के सम्मुख हमारी इस भविष्यवाणी की चर्चा प्रशंसा भरे शब्दों में की थी। इस होने वाले अष्टग्रही योग के फलस्वरूप इस योग से कुछ मास पूर्व और बाद भी १९६५ तक विश्व के राष्ट्रों पर अनेक भय व समस्याएं रहेंगी।

आने वाले भयानक संकटों से रक्षा के उपाय—पाठको! हम कई वर्ष पूर्व अपने इस पंचांग में अष्टग्रहीजन्य भविष्य और शास्त्रीय संकेत कर चुके हैं। यह योग विश्व में कहीं-कहीं भयानक प्राकृत-प्रकोप भूकम्पादि व महामारी कहीं कुछ युद्ध आदि से नर-संहार करनेवाले हैं। चिरकाल पूर्व इस अशुभ अष्टग्रही फल को लिख कर जनता को जतलाने का हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं है, कि हम जनता या किसी शासक-वर्ग को आतंकित करें—अपितु—हमारे इस संकेत का यही भाव है कि भावी अष्टग्रहों के अशुभ फलों से विश्व की जनता को अवगत कराकर उससे बचने का उपाय बतलाया जाए। हम नहीं चाहते कि कोई भी व्यक्ति इस फल से अचेत होकर समय पर कष्ट भोगे। इस योगके संकट को दूर करने के लिए, आश्विन शुक्ल नवरात्रों से ही वैयक्तिक रूप से अपने-अपने घरों में कलशस्थापन पूर्वक नवार्ण मंत्र से सम्पुटित दुर्गापाठ की कम-से-कम नवावृत्ति अवश्य कराएं। तदनन्तर यथाविधि हवन, कन्या, बटुक पूजन करें, और भारत के प्रत्येक ग्राम व नगर वासी एकत्र होकर यथाशक्ति, भक्तिभावपूर्वक शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लक्षचंडी आदि करवाएं। विश्व की सब सरकारों को भी चाहिये कि अपनी प्रजा के कल्याणार्थ अपने-अपने सम्प्रदायानुसार जप, पाठ, शांतियज्ञ व सामूहिक धार्मिक अनुष्ठान कराएं। बच्चों व गरीबों को अन्नदानादि से सन्तुष्ट करें। हमारा तो यही विचार है कि प्रत्येक शहर व ग्राम के मुहल्लों में शांतियज्ञों के अतिरिक्त आडम्बररहित प्रभुकीर्तन तथा जगन्माता महाकाली प्रीत्यर्थं अखण्ड जप तथा जागरण होते रहें। विशेष कर माघ कृष्ण में—माघ कृष्ण ९ से माघ शुक्ल १ प्रतिपदा तक देवस्थानों में अखण्ड कीर्तन बड़े जोर-शोर से होने चाहिये। साथ ही श्रीचण्डी, वाल्मीकि रामायण, तुलसी-कृत रामायण, तथा श्री गुरु-ग्रन्थ-साहब जी के अखण्ड पाठ भी अपनी श्रद्धाभक्ति के अनुसार प्रेमपूर्वक करें।

इस्लाम के मानने वाले भाई भी अपने धर्म के अनुसार विधिपूर्वक इबादत करें। जहाँ भी भगवान् का कीर्तन, स्मरण, पाठादि होंगे। वहाँ कोई भी उत्पात प्रजा का बाल बांका नहीं कर सकते। भगवान् के भक्तों का कभी नाश नहीं होता। गीता में भगवान् ने कहा है कि——हे अर्जुन "न मे भक्तः प्रणश्यति"। जिस घर ग्राम व देश में उपरोक्त सदुपदेश का यथासामर्थ्य पालन होगा, वहाँ प्रभु की सुदृष्टि कोई अनिष्ट नहीं होने देगी—इसमें कोई संशय नहीं। श्री तुलसीदास जी ने अपनी रामायण में लिखा है कि—"सकल विघ्न व्यापहि नहि ताहीं। राम कृपा सुविलोकित जाहीं॥"

किन-किन राशि वालों को विशेष भय—यह अष्टग्रही योग जिन देशों, नगरों, व्यक्तियों की राशि से सातवें, नवम में विशेष कर पहले व चौथे, आठवें, बारहवें होगा, उनके लिए शास्त्रों में विशेष अरिष्ट लिखा है। उन देश एवं नगर वासियों को सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से स्व-स्व-धर्मानुसार धार्मिक कृत्य अवश्य करने चाहिएं। और यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, सुवर्ण चांदी व काल चक्रादि का दान भी करें। अत्रि-संहिता में लिखा है कि—दान के समान कल्याण-कर्ता मित्र इस लोक एवं परलोक में कोई भी नहीं—"नास्ति दानात्परं मित्रमिह लोके परत्र च"

अष्टग्रही की शांति में यह संकल्प पढ़ें—"ओं अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुक-गोत्रोऽमुकशर्माऽहं मम श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये अस्मिन्पुण्याहे मम जन्मराशौ जन्म-नक्षत्रे वा जन्मराशेः सकाशाद्वा चतुर्थाष्टमद्वादशपंचमाद्यनिष्टस्थानस्थिताः सूर्यादयः—अष्ट-ग्रहाः स्तः सूचितं सूचयिष्यमाणं च सर्वमरिष्टजातं परिहर्तुं सर्वदा तृतीयैकादशशुभ-स्थानस्थितवच्छुभफलप्राप्त्यर्थं तथा दशान्तर्दशोपदशादिनदशाजनितपीडाल्पायुर्धननाशस्थान-नाशमानहानि-महारोग-दुर्भिक्ष-जल-भूकम्पादि- महाभयाधिदैवाधिभौतिकाध्यात्मिकजनित-क्लेशनिवृत्तिपूर्वकशरीरारोग्यार्थम्, परमैश्वर्यादिप्राप्त्यर्थम्, श्रीसूर्यादिग्रहप्रसादार्थं च सनवग्रहमखां सूर्याद्यष्टग्रहयोगशांतिमहं करिष्ये।"

अनिष्ट फलवाली राशि वाले जो मनुष्य दान शांति नहीं करेंगे वे अशुभ फलों के अवश्य भागी होंगे।

"ये च न प्रतिकुर्वन्ति क्रियया श्रद्धयान्विताः। नास्तिक्याद्वा विमोहाद्वा विनश्यन्त्येव ते ध्रुवम्॥"

१४ जुलाई १९६० को इटली के रहस्यवादियों ने प्रलय की निराधार अशास्त्रीय भविष्यवाणी करके विश्व को व्यर्थ में ही आतङ्कित कर डाला था। उस समय मुझसे भी अनेक महानुभावों ने इस विषय में पूछताछ की थी, मैंने उन्हें इस भविष्यवाणी की अशास्त्रीयता बतला कर आश्वासित किया था।

विज्ञ महोदयो! इस वर्ष में घटित होने वाली राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संसार से सम्बन्धित घटनाओं का ज्योतिर्विज्ञानदृष्ट्या और प्रभुकृपावशात् जो शुभाशुभ दीख पड़ा वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार लिख दिया है। आगे "कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ" भविष्य के निर्माता सर्वान्तर्यामी श्री प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल माया के सम्मुख अस्मदादि अल्पज्ञ व्यक्ति भविष्य लेखन की क्या क्षमता रख सकता है। "तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।"

"अघटितमपि घटयति सुघटितमपि दुर्घटीकुरुते।
विधिरेव तानि घटयति यानि पुमान् नैव संवदते॥"

श्रीमार्त्तण्ड भवन
मु० पो० कुराली,
आश्विनकृष्ण १०गुरुवार (सं० २०१७)

शुभेच्छु :—
श्री बघाटनरेशाश्रित
मुकुन्दवल्लभ

आयोजित विकास के दस वर्ष

भारत में आयोजित विकास का मूल उद्देश्य ऐसी प्रक्रिया शुरू करना है, जिससे लोगों का जीवनस्तर धीरे-धीरे निरन्तर ऊंचा उठे और अधिक समृद्ध व विविधतापूर्ण जीवन के लिए उन्हें अधिक अवसर प्राप्त होते रहें। यह प्रक्रिया १९५१ में प्रथम पंचवर्षीय योजना के शुभारम्भ के साथ शुरू हुई थी। योजना शुरू होने के बाद के वर्षों में भारतीय अर्थ-व्यवस्था में लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में उत्साहवर्धक वृद्धि हुई है।

१९५८-५९ तक स्थिर कीमतों के आधार पर भारत की राष्ट्रीय आय लगभग १८ प्रतिशत बढ़ चुकी है। कृषि उत्पादन में लगभग ३५ प्रतिशत वृद्धि हुई है। खाद्यान्नों का उत्पादन २,००,००,००० टन बढ़ गया है और अनुमान है कि १९५९-६० में भी उत्पादन का स्तर, थोड़ा कम होने पर भी, अच्छा ही बना रहेगा। योजना शुरू होने के पश्चात् कृषि उत्पादन में हुई यह वृद्धि पिछली किसी दशाब्दी के मुकाबले सबसे अधिक तेज है।

औद्योगिक विकास

औद्योगिक क्षमता और उत्पादन में इससे भी अधिक तेजी से वृद्धि हुई है। १९५९ के अंत तक औद्योगिक उत्पादन ५१ प्रतिशत अधिक हो गया था। मूलभूत पूंजीगत और उत्पादक सामान के उद्योग, जो कि हमारे देश के औद्योगिक-विकास के अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग हैं, की प्रगति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आत्म-निर्भर औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था की प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सार्वजनिक क्षेत्रों में इस्पात के ३ कारखानों की स्थापना करके और निजी क्षेत्र में दो मुख्य यूनिटों का विस्तार करके उठाया गया है। मशीन निर्माण के उद्योगों की प्रगति भी बड़ी तेजी से हो रही है। कृषि और उद्योगों में काम आने वाली और परिवहन संबंधी मशीनें और मशीनी औजार अब अधिक से अधिक तादाद में भारतमें ही बनने लगे हैं। रेलवे में काम आने वाले उपकरण और मशीनों में से अधिकांश दूसरी योजना के अन्त तक भारत में ही उपलब्ध होने लगेंगे। कृषि के अलावा अन्य रोजगारों की सुविधाओं में भी वृद्धि हुई है।

इन दस वर्षों में ही सभी साधनों द्वारा सिंचाई की क्षमता में लगभग ३ करोड़ एकड़ की वृद्धि हो गयी है। बिजली उत्पादन क्षमता दुनी से भी अधिक हो गयी है। १९५०-५१ में जबकि बिजली लगे गांवों और कस्बों की संख्या ३,६८७ थी, वह अब बढ़ कर १८,००० हो गयी है। देश के परिवहन और संचार साधनों में भी काफी विस्तार और उन्नति हुई है। तकनीकी शिक्षा की सुविधाओं और राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं व अनुसंधान संस्थाओं की संख्या में भी निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

समाज सेवाएं

समाज सेवाओं के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। आजकल जितने बच्चे प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में पढ़ते हैं, उतने पहले कभी नहीं पढ़ते थे। अस्पतालों व डिस्पेंसरियों की संख्या में भी महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है और मलेरिया, फाइलेरिया व तपेदिक की रोक-थाम के लिए बड़े पैमाने के कार्य-क्रमों पर भी अमल किया गया है। परिवार नियोजन आन्दोलन दिनों दिन अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। दवाइयों और फार्मेसिटिकल्स का निर्माण भी लगभग दुगना हो गया है। पिछड़ी जातियों [illegible] शारीरिक रूप से अयोग्य व्यक्तियों के कल्याण की विशेष योजनाओं, समाज द्वारा शोषित और अन्य रूप से पीड़ित लोगों के हित की योजनाओं पर भी अमल हो रहा है।

यद्यपि द्वितीय योजना के लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में अभी तक संतोषजनक प्रगति हो रही है, फिर भी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दूसरी योजना के इस अंतिम वर्ष में और अधिक प्रयत्न करने की जरूरत है। चाहे हम कहीं हों, जीवन के किसी क्षेत्र में उद्देश्य प्राप्त करने के लिए हमें कठोर प्रयत्न करना चाहिए। ताकि प्रगति की गति तेज हो और अधिक समृद्धि सुनिश्चित हो।

योजना से सुरक्षा—योजना से समृद्धि
इसके लिए मेहनत कीजिए—इसके लिए बचत कीजिए। डी. ए. ६०/४१६

माप-तौल की एक समान व सरल प्रणाली

अप्रैल, १९६० से जम्मू-कश्मीर के अलावा देश के सभी भागों में मेट्रिक बाटों का प्रयोग शुरू करके समस्त देश में माप-तौल की मेट्रिक प्रणाली लागू करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

अक्तूबर, १९५८ में जब इस प्रकार के सुधार का श्रीगणेश किया गया था तो केन्द्रीय सरकार ने देश के कुछ चुने हुए क्षेत्रों में मेट्रिक प्रणाली के अनुसार बाटों और पैमानों का प्रमाणीकरण करने के लिए कानून बनाया था। इन क्षेत्रों में २ वर्ष की अवधि ऐसी रखी गई थी जिसमें पुराने बाटों का भी प्रयोग करने की अनुमति थी, यह अवधि सितम्बर, १९६० में समाप्त हो गई है। इसके बाद अब केवल मेट्रिक बाटों का प्रयोग कानूनी हो गया है।

अप्रैल, १९६२ तक समस्त देश में मेट्रिक बाटों का प्रयोग अनिवार्य हो जाने की आशा है।

कई प्रमुख उद्योगों में भी मेट्रिक बाटों और पैमानों का प्रयोग शुरू हो चुका है। पटसन उद्योग ने मेट्रिक प्रणाली जुलाई, १९५८ से अपना ली है। सूती-वस्त्र, लोहा व इस्पात, सीमेण्ट, रसायन व इंजीनियरी उद्योगों में अक्तूबर, १९५८ से और चीनी उद्योग में नवम्बर, १९५८ से मेट्रिक प्रणाली लागू हो गई है। नारियल रेशे उद्योग में १ अक्तूबर, १९५९ से मेट्रिक प्रणाली अपना ली गई है। अंतरिम अवधि समाप्त होते ही इन सभी उद्योगों में मेट्रिक प्रणाली अनिवार्य हो जायेगी।

अन्य महत्वपूर्ण बात है कि अप्रैल, १९६० से तेल उद्योग ने एक साथ मेट्रिक प्रणाली अपना ली है। अब पेट्रोल व पेट्रोल की वस्तुओं का सारा वितरण मेट्रिक इकाइयों में होता है। रेलवे की व्यापारिक शाखाओं ने अप्रैल, १९६० से मेट्रिक प्रणाली अपना ली है।

संसद द्वारा पास किए हुए कानून के अनुसार माप तौल की मेट्रिक प्रणाली अपनाने का काम १९६६ तक पूर्ण हो जाना चाहिए। पर उस वर्ष के पहले ही आम लेन-देन में मेट्रिक माप-तौल का प्रयोग शुरू होने की आशा है। देश के विभिन्न भागों में मेट्रिक माप-तौल के व्यापारिक बाट व पैमानों का निर्माण हो रहा है। व्यापार में प्रयोग शुरू करने के पूर्व सरकारी निरीक्षक द्वारा हर बाट व पैमाने की सावधानी से जांच की जाती है और तभी मुहर लगाई जाती है।

इस प्रकार देश माप-तौल की एक समान व सरल प्रणाली अपनाने की दिशा में शीघ्रतर प्रगति कर रहा है। तब हमारे यहां हरेक बाट व पैमाना प्रामाणिक रूप से सही होगा। अंतरिम अवधि समाप्त होते ही इन सभी उद्योगों में मेट्रिक प्रणाली अनिवार्य हो जायेगी।

डी. ए. ६०/४१७

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७|३४	९|२९	११|४३	१४|५	१६|२५	१८|४५	२१|७	२३|२७	१|३१	३|१३	४|३९	६|१
२	७|३०	९|२५	११|३९	१४|१	१६|२१	१८|४१	२१|३	२३|२३	१|२७	३|९	४|३५	५|५७
३	७|२६	९|२१	११|३५	१३|५७	१६|१७	१८|३७	२०|५९	२३|१९	१|२३	३|५	४|३१	५|५३
४	७|२२	९|१७	११|३१	१३|५३	१६|१३	१८|३३	२०|५५	२३|१५	१|१९	३|१	४|२७	५|४९
५	७|१८	९|१३	११|२७	१३|४९	१६|९	१८|२९	२०|५१	२३|११	१|१५	२|५७	४|२३	५|४५
६	७|१४	९|९	११|२३	१३|४५	१६|५	१८|२५	२०|४७	२३|७	१|११	२|५३	४|१९	५|४१
७	७|१०	९|५	११|१९	१३|४१	१६|१	१८|२१	२०|४३	२३|३	१|७	२|४९	४|१५	५|३७
८	७|६	९|१	११|१५	१३|३७	१५|५७	१८|१७	२०|३९	२२|५९	१|३	२|४५	४|११	५|३३
९	७|२	८|५७	११|११	१३|३३	१५|५३	१८|१३	२०|३५	२२|५५	०|५९	२|४१	४|७	५|२९
१०	६|५८	८|५३	११|७	१३|२९	१५|४९	१८|९	२०|३१	२२|५१	०|५५	२|३७	४|३	५|२५
११	६|५४	८|४९	११|३	१३|२५	१५|४५	१८|५	२०|२७	२२|४७	०|५१	२|३३	३|५९	५|२१
१२	६|५०	८|४५	१०|५९	१३|२१	१५|४१	१८|१	२०|२३	२२|४३	०|४७	२|२९	३|५५	५|१७
१३	६|४६	८|४१	१०|५५	१३|१७	१५|३७	१७|५७	२०|१९	२२|३९	०|४३	२|२५	३|५१	५|१३
१४	६|४२	८|३७	१०|५१	१३|१३	१५|३३	१७|५३	२०|१५	२२|३५	०|३९	२|२१	३|४७	५|९
१५	६|३८	८|३३	१०|४७	१३|९	१५|२९	१७|४९	२०|११	२२|३१	०|३५	२|१७	३|४३	५|५
१६	६|३४	८|२९	१०|४३	१३|५	१५|२५	१७|४५	२०|७	२२|२७	०|३१	२|१३	३|३९	५|१
१७	६|३०	८|२५	१०|३९	१३|१	१५|२१	१७|४१	२०|३	२२|२३	०|२७	२|९	३|३५	४|५७
१८	६|२६	८|२१	१०|३५	१२|५७	१५|१७	१७|३७	१९|५९	२२|१९	०|२३	२|५	३|३१	४|५३
१९	६|२२	८|१७	१०|३१	१२|५३	१५|१३	१७|३३	१९|५५	२२|१५	०|१९	२|१	३|२७	४|४९
२०	६|१८	८|१३	१०|२७	१२|४९	१५|९	१७|२९	१९|५१	२२|११	०|१५	१|५७	३|२३	४|४५
२१	६|१४	८|९	१०|२३	१२|४५	१५|५	१७|२५	१९|४७	२२|७	०|११	१|५३	३|१९	४|४१
२२	६|१०	८|५	१०|१९	१२|४१	१५|१	१७|२१	१९|४३	२२|३	०|७	१|४९	३|१५	४|३७
२३	६|६	८|१	१०|१५	१२|३७	१४|५७	१७|१७	१९|३९	२१|५९	०|३	१|४५	३|११	४|३३
२४	६|२	७|५७	१०|११	१२|३३	१४|५३	१७|१३	१९|३५	२१|५५	२३|५९	१|४१	३|७	४|२९
२५	५|५८	७|५३	१०|७	१२|२९	१४|४९	१७|९	१९|३१	२१|५१	२३|५५	१|३७	३|३	४|२५
२६	५|५४	७|४९	१०|३	१२|२५	१४|४५	१७|५	१९|२७	२१|४७	२३|५१	१|३३	२|५९	४|२१
२७	५|५०	७|४५	९|५९	१२|२१	१४|४१	१७|१	१९|२३	२१|४३	२३|४७	१|२९	२|५५	४|१७
२८	५|४६	७|४१	९|५५	१२|१७	१४|३७	१६|५७	१९|१९	२१|३९	२३|४३	१|२५	२|५१	४|१३
२९	५|४२	७|३७	९|५१	१२|१३	१४|३३	१६|५३	१९|१५	२१|३५	२३|३९	१|२१	२|४७	४|९
३०	५|३८	७|३३	९|४७	१२|९	१४|२९	१६|४९	१९|११	२१|३१	२३|३५	१|१७	२|४३	४|५
३१	५|३४	७|२९	९|४३	१२|५	१४|२५	१६|४५	१९|७	२१|२७	२३|३१	१|१३	२|३९	४|१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७|२८	९|४३	१२|४	१४|२५	१६|४५	१९|७	२१|२६	२३|३०	१|१२	२|३८	४|१	५|३४
२	७|२४	९|३९	१२|०	१४|२१	१६|४१	१९|३	२१|२२	२३|२६	१|८	२|३४	३|५७	५|३०
३	७|२०	९|३५	११|५६	१४|१७	१६|३७	१८|५९	२१|१८	२३|२२	१|४	२|३०	३|५३	५|२६
४	७|१६	९|३१	११|५२	१४|१३	१६|३३	१८|५५	२१|१४	२३|१८	१|०	२|२६	३|४९	५|२२
५	७|१२	९|२७	११|४८	१४|९	१६|२९	१८|५१	२१|१०	२३|१४	०|५६	२|२२	३|४५	५|१८
६	७|८	९|२३	११|४४	१४|५	१६|२५	१८|४७	२१|६	२३|१०	०|५२	२|१८	३|४१	५|१४
७	७|४	९|१९	११|४०	१४|१	१६|२१	१८|४३	२१|२	२३|६	०|४८	२|१४	३|३७	५|१०
८	७|०	९|१५	११|३६	१३|५७	१६|१७	१८|३९	२०|५८	२३|२	०|४४	२|१०	३|३३	५|६
९	६|५६	९|११	११|३२	१३|५३	१६|१३	१८|३५	२०|५४	२२|५८	०|४०	२|६	३|२९	५|२
१०	६|५२	९|७	११|२८	१३|४९	१६|९	१८|३१	२०|५०	२२|५४	०|३६	२|२	३|२५	४|५८
११	६|४७	९|२	११|२३	१३|४४	१६|४	१८|२६	२०|४५	२२|४९	०|३१	१|५७	३|२०	४|५३
१२	६|४३	८|५८	११|१९	१३|४०	१६|०	१८|२२	२०|४१	२२|४५	०|२७	१|५३	३|१६	४|४९
१३	६|३९	८|५४	११|१५	१३|३६	१५|५६	१८|१८	२०|३७	२२|४१	०|२३	१|४९	३|१२	४|४५
१४	६|३५	८|५०	११|११	१३|३२	१५|५२	१८|१४	२०|३३	२२|३७	०|१९	१|४५	३|८	४|४१
१५	६|३१	८|४६	११|७	१३|२८	१५|४८	१८|१०	२०|२९	२२|३३	०|१५	१|४१	३|४	४|३७
१६	६|२७	८|४२	११|३	१३|२४	१५|४४	१८|६	२०|२५	२२|२९	०|११	१|३७	३|०	४|३३
१७	६|२३	८|३८	१०|५९	१३|२०	१५|४०	१८|२	२०|२१	२२|२५	०|७	१|३३	२|५६	४|२९
१८	६|१९	८|३४	१०|५५	१३|१६	१५|३६	१७|५८	२०|१७	२२|२१	०|३	१|२९	२|५२	४|२५
१९	६|१५	८|३०	१०|५१	१३|१२	१५|३२	१७|५४	२०|१३	२२|१७	२३|५९	१|२५	२|४८	४|२१
२०	६|११	८|२६	१०|४७	१३|८	१५|२८	१७|५०	२०|९	२२|१३	२३|५५	१|२१	२|४४	४|१७
२१	६|६	८|२१	१०|४२	१३|३	१५|२३	१७|४५	२०|४	२२|८	२३|५०	१|१६	२|३९	४|१२
२२	६|२	८|१७	१०|३८	१२|५९	१५|१९	१७|४१	२०|०	२२|४	२३|४६	१|१२	२|३५	४|८
२३	५|५८	८|१३	१०|३४	१२|५५	१५|१५	१७|३७	१९|५६	२२|०	२३|४२	१|८	२|३१	४|४
२४	५|५४	८|९	१०|३०	१२|५१	१५|११	१७|३३	१९|५२	२१|५६	२३|३८	१|४	२|२७	४|०
२५	५|५०	८|५	१०|२६	१२|४७	१५|७	१७|२९	१९|४८	२१|५२	२३|३४	१|०	२|२३	३|५६
२६	५|४६	८|१	१०|२२	१२|४३	१५|३	१७|२५	१९|४४	२१|४८	२३|३०	०|५६	२|१९	३|५२
२७	५|४२	७|५७	१०|१८	१२|३९	१४|५९	१७|२१	१९|४०	२१|४४	२३|२६	०|५२	२|१५	३|४८
२८	५|३८	७|५३	१०|१४	१२|३५	१४|५५	१७|१७	१९|३६	२१|४०	२३|२२	०|४८	२|११	३|४४
२९	५|३४	७|४९	१०|१०	१२|३१	१४|५१	१७|१३	१९|३२	२१|३६	२३|१८	०|४४	२|७	३|४०
३०	५|३०	७|४५	१०|६	१२|२७	१४|४७	१७|९	१९|२८	२१|३२	२३|१४	०|४०	२|३	३|३६
३१	५|२६	७|४१	१०|२	१२|२३	१४|४३	१७|५	१९|२४	२१|२८	२३|१०	०|३६	१|५९	३|३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, इससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्र०	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२४	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्र०	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।७	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५२	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।२	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, इससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।४	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२७	१३।४८	१५।२३	१७।१७	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१९	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	[illegible]	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२३
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१९
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है. उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्न सारिणी देखने की रीति

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेलवे व्यावहारिक ढंग से किये गये हैं जैसे रात के १ को १ लिया गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खत्म होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की सन्धि में एक आध मिनट का कहीं कहीं अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो, उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्नसारणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवें, शेष घण्टा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्नमान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट जानें। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो, उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सेकेंड एक नवांश का मान होगा। तुम्हें जो नवांश लेना हो, उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों, उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुए के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़ तो ९३ मिनट हुए। अर्थात् मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सेकेण्ड एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारंभकाल का ज्ञान करना है। यहाँ मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुए, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेण्ड) को ४ से गुणा किया, तो ४१ मिनट २० सेकेण्ड हुआ। इस (४१ मिनट २० सेकेण्ड) को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेण्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भकाल हुआ। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सेकेण्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सेकेण्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सेकेण्ड हुआ। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विवाह यज्ञोपवीत गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्तों में उपयुक्त सूक्ष्म विधि से सिद्ध किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमानं च युतं भुजाभ्याम्॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभवतनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो, तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्ण पक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द करण" से जानें।

अथ प्रसूतिलग्नविचारः

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त चिचिनालय भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन-सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्न सारिणी देखने की रीति

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेलवे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं जैसे रात के १ को १ लिया गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खत्म होकर कन्या लग्न शुरु हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की सन्धि में एक आध मिनट का कहीं कहीं अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो, उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्नसारणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवें, शेष घण्टा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्नमान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट जानें। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो, उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सेकेंड एक नवांश का मान होगा। तुम्हें जो नवांश लेना हो, उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों, उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुए के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़ तो ९३ मिनट हुए। अर्थात् मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सैकेण्ड एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारंभकाल का ज्ञान करना है। यहाँ मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुए, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेण्ड) को ४ से गुणा किया, तो ४१ मिनट २० सेकेण्ड हुआ। इस (४१ मिनट २० सेकेण्ड) को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घं० १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेण्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भकाल हुआ। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सेकेण्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सेकेण्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सेकेण्ड हुआ। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विवाह, यज्ञोपवीत, गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्तों में उपयुक्त सूक्ष्म विधि से सिद्ध किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमानं च युतं भुजाभ्याम् ॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो, तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्ण पक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द करण" से जानें।

अथ प्रसूतिलग्नविचारः

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्रालय भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन-सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन से बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैर्ऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमचुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया छींक भी किया, दीर्घकेश, घरके पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक दीर्घवर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया. और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।२८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला, भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, २ स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मानन्तर देरी से रोया, के हावे उनका औंधा करके उपसूतिकाओं में जोड़न ने ठीक [illegible]
ज्ञान होगा। इस में भी विशेष ग्रह स्थान में [illegible]

शान्तिहवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्षज्ञानम्—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय
रविस्थान में दीप कही शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैर्ऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादिविचारः

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से बनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए। दो०—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो, तो बहुत ही कम तेल कहना। सो०-तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीपक तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नान्तर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा [illegible]
[illegible] उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्र दृष्टि तापर परे

समय स्त्री २ या ५ दीपक हाथ में उठाया व जलाया [illegible] ... लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा

के हावें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रहने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडकाल्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो तो वहां सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के पद् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वाम कर्ण वा मस्तकं अवश चिह्न दरशाहु॥ सहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांच भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

बालारिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशीजो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यमलीन।
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसे त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरुसह अज, दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तन मुख बिस्वाबीस। पापग्रहयुत लग्नपति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसे कारागार।

तो जाना सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीव (नपुंसक) योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जान। शुक्र भवन ते रिष्फ षट बस क्लिव भानु॥

कुष्ठयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह बरणत गुणी सचेतु।॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कहु कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलेजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परे ग्रह कोय॥ केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमलजन्मयोगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हो तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिनका लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिए किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातःसूर्योदय से पहिले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे,। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे तब कष्ट को मिटाता है।

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दशांस्य घटिकाषष्ट्या भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह घड़ियां नन्दा, भद्रा जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घटयादि मान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जान ।

तीस का यन्त्र

१६	५	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१ क्रूरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखा	दु:खी	रोगी	सकाम
धन	२ धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३ नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४ दु:खी	सुखभोगी	दु:खी	सुखी	सुखी	सुखी	दु:खी	मातृहा	दु:खी
सुत	५ सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६ शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	७ स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु	८ अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	९ दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	१० शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिवान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ	११ धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	१२ दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दु:खी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१ क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दु:खिता
धन	२ दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दु:खिनी	दरिद्रा	दु:खार्त्ता
सहज	३ सुपुत्रा	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत	४ सपीड़ा	दुर्भगा	दु:खार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत	५ विपुत्रा	सपुत्रा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६ सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुत
पति	७ दु:खार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दु:खिता	विधवा
मृत्यु	८ विधवा	रोगिणी	विधर्मी	कुलघ्ना	सरोगा	विमुखा	दु:खिनी	विधवा	दु:खिनी
धर्म	९ धर्मज्ञा	सुखिनी	दु:खिनी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वन्ध्या	वन्ध्या	[illegible]
कर्म	१० सुकर्मी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथमातृसुखनाशयोगः—(१) पापग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो ; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाशयोगः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाशयोगाः— भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संगत्रिक होय ।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

सन्तानसुखनाशयोग

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र को हान ।

रोगिणी स्त्रीयोगा :—शुक्र और सूर्य सप्तम पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल । जिनके बुध भृगु राहु संग सप्तम भाव विराज । लहें सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज ।

जारजयोग :—भानु चन्द्र तनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है परपुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुल गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।८।१२ स्थान में [illegible]

हैं भूलि न ब्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमें बसे [illegible] होय [illegible] । लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु ॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच । सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहें कुज नीच ॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और । पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर ॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि । सप्तम कुज रण्डा कहैं पति को तजे तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग । भौम आठवें भवन में सो पति करि हैं भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन । ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम । राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम । पाप ग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द । सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि । रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि ॥

वैधव्यविषकन्यायोगा :—चौ० रविवार द्वितीया, जो होय । श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार ॥ साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शत-भिषा मंगलवार । कहो द्वादशी तिथि निर्वार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय । निश्चय विधवा जानो सोय ॥४॥ जन्म लग्न द्वैशुभ ग्रह होय । एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो । ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय । मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार । साते तिथि लीजो निर्वार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय । नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥१०॥ ऐसो योग कबि जो परे । सो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान । सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्यविषकन्याभंगयोगाः—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय । अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादियोगाः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या । मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या । अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई-केन्द्रधाम नभगा शुभ होई । नरतनु पाय कलत्र समोई । रानी होय बहुत धन ताके । मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुग बसे तनु जाई । लाभ धन गुरु आवें धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी । जन विख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई । शशि दृग केन्द्र भवन में होई । ऐसे योग जन्म सुकुमारी ॥ रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर । पुत्र पौत्र धन भूर युत ताको पति नृप धूर । लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन । सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचारः—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि । केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत ॥

स्त्री आदि के लिए अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, बैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण

करे, तो शुभ रहे।

त्रिखलजन्मफल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते है, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चाँदी, सोना, ताँबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शांति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९ में धनी, १० वें में सुख, ११ वें में सुख, १२ वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते है कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक को अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुख	कण्ठे	हृदये	बाहुः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वाः	पादे	स्थानम्
४	६		५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयावं	कामिनी	सातना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ चं०)
फलम्	(१।२।३ चं०) श्वसुरहानि	२।३।४ चं०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः । तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः ॥

तिथिगण्डान्त—पूर्ण तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी । आश्लेषा । मघा । ज्येष्ठा । मूल । रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	"	मातृनाश	३	"	मातृनाश
३	"	धननाश	२	"	धननाश
४	"	शान्ति से सुख	१	"	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा, आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुशलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे कृपुले महादोषकरं भवेत्। शुभग्रहसमायोगे [illegible] भवेत् ॥ दिनशुद्धे [illegible] ।

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥
बालकम्बापितृस्नान विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम् ॥
विरुद्धावयवे मूल विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममाप्सुभिः ॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय म मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये०	मू० श्ले०	रे० अश्वि०	फल
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापादफलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों

कृष्ण चतुर्दशी जन्मफलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुलहानि	कुलनष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जानें, अशुभ हो तो शान्ति करे। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होता है। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों, कुहू—जिसमें चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

बालकष्टावली

प्रत्येक मंत्र को २१ बार पढ़े और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय	स्नान पूजामार्जनमन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, खेद, मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, श्वेतभात,५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ४ आट के सतिये,	५ पूर्णपोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्चरुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई,खस,आक के फल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब पत्र, गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथपैर अकड़ना, संकोच, दांतचबाना, नेत्रखुले, नेत्ररोग, भय, कृशता।	एक सेर चावल का आटा	कपूर, लोबान, १० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलके आटे के सतिये १०, रक्तचन्दन, रक्त-पुष्प, श्वेतध्वजादीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	भात, १ सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम में चौरास्ते पर रखना	ॐ नमश्चामुण्डाय विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टा ग्रहां गच्छन्त्वत स्थानद्रु दाजायां स्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हडफूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावल का आटा		१ सेर लालभात, आधसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमण्डिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेत ध्वजा ५ दीपक मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात १सेर, आटे के पूड़े आधसेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन, गोशृंग सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	एक सेर चावल का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रं ह्रूं मुंचरक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठ चामुण्ड सर्वारिचण्डिके ठः ठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड्फूटन, हंसना, कभी२ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, एक पहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना।	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा।	भात, ७ पूड़ियाँ, सायंकाल पश्चिम में चौरस्ते पर मौन होकर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झन्डी, ५ दीपक।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चन्दन, पुष्प ५, दीपक५, रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्य,मांस, पापड़ी,सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलि मादाय हन्हनुहुं फट्स्वाहा	गोशृंग,लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल,राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड्फूटन,शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना	ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड्फूटन, मखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प २५, दीपक २५, सफेद झण्डी २५, आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७पूड़े, सुहाली ७ सायं को प्रातः दक्षिण में चौरस्ते पर रखना।	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्राहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरस्ते पर रखना।	ॐनमोनारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहनशोषय २ मर्दय२ शोषय २ हूं३ हन २ दुष्टानां ह्लं ह्लं फट् स्वाहा।	

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम्

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा। तद्विष्णुपूजा कर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक्। पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यादतुलं धनञ्च ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्त्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भङ्ग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध. गुग्गुलधूपघृतदीप मोदक गुड़ नैवेद्य	कमलपुष्प क्षीर	घृत-गुडौदन खण्ड यवाज्य	सुवर्णवृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐअश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥१॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग ज्वर आलस्य छर्दिरोग।	तीव्र-अगरगंध धूप घृतदीप	करवीरपुष्प गडौदन नैवद्य	घृतगुग्गल कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत शर्करा	गोमहिषीघृत छायापा ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वा-सवितामध्वानक्तु। पृथिव्याः संस्पृशस्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोऽसि। ॐयमाय नमः।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्.	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध धूप घृतदीप	जुहीपुष्प तिलमाषान्नवडाधीकानैवेद्य	घृतगुग्गल पायस	तिल घृतयव	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पति पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति। ॐअग्नये नमः॥३॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीड़ाकुक्षि शूरशिरःपीड़ा प्रलाप	श्वेतचंदनगंध धूप घृतदीप	कमलपुष्प पायस नैवेद्य	दशांग- मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यान्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णगोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमपुरस्ताद्विसीमितः सुरुचोवेनआवः। सुबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च-योनिमसतश्च विव्वः। ॐब्रह्मणे नमः॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध. धूप घृतदीप	कमलपुष्प पायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दशांग दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधितण्डल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐइमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमहते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यविशएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा। ॐचन्द्रमसे नमः॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्वमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेत चंदनगंध धूपघृतदीप	सौरभपुष्पदशांग पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभकृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवउतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः॥ ॐरुद्रायनमः॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदितिः)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्धधूपघृतदीप पीतवर्णान्न	साज्य- घृताक्त पीततण्डुल नैवेद्य	घृत तण्डुल	वस्त्र	स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐअदितिरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वदेवा अदितिःपंचजना अदितिर्जातमदितिजनित्वम्। ॐअदितये नमः॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल महाकष्ट	कुंकुमगन्ध धूपघृतदीप	कमलपुष्प घृतपायसशर्करा नैवेद्य	घृतगुग्गुल- समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐबृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐबृहस्पतये नमः॥८॥	१० हजार

आश्लेषा ० ० ४१ ० पटोल- सर्वाङ्गपीडा पा. कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत हवि शर्करा सवत्साकृष्णगौ ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु येअन्तरिक्षे

आश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वाङ्गपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐनमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु येअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्र पीड़ा तथा शिर पीड़ा	श्वेतचन्दनगन्ध चम्पकपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरःशुन्धध्वम्। ॐपितृभ्योनमः।	१०ह०
पू. फा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि मूलम्	ज्वर शिरपीड़ा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालती पुष्प घृत बिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतोदन पायस	प्रियंगु कंगनी तिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदान भोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्न० भगप्रणोजनगो गभिरश्वर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम ॥ ॐ भगायनमः ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल शिरशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्यं	घृतशर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐ देव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रम्। ॐ अर्यम्णे नमः ॥१२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा उरु शूल सर्वाङ्ग पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृत नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्रा० भोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्। वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति। ॐसवित्रे नमः ॥	हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव-मूलम्	विचित्रानेक-रोग, अतिकष्ट	केसर अगरगन्ध विचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गलधूपघृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्यतिलगुड़ तण्डुल	विचित्र वृ. प. छा. पा. ब्रा. भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौर्नवयोदधुः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥१४॥	१०० हजार
स्वाती. (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति-मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगन्धदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि नियुत्वान् सोमपीतये ॥ ॐवायवे नमः ॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इंद्राग्नी)	१५	०	४	१३	गुञ्जा-मूलम्	कुक्षिशूल सर्वाङ्गपीड़ा	चन्दनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्र कृ. वृ. छायापा. दा. ब्रा. भो.	ॐइन्द्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् अस्यपात धियाषिता॥ ॐइन्द्राग्निभ्यां नमः ॥	१० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिरपीड़ा	केसरगन्ध कमलपुष्प चन्दन धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड़ यवाज्य	स्वर्णगोछाया पात्र दान ब्रा० भोजन	ॐनमोमित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महादेवाय तदृतं सपर्यत दूरदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत ॥ ॐमित्राय नमः ॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५५	९	६	४	अपामार्ग मूलम्	व्याकुलता पित्त रोगकम्पन	श्वेतचन्दन गंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन सुपुष्प	तण्डुलतिल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्रा० भोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सहवंशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ शक्राय नमः ॥१८॥	१० हजार

मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दरा मूलम्	उदरतथामुख रोगसन्नि-मय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृत-सहवि कृष्णागुरुधप माषमिश्रान्न-नैवेद्य	माषान्न घृत कन्दमल	स्वग व. कु. गोछा पात्र दा. कु. पू. वि	ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वीपुरीष्यमग्नि स्वेयीनाव भारुखा। ताविश्वदेवऋतुभिः संवदानः प्रजा-पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिर्ऋतये नमः ॥१९॥	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पासि मूलम्	शिरपीड़ाकम्पन महाकष्ट	श्वेतचंदन गंधकमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप दीप घृत पायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्ठान्न घृत	तिलतण्डुल स्वर्णादि. ति.त.ज. कु. गो. दा. ब्रा. भो.	ॐअपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यं सुव ॥ ॐअद्भ्योनमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवाः)	३०	२४	२६	१६	कार्पासि मूलम्	उरुजल कटि-पीड़ा प्रलाप	श्वेतचन्दन गन्धकमलपुष्प घृतगग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविषा. तिलाज्य	आमान्नस्वर्णदान तिलाज्य यव ब्राह्मण भोजन	ॐविश्वेदेवाः शृणुतम हवंयम अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठाय अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयध्वम्। ॐविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवणः (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वाङ्ग पीड़ात्रि. भय	श्वेतचन्दनगन्धमालतीपुष्पकर्पूरगु. धूप घृतदीपषड्रस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि पायस	तिलाज्य स्वर्णगोछायापा. यवं ब्राह्मण भोजन	ॐविष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। ॐविष्णवे नमः॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृङ्गराज मूलम्	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचन्दन गन्ध कमलपुष्प गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. तिलाज्य पूपतिपि पायस	छत्रोपानत्अश्वस्त्र गो. दा. ब्रा. भो.	ॐवसोःपवित्रमसि शतधारं वसोःपवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोःपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॥वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल मूलम्	सन्नि पातभय वातज्वर कष्ट	केसर अगरगन्ध कमलपुष्प कर्पूर चं. घृत. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	आज्य चित्रान्न	स्वर्णतिलान्नघट दध्योदन छायापात्र गोदान कु. पू. ब्रा. भो.	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसियसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतज्ञसदन्यसि वरुणस्य-ऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद ॐवरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजकपाः)	०	१२	२१	११	भृङ्गराज मूलम्	शरीरपीड़ार्ति व्याकुलतावमन	केसरचन्दनगन्ध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधप घृतदीप दधिपायस नैवेद्य	दध्योदन क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजतअन्नश्वेत छ. पात्र. दान ब्रा. भोजन	ॐउतनो हिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी-समुद्रः। विश्वेदेवाः ऋतावधीनहुवानः स्तुतामंत्रा कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः।	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्यः)	१०	२	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामला रोग	चन्दनकर्पूरगन्ध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुल धप घतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य स्वर्ण रजत तिल यव कृष्णवस्त्र दान ब्रा. भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिंसीः। निवर्तयाम्यायषेऽन्नाद्याय प्रजननायसयस्पोषायसुप्रजास्त्वा-यसुवीर्याय। ॐअहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हजार
रेवती	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ	[illegible]	[illegible]पुष्प घृतगुग्गुल	सहवि	तिलाज्य रजत[illegible]	ॐ[illegible]	५

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता (४।९।१४) आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त व पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ३ ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हाँ, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान, तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	उ. फा.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा:
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	भा.	अश्वि	रो.	मध्या:
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या:

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोगत्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०-१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़ा) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयंत्र

ॐ

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यन्त्र सिद्ध कर लेवे फिर लिखकर देना शुरू करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिखकर आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान	
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्राकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि	उत्तमान्नभो.

वारकष्टावलीयन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
च.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के सिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

ग्रहगोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्था															जपनीय मन्त्राः	समय-समिधः	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहुं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्यायनमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रायनमः	सन्ध्या	पला १४
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी	रक्तबल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदाँत	कर्पूर	शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सःशनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुश।
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मसरी	श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुथेशवत्	ॐ मुन्थेशमंत्रः	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधैः रोगा नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचंदन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	बमनी	गजदन्त	गजदन्त
खस	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लौं		
रक्तकनेर								

शनिविचारः—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्याधिं बन्धुविरोधदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं, लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः, नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्धसून्पीडयेत् । हानिः स्थान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऽऽद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उदड़ १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तंदुल) ६, कंकनी ७

अष्टागन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कर्पूर, दोनों चन्दन ।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवती (छुई-मुई), कूट, खिला, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सर्वौषधिक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा [illegible]

की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम, तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

॥ देश-भेद से दशानिर्णय ॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा । कृष्ण चन्द्रस्य होरायां रात्रावष्टोत्तरी मता ॥
अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥१॥

अर्थ—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, युक्तप्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है, किन्तु विशेष निर्णय में तथा समय के फल विकास कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी । कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना । अन्यथा योगिनी दशा में विचार करना ।

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे । यदि १।५।९ पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो । ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे । ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे । २।८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है ।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

॥ श्रीरामायणादि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि लाभप्रद, २४ तक मृत्यु, राजभयप्रद, २७ तक मोक्षप्रद होता है । शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थ [illegible]

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधचक्रम्

ग्रहः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोकः	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनलाभ	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी.	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैर	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथग्रहाणामेकगेभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के.	ग्रहाः
मा.१	दि.२।	मा१॥	मा१	मा.१२	मा.१	मा३०	मा.१८	एकर्क्षभोगः
आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमयः
दि.५	घ. ३	दि. ८	दि.७	मा.१	दि.७	मा.	मा.६	गंतव्यराशेः प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्टयर्थं धारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालः	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैडूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. मं. बृ.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. म. चं	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	म. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	० ०	बु.	चं	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

शनि यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यह यन्त्र शनिवार को भोजपत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्लाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैयाकी दुःखद पीड़ा नहीं होती। अथ शनैश्चरपादविचारः—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनि रुद्रे षड्सुवर्णहानिः) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना, फल-हानि॥ यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना, फल-शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना, फल-कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना, फल-शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्र शुभञ्च) अथ सुवर्णपादफलम्—कुटुम्बरोगं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम्॥ अथ रजतपादफलं—व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पन्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मङ्गलं वै यदि रौप्यपादे ॥२२॥ अथ ताम्रपादफलं—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे ॥३॥ अथ लोहपादफलं शरीरपीड़ां रुधिरप्रकोपं कलत्रपीड़ां पशुपुत्रपीड़ां। व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम् ॥४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखराज	मध्येसू मणि	दे. भौम मूँगा
वा. केतु वैडूर्य	प. शनि नीलम	नै. रा. गोमेद

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाद दृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनानि
कृ. उ. फा. उ.षा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ. पू.फा. पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. बृ. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ. ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु.	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊपर	ऊपर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	बिवर	बिवर	स्थान

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट का जोड़ योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पाराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्टकाल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करे। पल १४५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्धि आवे वह चार गुणी की हुई इष्ट घड़ी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष पल रहे उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घड़ी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना, शेष राशि अंश बचे उन में स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि में हो तो ज्यों के त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

भावी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यानपूर्वक देखकर कापी में लिख रखें, यदि इन दोनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्र में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढ़ा से पुनर्वसु, उत्तराषाढ़ा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद से उ. फा., उ. भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाती और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सब जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचारपूर्वक अपने पास नोट कर लें जिससे वर्षा का अन्दाज ध्यान में रहे॥

(२) माघशुक्लसप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादल से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास का निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघगर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूरी होती है।

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटें बिजली वा वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली के छींटे न हों, मृगशीर्ष तपता हो तो वर्षा काल में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है।

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा-बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है अतः कृत्तिका में सूर्य में बूंदा-बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है॥

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिए, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खेंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिए, रोहिणी में बूंदा-बांदी होने पर वर्षा की खेंच जरूरी होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का अवसर तो पहिले होता ही है।

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर में आती है और कम भी होती है॥

यात्रा में अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।
एक सूद्र दो बैस असार। तीनि विप्र औ छत्री चार।
सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार॥
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटै भूमि पर॥
तौ निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानिये॥
बैस पाँच षट् स्वान, एक बैल यक बकरा जान॥
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलै मति करौ पयान।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि ते दूरि निकट ते निकट, समझौ फल भरपूर॥

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहाँ कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहाँ वर्षा न होवे । जैसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी में सूर्य के प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है । सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ । वायु से राजाओं में विग्रह । थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि वर्षा अधिक हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है । उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी । अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दशा में वर्षा की कमी । निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है ।

वर्षा ज्ञानसारिणी

मास																															
दिसम्बर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून जुलाई	जू. १४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	जु. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई अगस्त	जु. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	–	–	–
अगस्त सितम्बर	अ. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सि. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितम्बर अक्टूबर	सि. १२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	–
अक्टूबर नवम्बर	अ. १३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	न. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञानसारिणी से वर्षा जानने की रीति—दिसम्बर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन-जिन तारीख में जहाँ वर्षा होती है उसके हिसाब से ही ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चारों मासों में वहाँ वर्षा प्रायः हुआ करती है । प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है । जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षाऋतु में वहाँ २ जुलाई को वर्षा होगी । इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारिणी यह बता देगी कि वर्षाऋतु में वहाँ २९ जुलाई को वर्षा होगी । इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी । इसमें ज्योतिषशास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन २ तारीखों में शतभिषा, श्लेषा, मघा, स्वाती, आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और इन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारिणी में आकर पड़ेंगी उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जल वाले माने जाते हैं । इसी प्रकार शीतकाल में जिन २ तारीखों में पू. भा. उ. भा. पू. फा. उ. फा. रोहिणी ये पाँच नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो तो आगे वर्षाऋतु में जिन महीनों की जो तारीख सारिणी में पड़ेगी [illegible]

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़कर अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब, बन वा शिव-मन्दिर में जाकर वहाँ मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यन्त्र बनाकर उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य आदि से पूजा करे । (मेघों के नाम और आवाहन मन्त्र) ॐ ह्लीं मेघदूतायनमः आगच्छ२ स्वाहा॥१॥ ओं ह्लीं मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्लींमहानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा॥३॥ ॐ ह्लीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्लीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्लीं कुम्भराजाय वामश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ२ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्लीं नन्द-राजाय दक्षिणश्रृङ्गमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभिमात्र जलमें खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मन्त्र को १०००-१००० बार जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मन्त्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे । अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग—"ॐनमो हनवन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी· मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सतखण्ड जापसी" । अति वर्षा के समय इस मन्त्र का ७-७बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जावे । इसी मन्त्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा करदे तो वर्षा बन्द हो जावे । मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले ॥

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्र—ॐ तत्स-वितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि [illegible]

राशिज्ञाने विशेष:

राशिज्ञाने विशेष.

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहिला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे [1]नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.
प्रथमचरण	चु	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की		०	हि	डा	डो	मे	टू	०

राशयः	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गो	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	च
चतुर्थ च०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यु	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक्[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः— वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वाँ भाग जोड़कर उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि क विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़ कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है। (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधानकल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नेपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मंगाइये। १।) रु०।

नक्षत्रविषघटीज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिए। क्योंकि 'नक्षत्रगुणज्ञानचक्र' में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनको स्पष्ट ऐसे करना, यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिनके सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्रके ध्रुवांक को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है। इनको भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले बस इसी समय स विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देनेसे लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात २७।३०से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

टिप्पणी—(१) जज्ञोञः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं ध्यालारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा-ऋषभदेवः, ऋतकरामः, कृतरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मेखलोन्मोक्षौ विवाहः षोडशी क्रिया ॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघुभ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उसपर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ० शे। द×मं.=यो. शे.—यो.=शे.) शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(३) लग्नेश तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना— (१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि या गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इसके साथ वाला ग्रह, सुखस्थ ग्रह, चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह, इनमें जो माता के लिए विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट जानना।

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहाँ कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहाँ वर्षा न होवे । जैसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी में सूर्य के प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है । सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ । वायु से राजाओं में विग्रह । थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि वर्षा अधिक हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है । उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी । अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दशा में वर्षा की कमी । निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है ।

वर्षा ज्ञानसारिणी

दिसम्बर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जुलाई	जु.																	जु.													
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई	जु.																	अ.													
अगस्त	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त	अ.																	सि.													
सितम्बर	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितम्बर	सि.																			अ.											
अक्टूबर	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर	अ.																			न.											
नवम्बर	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञानसारिणी से वर्षा जानने की रीति—दिसम्बर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन-जिन तारीख में जहाँ वर्षा होती है उसके हिसाब से ही ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चारों मासों में वहाँ वर्षा प्रायः हुआ करती है । प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है । जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षाऋतु में वहाँ २ जुलाई को वर्षा होगी । इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारिणी यह बता देगी कि वर्षाऋतु में वहाँ २९ जुलाई को वर्षा होगी । इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी । इसमें ज्योतिषशास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन २ तारीखों में शतभिषा, श्लेषा, मघा, स्वाती, आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और इन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारिणी में आकर पड़ेंगीं उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जल वाले माने जाते हैं । इसी प्रकार शीतकाल में जिन २ तारीखों में पू. भा. उ. भा. पू. फा. उ. फा. रोहिणी ये पाँच नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो तो आगे वर्षाऋतु में जिन महीनों की जो तारीख सारिणी में पड़ेगी उनमें वर्षा किसी की वर्षा की कमी रहेगी । वर्षाज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीखवार तालिका सहित नोट करके देखने से

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़कर अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाव, वन वा शिव-मन्दिर में जाकर वहाँ मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यन्त्र बनाकर उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य आदि से पूजा करे । (मेघों के नाम और आवाहन मन्त्र) ॐ ह्रीं मेघदूतायनमः आगच्छ२ स्वाहा॥१॥ ओं ह्रीं मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रींमहानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा॥३॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ२ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणश्रृङ्गमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभिमात्र जलमें खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मन्त्र को १०००-१००० बार जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मन्त्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे । अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग—"ॐनमो हनवन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सतखण्ड जापसी" । अति वर्षा के समय इस मन्त्र का ७-७बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फंक मारने से अतिवर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जावे । इसी मन्त्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा करदे तो वर्षा बन्द हो जावे । मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले ॥

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्र—ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि [illegible]

राशिज्ञाने विशेष:

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहिला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे [1]नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की		०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	च
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक्[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाश्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः— वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वाँ भाग जोड़कर उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि क विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़ कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थं यहां लिखा गया है। (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राष्ट्रभिधानकल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नेपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मंगाइये। १।) रु०।

नक्षत्रविषघटीज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिए। क्योंकि 'नक्षत्रगुणज्ञानचक्र' में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनको स्पष्ट ऐसे करना, यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिनके सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्रके ध्रुवांक को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है। इनको भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले बस इसी समय स विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देनेसे लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात २७।३०स ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

टिप्पणी—(१) जज्ञोञः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं श्यालारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा-ऋषभदेवः, ऋतकरामः, लृतरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मेखलोन्मोकौ विवाहः षोडशी क्रिया॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघुभ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उसपर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ० शे। द×मं.=यो. शे.—यो.=शे.) शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(३) लग्नेश तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना— (१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इसके साथ वाला ग्रह, सुखस्थ ग्रह, चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह, इनमें जो माता के लिए विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट जानना।

राशियां	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	कारोबार उत्तम, अचानक चिन्ता, बन्धुकष्ट, राजपक्ष शुभ, वायुविकार ।	कारोबार में गड़बड़ी, मित्र से अनबन, शुभ में व्यय, लाभ कम, रक्तविकार ।	आर्थिक सुधार, बन्धुओं से कलह, सम्पत्ति की चिन्ता, शुभ कृत्यों में रुचि ।	लाभ उत्तम, मंगल कृत्य में खर्च, राज्य में मान, धार्मिक कृत्यों में अभिरुचि ।	शत्रुनाश, वायुविकार, किसी बन्धु या पुत्र की चिन्त व्यवसाय में कुछ सुधार ।	स्त्री से सन्तोष, कारोबार से लाभ, मित्र बन्धु सुख, राजपक्ष शुभ, रोगभय ।
वृष	विशेष खर्च, स्वास्थ्य मध्यम, व्यवसाय श्रेष्ठ, बड़ों से मतभेद, मित्र से सन्तोष ।	स्वास्थ्य ढीला, बन्धुचिन्ता, पड़ोसियों से विवाद, लाभ अच्छा, शुभ विचार ।	बन्धुकष्ट, किसी के परामर्श से लाभ, राजपक्ष शुभ, पुत्रचिन्ता, शत्रुनाश ।	मित्र बन्धु मिलाप, रक्तविकार, लाभ मध्यम, मकान की चिन्ता, रोगभय ।	यात्रा में भय, क्रोध अधिक, मन अस्थिर, कारोबार कुछ ठीक, उदर विकार ।	मित्र-समागम, सन्तति चिन्ता, विवादभय, लाभ कम, [illegible] या उदर में पीड़ा ।
मिथुन	लाभ मध्यम, स्वास्थ्य में खराबी, राजपक्ष शुभ, मानवृद्धि, यात्रासुख, मित्र मिलाप ।	कारोबार में उलट फेर से रंज, लेन-देन की चिन्ता, मासान्त में अच्छा लाभ ।	निजी व्यवसाय में उलझन, लाभ से खर्च अधिक, सन्तान-सुख, गुप्त चिन्ता ।	धर्म कृत्य से पुण्यलाभ, स्वजनों से विरोध, सन्तति-चिन्ता, लाभ कम ।	स्वास्थ्य मध्यम, लाभ व्यय समान, स्त्री व बन्धु जनों की चिन्ता, मानवृद्धि ।	प्रिय व्यक्ति को कष्ट, वृथा व्यय, हैरानी, मास के मध्य में लाभ अच्छा, चित्त उदास ।
कर्क	उदर विकार, स्त्री चिन्ता, शुभ विचार, कारोबार में लाभ, कोई कार्य सिद्ध हो ।	स्त्री पुत्र द्वारा खर्च, लाभ से खर्च विशेष, कार्य-सिद्धि में विघ्न, रक्तविकार ।	स्वास्थ्य की चिन्ता, महापुरुष-समागम, लाभ मध्यम, स्थानान्तर गमन ।	लाभ अच्छा, अकस्मात् भारी खर्च, चोट का भय, स्त्री-पुत्र चिन्ता, नेत्र व सिर में कष्ट ।	धर्म में रुचि, वाहनभय, नीच से विवाद, स्त्री से सन्तोष, यात्रा कष्ट, दुःस्वप्न ।	शत्रुनाश, कारोबार शिथिल, भृत्य व पशु की चिन्ता, आकस्मिक यात्रा ।
सिंह	मित्रमिलाप, शत्रुभय, बन्धुकष्ट, व्यर्थ व्यय, कारोबार ठीक, पशुलाभ ।	शत्रुओं से सावधान, कारोबार से लाभ की नई सूझ, स्वजनों से मन मुटाव ।	शत्रुनाश, शुभ कृत्य का विचार, व्यवसाय अच्छा, कार्य-सिद्धि, वृथा चिन्ता ।	वायुपीड़ा, सन्तान की चिन्ता, राजपक्ष शुभ, कारोबार मध्यम, धर्म में रुचि ।	वृथा अधिक व्यय, शत्रुभय, बन्धुवर्ग से सन्तोष, पुत्रादि द्वारा खर्च-हैरानी ।	कोष में कमी, स्वजन विरोध, व्यर्थ खर्च, कारोबार मध्यम, वायुविकार ।
कन्या	नये कार्य का विचार, सन्तति की चिन्ता, स्त्रीसुख, मित्र-संगम, लाभ अच्छा, दुःस्वप्न ।	किसी उलझन से चिन्ता, धन-लाभ, स्नेही से खुशी, कारोबार अच्छा, पशुलाभ ।	नए कार्य में असफलता, जल या अग्नि से भय, कारोबार ठीक, सन्तान कष्ट ।	सिर या नेत्र में कष्ट, स्त्री पुत्र द्वारा खर्च, कारोबार शिथिल, पशुलाभ ।	रक्त या पित्त पीड़ा, मकान आदि पर खर्च, पुत्रादि से हैरानी, शुभाशुभ में खर्च ।	लाभ में बाधा, मित्रों से बिगाड़, नेत्र या सिर में पीड़ा, गुप्त चिन्ता, शत्रुपीड़ा ।
तुला	विविध चिन्ताएं, शत्रुभय, स्वास्थ्य खराब, लाभ कम, व्यय विशेष, पशुकष्ट ।	स्वास्थ्य मध्यम, परिश्रम करने पर भी खास लाभ न हो, राजपक्ष अशुभ ।	वृथा कलह, इच्छित कार्य में विघ्न, लाभ कम, स्वास्थ्य खराब, गुप्त चिन्ता ।	किसी कुटुम्बी जन के कारण, खर्च विशेष, यात्रा में कष्ट, व्यवसायचिन्ता ।	शरीर कष्ट, बन्धुवर्ग से मन-मुटाव, बिगड़ा कार्य सुधरे, लाभ मध्यम ।	मकान या जमीन की चिन्ता, कारोबार से लाभ, सिर दर्द, राज्य से भय ।
वृश्चि.	शत्रुनाश, बड़ों से मतभेद, लाभ कम, व्यवसाय व सन्तति की चिन्ता, वायुविकार ।	उत्साहवृद्धि, कारोबार ठीक, पुत्रादि से खुशी, सोचा हुआ कार्य पूर्ण हो ।	स्वास्थ्य मध्यम, आकस्मिक यात्रा, शत्रुभय, कारोबार मध्यम, राज्य में विजय ।	उत्साहवृद्धि, किसी बड़े आदमी से विरोध, स्त्री सुख, लाभ मध्यम, उदरविकार ।	गतमास की अपेक्षा लाभ अच्छा, पशुपीड़ा, यात्रा की चिन्ता, विवाद से भय ।	लाभ से खर्च अधिक, नीच से भय, दुःस्वप्न, इच्छित कार्य में विघ्न, क्रोधवृद्धि ।
धनु	मंगल कार्यों की योजनाएं कारोबार शिथिल, कलह से हानि, स्त्रीचिन्ता ।	लाभ में विघ्न, जमीन जायदात की चिन्ता, दुष्टभय, वृथा यात्रा ।	सन्तान चिन्ता, जल या अग्नि से भय, लाभ कम, नए कार्य का विचार, यात्रा कष्ट ।	नीच से विवाद, शरीर में रोग, नए काम में हानि, लाभ में रुकावट ।	वायुविकार, पशुपीड़ा, शुभ कार्य की योजना, लाभ से खर्च अधिक, स्त्री से सन्तोष ।	चित बेचैन, कारोबार मध्यम, लाभ के नए विचार, यात्रा-कष्ट, धर्म में व्यय ।
मकर	कारोबार से लाभ कम, कुसंगति से हानि, दुष्टभय, वृथा विवाद ।	बन्धुसुख, गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, स्थानान्तर का विचार, पशुपीड़ा ।	मस्तक या पैर में कष्ट, लाभ होकर हानि, स्त्री आदि से कष्ट, पित्तपीड़ा ।	शत्रुवृद्धि, राज दरबार से भय, लाभ कम खर्च अधिक, जल से भय, उदरपीड़ा ।	सन्तति-चिन्ता, मासान्त में लाभ, मकान आदि पर खर्च, उन्नति में बाधा ।	अशुभ विचार, व्यवसाय वृद्धि के लिए दौड़-धूप, लाभ कम, गृह क्लेश ।
कुम्भ	व्यवसाय-चिन्ता, वृथा कलह, उन्नति में बाधा, नए कार्य में प्रवृत्ति ।	लाभ से खर्च अधिक, महा-चिन्ता, बड़ों से भय, एका कार्य मित्र द्वारा बने ।	अपमानभय, कारोबार में गड़बड़ी, नए-नए विचार, साधारण लाभ ।	सन्तति की ओर से खुशी, वाहनभय, कारोबार की चिन्ता, मित्र बन्धुओं से विरोध ।	उदरविकार, कारोबार कुछ ठीक, किसी के सहयोग से लाभ, शुभ विचार ।	स्वास्थ्य कुछ ठीक, लाभ होकर बाद में हानि, वृथा चिन्ता, स्त्री से हैरानी ।
[illegible]	स्वास्थ्य [illegible], लाभ अच्छा,	कारोबार ठीक, राज से मान,	अपरिचित व्यक्ति से भय	कारोबार बढ़ाने का सफल [illegible]	स्वास्थ्य मध्यम, स्त्रीचिन्ता,	सन्तति व भाइयों के [illegible]

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०१८ वि०

राशिएं	कार्तिक	मार्गशीर्ष	[illegible]	माघ	फाल्गुन	चैत्र

राशिएं	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	राज्य और स्त्री से चिंता, धर्म कृत्यों पर अश्रद्धा, लाभ मध्यम, मासांत में लाभ।	व्यापार आदि से लाभ, मान-वृद्धि, पराक्रम उत्तम, चोर-भय।	लाभ अच्छा, पुत्र व स्त्री के कारण खर्च विशेष, धोखे का भय, मित्र से विगाड़।	मास का पूर्वार्द्ध अच्छा, उत्तरार्द्ध में चिंता भय, बंधु कष्ट, शुभ विचार।	कारोबार शनैः-शनैः ठीक, किसी मित्र वन्धु के वियोग का कष्ट, धर्म लाभ।	कारोबार से लाभ अच्छा, अशुभ विचार, किसी से वैर वृद्धि, वायुपीड़ा, दुःस्वप्न।
वृष	गृहकलह, स्वपराक्रम द्वारा लाभ, चित्त उदास, कारोबार साधारण।	स्त्री की ओर से चिंता, कार्य-सिद्धि, लेन देन का विवाद, लाभ से खर्च विशेष।	स्वास्थ्य ठीक, लाभ अच्छा, मित्र बंधुओं के कारण खर्च, उत्तम भोजन लाभ।	चित्त उदास, कारोबार शिथिल, रोगभय, धर्म में व्यय, मित्र-समागम।	गतमास की अपेक्षा लाभ और सुख अच्छा, किसी की सहायता में धन व्यय हो।	शुभ कृत्यों में आलस्य, विलास-प्रियता, किसी कारण-वश लज्जित होना पड़े, लाभ कम।
मिथुन	लाभ साधारण, खर्च विशेष, स्वजातीय बंधु से विवाद, शुभ यात्रा।	लाभ श्रेष्ठ, शत्रुनाश, शुभ-समाचारश्रवण, पुत्रादि से खुशी, पशुभय।	लाभ मध्यम, खर्च विशेष, मस्तक व छाती में कष्ट, शुभ मति, नई चिंता हो।	चिंता भय, स्वास्थ्य कमजोर, लाभ कम, शुभ में खर्च, महा-पुरुषों से मिलाप।	चिंता, कष्ट में कुछ कमी, धर्म की ओर झुकाव, यात्रा का विचार, खर्च विशेष।	अकस्मात् लाभ, कारोबार सुधार की चिंता, पुत्र स्त्री द्वारा व्यय, वायुविकार।
कर्क	स्वास्थ्य श्रेष्ठ, कारोबार ठीक होते हुए भी लाभ कम, प्रिय वस्तु का वियोग।	आर्थिक सुधार, निर्मूल झगड़ा, स्थायी कार्यों में खर्च, कारोबार अच्छा।	कारोबार मध्यम, स्त्री-पुत्रादि से संतोष, अग्नि व जल से भय, मित्र मिलाप।	चोट भय, अचिंतित लाभ, धर्म में वृद्धि, मकान आदि की चिंता, दुःस्वप्न।	कारोबार की चिंता, स्त्री पुत्रों के लिए खर्च, इधर उधर दौड़ धूप, रोग भय।	राजपक्ष शुभ, लाभ अच्छा, उदर व शिर में पीड़ा, जमीन मकान की चिंता।
सिंह	चित्त में उद्वेग, शत्रुनाश, पराक्रम उत्तम, लाभ मध्यम, मित्र मिलाप।	कार्यसिद्धि, प्रिय वस्तु की चिंता, लाभ खर्च सम, यात्रा में कष्ट, अशुभ समाचार।	नये शुभ कार्य का विचार, मास मध्य भाग में लाभ, शत्रु-नाश, वायुविकार।	मन अशांत, कारोबार मध्यम, पशुपीड़ा, नये-नये विचार, सत्संग लाभ।	मास के अन्तिम भाग में लाभ, शत्रुनाश, किसी जीव के शोक से चित्त खिन्न।	प्रिय व्यक्ति के कारण व्यय विशेष, लाभ का मौका हाथ लगे, वृथा झगड़ा।
कन्या	लाभ होते-होते रुके, शुभ कार्य की चिंता, स्त्री पुत्र द्वारा हैरानी, कष्टप्रद यात्रा।	यात्रा में भय, इज्जत की चिंता, कारोबार में गड़बड़ी, पुत्र बंधु से संतोष।	पारिवारिक कष्टों के कारण चित्त चिंतित, लाभ मध्यम, कफ वायु पीड़ा।	मास के आदि भाग में लाभ, अकस्मात् चिंता, मित्र मिलाप, राजपक्ष शुभ।	स्थानांतर का विचार, लाभ मध्यम, दुष्टभय, प्रिय वस्तु की चिंता, वायुपीड़ा।	लाभ होकर फिर हानि भय, नये काम का सफल विचार, निर्मूल झगड़ा।
तुला	विवाद से कष्ट, क्रोध अधिक, गृहसुख, कारोबार वृद्धि का विचार, रोगभय।	कार्यान्तर का विचार, स्वास्थ्य श्रेष्ठ, उत्साह-वृद्धि, मासांत में कोई नई चिंता।	लाभ से खर्च विशेष, मित्र से संतोष, गुप्त चिंता, नये-नये विचार।	भय चिंता व्यापे, राजपक्ष अशुभ, मित्र बंधु से कष्ट, मास-फल अशुभ है।	शत्रुपीड़ा, कमर तोड़ खर्च इज्जत भय, मास के उत्तरार्द्ध में कुछ लाभ।	विवाद से परेशानी, व्यय अधिक, संतति-चिंता, शत्रु-भय, लाभ में विघ्न।
वृश्चिक	अकस्मात् चिंता, क्रोध में कमी, किसी के सहयोग से लाभ, स्थानांतर का विचार।	शुभ में व्यय, स्वास्थ्य ठीक, बंधुसुख, झगड़े से हानि, लाभ की चिंता।	वृथा खर्च, प्रिय वस्तु की चिंता, कारोबार में गड़बड़ी, बंधु की सहायता।	कारोबार पहले ठीक, मास के मध्य चिंता, निराश्रित को आश्रय देना पड़े।	वृथा खर्च, कार्य विघ्न, कारोबार व मकानादि में किसी प्रकार की तबदीली।	मित्र बंधुओं से संतोष, स्वपराक्रम द्वारा लाभ, वाहनभय, कुल में वृद्धि।
धनु	गत मास की अपेक्षा लाभ अच्छा, चिंता बनी रहे, राज्य से भय, कफ वायु पीड़ा।	नये कार्य का विचार, सिर व पैर से कष्ट, अकस्मात् लाभ का मौका बने।	चित्त खिन्न, पशुपीड़ा, मास के मध्य भाग में लाभ, रोग व चोट भय, वस्त्रलाभ।	अचानक भय व्यापे, संतान आदि की चिंता, धर्म-कृत्य में खर्च, शत्रुपीड़ा।	क्रोध में कमी, बाजबी खर्च करने से भी तंगी, गृह में क्लेश, अचानक यात्रा।	शत्रुभय, कारोबार की चिंता, लाभ से खर्च विशेष, उदर-विकार।
मकर	संततिचिंता, अपरिचित व्यक्ति से भय, निजी जनों से विगाड़, मासांत में लाभ।	कुसंगति से हानि, कारोबार में गड़बड़ी के आसार, नौकर आदि से हैरानी।	वायु कफ पीड़ा, गृह में क्लेश, कमर तोड़ खर्च, लाभ कम, विवाद भय।	यह मास भारी भय-हानि-चिंताप्रद है, भजन पूजनादि दान करना चाहिए।	पहले प्राप्त कष्टों से खिन्नता, आत्मीय जनों की चिंता, लाभ में विघ्न, शत्रुभय।	चित्त भ्रम, मकान जयदाद की चिंता, बंधुवर्ग से विगाड़, लाभ कम, दुःस्वप्न।
कुम्भ	लाभ कम, घरेलू जीवन संतोष जनक, चिंता उत्पन्न हो कर शीघ्र दूर हो।	वायुविकार, शुभ कृत्य का विचार, मान-वृद्धि, शत्रु-हानि, कारोबार ठीक।	पुत्र-गृहादि की चिंता, कारोबार में कमी, हानि का भय, मासांत में कुछ लाभ।	कार्य कृत्यों में खर्च, यात्रा से हानि, कारोबार में विघ्न, अचानक महाचिंता भय।	धनहानि, बंधुचिंता, लाभ की जगह हानि, हृदय व छाती में विकार।	वृथा खर्च, कारोबार में कमी से चिंता, शत्रुभय, मासांत में कुछ लाभ।
	ठगी व चोरी का भय, लाभ अच्छा, धर्मकृत्य में बाधा, जीव जंतु से कष्ट।	कारोबार ठीक, लाभ अच्छा, निजी व्यवसाय से उन्नति, वृथा यात्रा, वस्त्र लाभ।	स्थानांतर या कार्यान्तर का विचार, कारोबार मध्यम, वायु-विकार, चिंता।	स्वास्थ्य में विगाड़, व्यवसाय में वृद्धि का विचार, अकस्मात् कष्ट, चिंता व्यापे।	लाभ का मौका बने, मित्र व बंधु से प्रेमवृद्धि, किसी शोक-समाचार से दुःख हो।	अचानक हानि, शरीर-पीड़ा, स्त्री पुत्र की चिंता, धर्म में वृद्धि, विवाद में जय।

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल [illegible]

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यग् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्विरयव याच्यते ॥४॥
तिथिर्वारञ्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारंभ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगलस्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियाँ शिशु आदि वस्त्र-आभूषण परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर फल श्रवण करें। प्रातःकाल कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, ननक (सैंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिला कर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शांति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बिमारी नहीं होती)।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्ठान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य

ये चैत्रशुक्लप्रतिपित्तियौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याद्भुतां राज्ञां राजकुले जयो विजयते मन्त्रीफलं बुद्धिदम्। धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वता सिद्धिदम् ॥२॥ इतिसंवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रमवर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन की १३ घडी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौर मान से वर्षसंख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घडी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुदसंख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष ये छः मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये है, और यह २८ वां कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था—सतयुग–कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें [illegible] और शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारणकर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये। श्री वराह जी ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएं कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेदों के जानकार तथा सत्यभाषी परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वरदान प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चंद्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्री वामन, श्री परशुराम और श्रीरामचंद्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने कर्तव्यविमुख एवं अन्यायी विलासिता प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने महाभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएं त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा-नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापर युग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण, श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौएं दो वक्त पर्याप्त दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र, पितल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ अपत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप-यज्ञ-देव-पूजनादि करने वाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चंद्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने २ वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। कलियुग–भाद्रपद कृष्ण [illegible]

आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं। जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो [illegible]
कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब संभल ग्राम में विष्णुयश [illegible]

वृष्टिः, पर नवीन-मुद्रा जायते। श्रावण महान् मेघः, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, गोधूमा महर्घाः आश्विने समर्घाः, रसान्नवस्तु-समता, धातुमहर्घता, कार्तिकेऽकस्मात् भयं, लोकपीडा [illegible]

आयु ४३२००० वर्ष का है। इसमें भगवान् के अवतार [illegible]
जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ २ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएँ दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कर्णज मुद्रा प्रायः चलेंगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान संध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्रनिन्दित द्यूतकर्म (जुआ आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे। शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्णवालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या विक्रय करेगा। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ कारण प्रेम रहेगा। राजव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्यार्जितम्। राजानोऽर्थपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः, साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथिवी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणो हा ! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह ! कलिकालो विलसति ॥ **कलौ गंगायाः स्थितिः**—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदनीं नरपुंगवः॥ भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्था दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रं बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

अथ वर्षराजादिफलविचार सं० २०१८

श्री विक्रम सं० २०१८, शक संवत् १८८३, श्री कृष्ण जन्म सं० ५१९७, श्री महावीर जैन निर्माण संवत्सर २४८७-८८, ईस्वी सन् १९६१-६२, हिजरी सन् १३८०-८१, फसली सन् १३६८-६९, वर्षादि में गुरु मान से प्रभव आदि साठ संवत्सरों में से षड् विंशति का "आनन्द" नामक संवत्सर है। जिस का फल इस प्रकार लिखा है—"आनन्दाऽऽनन्दिता लोकाः सर्वदानन्दचेतसः। राजानः सुखिनः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥" अर्थात् आनन्द संवत्सर में राजा एवं प्रजा सर्वदा प्रसन्न रहें। धनधान्य एवं वृष्टि की कमी न हो। एवं—"आनन्दे गुरुः स्वामी, वर्षा बहुला, सुभिक्षम्, चैत्रे वैशाखे चात्र समर्घम्, ज्येष्ठाषाढयो महा-

[illegible] वृष्टिः, [illegible] सुखं जायते। श्रावण महान् मघः, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, गोधूमा महर्घाः आश्विने समर्घाः, रसान्नवस्तु-समता, धातुमहर्घता, कार्त्तिकेऽकस्माद् भयं लोकपीडा, मार्गशीर्षे लोकानां दक्षिणदिशि गमनम्, पौषे माघे च मेघवर्षा, अन्नं समर्घम्, फाल्गुने धान्यं महर्घम् ॥"

इस वर्ष का राजा शुक्र, मंत्री गुरु, सस्येश रवि, धान्येश शुक्र, मेघेश बुध, रसेश भौम, नीरसेश शनि, फलेश बुध, धनेश शनि एवं दुर्गेश बुध है। इन सब का फल नीचे दिया जा रहा है।

राजा शुक्र का फल—"शुक्रस्य राज्ये बहुसस्यसंकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः। फलन्ति वृक्षा बहु गोप्रसूति वसुन्धरा पार्थिवसौख्यसंयुता ॥"—नदियों में पर्याप्त जल हो। उपज भी उत्तम हो। वृक्षों पर फल खूब लगें। पृथिवी पार्थिव सुख से युक्त हो।

मंत्री गुरु का फल—"विविध धान्ययुता खलु मेदिनी प्रचुरतोयघना मुदिता भवेत्। नृपतयो जनपालनतत्पराः सुरगुरौ ननु मंत्रिपदं गते ॥" सभी धान्य पर्याप्त उत्पन्न हों। प्रचुर वृष्टि हो, शासक-वर्ग प्रजा का शुभचिंतक बने।

सस्येश सूर्य का फल—सस्याधिनाथे तरणौ हि पूर्वं धान्यं समर्घं बहवो हि चौराः। युद्धं नृपाणां जलदा जलाढ्याः स्वल्पं च सस्यं बहुभूतनाशः ॥" वर्षारम्भ में अन्न का भाव साधारण रहे। चोरों का भय बढ़े। शासकों में वैमनस्य हो। वृष्टि अच्छी हो। मृत्यु अधिक हो।

धान्येश शुक्र का फल—"शुक्रे धान्याधिपे लोका मुदिताः स्युः परस्परम्। पशुसस्याभिवृद्धिः स्याद् धर्मोत्सव-विवर्धनम् ॥" जनता में परस्पर सौहार्दभाव बढ़े। पशुओं एवं घास की वृद्धि हो। धार्मिक कृत्यों में जनता की अभिरुचि बढ़े।

मेघेश बुध का फल—"अमृत-रश्मिसुते सति वारिपे बहु पयस्तृण-धान्य-रसादिकम्। द्विजवरा यजनोत्सुक-चेतसो विविध-सौख्ययुता धरिणी तदा ॥" वृष्टि, घास, अन्न एवं रस आदि की कमी न रहे। धार्मिक कृत्यों में अभिरुचि हो। पृथिवी पर सुख समृद्धि हो ॥

रसेश भौम का फल—"यदि धरातनयो रसपो भवेन्न रसराशियुता जनता शुभा। नरपति विषमो जनतापदो न जलदो बहुवृष्टिकरो भुवि ॥" रस महंगे हों। शासक-वर्ग प्रजा के दुःख का कारण बने। वृष्टि सामान्य हो।

नीरसेश शनि का फल—"अथः पिण्डादिलौहेषु कृष्णवस्त्रादिवस्तुषु। अर्घवृद्धि प्रकुरुते मन्दो नीरसनायकः ॥" लौहनिर्मित यन्त्र आदि एवं काली चीजें महंगी हों ॥ **फलेश बुध का फल**—"सति बुधे फलपे फलमुत्तमं जलधरा जलराशिमुचस्तदा। बहुतरं कुसुमैः कमलैर्युतं जनपदो ह्यतुलसौख्यमुदाऽन्वितः ॥" फलों की उत्पत्ति पर्याप्त हो वृष्टि की कमी न रहे। घास भी अच्छा हो। जनता में सुख व्याप्त हो ॥ **धनेश शनि का फल**—"द्रविणपो रविजो विरलं धनं गदरतान् नृपतीन् कुरुते सदा। अधनतां वणिजां कृषिजीविनां द्विजवरान् परपीडनमानसान् ।" आर्थिक समस्या उत्पन्न हो। शासकों का स्वास्थ्य बिगड़े। व्यापारी एवं कृषक-वर्ग की आर्थिक स्थिति ठीक न रहे। दूसरों को पीड़ित करने की ओर जनता की प्रवृत्ति हो ॥ **दुर्गेश बुध का फल**—"विषमसाम्यसुखं शशिजे प्रभौ भवति राष्ट्रजनेषु विशेषतः। शशिसुते सति कोटकपालके पथिषु द्रव्यवतां न भयं क्वचित् ॥" देश में सुख दुःख विषम स्थिति में रहें। रुपया पैसा साथ लेकर यात्रा करने वालों को रास्ते में कोई लूट-खसूट का भय न हो।

नव मेघों में 'वरुण' नामक मेघ का फल—यज्ञादि कृत्य हों प्रजा प्रसन्न रहे। वर्षा अच्छी हो।

द्वादश नागों में सुबुद्ध नाग का फल—जनता में सौहार्द भाव रहे। वर्षा मध्यम हो।

रोहिणी वास—इस वर्ष रोहिणी वास सन्धि में है। और समय का वास वैश्य के घर में है अतः खण्डवृष्टि हो। उपज को हानि पहुँचे। **समय का वाहन**—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुक्रवार होने से समय का वाहन मेंढक है। **शनि की दृष्टि**—वर्षारम्भ से भाद्रपद शुक्ल ३ तक उत्तर में इसके अनन्तर आश्विन शु० २ तक पश्चिम में एवं इस के अनन्तर वर्षान्त तक पुनः उत्तर में रहेगी। फल—जिस समय जिस दिशा में शनि की दृष्टि होगी, उस समय उस दिशा में स्थित राष्ट्रों में भय रोग दुर्भिक्ष आदि उपद्रव होंगे। इस वर्ष सोमवती अमावस्या केवल १ है आश्विन में। बुधाष्टमी ३ हैं, द्वि० ज्ये० शु०, आषा० कृ० एवं कार्त्ति० शु० में हैं

ज्येष्ठ अधिक मास का फल—इस वर्ष ज्येष्ठ अधिक मास है। इस का फल इस प्रकार है—"ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा।" अर्थात्-ज्येष्ठ अधिक मास होने पर शासक का विनाश हो एवं उपज अच्छी हो।

वर्षा आदि के विश्वामान—वर्षा बिस्वे ५, धान्य १७, तृण १७, शीत ५, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृषा १५, निद्रा १५, आलस्य ३, उद्यम ७, शान्ति ५, क्रोध ५, दम्भ ५, पाखण्ड ३, लोभ १५, मैथुन ११, रस १२, फल ११, उत्साह ३, उग्रता १५, पाप ३, पुण्य १५, व्याधि ५, व्याधिनाश ११, आचार ३, अनाचार १, मृत्यु ९, जन्म १३, देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य १७, चौर ३, चौरनाश ९, अग्नि ३, अग्निशान्ति ३, स्वेदज ३, जरायुज (मनुष्य, गौ आदि) ३, अण्डज ३, उद्भिज्ज ३, टिड्डी १३, तोता १५, मूषक ५, सोना ९, ताम्बा ५, स्वचक्र ५, परचक्र १३, वृष्टि ७, वृष्टिनाश ७, संवत् विस्वा १०॥

वर्षस्तम्भचतुष्टय-विचार—इस वर्ष जलस्तम्भ बिल्कुल नहीं है। फल—वर्षा की कमी रहे। तृणस्तम्भ २ आने है। फल—तृण की कमी रहे। वायुस्तम्भ ११ आने हैं। फल—पवन अच्छी चले। अन्नस्तम्भ ९ आने है। फल—अन्न की उत्पत्ति मध्यम रहे।

आर्घमान (वर्ष रक्षा के ४ दुर्ग)—पहिला आर्घ गतवर्षीय पौष ३० को मूल नक्षत्र ५ विस्वा है। दूसरा आर्घ अक्षय ३ को रोहिणी नक्षत्र केवल १ विस्वा है। तीसरे आर्घ श्रावण शुक्ल १५ को श्रवण नक्षत्र का अभाव है। एवं चौथा आर्घ कार्त्ति० शुक्ल १५ को कृत्तिका नक्षत्र १४ विस्वे है। अतः यह वर्ष आर्घमान के विचार से बहुत साधारण रहेगा।

"अखै तीज रोहिणी नहीं होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारौ, कार्तिक पुण्यों कृत्तिका टारौ।
मही माह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै॥"

नव वर्ष प्रवेश—गत सं० २०१७ वि० चैत्र कृष्ण ३० गुरुवार को इष्टघट्यादि ४८।० पर वृश्चिक लग्न के १६ अंश पर नव वर्ष प्रारम्भ होगा, जिसका फल इस प्रकार है—पश्चिम में [illegible] ... सिंह लग्न के १६ अंश पर सूर्य मेष राशि में प्रविष्ट होगा। फल—बड़ी खेती का नाश हो। अन्न की कमी रहे। आर्द्रा-प्रवेश-कालिक लग्न—श्री सं० २०१८ द्वि० ज्ये० शु० ८ बुधवार इष्ट ४९।३५ पर मीन लग्न के २४ अंश पर सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। बुधवार का फल—बुद्ध्युपजीवियों को वर्ष उत्तम रहे। हस्त नक्षत्र का फल—अन्न की कमी न रहे। वरीयान् योग का फल—वर्षा कम हो, कन्द मूल एवं धान्य दुर्लभ हों। समय निशीथोत्तर का फल—प्रजा में संकट फैले।

सूचना—राजा का फल काश्मीर व अफगानिस्तान में, मंत्री का वाल्हीक और मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र विदर्भ में, धान्येश का नर्मदा के तटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध में, रसेश का कोंकण व मगध में, नीरसेश का मालवा देश में एवं फलेश, धनेश तथा दुर्गेश का फल सब जगह विशेष होता है।

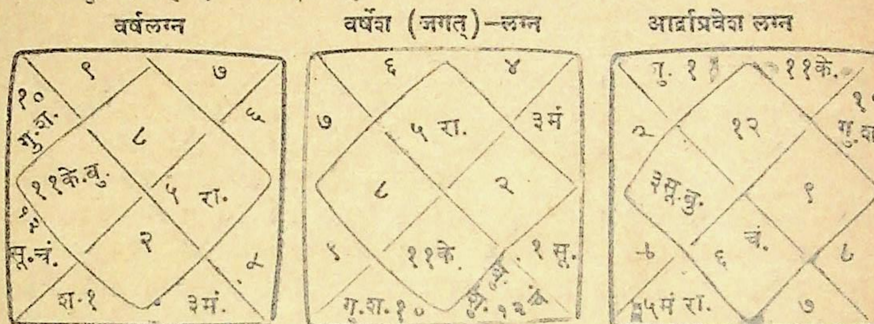
"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादितिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

—लाभ व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

लाभ व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ व्यय के अंकों को जोड़ कर एक घटावे और शेष को ८ से भाग देने पर १।२।६।७ बचे तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३।४।५।० बचें तो लाभ बहुत कम हो एवं चिंता भी रहे॥

वर्षलग्न — वर्षेश (जगत्)-लग्न — आर्द्राप्रवेश लग्न



जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—अपने जन्मलग्न से जगल्लग्न जिस स्थान में आवे वह यदि शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो और बलवान हो तब वर्ष में उस भाव की वृद्धि होगी। यदि पापी ग्रह की दृष्टि अथवा योग होवे तो उस भाव की हानि होगी और जन्मलग्न, जन्मराशि और वर्षलग्न से यदि वर्षेश (जगल्लग्न) ८वें, १२वें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

जन्मलग्न से जगल्लग्न का फल—१. देहसुख, २. धनलाभ, ३. कुटुम्बवृद्धि, ४. मित्र-सौख्य, ५. पुत्रसौख्य, ६. शत्रुजय, ७. स्त्रीसुख, ८. रोगभय, ९. धर्मलाभ,

... शत्रुजय, ७. स्त्रीसुख, ८. रोगभय, ९. धर्मलाभ,

श्री वि० संवत् २०१८ शाक १८८३ चैत्र शुक्लपक्ष | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | उदय कालिक | (२७ मार्च से ९ अप्रैल तक, सन् १९६१ ई०), उ. अयन, द. ()

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रहदर्शन—प्रातः (सूर्योदय से पहिले) पूर्व में बु. और उससे ऊपर गु. श. परस्पर आसन्नस्थ होंगे। सूर्यास्त बाद शु. पश्चिम में एवं मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। () उ. गोल। वसन्तऋतु।
२९	४०	१	शु.	१९	५१	उ. भा.	४४	२५	ग्र.	४३	७	कि	११	५५	४	१७	२६	२९	मीन	६	३७	६	२९	११	२	५६	५०	चान्द्रसंवत्सरारम्भ, उ. भा. में सूर्य २३।१८, नवरात्रारम्भ,
२९	४५	२	श.	३६	२७	रे.	४२	५०	ब्र.	३७	३४	ब.	८	९	५	१८	२७	३०	मे.४२।५०	६	३६	६	३०	११	३	५६	२८	चन्द्रदर्शन, उ.मुं. उ., पञ्चक स. ४२।५०, शत. में बुध १५।३८
२९	४९	३	र.	३४	५	अ.	४२	१९	ऐं.	३२	५२	तै.	५	१६	६	१९	२८	श१	मेष	६	३४	६	३०	११	४	५६	३	शव्वाल मु. १०, इदुल फितर, गणगौरीपूजा,
२९	५४	४	चं	३२	५८	भ.	४३	१	वै.	२९	६	व.	३	३१	७	२०	२९	२	वृ.५८।३०	६	३३	६	३१	११	५	५५	३५	भ. ३।३१ उ., ३२।५८ या., सा. मेष में सूर्य ४८।२०, उ. गोल*
२९	५९	५	मं.	३३	५	कृ.	४४	५६	वि	२६	१९	ब.	३	१	८	२१	३०	३	वृष	६	३२	६	३२	११	६	५५	७	रा. शक. सं. १८८२ समाप्त ॐवर्षफलश्रवण, जमल उलविदा
३०	४	६	बु.	३४	३२	रो.	४८	९	प्री.	२४	३२	कौ.	३	४८	९	२२	चै१	४	वृष	६	३०	६	३२	११	७	५४	३७	रा. सौर चैत्र (शक सं. १८८३) प्रा., मेला माई सरखाना.
३०	९	७	गु.	३७	८	मृ.	५२	२८	आ.	२३	४५	ग.	५	५०	१०	२३	२	५	मि.२०।१८	६	२९	६	३३	११	८	५४	६	भ. ३७।८ उ. *प्रवेश शक वर्षा ४७।१७
३०	१३	८	शु.	४०	५६	आ.	५७	५३	सौ.	२३	४०	वि	९	२	११	२४	३	६	मिथुन	६	२८	६	३४	११	९	५३	३४	भ. ९।२ या. श्रीदुर्गाष्टमी, मेला श्रीमनसादेवी,
३०	१८	९	श.	४५	३४	पुन.	६०	०	शो.	२४	३८	बा.	१३	१५	१२	२५	४	७	क४७।२८	६	२७	६	३४	११	१०	५३	१	श्रीरामनवमी,
३०	२३	१०	र.	१०	४५	पुन.	३	५८	अ.	२१	५४	तै.	१८	९	१३	२६	५	८	कर्क	६	२६	६	३५	११	११	५२	२७	
३०	२८	११	चं.	१६	४	पु.	१०	३१	सु.	२७	२७	ब.	२३	२४	१४	२७	६	९	कर्क	६	२४	६	३५	११	१२	५१	५२	भ. २३।२४ उ., ५६।४ या., कामदा ११ व्रत स्मा. वै.,
३०	३२	१२	मं.	६०	०	आश्ले	१७	२	धृ.	२८	५१	ब.	२८	३३	१५	२८	७	१०	सि१७।२	६	२३	६	३६	११	१३	५१	१६	कामदा ११ व्र. नि.,
३०	३७	१२	बु.	१	३	म.	२३	९	शू.	२९	५३	बा.	१	३	१६	२९	८	११	सिंह	६	२२	६	३७	११	१४	५०	३७	प्रदोषव्रत,
३०	४२	१३	गु.	५	२२	पू.फा.	२८	३२	गं.	३०	१६	तै.	५	२२	१७	३०	९	१२	कं.४४।३६	६	२०	६	३७	११	१५	४९	५१	रेव. में सूर्य ५०।५२, पुन. में मंगल ४३।४०, पू. भा. म बुध ‡
३०	४६	१४	शु.	८	४१	उ. फा.	३२	४७	वृ.	२९	४८	व.	८	४१	१८	३१	१०	१३	कन्या	६	१९	६	३७	११	१६	४९	२	भ. ८।४१ उ., ३९।४६ या., सत्यव्रत, गुड फ्राइडे,
३०	५१	१५	श.	१०	५२	ह.	३५	५८	ध्रु.	२८	२९	ब.	१०	५२	१९	अ१	११	१४	कन्या	६	१८	६	३८	११	१७	४८	११	अप्रैल४ ता.३० बैशाख स्ना. प्रा., ‡१४।२०, श्रीजैन महावीर जयं.,

चैत्र शुक्ल ८ शुक्रवार इष्ट ४३।५०, के. अहर्गण २५४५

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१०	९	०	९	४	१०
१०	१७	१३	८	५	४	११	११
३५	३८	१०	२०	३६	४८	३८	३८
२७	३५	१	२०	४७	२६	३०	३०
५९	२२	७०	९	१०	४	३	३
२६	५२	८	४९	५५	१२	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१शु. | ११के.बु. | १० श.गु. | १२ सू. | ३ चं. मं. | ९ | ४ | ६ | ८ | ५रा. | ७

चैत्र शुक्ल १५ शनिवार इष्ट ४४।१५, के. अहर्गण २५५३

१ शु. | ११बु.के. | बु.श. १० | सू.१२ | २ | ३ मं. | ९ | ४ | ६ चं. | ८ | ५रा. | ७

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१०	९	०	९	४	१०
१८	२०	२३	९	३	५	११	११
२९	४९	२४	३५	१	१९	१३	१३
१५	४८	४	५६	५	५३	४	४
१९	२५	८५	८	३१	३	३	३
९	२५	४४	५३	४६	३३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में—बंगाल एवं उत्तरी भारत की जनता में कुछ अशान्ति तथा दक्षिण भारत की जनता में शान्ति रहे। गेहूँ, जौ, चना, रुई के भावों में पहिले मन्दी आकर बाद में तेजी आए। कर्याणे की वस्तुएँ, सुगन्धित पदार्थ, केसर, लाल रङ्ग की वस्तुएँ तथा पशुओं के भाव मन्दी की ओर रहें। नारियल, किशमिश आदि शुष्क मेवों के भाव मध्यम रहें। गुड़, खांड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों में मन्दी आकर बाद में तेजी आए। सोना, चान्दी, सूत व वस्त्र तेज हों। वायदा बाजार में कहीं सरकारी अंकुश लगने की सम्भावना है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में कोई महत्त्वपूर्ण घटना घटे। किसी मान्य शासक का स्वास्थ्य बिगड़े। ति० ३ के बाद पशुओं को पीड़ा के योग हैं। भारत के पूर्वी व दक्षिणी प्रान्तों में रेल-वायुयान की दुर्घटना के योग पाए जाते हैं।

आकाशलक्षण—ति० ५,६ तथा ति० १३ से १५ तक पंजाब, हिमाचल प्रदेश में कहीं-कहीं बादल चाल व बूंदाबांदी के योग हैं। लंका के पश्चिमी छोर, पूर्वी पाकिस्तान व पूर्वी बिहार में साधारण वर्षा हो।

शकुन विचार—यदि द्वितीया को चंद्र श्यामरंग के बादलों से ढका हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर होजाय, तो घृतादि वस्तु की कीमत बढ़े [illegible] तेज बिकाए॥"

व. स २०१८ शाक १८८३ वैशाख कृष्ण पक्ष २ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टे. टाईम | उदयकालिक | (२अप्रै.से१५अप्रै.तक, सन् १९६१ ई.) उ. अयन गोल। वसन्त ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३०	५५	१	र.	११	४४	चि.	३७	५१	व्या	२६	७	कौ.	११	४४	२०	२	१२	१५	तु. ६।५४	६	१७	६	३९	११	१८	४७	१७
३१	०	२	चं.	११	१४	स्वा.	३८	३०	ह.	२२	४७	ग.	११	१४	२१	३	१३	१६	तुला	६	१६	६	४०	११	१९	४६	२१
३१	५	३	मं.	९	३१	वि.	३७	५७	व.	१८	२६	वि.	९	३१	२२	४	१४	१७	वृ. २३।५	६	१४	६	४०	११	२०	४५	२४
३१	१०	४	बु.	६	४३	अनु.	३६	२३	सि.	१३	१७	बा.	६	४३	२३	५	१५	१८	वृश्चिक	६	१३	६	४१	११	२१	४४	२४
३१	१४	५	गु.	२	५२	ज्ये.	३३	५७	व्य.	७	२३	तै.	२	५२	२४	६	१६	१९	ध. ३३।५७	६	११	६	४१	११	२२	४३	२१
अव	म	६	गु.	५८	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	१९	७	शु.	५३	०	मू.	३०	४६	व.	०३	४२	वि.	२५	३७	२५	७	१७	२०	धनु	६	१०	६	४२	११	२३	४२	१६
३१	२३	८	श.	४७	१६	पू. षा.	२७	५	शि.	४६	१४	बा.	२०	८	२६	८	१८	२१	म. ४।१४	६	९	६	४३	११	२४	४१	९
३१	२८	९	र.	४१	१६	उ. षा.	२३	३	सि.	३८	३५	तै.	१४	१६	२७	९	१९	२२	मकर	६	८	६	४३	११	२५	४०	२
३१	३२	१०	चं.	३५	१४	श्र.	१८	५३	सा.	३०	४९	व.	८	१५	२८	१०	२०	२३	कुं. ४६।५१	६	७	६	४४	११	२६	३८	५२
३१	३७	११	मं.	२९	२१	ध.	१४	४९	शु.	२३	१३	ब.	२	१७	२९	११	२१	२४	कुम्भ	६	६	६	४४	११	२७	३७	४२
३१	४१	१२	बु.	२३	४९	श.	११	२	शु.	१५	५२	त.	२३	४९	३०	१२	२२	२५	मी५३।३६	६	५	६	४५	११	२८	३६	२९
३१	४६	१३	गु.	१८	४४	पू. भा.	७	४७	ब्र.	८	५१	व.	१८	४४	वै१	१३	२३	२६	मीन	६	३	६	४५	११	२९	३५	१५
३१	५०	१४	शु.	१४	२९	उ. भा.	५	१२	ऐं.	५	३०	श.	१४	२९	२	१४	२४	२७	मीन	६	२	६	४६	०	०	३३	५९
३१	५४	३०	श.	११	१	रे.	३	२६	वि.	५२	०	ना.	११	१	३	१५	२५	२८	मे. ३।२६	६	१	६	४७	०	१	३२	४०

ग्रहदर्शन—— शु. ति. ८ को पश्चिम में अस्त होकर ति. १३ को पूर्व में उदित होगा। प्रातः बु. पूर्व में एवं गु. श. याम्योत्तर-वृत्तासन्न होंगे। मं. को सायं याम्योतरवृतासन्न देखें।

ईस्टर सण्डे,
भ. ४०।२२ उ.,
भ. ९।३१ या., अश्व. १ में गुरु ३०।२०, श्री गणेश ४ व्रत
शुक्र वार्द्धक्य प्रा. ५५।४८,
भ. ५८।१४ उ., मीन में बुध १२।४०,

भ. २५।३७ या., व. शुक्र रेव. मीन में १४।०,
उ. भा. बुध २०।३५, शुक्र पश्चिम में अस्त ५५।४८, **शु. अ.**

भ. ८।१५ उ., ३५।१४ या., पञ्चक प्रा. ४६।५१,
गुरु अभि. से निवृत्त ७।४०, वरुथिनी ११ व्र. स.
प्रदोष व्रत, **शु. उ.**
भ. १८।४४ उ., ४६।३६ या., सं. अश्वि. मेषार्क २५।१५, सु.*
*४५ पुण्य ९।१५ उ., शुक्र पूर्व में उदित ११।२४, मेला वैशाखी,
पञ्चक स. ३।२६,

वैशाख कृ. ८ शनिवार इष्ट ८४।३७ के. अहर्गण २५६०

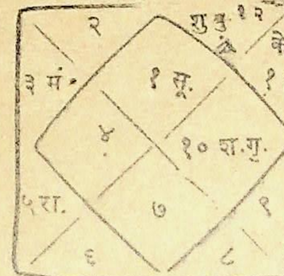
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	११	९	११	९	४	१०
२५	२३	३	१०	२९	५	१०	१०
२३	५१	२८	३४	४	४२	१०	१०
२१	२२	७	१०	१५	३०	४८	४८
१८	२६	१७	७	३६	०	३	३
[illegible]	३८	[illegible]	[illegible]	२१	[illegible]	११	११
मा.	मा.	मा.	[illegible]	मा.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	



इस पक्ष में——किसी प्रमुख देश में आन्तरिक रूप से युद्ध की तैयारी हो। स्याम, जावा, सुमात्रा द्वीपों के वासी भी आत्मरक्षा के लिए दत्तावधान होंगे। कहीं वायु व जलसेना सुसज्जित रहे। सभी प्रकार के अनाजों व सोना-चान्दी आदि धातुओं में मन्दीके योग पाए जाते हैं। ति. ५ से १२ तक अन्न के भावमें तेजी के आसार रहें, और वायदा बाजार मन्दा रह कर बाद में तेज रहे। इस पक्ष में शुक्र अस्त होकर उदित भी हो गया है——इसका फल प्रजा के लिए हानिकारक लिखा है। यह कहीं युद्ध, हिंसा, क्रान्ति का द्योतक है। पश्चिमी राष्ट्रों में पारस्परिक वैमनस्य एवं विरोधी हलचलों से जनता में अशान्ति सा रहे। ति. १३ से रुई, कपास, पाट, बारदाना तेज हों।

आकाशलक्षण ——ति. १, २, ७, ८ तथा ति. १२ से १४ तक कहीं बूंदाबांदी के कारण बढ़ती हुई गर्मी कम हो। मैसूर, उत्तरी भारत, विन्ध्यप्रदेश आदि में उपरोक्त तिथियों में साधारण वर्षा हो।

वैशाख कृ. ३० शनिवार इष्ट ४४।५७, के.अहर्गण २५६७



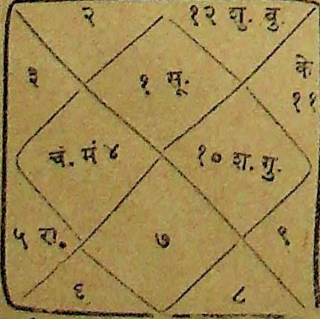
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	२	११	९	११	९	४	१०
२	२७	२५	११	२४	६	१०	१०
१५	१	४३	२३	५१	०	२८	२८
६	३०	३४	०	३७	१०	३३	३३
५८	२७	[illegible]	६	३७	२	३	३
४१	५२	[illegible]	५४	१३	१६	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

दि.मा. घ. प.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र.	अं.	रा.	तु. संवार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रहसंचार—ति० ४ को बु पूर्व में अस्त होगा। प्रातः बु. गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न एवं शु० पूर्वक्षितिज से ऊपर होगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर जाता दीखेगा।
३१ ५९	१ र.	८ ३८	अ.	२ ४२	प्री.	४४ ३	ब.	८ ३८	४	१६	२६	२९ मेष	६ ०	६ ४८	०	२	३१	१२	चन्द्रदर्शन उ. भू. उ., रेव में बुध १३।२ शुक्र वाल्यनिवृत्ति ११।२८,
३२ ३	२ चं.	७ २६	भ.	३ ८	आ.	४१ ७	कौ.	७ २६	५	१७	२७	म१ वृ. १८।३३	५ ५९	६ ४८	०	३	२९	५३	जिल्काद मु. ११, श्री परशुराम जयन्ती, ←वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।
३२ ८	३ मं.	७ ३१	कृ.	४ ४७	सौ.	४३ ८	ग.	७ ३१	६	१८	२८	२ वृष	५ ५८	६ ४९	०	४	२८	२६	भ. ३८।१२ उ., अक्षय ३
३२ १२	४ बु.	८ ५६	रो.	७ ४४	शो.	४२ १५	वि.	८ ५६	७	१९	२९	३ मि ३१।४५	५ ५७	६ ४९	०	५	२६	५८	भ. ८।५४ या., अगस्त्य अस्त ३१।३५, बुध पूर्व में अस्त ४४।४५§
३२ १६	५ गु.	११ २७	मृ.	११ ४७	अ.	४२ १४	बा.	११ २७	८	२०	३०	४ मिथुन	५ ५६	६ ५०	०	६	२५	२७	सा. वृष में सूर्य १८।२०, ग्रीष्म ऋतु प्रा., §श्री सूर जयन्ती,
३२ २१	६ शु.	१५ ११	आ.	१७ १	सु.	४२ ५५	तै.	१५ ११	९	२१	वैं. १	५ मिथुन	५ ५५	६ ५१	०	७	२३	५५	रा. सौर. वैशाख प्रा.
३२ २५	७ श.	१९ ४५	पुन.	२२ ५९	धृ.	४४ १२	व.	१९ ४५	१०	२२	२	६ क. ६।३०	५ ५३	६ ५१	०	८	२२	१७	भ. १९।४५ उ. ५२।१७ या., कर्क में मंगल ४।२५, श्री गंगाजन्म ७,
३२ २९	८ र.	२४ ५०	पु.	२९ २८	शू.	४५ ४६	ब.	२४ ५०	११	२३	३	७ कर्क	५ ५२	६ ५२	०	९	२०	३९	अश्वि. मेष. में बुध १७।२७
३२ ३४	९ चं.	३० ४	श्ले.	३६ ३	गं.	४७ २०	कौ.	३० ४	१२	२४	४	८ सि. ३६।१३	५ ५१	६ ५३	०	१०	१८	५८	मघा ३ में राहु, शत १ में केतु ४३।४५, श्री जानकी जयन्ती
३२ ३८	१० मं.	३४ ५८	म.	४२ १८	वृ.	४८ ३०	तै.	२ ३१	१३	२५	५	९ सिंह	५ ५०	६ ५३	०	११	१७	१६	[वि.मु. मघा] ⁂[त्रि. मु. हस्त चित्रा]
३२ ४२	११ बु.	३९ १२	पू. फा.	४७ ४१	ध्रु.	४९ १३	व.	७ ५	१४	२६	६	१० सिंह	५ ४९	६ ५४	०	१२	१५	३०	भ. ७।५ उ. ३९।१२ या., मोहिनी ११ व.स.
३२ ४६	१२ गु.	४२ २३	उ. फा.	५२ २२	व्या.	४९ ३	ब.	१० ४७	१५	२७	७	११ कं. ३।५७	५ ४८	६ ५४	०	१३	१३	४३	भरि. में सूर्य ६।२७, [वि.मु. उ. फा. हस्त]
३२ ५१	१३ शु.	४४ २९	ह.	५५ ४८	ह.	४८ ३	कौ.	१३ २५	१६	२८	८	१२ कन्या	५ ४७	६ ५५	०	१४	११	५२	पुष्य में मंगल ५४।५३, वरुण मार्गी ९।३०, प्रदोष व्रत, ⁂
३२ ५५	१४ श.	४५ १३	चि.	५७ ५७	व.	४५ ५९	ग.	१४ ५०	१७	२९	९	१३ तु. २६।५२	५ ४६	६ ५६	०	१५	१०	१	भ. ४।१३ उ., भरि. में बुध ४६।५२, श्री नृसिंह जयन्ती, ∫
३२ ५९	१५ र.	४४ ३८	स्वा.	५८ ५०	सि.	४२ ५५	वि.	१४ ५५	१८	३०	१०	१४ तुला	५ ४५	६ ५७	०	१६	८	६	भ. १४।५५ या., सत्यव्र., श्री बुद्ध जयन्ती,

∫ [त्रि. मु. चित्रा]

वैशाख शुक्ल ८ रविवार इष्ट ४५।२०, के. अहर्गण २५७५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	९	११	९	४	१०
१०	०	०	१२	२०	६	१०	१०
३	४८	५४	१७	५३	१६	३	३
३३	२५	४०	५६	४९	३	६	६
५८	२९	[illegible]	५	१८	१	३	३
२७	६	[illegible]	३८	५४	२८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

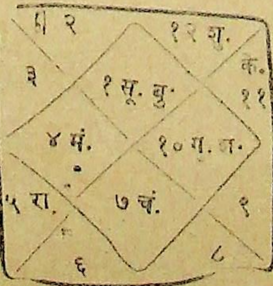


इस पक्ष के प्रारम्भ में अन्न के भाव में कुछ नरमाई रहेगी। नमक, सोना, चान्दी में तेजी और रुई में घटाबढ़ी हो। ति. ६ के बाद सब प्रकार के अनाज व गुड़, खांड, शक्कर, रुई, घी, तेल, सरसों, अलसी, एरण्ड में तेजी आए। ति. २ से यान्त्रिक कम्पनियों के शेयरों में कुछ मन्दा तात आए। ति. ५ से ११ तक सोना चान्दी में तेजी हो। ति. ८ से १० तक वायदे के सौदे में तेजी का और ति. ११ से १३ तक मन्दे का वातावरण रहेगा।

उड़ीसा और उत्तर भारत में कहीं आन्तरिक कलह-विद्वेष फैले। भारत को विदेश से धन एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं की सहायता के योग हैं।

आकाशलक्षण—ति. ३, ४, ७, ८ तथा ११ से १४ तक बम्बई, मद्रास, उड़ीसा, पंजाब एवं हिमाचल में कहीं-कहीं साधारण वृष्टि हो ॥

शकुनविचार—सबल पक्ष वैशाख [illegible] दीं पड़े विशेष ॥



वैशाख शुक्ल १५ रविवार इष्ट ४५।३७, के. अहर्गण २५८२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	९	११	९	४	१०
१६	४	१५	१२	१९	६	९	९
५१	१५	२५	१३	३१	२४	४०	४०
५८	११	१८	५२	५	२०	५१	५१
५८	३०	[illegible]	४	२	०	३	३
१३	५	[illegible]	२८	२२	४८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ प्रथम ज्येष्ठ कृष्णपक्ष | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | उदयकालिक | (२ मई से १४ मई तक, सन् १९६१ई.) उ. अयन-गोल। ग्रीष्मऋतु

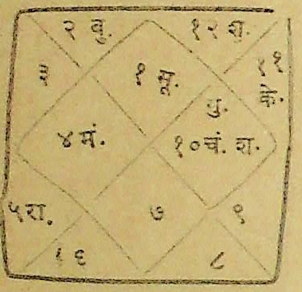
दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अ.	रा.	मु.	सञ्चार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सार सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३३	३	१	चं.	४२	५०	वि.	५८	३३	व्य.	३८	५२	बा.	१३	४४	१९	१	११	१५	वृ.४३।३७	५	४४	६	५७	०	१७	६	१०
३३	७	२	मं.	३९	५७	अनु.	५७	९	व.	३३	५७	तै.	११	२३	२०	२	१२	१६	वृश्चिक	५	४३	६	५८	०	१८	४	१२
३३	११	३	बु.	३६	४	ज्ये.	५४	५५	प.	२८	१२	व.	८	०	२१	३	१३	१७	ध.५४।५५	५	४३	६	५९	०	१९	२	१३
३३	१५	४	गु.	३१	२१	मू.	५१	५२	शि.	२१	४८	ब.	३	४२	२२	४	१४	१८	धनु	५	४२	७	०	०	२०	०	१२
३३	१९	५	शु.	२६	१	पू.षा.	४८	१७	सि.	१४	४९	तै.	२६	१	२३	५	१५	१९	धनु	५	४१	७	१	०	२०	५८	१०
३३	२३	६	श.	२०	१२	उ.षा.	४४	१८	सा.	[illegible]	[illegible]	व.	२०	१२	२४	६	१६	२०	म.२।१७	५	४०	७	१	०	२१	५६	५
३३	२७	७	र.	१४	१०	श्र.	४०	८	शु.	५२	१०	ब.	१४	१०	२५	७	१७	२१	मकर	५	३९	७	२	०	२२	५३	५७
३३	३१	८	चं.	८	०	ध.	३६	२	ब्र.	४४	३२	कौ.	८	०	२६	८	१८	२२	कुं. ८।५	५	३८	७	२	०	२३	५१	४७
३३	३४	९	मं.	२	४	श.	३२	१०	ऐं.	३७	११	ग.	२	४	२७	९	१९	२३	कुम्भ	५	३७	७	३	०	२४	४९	३६
अव	म	१०	मं.	५६	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	३८	११	बु.	५१	१७	पू.भा.	२८	४७	वै.	३०	१३	ब.	२३	५१	२८	१०	२०	२४	मी१४।३८	५	३७	७	४	०	२५	४७	२५
३३	४१	१२	गु.	४६	५८	उ.भा.	२६	०	वि.	२३	४८	कौ.	१९	७	२९	११	२१	२५	मीन	५	३६	७	४	०	२६	४५	१२
३३	४४	१३	शु.	४३	२६	रे.	२४	७	प्री.	१८	४	ग.	१५	१२	३०	१२	२२	२६	मे.२४।७	५	३५	७	५	०	२७	४२	५६
३३	४८	१४	श.	४०	५७	अ.	२३	७	आ.	१३	६	वि.	१२	११	३१	१३	२३	२७	मेष	५	३५	७	५	०	२८	४०	३९
३३	५१	३०	र.	३९	४०	भ.	२३	१५	सौ.	८	५९	च.	१०	१८	जे१	१४	२४	२८	वृ.३८।३७	५	३४	७	६	०	२९	३८	१८

ग्रहदर्शन—बु. ति. १४ को पश्चिम में उदित होगा। प्रातः गु. श. याम्योत्तर वृत्त के आसपास एवं शु. पूर्व क्षितिज से ऊपर होगा। सायं म. याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम की ओर लम्बित दीखेगा।

मई ५ ता. ३१, शुक्र मार्गी ४५।४०,
व. इन्द्र स्वा. ३ में २३।१५, श्री १००८आनन्दमयी मातृ+
भ. ८।० उ., ३६।४ या., श्री गणेश ४ व्र., श्री १००८ आनन्द×
[वि. मु. मूल]
कृत्तिका में बुध ५४।३५, +जन्मोत्सव प्रा.
भ. २०।१२ उ., ४७।११ या.,
वृष में बुध २६।५२, श्रव. २ में गुरु १८।० [वि. मु. धनि.]
पंचक प्रा. ८।५, [वि. मु. धनि.]
भ. २९।१५ उ. ५६।२६ या., शनि वक्री २५।५५,
×मयीमातृजन्मदिन (प्रधानोत्सव) एवं उत्सवविसर्जन
कृत्ति. में सूर्य ५४।३५. अपरा ११व्र. स्मा., [वि. मु. उ. भा.]
अपरा ११ व्र. वै. नि., [वि मु. उ. भा.]
भ. ४३।२६ उ., पञ्चक स. २४।७, रोहि. में बुध १२।५, †
भ. १२।११ या., बुध पश्चिम में उदय ५।३०, †प्रदोष व्र.,
सं. वृषार्क २२।३५, मु. १५, पुण्य ६।३५ उ., भावुका ३०, →
→वटसावित्रीव्रत,

प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ८ चन्द्रवार इष्ट ४५।५५, के. अहर्गण २५९०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	१	९	११	९	४	१०
४	८	२	१३	२०	६	९	९
६	२०	४८	२४	१८	२८	१५	१५
८	३५	५४	५०	४०	६	२४	२४
[illegible]	३१	[illegible]	३	४	०	३	३
[illegible]	३०	[illegible]	५	५७	२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पुष्य	कृत्ति.	श्रव.	अश्वि.	उ.षा.	मघा	धनि.

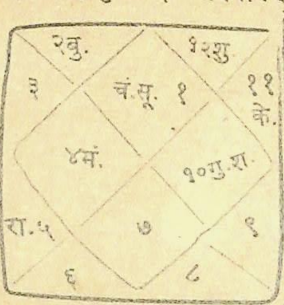


इस पक्ष में—ति. ६ तक सोना, चान्दी, जवाहरात में मन्दी आएगी। वायदे की चीजों में भी मन्दी का असर रहे। ति. ७ से प्रायः सभी वस्तुओं में अच्छी घटा-बढ़ी चलेगी। रुई, सूत, चावल, गेहूँ, जौ, मटर, चना, तिल, तेल आदि में तेजी रहेगी। ति. ११ से मूंग, मोठ में तेजी हो। ति. १, २ को सरसों आदि स्नेहयुक्त द्रव्यों में तेजी आएगी। ति. १४, ३० को वायदा बाजार मन्दी की ओर रहेगा, विशेष कर शेअर बाजार। बंगाल, आसाम आदि भारत के सीमान्त प्रदेशों के शासक-वर्ग को अपेक्षाकृत अधिक सावधान रहना पड़े।

आकाशलक्षण—इस पक्ष में कहीं देश विदेश म आंधी-तूफानों से जन-धन की हानि हो। तापमान विशेष रूप से बढ़ेगा। अधिकतर आकाश निर्मल रहेगा। ति. १, २, ३, ११, १४, ३० को पंजाब के उत्तरीभाग हिमाचल, सिक्किम, पूर्वी पाकिस्तान में कहीं-कहीं बूंदाबांदी हो सकती है।

शकुन विचार—ज्येष्ठ अमावस दिवस या रजनी बादल जोय। चौमासा सुखा रहे भारी गड़बड़ होय॥

प्र. ज्येष्ठ कृष्ण ३० रविवार इष्ट ४६।५ के. अहर्गण २५९६



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	१	९	११	९	४	१०
०	११	१५	१३	२२	६	८	८
२४	२९	३	४०	१५	२६	५६	५६
३५	८	३९	३५	२८	४७	२१	२१
५७	३१	[illegible]	२	२५	०	३	३
५०	४७	[illegible]	१	४८	३४	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
कृत्ति. २	पुष्य	रोहि.	श्रव.	रे.	उ.षा.	मघा	धनि.

दि.मा. घ	प	ति	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अ.	रा.	मु.	संचार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि
३३	५४	१	चं.	३९	३८	कृ.	२४	३७	शो.	५	५४	कि.	९	३९	२	१५	२५	२०	वृष	५	३३	७	७	१	०	३५	५६
३३	५७	२	मं.	४०	५४	रो.	२७	१७	अ.	३	४८	बा.	१०	१६	३	१६	२६	३०	म५२।१३	५	३२	७	७	१	१	३३	३३
३४	०	३	बु.	४३	२१	मृ.	३१	९	सु.	२	४६	तै.	१२	७	४	१७	२७	ज१	मिथुन	५	३२	७	८	१	२	३१	९
३४	३	४	गु.	४६	५८	आ.	३६	९	धृ.	२	३३	व.	१५	९	५	१८	२८	३	मिथुन	५	३२	७	९	१	३	२८	४४
३४	५	५	शु.	४९	२५	पुन.	४१	२७	शू.	३	१२	ब.	१९	११	६	१९	२९	३	क.२५।३०	५	३१	७	९	१	४	२६	१६
३४	८	६	श.	५६	५	पु.	४८	२२	गं.	४	२६	कौ.	२३	५५	७	२०	३०	४	कर्क	५	३१	७	१०	१	५	२३	४६
३४	११	७	र.	६०	०	आश्ले.	५४	५८	वृ.	६	२	ग.	२८	५९	८	२१	३१	५	सिं५४।५८	५	३०	७	१०	१	६	२१	१४
३४	१३	७	चं.	१	३४	म.	६०	०	ध्रु.	७	४२	व.	१	३४	९	२२	जे१	६	सिंह	५	३०	७	११	१	७	१८	४०
३४	१६	८	मं.	६	२५	म.	१	२०	व्या	९	३	ब.	६	२५	१०	२३	२	७	सिंह	५	२९	७	११	१	८	१६	६
३४	१९	९	बु.	१०	३४	पू.फा.	७	१	ह.	९	५७	कौ.	१०	३४	११	२४	३	८	कं.२३।१३	५	२८	७	१२	१	९	१३	३१
३४	२१	१०	गु.	१३	४३	उ.फा.	११	४८	व.	१०	४	ग.	१३	४३	१२	२५	४	९	कन्या	५	२८	७	१२	१	१०	१०	५६
३४	२४	११	शु.	१५	४६	ह.	१५	३०	सि.	९	१७	वि.	१५	४६	१३	२६	५	१०	तु.४६।४२	५	२८	७	१३	१	११	८	१८
३४	२६	१२	श.	१६	३०	चि.	१७	५५	व्य.	७	२९	बा.	१६	३०	१४	२७	६	११	तुला	५	२७	७	१४	१	१२	५	३८
३४	२९	१३	र.	१५	५४	स्वा.	१९	३	व.	४	४२	तै.	१५	५४	१५	२८	७	१२	तुला	५	२७	७	१५	१	१३	२	५७
३४	३१	१४	चं.	१४	५	वि.	१९	१	प.	[illegible]	[illegible]	व.	१४	५	१६	२९	८	१३	वृ. ४।२	५	२७	७	१५	१	१४	०	१५
३४	३३	१५	मं	११	८	अन	१७	५०	सि.	५०	४१	ब.	११	८	१७	३०	९	१४	वृश्चिक	५	२७	७	१६	१	१४	५७	३२

ग्रहदर्शन—प्रातः शु. पूर्व में एवं गु. श. याम्योत्तर वृत्त से पश्चिम की ओर जाते दीखेंगे। सायं बु. पश्चिम में एवं मं. पश्चिम की ओर प्रवृत्त होगा।

पुरुषोत्तम (मल)-मास आरम्भ,
चन्द्रदर्शन, उ. शृं. उ.,
जिल्हिज मु. १२,
भ. १५।९ उ.४६।५८ या.,
मृग. में बुध २२।१०,

सा. मिथुन में सूर्य १७।५५,
भ. १।३४ उ. ३३।५९ या., रा. सौर ज्येष्ठ प्रा.,
मिथुन में बुध ३५।२५,
रोहि. में सूर्य ४८।३५, आश्ले. में मंगल २५।१०,
भ. ४४।४४ उ., गुरु वक्री ४०।५५, श्री गंगा दशहरा, (जय-‡
भ. १५।४६ या., पुरुषोत्तमा ११ व्र. स., इकुज्जुहा,
शनि प्रदोष व्रत, ‡ सिंह कल्पद्रुम के मत से),
आर्द्रा में बुध ३७।७, अश्वि. मेष में शुक्र ९।१०,
भ. १४।५ उ. ४२।३६ या., सत्यव्रत,

प्र. ज्येष्ठ शुक्ल ८ सोमवार इष्ट ४६।१८, क. अहर्गण २६०५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	९	११	९	४	१०
९	१६	०	१३	२७	६	८	८
४	१८	१५	५१	५	१८	२७	२७
२१	४७	५८	५०	१८	१३	४३	४३
५७	३२	८५	०	३८	१	३	३
३९	३८	४२	१६	१०	२४	११	११
उद्य	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृति. ४	पुन. ४	मृग. ३	पुष्य. २	कृति. ४	उ.फा. ३	मघा ३	शत. १
मृ.	जड	बधिर	पं.	बधिर	नीर	अम्बु.	जड

३ । १ । मं. ४ । बु. २ सू. । श । १२ । चं. ५ रा. । ११ के. । गु. १० । ६ । ८ । ७ । ९

इस पक्ष में—भारत को विदेशों से व्यापार सम्बन्धी सन्धियों में कुछ परिवर्त्तन करना पड़ेगा। अनाज, तिल, खांड, गुड़, शक्कर आदि पदार्थों में तेजी आए। रुई में पहिले मन्दी और बाद में तेजी हो। ति. ७ से सोना, चान्दी में मन्दी और सरसों में घटाबढ़ी चलेगी। ति. ९ से अनाज के भाव में कुछ मन्दापन आए। ति. १ से ३ तक वायदा बाजार में मन्दी और ति. ४ से ६ तक वस्त्र व शेयरों के भावों में तेजी आए। वायुप्रकोप, टिड्डी एवं चोर आदि से कहीं प्रजा को हानि पहुँचे। धनी लोग, कृषक एवं पशुओं को कष्ट हो। बहुत से देशों में सैनिकप्रदर्शन हों, जिससे प्रजा में भय व्याप्त हो। इस पक्ष में यान-दुर्घटना के योग भी पाए जाते हैं।

आकाशलक्षण—इस पक्ष में प्रायः वायु का जोर रहेगा। ति. २, ३, ९, १०, ११ को कहीं-कहीं बादल चाल व बन्दाबांदी के योग हैं, विशेष रूप से बम्बई, मद्रास, आसाम व उड़ीसा में।

शकुनविचार—पूर्व दिशा वायु चले फिर पश्चिम चल जाय तीन दिवस के बाद तुम वर्षा योग बताय ॥

प्र. ज्येष्ठ शुक्ल १५ सोमवार इष्ट ४६।२३, के. अहर्गण २६१२

२ बु. । सु. १ । ४ मं. । स. २ । १२ । रा. ५ । के. ११ । गु. १० । ६ । चं. ८ । श । ७ । ९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	९	०	९	४	१०
१५	२०	९	१३	१	६	८	८
४७	८	४	४९	५३	६	५	५
२८	४७	५८	४२	२६	२८	२९	२९
५७	३३	६०	१	४५	२	३	३
३०	१०	४४	५	९	३	११	११
उद्य	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	आश्ले. २	आर्द्रा ३	पुन. २	अश्वि. २	उ. फा. ३	मघा ३	शत. ४
वायु	अम्बु.	सौम्य	अम्बु.	वायु	नीर	अम्बु.	जल

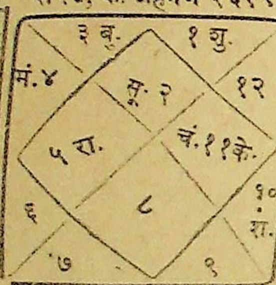
वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ द्वि. (अधिक) ज्ये. कृष्णपक्ष ६ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टें. टाईम | उदयकालिक | (३१ मई से १३ जून तक, सन् १९६१ ई.) उ. अयन-गोल।*

वि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. हिं	अं. अंग्रे	रा. हिं	मु. हिज्री	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३६	१	बु.	७	१२	ज्ये.	१५	४८	सा.	४४	२८	कौ.	७	१२	१८	३१	१०	१५	ध. १५।४८	५	२६	७	१६	१	१५	५४	४७	
३४	३८	२	गु.	२	२६	मू.	१२	५५	शु.	३७	३८	ग.	२	२६	१९	जू.१	११	१६	धनु.	५	२६	७	१७	१	१६	५२	०	भ. २९।४७ उ. ५७।८ या., जून ६ ता. ३०,
अव	म	३	गु.	५७	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३४	४०	४	शु.	५१	१२	पू. षा.	९	२४	शु.	३०	२४	ब.	२४	१०	२०	२	१२	१७	म. २३।२५	५	२५	७	१७	१	१७	४९	१३	श्री गणेश ४ व्र.,
३४	४२	५	श.	४५	६	उ. षा.	५	२९	ब्र.	२२	५४	कौ.	१८	९	२१	३	१३	१८	मकर	५	२५	७	१८	१	१८	४६	२५	
३४	४४	६	र.	३८	५५	श्र.	९ / १७	२२ / १२	ऐं.	१५	१४	ग.	१२	०	२२	४	१४	१९	कुं. २९।१७	५	२५	७	१९	१	१९	४३	३५	भ. ३८।५५ उ., पंचक प्रा. २९।१७
३४	४५	७	चं.	३२	५१	श.	५३	१७	वै.	७	४२	वि.	५	५३	२३	५	१५	२०	कुम्भ	५	२५	७	१९	१	२०	४०	४४	भ. ५।५३ या.,
३४	४७	८	मं.	२७	७	पू. भा.	४९	४४	वि.	२ / ३	१९	कौ.	२७	७	२४	६	१६	२१	मी. ३५।३७	५	२५	७	२०	१	२१	३७	५१	
३४	४९	९	बु.	२१	५४	उ. भा.	४६	४८	आ	४६	४४	ग.	२१	५४	२५	७	१७	२२	मीन	५	२५	७	२१	१	२२	३४	५९	भ. ४९।४० उ., मृग में सूर्य ४७।१७,
३४	५०	१०	गु.	१७	२७	रे.	४४	४३	सौ.	४०	५३	वि.	१७	२७	२६	८	१८	२३	मे. ४४।४३	५	२५	७	२१	१	२३	३२	४	भ. १७।२७ या., पंचक स. ४४।४३,
३४	५२	११	शु.	१३	४९	अ.	४३	२८	शो.	३५	४७	बा.	१३	४९	२७	९	१९	२४	मेष	५	२५	७	२२	१	२४	३९	९	कमला ११ व्र. स.,
३४	५३	१२	श.	११	१४	भ.	४३	१९	अ.	३१	३०	तै.	११	१४	२८	१०	२०	२५	वृ. ५८।३५	५	२५	७	२२	१	२५	२६	१२	शनि प्रदोष व्र.,
३४	५४	१३	र.	९	५०	कृ.	४४	२२	सु.	२८	१४	व.	९	५०	२९	११	२१	२६	वृष	५	२५	७	२३	१	२६	२३	१६	भ. ९।५० उ. ३९।४४ या.,
३४	५५	१४	चं.	९	३९	रो.	४६	४४	धृ.	२५	५८	श.	९	३९	३०	१२	२२	२७	वृष	५	२५	७	२३	१	२७	२०	१७	
३४	५६	३०	मं.	१०	४८	मृ.	५०	१९	शू.	२४	४२	ना.	१०	४८	३१	१३	२३	२८	मि. १८।३१	५	२५	७	२३	१	२८	१७	१८	बुध वक्री ५१।३५, व. गुरु अव. १ में १२।२३, भरि. म शुक्र + ३०।५२, मलमास समाप्त,

ग्रहदर्शन—प्रातः गु. श. पश्चिम क्षितिज एवं शु. पूर्व क्षितिज से ऊपर दीखेगा। सा॰ मं. बु. पश्चिम में ऊपर नीचे दिखाई देंगे।
*ग्रीष्म ऋतु।

द्वि. ज्येष्ठ कृ. ८ सोमवार इष्ट ४६।२७, क. अहर्गण २६१९

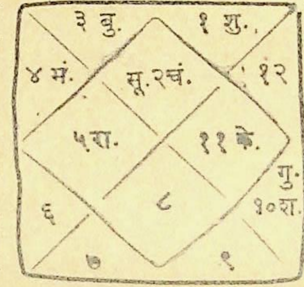
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	९	०	९	४	१०
२२	२४	१४	१३	७	५	७	७
२९	२	४५	३८	२८	५०	४३	४३
४०	३६	१	१३	३६	१४	१२	१२
[illegible]७	३३	३१	२	५०	२	३	३
४	४४	१५	२१	३४	३८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष में—स्याम, इण्डोचाइना की ओर अशान्ति के लक्षण दिखाई देंगे। गेहूँ, जौ, चना आदि अनाज तथा घी के भावों में तेजी आए। सोना-चान्दी में भी अच्छी तेजी रहेगी। गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट में घटावढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। तिल, तेल, सरसों, एरण्डी, अलसी में कुछ मन्दी आए। ति. ७ के लगभग सरसों आदि स्नेहयुक्त पदार्थ तथा रुई, सूत में तेजी आए। ति. १० से उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा, शण, कपूर, कस्तूरी के भाव में तेजी रहेगी। शेअर बाजारों का रुख मन्दी की ओर रहेगा। यहाँ मसाले की वस्तुएँ तेज होने पर बेचना लाभप्रद है, देर तक स्टाक में रखना हानिप्रद हो सकता है। इस पक्ष में शासक-वर्ग कहीं सीमा-समस्या को सुलझाने में व्यस्त रहे।

आकाशलक्षण—वायु का जोर रहेगा। गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। आकाश प्रायः स्वच्छ रहेगा। ति. ४ से ६ एवं ति. ९ से १३ तक [illegible] दार्जीलिंग में साधारण [illegible] के योग हैं।

द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण ३० भौमवार इष्ट ४६।२७, के. अहर्गण २६९६



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	२	९	०	९	४	१०
२९	२७	१६	१३	१३	५	७	७
११	५९	५०	१८	३४	३०	२०	२०
६	५७	३३	३	५	२२	५७	५७
५७	३४	०	३	५४	३	३	३
१८	१०	१०	३५	२६	७	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ.	सू. अ.	स्पष्ट सौर सूर्य

ग्रहदर्शन—ति. ५ को बुध पश्चिम से अस्त होगा। सूर्योदय से पहिले गु. श. पश्चिम में ऊपर नीचे और शु. पूर्व में होगा। सायं मं. पश्चिम की ओर जाता दीखेगा। [illegible] ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. आषा.	अं. जून	रा. ज्येष्ठ	मु. जिल्हि.	संचार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सार सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	५७	१	बु.	१३	९	आ.	५५	३	गं.	२४	२४	ब.	१३	९	१	१४	२४	२९	मिथुन	५	२५	७	२३	१	२९	१४	१७
३४	५८	२	गु.	१६	३६	पुन:	६०	०	वृ.	२४	५५	कौ	१६	३६	२	१५	२५	मु१	क.४४।१७	५	२५	७	२४	२	०	११	१६
३४	५९	३	शु.	२०	५८	पुन:	०	४२	ध्रु.	२६	२	ग.	२०	५८	३	१६	२६	२	कर्क	५	२४	७	२४	२	१	८	१४
३४	५९	४	श.	२५	५२	पु.	६	५८	व्या.	२७	३७	वि.	२५	५२	४	१७	२७	३	कर्क	५	२४	७	२४	२	२	५	१२
३५	०	५	र.	३१	०	आश्ले	१३	३३	ह.	२९	१९	बा.	३१	०	५	१८	२८	४	सि.१३।३३	५	२५	७	२५	२	३	२	९
३५	१	६	चं.	३५	४६	म.	१९	५७	व.	३०	४७	कौ	३	२३	६	१९	२९	५	सिंह	५	२५	७	२५	२	३	५९	५
३५	१	७	मं.	३९	५३	पू.फा.	२५	४९	सि.	३१	४८	ग.	७	४९	७	२०	३०	६	क.४२।३	५	२५	७	२५	२	४	५६	२
३५	२	८	बु.	४३	४	उ.फा.	३०	४७	व्य.	३२	६	वि.	११	२८	८	२१	३१	७	कन्या	५	२५	७	२६	२	५	५२	५८
३५	२	९	गु.	४५	१०	ह.	३४	४०	व.	३१	३०	बा.	१४	७	९	२२	अ१	८	कन्या	५	२५	७	२६	२	६	४९	५३
३५	२	१०	शु.	४५	५४	चि.	३७	२३	प.	२९	५५	तै.	१५	३२	१०	२३	२	९	तु. ६।१	५	२६	७	२७	२	७	४६	४७
३५	१	११	श.	४५	२२	स्वा.	३८	४८	शि.	२७	२२	व.	१५	३८	११	२४	३	१०	तुला	५	२६	७	२७	२	८	४३	४०
३५	१	१२	र.	४३	३९	वि.	३९	००	सि.	२३	४६	ब.	१४	३०	१२	२५	४	११	वृ.२३।५७	५	२६	७	२७	२	९	४०	३३
३५	०	१३	चं.	४०	४३	अनु.	३८	३	सा.	१९	१५	कौ.	१२	११	१३	२६	५	१२	वृश्चिक	५	२७	७	२७	२	१०	३७	२६
३५	०	१४	मं.	३६	४९	ज्ये.	३६	९	शु.	१३	५३	ग.	८	४६	१४	२७	६	१३	ध.३६।९	५	२७	७	२७	२	११	३४	१९
३४	५९	१५	बु.	३२	३	मू.	३३	२५	शु.	७	५१	वि	४	२६	१५	२८	७	१४	धनु.	५	२७	७	२७	२	१२	३१	११

ग्रहदर्शन—ति. ९ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। पूर्वाषेत्र से पहले गु. श. पश्चिम में ऊपर नीचे और शु. पूर्व में होगा। सायं मं. पश्चिम की ओर जाता दीखेगा। गोल। ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

चंद्रदर्शन उ. मृ. उ., सं. मिथुनार्क ४८।७, मु. १५ पुष्य दूसरे ◡ मुहर्रम मु. १, हिजरी सन् १३८१ प्रा., रम्भाव्र.,

भ. ५३।२५ उ., श्री प्रताप जयन्ती, ◡दिन, करिदिन,

भ. २५।५२ या., मघा सिंह में मंगल १९।१७, बलिदान दिवस*

बुध पश्चिम में अस्त ८।२, *श्री गुरु अर्जुन देव जी,

भ. ३९।५३ उ.,

भ. ११।२८ या., आर्द्रा म सूर्य ४९।३५, सा. कर्क में सूर्य ३८।३५ ❀

स. सौर आषाढ़ प्रा.,

❀ दक्षिणायन वर्षाऋतु प्रा. [वि.मु.हस्त]

भ. १५।३८ उ., ४५।२२ या., निर्जला ११ व्र. स्मा. वै., ×

निर्जला ११ व्र. नि., × मुहर्रम (ताजिया)

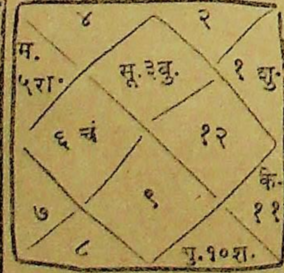
मघा २ में राहु, धनि. ४ में केतु ३९।१२, सोमप्रदोष व्र., ✓

भ. ३६।४९ उ., कृत्ति म शुक्र २८।१८, ✓ [वि. मु. अनु.]

भ. ४।२६ या., निर्वाण दिवस पंजाब केसरी महा. श्री रणजीत+ +सिंह जी, सत्यव्र.,

द्वि. ज्येष्ठ शु. ८ बुधवार इष्ट ४६।२७, के. अहर्गण २६३४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	९	०	९	४	१०
६	२	१५	१२	२१	५	६	६
४९	३५	३	४४	४	३	५५	५५
१९	०	१७	२०	२८	२६	३१	३१
५७	३४	२७	५	५८	३	३	३
१४	५२	४२	०	७	३८	११	११
उदय	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	मघा ४	आर्द्रा ३	श्रव. ४	भरि. ३	उ.फा. ३	मघा ३	धनि. ४
सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	प्रचण्ड	धीर	क्रूर	प्रचण्ड



इस पक्ष में—यवनशासित काश्मीर एवं पंजाब में कई राजनैतिक उलझनें उत्पन्न होंगी। पक्षारम्भ में चान्दी, सोना, सूत, शण, खांड, शक्कर में मन्दी का रुख चलेगा। रुई के भाव में यकायक तेजी आकर एकदम मन्दी आएगी। सब्जी के भाव में मन्दी का रुख रहेगा। ति. १, २ को लोहे के भाव में मन्दी एवं आगे ति. ३, ४ को तेजी हो। ति. ६ से सोना आदि धातुओं और गुड़, खांड, शक्कर, तेल, घी, सरसों, एरण्डी, अलसी, लाल मिर्च, लाल वस्त्र एवं शस्त्र आदि में खास तेजी आएगी। ति. ९ से चावल, गेहूँ, चना, नमक में तेजी का झटका आएगा। ति. ११ से खल, सूत, कपास के भाव में तेजी और ति. १२ से हींग, तिल, तेल, सरसों में मन्दो आए। इस पक्ष में देशान्तर के प्रतिनिधियों से भारतीय शासकों की कोई महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष बातचीत हो।

आकाशलक्षण—ति. १ से ६ तथा ति. ८ से १२ तक पंजाब, हिमाचल, पश्चिमी राजस्थान, बंगाल, नपाल के कई भागों में साधारण वर्षा होगी एवं बहुत्र आकाश मघाच्छन्न रहेगा। ति. १०, ११ को वायु से वृक्षों को हानि पहुँचे

शकुनविचार—ज्येष्ठ सुदी सप्तम दिने बिजुली मेघ निहार। दक्षिण दिशि वायु चले तिल से लाभ अपार॥

द्वि. ज्येष्ठ शु. १५ बुधवार इष्ट ४६।२३ के. अहर्गण २६४१

४
२
मं. रा.५
सू.३बु.
१ शु.
६
१२
के.
११
७
चं. ९
८
१०गु.श.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	९	०	९	४	[illegible]
१३	६	११	१२	२७	४	६	[illegible]
२९	४०	२१	६	५७	३७	३३	[illegible]
४८	१९	५०	४०	४३	६	१६	[illegible]
५७	३५	३४	५	६०	४	३	[illegible]
१२	१५	४३	५४	२८	०	११	[illegible]
उदय	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	[illegible]
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	[illegible]
आर्द्रा ३	मघा ३	आर्द्रा ४	श्रव. ४	कृत्ति. ४	उ.फा. ३	मघा ४	[illegible]
सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	प्रचण्ड	धीर	क्रूर	[illegible]

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ आषाढ़ कृष्णपक्ष | तारीख | चन्द्र | भा. इं. टाइम उदयकालिक | (२९ जून से १२ जुलाई तक, सन १९६१ ई.) द. अयन, उ.*

ब.मा. घ	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.अं. आखा		रा.मु. आखा		सञ्चार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	५८	१	गु.	२६	४१	पू. षा.	२९	५९	ब्र.	[illegible]	[illegible]	कौ.	२६	४१	१६	२९	८	१५	म. ४८।१	५	२७	७	२७	२	१३	२८	४
३४	५७	२	शु.	२०	४९	उ. षा.	२६	८	ऐं.	४६	२८	ग.	२०	४९	१७	३०	९	१६	मकर	५	२८	७	२७	२	१४	२४	५६
३४	५७	३	श.	१४	३९	श्र.	२२	३	वि.	३८	५०	वि.	१४	३९	१८	जु१	१०	१७	कुं. ४९।५६	५	२८	७	२७	२	१५	२१	४८
३४	५६	४	र.	८	२७	ध.	१७	५०	प्री.	३१	१३	बा.	८	२७	१९	२	११	१८	कुम्भ	५	२९	७	२७	२	१६	१८	३९
३४	५५	५	चं.	२	२१	श.	१३	४८	आ.	२३	४७	तै.	२	२१	२०	३	१२	१९	मी ५६।५	५	२९	७	२७	२	१७	१५	३०
जव	म	६	चं.	५६	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५४	७	मं.	५१	१५	पू. भा.	१०	११	सौ.	१६	३९	वि.	२३	५३	२१	४	१३	२०	मीन	५	२९	७	२७	२	१८	१२	२१
३४	५३	८	बु.	४६	४०	उ. भा.	३	५	शो.	१०	०	बा.	१८	५७	२२	५	१४	२१	मीन	५	३०	७	२७	२	१९	९	१२
३४	५१	९	गु.	४२	५८	रे.	४	४२	अ.	[illegible]	[illegible]	तै.	१४	४२	२३	६	१५	२२	मे. ४।४९	५	३१	७	२७	२	२०	६	३
३४	५०	१०	शु.	४०	१५	अ.	३	१७	धृ.	५४	१७	व.	११	३६	२४	७	१६	२३	मेष	५	३१	७	२७	२	२१	२	५५
३४	४८	११	श.	३८	४४	भ.	२	५२	शू.	५०	४८	ब.	९	२९	२५	८	१७	२४	वृ.१८। २	५	३१	७	२६	२	२१	५९	४८
३४	४६	१२	र.	३८	२६	कृ.	३	४१	गं.	४८	२०	कौ.	८	३५	२६	९	१८	२५	वृष	५	३२	७	२६	२	२२	५६	३९
३४	४४	१३	चं.	३९	२८	रो.	५	४२	वृ.	४६	५१	ग.	८	५७	२७	१०	१९	२६	मि३७।२२	५	३२	७	२६	२	२३	५२	३१
३४	४२	१४	मं.	४१	४२	मृ.	९	२	ध्रु.	४६	२१	वि.	१०	३५	२८	११	२०	२७	मिथुन	५	३२	७	२५	२	२४	५०	२७
३४	४[illegible]	३०	बु.	४५	५	आ.	१३	३०	व्या.	४६	४५	च.	१३	२३	२९	१२	२१	२८	मिथुन	५	३३	७	२५	२	२५	४७	१८

ग्रहदर्शन—ति. ९ को बुध पूर्व में उदित होगा। प्रातः श. को आगे किये गुरु पश्चिम में डूब रहा होगा और शु. याम्योत्तर वृत्त एवं पूर्वी क्षितिज के मध्य दीखेगा। सायं मं. पश्चिम क्षितिज से§

§काफी ऊपर होगा।

*गोल। वर्षा ऋतु।

भ. ४७।४४ उ., वृषभ में शुक्र ४६।५८,

भ. १४।३९ या., पंचक प्रा. ४९।५६, जुलाई ७ ता. ३१, श्री※

※गणेश ४ व.,

भ. ५६।३२ उ.,

भ. २३।५३ या., मघा १ सिंह में वरुण २४।२० [वि.मु.उ.भा.]

पुन. में सूर्य ५४।१०, [वि.मु.रेव.]

पञ्चक स. ४।४९, बुध पूर्व में उदित ४४।४२, [वि.मु.अश्वि.]

भ. ११।३६ उ. ४०।१५ या.,

योगिनी ११ व्र. स.,

बुध मार्गी १०।४६, [वि. मु. रोहि.]

भ ३९।२८ उ., पू. फा. में मंगल ०।४०, व. गुरु अभि. में प्रवृत्त‡

भ.१०।३५ या.,

‡०।१५, रोहि में शुक्र २३।२५, सोम प्रदोष व.,

आषाढ़ कृष्ण ८ रविवार इष्ट ४६।१९, क. अहर्गण २६४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	९	१	९	४	१०
२०	१०	८	११	५	४	६	६
१०	४८	१९	२२	८	८	११	११
१०	१४	५४	३८	३७	२६	०	०
५७	३५	१४	६	६२	४	३	३
१२	३९	२१	४८	४०	१४	११	११
[illegible]	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

४ | २ शु. | मं. ५ रा. | सू २ बु. | १ | ६ | १२ चं. | ७ | ९ | के. ११ | ८ | गु १० श.

इस पक्ष में—विदेशीय गुप्तचरों से भारत को भय रहे। कहीं अग्निप्रकोप से हानि एवं चोरों का उपद्रव हो। गेहूँ आदि अनाज एवं घी में तेजी आए। पाट, बारदाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। सरसों, एरण्डी, तिल, तेल में कुछ मन्दी आए। ति. ९ के बाद २५ दिन के भीतर रुई में अच्छी तेजी आएगी। पशुओं में रोगभय हो। ति. ९ के बाद चना, मूंग, मोठ आदि अनाज और भारवाहक पशुओं में मन्दी आए। ति. ८, ९ को सोना चान्दी व शेअरों में भी मन्दी आए। ति. १०, ११ को शेअर तेज हों। ति. १३ से सरसों, तिल, तेल, हींग, सूत वस्त्र में मन्दी का वातावरण बनेगा। ति. १४, ३० को सोना, चान्दी में तेजी के योग हैं। इस पक्ष में किसी महापुरुष को भय या उसकी मृत्यु हो।

आकाशलक्षण—ति. ८ से आषाढ शुक्ल ८ तक वर्षा की कमी से प्रजा को कष्ट हो एवं गरमी का प्रकोप हो। इस पक्ष में [illegible]

आषाढ़ कृष्ण ३० बुधवार इष्ट ४६।७, के. अहर्गण २६५५

४ | शु. २ | रा ५ मं. | सू.चं. ३बु. | १ | ६ | १२ | ७ | ९ | के. ११ | गु. | ८ | श. १०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	९	१	९	४	१[illegible]
२६	१४	८	१०	१२	३	५	[illegible]
५०	५९	३२	३३	३१	३८	४८	४[illegible]
३५	९	८	२७	५९	२१	४४	४[illegible]
५७	३६	२३	७	६४	४	३	३
११	२	५७	२१	७	२०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ आषाढ़ शुक्ल ... | तारीखें | चन्द्र | भा. इं. टाइम उदयकालिक | (१३ जुलाई से २७ जुलाई तक, सन् १९६१ ई.) द. अयन, →

ग्रहदर्शन—प्रातः शुक्र का याम्योत्तर वृत्त एवं पूर्वी क्षितिज के मध्य

घ. प.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	अ.	अ.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.
३४ ३८	१	गु.	४९ २२	पुन.	१८ ५७	हृ.	४७ ४७	कि.	१७ १३	३०	१३	२२	२९	क. २१३५	५ ३४	७ २५	२ २६ ४४ १२
३४ ३६	२	शु.	५४ १४	पु.	२५ ५	व.	४९ १६	बा.	२१ ४८	३१	१४	२३	३०	कर्क	५ ३४	७ २४	२ २७ ४१ ८
३४ ३३	३	श.	५९ १६	आश्ले	३१ ३७	सि.	५० ५८	तै.	२६ ४५	३२	१५	२४	स१	सिं ३१।३७	५ ३५	७ २४	२ २८ ३८ ३
३४ ३१	४	र.	६० ०	म.	३८ ५	व्य.	५२ २८	व.	३१ ४०	अ१	१६	२५	२	सिंह	५ ३६	७ २४	२ २९ ३५ ०
३४ २९	४	चं.	४ ५	पू. फा.	४४ ४	व.	५३ ३४	वि.	४ ५	२	१७	२६	३	सिंह	५ ३६	७ २४	३ ० ३१ ५७
३४ २६	५	मं.	८ १६	उ. फा.	४९ १७	प.	५३ ५९	बा.	८ १६	३	१८	२७	४	कं. ०।२२	५ ३७	७ २३	३ १ २८ ५४
३४ २४	६	बु.	११ ३१	ह.	५३ २३	शि.	५३ ३०	तै.	११ ३१	४	१९	२८	५	कन्या	५ ३[illegible]	७ २[illegible]	३ २ २५ ५०
३४ २२	७	गु.	१३ ३८	चि.	५६ २३	सि.	५२ ११	व.	१३ ३८	५	२०	२९	६	तु. २४।५३	५ ३८	७ २३	३ ३ २२ ४९
३४ १९	८	शु.	१४ २८	स्वा.	५८ ५	सा.	४९ ४८	ब.	१४ २८	६	२१	३०	७	तुला	५ ३८	७ २२	३ ४ १९ ४८
३४ १७	९	श.	१४ १	वि.	५८ ३३	शु.	४६ २३	कौ.	१४ १	७	२२	३१	८	वृ. ४३।२६	५ ३९	७ २[illegible]	३ ५ १६ ४८
३४ १४	१०	र.	१२ २०	अनु.	५७ ५१	शु.	४२ १	ग.	१२ २०	८	२३	अ१	९	वृश्चिक	५ ३९	७ २१	३ ६ १३ ५०
३४ १२	११	चं.	९ ३०	ज्ये.	५६ ७	ब्र.	३६ ४८	वि.	९ ३०	९	२४	२	१०	ध. ५६।७	५ ४०	७ २१	३ ७ १० ५२
३४ ९	१२	मं.	५ ४०	मू.	५३ ३५	ऐं.	३० ५०	बा.	५ ४०	१०	२५	३	११	ध	५ ४०	७ २०	३ ८ ७ ५५
३४ ६	१३	बु.	० ५९	पू. षा.	५० १६	वै	२४ ११	तै.	० ५	११	२६	४	१२	धनु	५ ४१	७ १९	३ ९ ५ ०
अवम	१४	बु.	५५ ४१	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
३४ ३	१५	गु.	४९ ५०	उ. षा.	४६ ३१	वि.	१७ ३	वि.	३३ ४[illegible]	१२	२७	५	१३	[illegible]	५ ४२	७ १९	३ १० २ ६

ग्रहदर्शन—प्रातः शुक्र का याम्योत्तर वृत्त एवं पूर्व क्षितिज के मध्य तथा बु. को पूर्व क्षितिज से ऊपर देखें। सूर्यास्त बाद गु.श. पूर्व क्षितिज से उचक रहे होंगे। इसी समय मं. पश्चिम की ओर§ §जा रहा होगा।

चन्द्रदर्शन उ. शृं. उन्नत, जगदीशरथोत्सव

सफर म. २ →उ. गोल। वर्षा ऋतु।

भ. ३१।४० उ., सं. कर्क में २६।२०, म ३० पुण्य सारा दिन, व.†

भ. ४।५ पा., व. गुरु उ. पा. ४ में १६।४५,

† शनि उ.षा. २ में ५७।२५,

पुष्य में सूर्य ५७।५, इन्द्र मार्गी २५।५७

भ. १३।३८ उ. ४४।३ पा.,

मृग में शुक्र ४३।२,

भ. ४०।५५ उ., रा. सौर श्रावण प्रा., सा. सिंह में सूर्य ५।२५,

भ. ९।३० पा., देवशयनी ११ व्र. स., चातुर्मास्य-व्रत-नियमारम्भ,

पुन. में बुध २२।२३, भौम प्रदोष व्रत,

भ. ५५।४१ उ.,

भ. २२।४५ पा., पर व्यास पूजा, सत्यव्र., वायुपरीक्षा,

आषाढ़ शुक्ल ८ गुरुवार इष्ट ४५।५५, के. अहर्गण २६..६

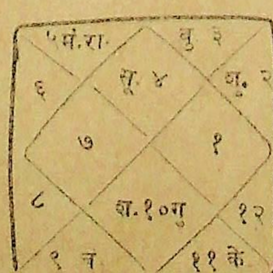
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	२	९	१	९	४	१०
५	२०	१५	९	२२	२	५	५
२५	२५	२१	२५	१७	५८	२०	२०
४४	१८	५४	२९	१०	२८	८	८
५७	३०	७१	७	६५	४	३	३
१८	३२	१०	५४	५६	२८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.



इस पक्ष में किसी घटना से वातावरण अशान्त बने। प. पाकिस्तान के दक्षिणी भाग तथा उसके समीपवर्ती भारतीय प्रदेश में भी अशान्ति हो। ति. १, २ को वस्त्र, रुई व शेअरों के भाव में मन्दी आए। ति. ३ से ५ तक सरसों मूँगफली कपास तथा शेअरों के भाव में तेजी रहे। ति. ८ को बिनौला, एरण्ड के भाव यकायक बदलें। ति. ९, १० को वायदा बाजार मन्दे की ओर हो। इस पक्ष में चावल, उड़द, चना, गेहूँ में तेजी तथा तिल, तेल, ऊनी वस्त्रों में मन्दी आए। गुड़, खाँड, घी के भाव में तेजी का रुख रहे। ति. १० से गेहूँ के भाव में मन्दी आए। नारियल, दाख, सुपारी एवं चान्दी, सोने के भाव भी मन्दे हों। यहाँ शुक्लपक्ष की पंचमी को मंगलवार है, जो कहीं युद्ध का-सा वातावरण बनाएगा।

आकाशलक्षण—इस पक्ष में वायु मेघों को उड़ाती रहेगी। ति. ५, ६, ७ को खण्डवृष्टि के योग पाए जाते हैं। कहीं ति. ९ के बाद नदियों में बाढ़ आए।

शकुनविचार——[illegible] के प्रजा अरु रंक ॥



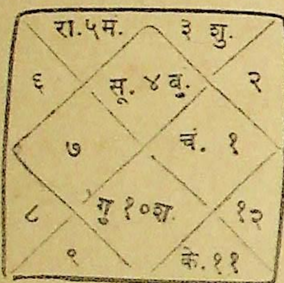
आषाढ़ शुक्ल १५ गुरुवार इष्ट ४५।४५, के. अहर्गण २६७०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	२	९	१	९	४	१०
११	२४	२३	८	२८	२	५	५
९	५	३३	३८	५५	३१	१	१
३६	५१	१०	२७	३७	५७	३	३
५७	३६	९६	७	६६	४	३	३
२०	५६	१४	४३	५८	२०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

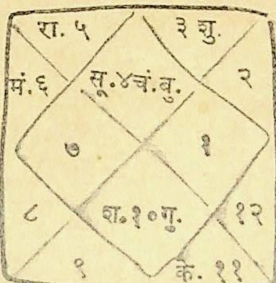
दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. क्रान्ति	अ. कुलिक	रा. कण्टक	मु. यमघण्ट	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सार सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रहदर्शन—ति. ६ का बु. पूर्व में अस्त होगा। प्रातः शु. पूर्व से याम्योतर वृत्त की ओर लपक रहा होगा। सायं गु. श. पूर्व क्षितिज से कुछ ऊपर एवं मं. पश्चिम क्षितिज से काफी ऊपर होगा।
३४	०	१	शु.	४३	४३	श्रव.	४२	२५	प्री.	९	३६	बा.	१६	४६	१३	२८	६	१४	मकर	५	४२	७	१८	३	१०	५९	१२	मिथुन में शुक्र ४३।३२, *उत्तरगोल । वर्षा ऋतु ।
३३	५७	२	श.	३७	३०	ध.	३८	११	आ.	[illegible]	[illegible]	तै.	१०	३६	१४	२९	७	१५	कुं. १०।१८	५	४३	७	१८	३	११	५६	१९	पंचक प्रा. १०।१८,
३३	५४	३	र.	३१	२३	श.	३४	७	सौ.	४६	४६	व.	४	२६	१५	३०	८	१६	कुम्भ	५	४४	७	१८	३	१२	५३	२७	भ. ४।२६ उ. ३१।२३ या., श्रीगणेश ४ व्र.,
३३	५०	४	चं.	२५	३५	पू. भा.	३०	२०	अ.	३९	३०	बा.	२५	३५	१६	३१	९	१७	मी१६।१७	५	४५	७	१७	३	१३	५०	३६	उ. फा. में मंगल ५५।१८, कर्क में बुध ३२।१७,
३३	४७	५	मं.	२०	१६	उ. भा.	२७	५	सु.	३२	४१	तै.	२०	१६	१७	अ१	१०	१८	मीन	५	४५	७	१६	३	१४	४७	४६	अगस्त ८ ता. ३१, श्री लोकमान्य तिलक जयन्ती,
३३	४४	६	बु.	१५	३९	रे.	२४	३१	धृ.	२६	३४	व.	१५	३९	१८	२	११	१९	मे. २४।३१	५	४५	७	१६	३	१५	४४	५८	म. १५।३९ उ. ४३।४६ या., पञ्चक स. २४।३१, आश्ले में +
३३	४०	७	गु.	११	५३	अ.	२२	५०	शू.	२१	५	ब.	११	५३	१९	३	१२	२०	मेष	५	४६	७	१५	३	१६	४२	११	आर्द्रा में शुक्र ४०।२३, वेल्हम,
३३	३७	८	शु.	९	३	भ.	२२	८	गं.	१६	२५	कौ.	९	३	२०	४	१३	२१	वृ. ३७।१६	५	४६	७	१३	३	१७	३९	२५	+सूर्य ५७।४२, पुष्य में बुध १९।५, बुध पूर्व में अस्त २७।५५,
३३	३३	९	श.	७	२८	कृ.	२२	४०	वृ.	१२	४१	ग.	७	२८	२१	५	१४	२२	वृष	५	४७	७	१२	३	१८	३६	४१	भ. ३७।१७ उ.,
३३	२९	१०	र.	७	६	रो.	२४	२४	ध्रु.	१०	०	वि.	७	६	२२	६	१५	२३	मि५०।५४	५	४८	७	१२	३	१९	३३	५९	भ. ७।६ या., कन्या में मंगल १६।४५,
३३	२६	११	चं.	८	१	मृ.	२७	२५	व्या.	८	१६	बा.	८	०	२३	७	१६	२४	मिथुन	५	४८	७	११	३	२०	३१	१८	कामिका ११ व्र. स.,
३३	२२	१२	मं.	१०	१२	आ.	३१	३४	ह.	७	३४	तै.	१०	१२	२४	८	१७	२५	मिथुन	५	४९	७	१०	३	२१	२८	३८	भौम प्रदोष व्र.,
३३	१८	१३	बु.	१३	३१	पुन.	३६	४६	व.	७	४४	व.	१३	३१	२५	९	१८	२६	क. २०।२८	५	५०	७	९	३	२२	२५	५८	भ. १३।३१ उ. ४५।३९ या., आश्ले. में बुध १।१०,
३३	१५	१४	गु.	१७	४७	पु.	४२	४५	सि.	८	३७	श.	१७	४७	२६	१०	१९	२७	कर्क	५	५०	७	८	३	२३	२३	२१	
३३	११	३०	शु.	२२	४०	आश्ले.	४९	१५	व्य.	९	५७	ना.	२२	४०	२७	११	२०	२८	सि. ४९।१५	५	५१	७	७	३	२४	२०	४४	हरियाली ३०,

श्रावणकृष्ण ८ शुक्रवार इष्ट ४५।२५, के. अहर्गण २६७८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	३	९	२	९	४	१०
१८	२९	८	७	७	१	४	४
४८	३	१	३७	५५	५७	३५	३५
४३	१	७	४५	९	५६	३७	३७
५७	३७	[illegible]	७	६८	४	३	३
३०	२६	[illegible]	२५	५	८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. १	उ.फा. १	पूर्वा. २	उ.षा. ४	आर्द्रा १	उ.षा. २	मघा २	श्रव. ४



इस पक्ष में—राज्य के अधिकारियों में किसी जगह विशेष महत्त्वशाली उलट फेर हो। मजदूर लोगों से मालिक परेशान रहें। विदेशों के नए-नए विचित्र समाचार जनता के भय का कारण बनें। ति. १ से गेहूँ चावल आदि धान्यों में तेजी हो। रुई, सूत, कपास, पाट, बारदाना, गवारा, अरहर, एरण्डी, तिल, तेल, सरसों व मूंगफली में मन्दी का वातावरण रहे, एवं गुड़, घी में घटाबढ़ी चले। ति. ५ से तेल, मूंगफली, सरसों, रसकस व धातुओं में अस्थायी तेजी आएगी और चान्दी में घटाबढ़ी रहेगी।



श्रावणकृष्ण ३० शुक्रवार इष्ट ४५।२३, के. अहर्गण २६८५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	९	२	९	४	[illegible]
२५	३	२२	६	१५	१	४	[illegible]
३१	२५	२६	४७	५४	२९	१३	[illegible]
२०	५१	६	६	४४	४८	२१	[illegible]
५७	३७	[illegible]	६	६९	३	३	[illegible]
३३	४२	[illegible]	५१	३	४८	११	[illegible]
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ३	उ.फा. ३	आश्ले. २	उ.षा. ४	आर्द्रा ३	उ.षा. २	मघा २	[illegible]

ति. ११ को वर्षा हो तो आगामी वर्ष में सुभिक्ष एवं यदि इसी दिन मध्यरात्रि को मेघगर्जन हो तो दुर्भिक्ष हो।

आकाशलक्षण—ति. ३, ४, ति. ८ से ११ और ति. १३ से ३० तक शिलांग एवं बम्बई की ओर वृष्टि के योग पाए जाते हैं। इन्हीं दिनों में पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में खण्डवृष्टि होती रहेगी। पक्षान्त में वायु का जोर रहेगा।

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ श्रावण शुक्लपक्ष १ [illegible] २६ अगस्त तक, सन् १९६१ ई.) दक्षिण अयन*

दे. मा.		ति. वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		प्र.	अ.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३३	७	१श.	२७	४६	म.	५५	४५	व.	११	३७	ब.	२७	४६	२८	१२	२१	२९	सिंह	५५१	७	६	३	२५	१८	१०
३३	३	२र.	३२	३९	पू. फा.	६०	०	प.	१३	१०	बा.	०	१२	२९	१३	२२	३०	सिंह	५५२	७	५	३	२६	१५	३८
३३	•	३चं.	३६	५३	पू. फा.	१	५१	शि.	१४	१८	तै.	४	४६	३०	१४	२३	२१	क.१८।१२	५५३	७	५	३	२७	१३	६
३२	५६	४मं.	४०	१५	उ. फा.	७	१७	सि.	१४	५२	व.	८	३४	३१	१५	२४	२	कन्या	५५४	७	४	३	२८	१०	३६
३२	५२	५बु.	४२	३१	ह.	११	३८	सा.	१४	३१	ब.	११	२३	भ१	१६	२५	३	तु.४३।१६	५५४	७	३	३	२९	८	६
३२	४८	६गु.	४३	२९	चि.	१४	५५	शु.	१३	२१	कौ.	१३	०	२	१७	२६	४	तुला	५५५	७	२	४	०	५	३९
३२	४४	७शु.	४३	९	स्वा.	१६	५४	शु.	११	७	ग.	१३	१९	३	१८	२७	५	तुला	५५५	७	१	४	१	३	१४
३२	४०	८श.	४१	३६	वि.	१७	३७	ब्र.	७	५४	वि.	१२	२२	४	१९	२८	६	वृ.२।२६	५५५	७	०	४	२	०	५०
३२	३६	९र.	३८	५१	अनु.	१७	९	ऐं.	५८	३३	बा.	१०	१३	५	२०	२९	७	वृश्चिक	५५५	६	५८	४	२	५८	२९
३२	३२	१०चं.	३५	८	ज्ये.	१५	३६	वि.	५२	३६	तै.	६	५९	६	२१	३०	८	ध.१५।३६	५५६	६	५७	४	३	५६	१०
३२	२८	११मं.	३०	३३	मू.	१३	१७	प्री.	४६	२	व.	२	५०	७	२२	३१	९	धनु.	५५७	६	५६	४	४	५३	५३
३२	२३	१२बु.	२५	१७	पू. षा.	१०	६	आ.	३८	५५	बा.	२५	१७	८	२३	भ१	१०	म.२४।११	५५८	६	५५	४	५	५१	३६
३२	१९	१३गु.	१९	३०	उ. षा.	६	२६	सौ.	३१	२९	तै.	१९	३०	९	२४	२	११	मकर	५५८	६	५४	४	६	४९	२२
३२	१५	१४शु.	१३	२८	श्र.	[illegible]	२	शो.	२३	४९	व.	१३	२८	१०	२५	३	१२	कुं.३०।१७	५५९	६	५३	४	७	४७	९
३२	११	१५श.	७	१३	श.	५४	२	अ	१६	४	व.	७	१३	११	२६	४	१३	कुम्भ	६ ०	६	५२	४	८	४४	५७

ग्रहदर्शन—बुध अस्त है। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज से काफी ऊपर होगा। सायं गु. श. पूर्व में एवं मं. पश्चिम में होगा।

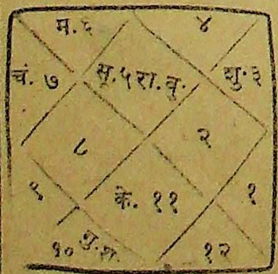
*उत्तर गोल। वर्षा-शरद् ऋतु।

व. गुरु उ.षा. ३ में एवं अभि से निवृत्त४७।३५, नक्त व्रत आरम्भ,
चन्द्रदर्शन, उ. शृं. उ.,
रवि उलावल मु. ३, संधारा ३,
भ. ८।३४ उ., ४०।१५ या., मघा सिंह में बुध २७।५७, पुन.()
स. मघासिंहार्क ५४।५, मु. ३० पुण्य दूसरे दिन, नागपञ्चमी,
()में शुक्र १८।० भारत स्वतन्त्रतादिवस, जयहिन्दसं. १५प्रा.
भ. ४३।९ उ., श्री तुलसी जयन्ती,
भ. १२।२२ या., दुर्गाष्टमी, मेला नयनादेवी व चिन्तपूरनी

भ. २।५० उ., ३०।३३ या., हस्त म मंगल ८।१३, पू. फा म बुध⌖
रा. सौर भाद्रपद प्रा., सा. कन्या में सूर्य २२।५, शरद् ऋतु प्रा.,⌖
⌖२०।४०, पवित्रा ११ व्र. स.,
भ. १३।२८ उ. ४०।२० या., पंचक प्रा. ३०।१७ सत्यव्र.,
पुष्य में शुक्र ४३।४५, मेला श्रीअमरनाथजी (काश्मीर), रक्षाबंधन⌖
⌖कर्क में शुक्र ५३।२०, प्रदोष व्र., ⌖७।१३या., ऋषि तर्पण,

श्रावण शुक्ल ८ शनिवार इष्ट ४५।१३, के. अहर्गण २६९३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	९	२	९	४	१०
३	८	८	५	२५	१	३	३
१२	२८	२५	५५	१०	०	४७	४७
३५	५५	५२	१९	०	५८	५६	५६
५७	३८	[illegible]	५	६९	३	३	३
४६	९	[illegible]	५९	५६	२१	११	११
उदय	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा १	उ.फा. ४	मघा ३	उ.षा. ३	पुन. ३	उ.षा. ३	मघा ३	धनि. १
अमृत	गौर	अमृत	गौर	गौर	गौर	अमृत	अमृत



इस पक्ष में—पश्चिमी जर्मनी वा ब्रह्मा आदि देश चर्चा के विषय बनेंगे। किसी यवन देश, बंगाल तथा ब्रह्मदेश में कहीं अशान्तिमय वातावरण से जन-धन की हानि हो। इस पक्ष में पहिले सोना, चान्दी, गेहूँ, जौ, चना में तेजी और रुई में घटाबढ़ी चलेगी। गुड़, खांड, सरसों और तिल में तेजी आए। ति. ५ से सूती, ऊनी वस्त्रों में तेजी का और गुड़, खांड, शक्कर में मन्दी का वातावरण बनेगा। ति. १० से घी, तेल, नमक तेज होंगे, और अनाज में कुछ मन्दापन रहेगा। ति. १२ से रुई चान्दी में मन्दी आएगी। रसकस में कुछ तेजी रहेगी। इस पक्ष में वायदा बाजार में तेजी का वातावरण रहेगा। ति. ७ को यदि वर्षा हो जाए तो आगे सभी अनाजों की उपज अच्छी रहे।

आकाशलक्षण—ति. २ से १० तक तथा ति. १४, १५ को खण्डवृष्टि के योग पाए जाते हैं। इस पक्ष में मैसूर, लंका, पश्चिमी राजस्थान, पंजाब तथा हिमाचल के कई भागों में वर्षा की कमी से फसल को हानि पहुँचे। ति. ३ के लगभग कहीं विशेष वर्षा से हानि भी हो।

श्रावण शुक्ल १५ शनिवार इष्ट ४५।१०, के. अहर्गण २७००



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	९	३	९	४	१०
९	१२	२१	५	३	०	३	३
५७	५६	२१	१६	२१	३८	२५	२५
२९	५८	२०	२	३१	५२	३९	३९
५७	३८	[illegible]	४	७०	२	३	३
५६	३१	[illegible]	५९	३५	५१	११	११
उदय	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	हस्त १	पू.फा. ३	उ.षा. ३	पुष्य १	उ.षा. ३	मघा ३	धनि. १
अमृत	सौम्य	काल	गौर	काल	गौर	अमृत	अमृत

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ.		सू. अ.		स्पष्ट सौर सूर्य			
घ.	प.																			घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
३२	६	१		१	१२	पू. भा.	५०	७	सु.	८	२७	कौ.	१	१२	१२	२७	५	१४	मी ३६।६	६	०	६	५१	४	९	४२	४७
अव	म	२		५५	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	३	३	श.	५०	७	उ. भा.	४६	४१	धृ.	[illegible]	[illegible]	ब.	२	४६	१३	२८	६	१५	मीन	६	०		५०	४	१०	४०	४०
३१	५७	४	र.	४१	२८	रे.	४३	५५	गं.	४७	४५	ब.	१९	४७	१४	२९	७	१६	मे. ४३।५५	६	१	६	४८	४	११	३८	३४
३१	५३	५	बु.	४१	४२	अ.	४२	१	वृ.	४२	२	कौ.	१३	३५	१५	३०	८	१७	मेष	६	२	६	४७	४	१२	३६	३०
३१	४८	६	गु.	३८	५३	भ.	४१	३	ध्रु.	३७	११	ग.	१०	१७	१६	३१	९	१८	वृ. ५६।६	६	३		४६	४	१३	३४	२८
३१	४४	७	शु.	३७	१२	कृ.	४१	१४	व्या	३३	१०	वि.	८	४	१७	३१	१०	१९	वृष	६	३	६	४५	४	१४	३२	२९
३१	३९	८	श.	३६	५२	रो.	४२	३८	ह.	३०	१०	बा.	७	३	१८	२	११	२०	वृष	६	४	६	४४	४	१५	३०	३४
३१	३५	९	र.	३७	४५	मृ.	४५	२०	व.	२८	१०	तै.	७	१८	१९	३	१२	२१	मि १३।५९	६	५	६	४३	४	१६	२८	३९
३१	३०	१०	चं.	३९	५४	आ.	४२	१२	सि.	२७	१३	ब.	८	४९	२०	४	१३	२२	मिथुन	६	५	६	४१	४	१७	२६	४६
३१	२५	११	मं.	४३	१४	पुन.	५४	११	व्य.	२७	८	ब.	११	३४	२१	५	१४	२३	क ३७।५६	६	६	६	४	४	१८	२४	५४
३१	२१	१२	बु.	४७	२७	पु.	६०	०	व.	२७	४९	कौ.	१५	२०	२२	६	१५	२४	कर्क	६			३९	४	१९	२३	५
३१	१६	१३	गु.	५२	२२	पु.	०	१	प.	२९	१	ग.	१९	५४	२३	७	१६	२५	कर्क	६	७		३७	४	२०	२१	१७
३१	१२	१४	शु.	५७	३१	आश्ले.	६	२२	शि.	३०	३३	वि.	२४	५६	२४	८	१७	२६	सिं ६।२३	६	७	६	३	४	२१	१९	३१
१	७	३०	श.	६०	०	म.	१२	५४	सि.	३२	५	च.	३०	०	२५	९	१८	२७	सिंह	६	८	६	३५	४	२२	१७	४९
१	३	३०	र.	७	२१	पू. फा.	११	१	सा.	३३	१६	ना.	७	२१	२६	१०	१९	२८	क. ३५।३२	६	८	६	३३	४	२३	१६	८

ग्रहदर्शन—ति. ३ को बु. पश्चिम में उदित होगा। प्रातः शु. पूर्व में, सायं मं. पश्चिम में तथा गु. श. पूर्व में दीखेंगे।
§उत्तर गोल। शरद् ऋतु।

भ. २२।४६ उ. ५०।७ या., बुध पश्चिम में उदय ४६।५० मघा‡
पञ्चक स. ४३।५५, उ.फा में बुध ४७।४०, श्री गणेश ४ व्र.,
पू. फा. में सूर्य ४५।०, मघा २ में वरुण ६।१५, चंन्द्रषष्ठी,
भ. ३८।५३ उ., कन्या में बुध ४६।२,
भ. ८।४ या., सितं. ९ ता. ३०, श्रीकृष्णजन्माष्टमी (जयन्ती) ⌐
निम्बार्क वैष्णवों का श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत, (चन्द्रोदय रात्रि→
अगस्त्योदय ५९।२५, गुग्गा ९, ‡१ में राहु, धनि. ३ में केतु ३१।३०,
भ. ८।४९ उ. ३९।५४ या., ⌐व्र. [चन्द्रोदय रात्रि ११ घं. २४ मि. ʊ
अजा ११ व्र. स., ʊस्टै. टा.]
आश्ले. में शुक्र ५८।४०, →१२ घं. ९ मि. स्टै. टा.)
भ. ५२।२२ उ., हस्त में बुध २।२५, प्रदोषव्र.,
भ. २४।५६ या.,
कुशोत्पाटन में सायं काल व्यापिनी ३० ग्राह्य है ("ॐ हूँ फट्"⌐ ⌐मन्त्र से)

भाद्रपद कृष्ण ८ शनिवार इष्ट ४४।५०, क. अहर्गण २७०३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	५	९	३	९	४	१०
६	१७	३	४	११	०	३	३
३	२७	१३	४४	३७	२०	३	३
	५०	१८	३४	३९	३३	२४	२४
	३८	१७	३	७१	२	३	३
	५७	१४	५०	१६	४	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	[illegible]	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

बु. ६मं. | शु. ८
७ | रा ५ सू. | ३
८ | २ चं.
९ | ११ के. | १
गु. श. १० | १२

इस पक्ष में कहीं सीमाप्रान्तों में सैनिकों को भय हो। भारत के किसी पूर्वी प्रदेश में खनिज सम्पत्ति उपलब्ध हो। अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण क्षुब्ध रहे। पशुओं को पीड़ा हो। सर्पभय अधिक हो। गुड़, खांड, शक्कर, चपड़ा, लाख, कपूर, हींग में मन्दापन रहे और सूत, शण, अनाज में तेजी आए। कर्याणे की वस्तुएँ तेज रहें। रुई व वस्त्र मन्दे हों। ति. ७ से चान्दी आदि धातुओं में तेजी आए साथ ही चावल, मोठ, चना भी तेज हों। ति. १३ से अनाज का भाव उलट कर मन्दे की ओर रहे। वायदा बाजार में ति. १ से ६ तक तेजी और ति. ७, ८ को मन्दी तथा इसके बाद फिर तेजी का रुख रहेगा।

आकाशलक्षण—ति. ३ से ९ और ति. ११ से १३ तक कई प्रदेशों में खण्डवृष्टि हो। सूर्य से आगे भौम की स्थिति फूटे घड़े की तरह वृष्टि करेगी (वृष्टिर्भिन्नघटाम्बुवत्)। वायु का जोर रहेगा।

भाद्रपद कृष्ण ३० रविवार इष्ट ४४।४०, के. अहर्गण २७१५

बु. ६म. | शु. ४
रा.
१० | सू. ५ चं. | ३
८ | २
९ | के. ११ | ४
श गु. १० | १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	५	९	३	९	४	१०
२४	२२	१५	४	२१	०	२	२
२९	४१	४१	१८	१०	४	३७	३७
२०	३१	४९	४१	१६	२७	५९	५९
५८	३९	८७	२	७१	१	३	३
२२	३५	४५	२५	५०	३४	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

... भाद्रपद शुक्लपक्ष २२ | तारीख | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | उदयकालिक | (११ सितम्बर से २४ सितम्बर तक सन् १९६१ई.) दक्षिण अयन,§

दि.मा | ति. | वा. | घ. प. | न. | घ. प. | यो. | घ. प. ... —प्रातः शु. पूर्व में होगा। सायं मं. बु. पश्चिम में परस्पर

(११ सितम्बर से २४ सितम्बर तक सन् १९६१ई.) दक्षिण अयन,

दि.मा. घ प	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प	क.	घ. प.					सञ्चार	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.
३० ५८	१	चं.	६ ५४	उ.फा.	२४ ४३	शु.	३३ ५५	ब.	६ ५४	२७	११	२०	२९	कन्या	६ ९	६ ३२	४ २४ १४ ३०
३० ५४	२	मं.	१० २४	ह.	२९ २०	शु.	३३ ४५	कौ.	१० २४	२८	१२	२१	२१	कन्या	६ ९	६ ३१	४ २५ १२ ५४
३० ४९	३	बु.	१२ ४३	चि.	३२ ५२	ब्र.	३२ ४४	ग.	१२ ४३	२९	१३	२२	२	तु. १।६	६ १०	६ ३०	४ २[illegible] ११ २०
३० ४४	४	गु.	१३ ५२	स्वा.	३५ ९	ऐं.	३० ३७	वि.	१३ ५२	३०	१४	२३	३	तुला	६ ११	६ २९	४ २७ ९ ४८
३० ४०	५	शु.	१३ ४१	वि.	३६ ७	वै.	२७ २९	बा.	१३ ४१	३१	१५	२४	४	वृ. २०।५३	६ १२	६ २८	४ २८ ८ १८
३० ३५	६	श.	१२ १५	अनु.	३५ ५५	वि.	२३ २२	तै.	१२ १५	अ१	१६	२५	५	वृश्चिक	६ १२	६ २६	४ २९ ६ ५०
३० ३१	७	र.	९ ३६	ज्ये.	३४ ३६	प्री.	१८ २३	ब.	९ ३६	२	१७	२६	६	ध. ३४।३६	६ १३	६ २५	५ ० ५ २४
३० २६	८	चं.	५ ५९	मू.	३२ २८	आ.	१२ ३६	ब.	५ ५९	३	१८	२७	७	धनु	६ १४	६ २४	५ १ ४ १
३० २२	९	मं.	१ २९	पू. षा.	२९ २६	सौ.	६ ४	कौ.	१ २९	४	१९	२८	८	म. ४३।२२	६ १४	६ २२	५ २ २ ३९
अवम	१०	बु.	२६ ११	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
३० १७	११	बु.	५० ३७	उ. षा.	२५ ५१	अ.	५१ ३८	ब.	२३ २८	५	२०	२९	९	मकर	६ १४	६ २१	५ ३ १ २०
३० १२	१२	गु.	४४ ३४	श्र.	२१ ५०	शु.	४३ ५८	ब.	१७ ३५	६	२१	३०	१०	कुं. ४९।४४	६ १५	६ २०	५ ४ ० २
३० ८	१३	शु.	३८ २६	ध.	१७ ३९	शू.	३६ ७	कौ.	११ ३०	७	२२	३१	११	कुम्भ	६ १६	६ १९	५ ४ ५८ ४६
३० ३	१४	श.	३२ २९	श.	१३ २७	गं.	२८ २६	ग.	५ २७	८	२३	अ१	१२	मी. ५५।२९	६ १६	६ १७	५ ५ ५७ ३४
२९ ५८	१५	र.	२६ ४३	पू. भा.	९ २९	वृ.	२० ५६	व.	२६ ४३	९	२४	२	१३	मीन	६ १७	६ १६	५ ६ ५६ २८

ग्रहदर्शन—प्रातः शु. पूर्व में होगा। सायं मं. बु. पश्चिम में परस्पर निकटस्थ एवं गु. श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व की ओर काफी लम्बित दिखलाई देंगे। ६ उ. द. गोल। शरद् ऋतु।

चन्द्रदर्शन उ. शृं. उ., चित्रा में मंगल ४३।७, नक्त व्र. स.

रवि डलावर मु. ४, मेला श्री बाबा गुसाईयाणां कुराली

भ. ४३।१७ उ. उफा. में सूर्य २९।२५, व. शनि उ.षा. १ धनु में ¤

भ. १३।५२ या., ऋषि पंचमी, ¤४६।८ हरितालिका व्र., कलंक४

जन्मदिन श्री १०५ धर्ममार्तण्ड बघाटनरेश जी

सं. कन्यार्क ५४।२८, मु. १५ पुण्य दूसरे दिन, चित्रा में बुध ८।४५‡

भ. ९।३६ उ. ३७।४७ या., ‡सूर्य षष्ठी व्र.,

मघा सिंह में शुक्र ५।२,

श्रीचन्द्रनवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)

भ. २३।२८ उ. ५०।३७ या., पद्मा ११ व्र. स्मा.,

पंचक प्रा. ४९।४४, तुला में मंगल ४६।४५, तुला में बुध ∓

प्रदोष व्र. ∓१८।२७, पद्मा ११ व्र. नि., वामन १२,

भ. ३२।२९ उ. ५९।३६ या., रा. सौर आश्वि. प्रा., सा. तुला ×

प्रौष्ठपदी, सत्यव्रत, × में सूर्य १४।५०, ꠰

꠰रा. गोवर्धन, गण पर्णी ४९।१०, अनन्त १४, मेला छपार,

भाद्रपद शुक्ल ८ चन्द्रवार इष्ट ४४।२५, के. अहर्गण २७२३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	५	९	४	८	४	१०
२	२७	२६	४	०	२२	२	२
१७	५८	४६	४	४७	५४	१२	१२
१	५७	५३	४१	२९	३४	३२	३२
५८	३९	३६	०	७२	०	३	३
३७	५७	४०	५३	२८	४९	११	११
उदय	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. २	चित्रा १	चित्रा ३	उ.षा. ३	मघा २	उ.षा. २	मघा १	[illegible] ३
नीर	अग्नि	अग्नि	नीर	अमृत	नीर	अमृत	अमृत

७ | ५ रा.
८ | सू.मं.६बु. | ४शु.
श. ९ चं. | ३
१०गु. | १२ | २
११ के. | १

इस पक्ष में पशुओं में रोग फैले एवं जनता में हैजा आदि संक्रामक रोगों से भय व्याप्त हो। शासन की ओर से नए-नए उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन मिले। पक्षारम्भ में सोना, पीतल, ताम्बा, वस्त्र, सूत, ई व रुई में तेजी आए और चान्दी में घटाबढ़ी चले। गेहूँ, जौ, चना, चावल तेज रहें। ति० ४ से तृण, लकड़ी, कोयले का भाव तेज रहे। ति. ६ से खांड आदि रसदार पदार्थों व बिनौलों में तेजी आए। ति. ८ से लाल चन्दन, लाल मिर्च, मजीठ और अन्य लाल वर्ण की चीजों व पशुओं में तेजी आए। ति. १२ से उड़द, मूंग, जूट, पाट, बारदाना, गुड़, मूंगफली में तेजी आएगी। वायदा बाजार में ति. ५ तक अच्छी तेजी रहकर घटाबढ़ी चलेगी। इस पक्ष में सन, सूत खरीद कर आगे पांचवें महीने में बेचने से लाभ हो।

आकाशलक्षण—ति. १ से ४ तक वायु का जोर रहे। ति. ९ से १५ तक कहीं खण्डवृष्टि के योग हैं। कहीं वृष्टि के अभाव से एवं कहीं वृष्टि की अधिकता से फसल को हानि पहुँचेगी। काश्मीर और पश्चिमी पाकिस्तान (रावलपिण्डी की ओर) वायु का जोर रहेगा और वर्षा भी होगी।

भाद्रपद शुक्ल १५ रविवार इष्ट ४४।१७, के. अहर्गण २७२९

७म.बु. | शु.५रा.
८ | सू. ६ | ४
९ श. | ३
१०गु. | १२ चं. | २
११के. | १

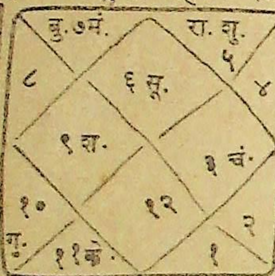
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	६	९	४	८	४	१०
८	१	४	४	८	२१	१	१
९	५८	०	२	३	५१	५३	५३
१०	८	४७	२८	२७	७	२८	२८
१८	४०	६५	०	७२	०	३	३
१८	८	५५	१८	५४	१२	११	११
उदय	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	चित्रा ३	चित्रा ४	उ.षा. ३	मघा ३	उ.षा. २	मघा १	[illegible] ३
नीर	अग्नि	अग्नि	नीर	अमृत	नीर	अमृत	अमृत

ग्रहदर्शन—प्रातः शु. पूर्व में होगा। सायं मं. बु. पश्चिम में परस्पर निकटस्थ एवं गु. श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होंगे। †गोल। शरद् ऋतु।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	अ.	सि.	रा.	मु.	लग्नवार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	५३	१	चं.	२१	३०	उ.भा.	५	५६	ब्र.	१३	४५	कौ.	२१	३०	१०	२५	३	१४	मीन	६	१८	६	१५	५	७	५५	१७	पितृपक्ष महालयारम्भ,
२९	४८	२	मं.	१६	५४	रे.	२	५९	ध्रु.	७	१२	ग.	१६	५४	११	२६	४	१५	मे. २।५९	६	१९	६	१४	५	८	५४	१३	भ. ४५।२ उ., पंचक स. २।५९, शनि मार्गी ४४।१२,
२९	४४	३	बु.	१३	१०	अ.	५६/०	४३/५	व्या.	५६/१	७/१५	वि.	१३	१०	१२	२७	५	१६	मेष	६	१९	६	१३	५	९	५३	९	भ. १३।१० या., हस्त में सूर्य ६।५८, स्वाती में बुध १३।५७,§
२९	३९	४	गु.	१०	२४	कृ.	५९	३७	व.	५१	४५	बा.	१०	२४	१३	२८	६	१७	वृ.१४।४१	६	१९	६	११	५	१०	५२	८	§ श्री गणेश ४ व्र.,
२९	३४	५	शु.	८	४९	रो.	६०	०	सि.	४८	२७	तै.	८	४९	१४	२९	७	१८	वृष	६	२०	६	१०	५	११	५१	८	पू.फा. में शुक्र ४।१७,
२९	३०	६	श.	८	२८	रो.	०	४२	व्य.	४६	७	व.	८	२८	१५	३०	८	१९	मि.३१।५३	६	२१	६	९	५	१२	५०	११	भ. ८।२८ उ. ३८।५५ या.,
२९	२५	७	र.	९	२३	मृ.	३	५	व.	४४	५१	ब.	९	२३	१६	अ१	९	२०	मिथुन	६	२१	६	७	५	१३	४९	१६	अक्तूबर १० ता. ३१, स्वा. में मंगल ४३।३८,
२९	२०	८	चं.	११	३७	आ.	६	४४	प.	४४	२१	कौ.	११	३७	१७	२	१०	२१	क ५५।१६	६	२२	६	६	५	१४	४८	२४	स्वा. ४ में इन्द्र ५४।०, श्री गान्धी जयन्ती,
२९	१६	९	मं.	१५	०	पुन.	११	२७	शि.	४४	४९	ग.	१५	०	१८	३	११	२२	कर्क	६	२२	६	४	५	१५	४७	३३	स. ४७।९ उ., सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	११	१०	बु.	१९	१८	पु.	१७	७	सि.	४५	५१	वि.	१९	१८	१९	४	१२	२३	कर्क	६	२३	६	३	५	१६	४६	४५	भ. १९।१८ या.,
२९	६	११	गु.	२४	१४	आश्ले.	२३	२३	सा.	४७	१५	बा.	२४	१४	२०	५	१३	२४	सिं२३।२३	६	२३	६	२	५	१७	४६	०	इन्दिरा ११ व्र. स.,
२९	२	१२	शु.	२९	२६	म.	२९	५५	शु.	४८	४४	तै.	२९	२६	२१	६	१४	२५	सिंह	६	२४	६	१	५	१८	४५	१७	
२८	५७	१३	श.	३४	३४	पू.फा	३६	१६	शु.	४९	५९	ग.	२	०	२२	७	१५	२६	कं. ५२।४२	६	२४	५	५९	५	१९	४४	३५	भ. ३४।३४ उ., शनि प्रदोष व्र.,
२८	५२	१४	र.	३९	३	उ.फा.	४२	०	ब्र.	५०	४६	वि.	६	२७	२३	८	१६	२७	कन्या	६	२५	५	५८	५	२०	४३	५८	भ. ६।४७ या., शस्त्र विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध,
२८	४८	३०	चं.	४२	३९	हस्त	४६	५६	ऐं.	५०	४२	च.	१०	२१	२४	९	१७	२८	कन्या	६	२६	५	५७	५	२१	४३	२३	उ.फा. में शुक्र ५७।१०, गजच्छाया, सोमवती ३०, मेला फल्गु*, *अज्ञात मृत्युतिथि वालों एवं समस्त पितरों का श्राद्ध,

आश्विन कृष्ण ८ चन्द्रवार इष्ट ४४।५, के. अहर्गण २७३७

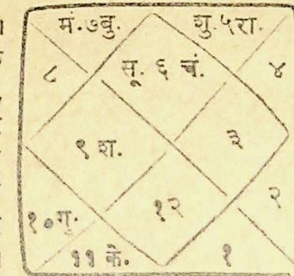
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	६	९	४	८	४	१०
६	७	११	४	१७	२९	१	१
०	२०	३२	१०	४८	५२	२८	२८
६	४८	४६	१६	४०	५	१	१
९	४०	४४	१	७३	०	३	३
५	३८	१४	५०	२५	३४	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	स्वा. १	स्वा. २	उ.फा. ३	[illegible]	उ.षा. १	पू.भा. १	[illegible]



इस पक्ष में—औषधि-निर्माण उद्योग में प्रगति होगी। पश्चिमी देशों में भय व्याप्त हो। अन्न आदि के भाव पहिले मध्यम रहकर बाद में तेज हों। ति. ३ से खांड, सूत, जूट, नमक हींग, धनिया, हल्दी, लकड़ी में तेजी आए, और रुई में मन्दी का रुख रहे। ति. ७ से चान्दी में घटाबढ़ी और सोने में कुछ मन्दापन रहे। तिल, सरसों, मूंगफली में तेजी आए। नील, काली वस्तुएं, घी, उड़द, मूंग और कपास के भाव तेज रहें। हाथी दान्त की चीजें भी तेज रह। कहीं अनाज की उपज की हानि हो। चीन आदि में कहीं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। यवन देशों में रोग आदि से भय हो। ऊँटों को पीड़ा हो।

आकाशलक्षण—सूर्य से आगे भौम चल रहा है। अतः कई जगह अनावृष्टि से हानि हो, और वायु का जोर रहे। ति. १ से ४ और ति. ८ से १० तक कहीं-कहीं खण्डवृष्टि एवं महाराष्ट्र और बड़ौदा की ओर वायु के साथ वर्षा हो।

आश्विन कृष्ण ३० चन्द्रवार इष्ट ४३।५५, के. अहर्गण २७४४



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	६	९	४	८	४	१०
२२	१२	१४	४	२६	२९	१	१
५४	६	४८	२७	२३	५८	५	५
५२	४७	३१	१३	३८	२	४५	४५
५९	४१	६	३	७३	१	३	३
१९	२	१६	१२	४६	१५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ.
हस्त ४	स्वा. २	स्वा. ३	उ.फा. ३	पू.फा. ४	उ.षा. १	पू.भा. १	[illegible]

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ता.	ब.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२८	४३	१	मं.	४५	५	चि.	५०	४४	वं.	४१	४५	किं.	१३	५२	२५	१०	१८	२९	तु. १८।५०	६	२६	५	५६	५	२२	४२	४९
२८	३९	२	बु.	४६	२०	स्वा.	५३	२०	वि.	४७	५३	बा.	१५	४२	२६	११	१९	३०	तुला	६	२७	५	५५	५	२३	४२	१७
२८	३४	३	गु.	४६	१५	वि.	५४	३९	प्री.	४५	१	तै.	१६	१७	२७	१२	२०	ज१	वृ. ३९।१९	६	२७	५	५४	५	२४	४१	४७
२८	३०	४	शु.	४४	५५	अनु.	५४	४५	आ.	४१	५	व.	१५	३५	२८	१३	२१	२	वृश्चिक	६	२८	५	५२	५	२५	४१	२०
२८	२५	५	श.	४२	२२	ज्ये.	५३	४३	सौ.	३६	१७	ब.	१३	३८	२९	१४	२२	३	ध. ५३।४३	६	२९	५	५१	५	२६	४०	५६
२८	२१	६	र.	३८	५०	मू.	५१	४४	शो.	३०	३८	कौ.	१०	३६	३०	१५	२३	४	धनु	६	३०	५	५०	५	२७	४०	३४
२८	१६	७	चं.	३४	२६	पू. षा.	४८	५७	अ.	२४	१७	ग.	६	३८	३१	१६	२४	५	धन	६	३१	५	४९	५	२८	४०	१३
२८	१२	८	मं.	२९	२०	उ. षा	४५	२१	सु.	१७	२१	वि.	१	५३	क१	१७	२५	६	म. ३।५	६	३१	५	४८	५	२९	३९	५४
२८	७	९	बु.	२३	४३	श्र.	४१	२४	धृ.	९	५५	कौ.	२३	४३	२	१८	२६	७	मकर	६	३२	५	४७	६	०	३९	३८
२८	३	१०	गु	१७	४६	ध.	३७	२६	शू.	[illegible]	[illegible]	ग.	१७	४६	३	१९	२७	८	कुं. ९।३०	६	३३	५	४६	६	१	३९	२५
२७	५८	११	शु	११	४०	श.	३३	१२	वृ.	४६	३४	वि.	११	४०	४	२०	२८	९	कुम्भ	६	३४	५	४५	६	२	३९	१३
२७	५४	१२	श.	५	४४	पू. भा.	२९	१०	ध्रु	३८	५५	बा.	५	४४	५	२१	२९	१०	मी १५।११	६	३४	५	४४	६	३	३९	३
२७	४९	१३	र.	०	४	उ. भा.	२५	३०	व्या	३१	३५	तै.	०	४	६	२२	३०	११	मीन	६	३५	५	४३	६	४	३८	५६
अव	म	१४	र.	५४	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	४४	१५	चं.	५०	२५	रे.	२२	२३	ह.	२४	४४	वि.	२२	४०	७	२३	क१	१२	वे. २२।२३	६	३६	५	४२	६	५	३८	५२

ग्रहदर्शन—ति. ७ को बु. एवं मं. पश्चिम में अस्त होंगे। प्रातः शु. पूर्व में एवं सायं गु. श. याम्योत्तरवृत्तलग्न दीखेंगे।

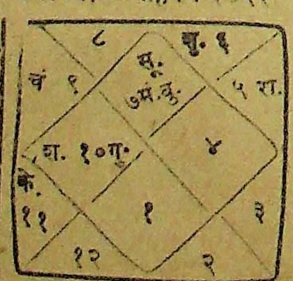
[illegible]गोल। शरद्-हेमन्त ऋतु।

चित्रा में सूर्य ३७।३०, मातामहश्राद्ध, नवरात्र प्रा., घटस्थापन, चन्द्र-दर्शन उ. शु. उ., बुध वक्री १२।५५, उ. पा. २ मकर में जमादि उलावल मु. ५, कन्या में शुक्र ३९।४७, †शनि १६।१०, भ. १५।३५ उ. ४४।५५ या.,

‡सरस्वती बलिदान, एवं विसर्जन, श्रीदुर्गाष्टमी, मेलाज्वाला मुखी० सरस्वती आवाहन, ‡५९।४५, सरस्वती पूजन, भ. ३४।२६ उ., बुध पश्चिम में अस्त ३३।५५, मंगल अस्त‡ भ. १।५३ या., सं. तुलार्क २०।७, मु. ४५, पुण्य ४।७ उ., ‡ अपराजिता पूजन, विजययात्रा १० भ. ४४।४३ उ., पंचक प्रा. ९।३०, मेला दशहरा (रावणवध) भ. ११।४० या., हस्त में शुक्र ४५।१२, पापांकुशा ११ व्र. स. विशा. में मंगल १०।०, शनि प्रदोष व्र.. ॰व तारादेवी, भ. ५४।५५ उ., व. बुध चित्रा में ३।५७, ∫जयन्ती ×शरत्-पूर्णिमा, आकाशदीपदान, कार्ति. स्ना. प्रा., म.वाल्मीकि ∫ भ. २०।४० या., पंचक स. २२।२३, रा. सौर कार्तिक प्रा., सा. () ()वृश्चिक में सूर्य ३६।४०, हेमन्त ऋतु प्रा., सत्यव्र., कोजागरी व्र.,×

आश्विन शुक्ल ८ भौमवार इष्ट ४३।४३, के अहर्गण २७५२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	९	५	९	४	१०
०	१७	११	४	६	०	०	०
५०	३६	४०	५८	१५	१०	४०	४०
१५	५७	१०	१६	२३	४४	१९	१९
५९	४१	६१	४	७४	२	३	३
३५	३२	५७	४०	१२	३	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ३	स्वा. ४	स्वा. ३	उ.फा. ३	उ.फा. ३	उ.फा. ३	मघा १	पू.फा. ३
अग्नि	वायु	वायु	नीर	नीर	नीर	अमृत	अमृत



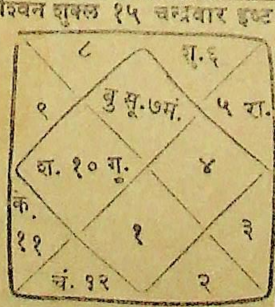
इस पक्ष में—घी व अनाज के भाव में तेजी रहे। सोना, चान्दी में अच्छी तेजी आए। व्यापारी लोग बाजार के अनिश्चित रुख के कारण घबराहट में रहें। गुड़, खांड, शक्कर में कुछ मन्दी और सूत, शण, वस्त्र में तेजी रहे। ति. ५ से ऊनी वस्त्र और रसकस में तेजी आए एवं चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी चले। ति. ८ से गेहूँ, चना, नमक, मिर्च, धनिया में तेजी एवं रुई, वस्त्र, सूत, ताम्बा, लोहा, पीतल, जस्ता, घी, उड़द, मूंग, रमास, मोठ के भाव मध्यम रहें। अरहर के भाव में कुछ तेजी हो। गाय, भैंस, बकरी के भाव मध्यम रहें। ति. ५, ६ को शेअर बाजार मन्दा और उसके बाद तेज रहे। इस पक्ष में सूत, शण के संग्रह से आगे लाभ मिले। समुद्र तटवर्ती स्थानों के विकास के लिए भारतसरकार को विशेष व्यय करना पड़े। भारत की प्रतिष्ठा बढ़े।

आकाशलक्षण—ति. २, ३, ८, ९, १३, १५ को कहीं-कहीं खण्डवृष्टि के योग पाए जाते हैं। विशेष कर सिक्किम, भूटान, शिलांग एवं पश्चिमी तट पर अच्छी वृष्टि हो।

शकुनविचार—साते, आठें [illegible] मिट जाय॥

असोज मास में [illegible]

आश्विन शुक्ल १५ चन्द्रवार इष्ट ४३।३०, के. अहर्गण २७५८



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	९	५	९	४	१०
६	२१	४	५	१३	०	०	०
४८	४६	४६	२८	४०	२४	२१	२१
२०	५७	५०	४८	५५	२६	१५	१५
५९	४१	६५	५	७४	२	३	३
४७	५२	३५	४२	२३	३८	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. १	विशा. १	चित्रा ४	उ.फा. ३	हस्त ३	उ.फा. ३	मघा १	पू.फा. ३

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	अं.	अ.	श.	मु.	सम्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सार सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२७	४०	१	मं.	४६	४६	अ.	२०	७	व.	१८	३३	बा.	१८	३५	८	२४	७	१३	मेष	६	३६	५	४०	६	६	३८	४८
२७	३५	२	बु.	४४	६	भ.	१८	३७	सि.	१३	४	तै.	१५	२६	९	२५	३	१४	वृ.२३।३१	६	३७	५	३९	६	७	३८	४७
२७	३१	३	गु.	४२	३६	कृ.	१८	१२	व्य.	८	२५	व.	१३	२१	१०	२६	४	१५	वृष	६	३८	५	३९	६	८	३८	४८
२७	२६	४	शु.	४२	२०	रो.	१९	१	व.	४	४७	ब.	१२	२८	११	२७	५	१६	मि. ५०।२	६	३९	५	३७	६	९	३८	५१
२७	२२	५	श.	४३	२४	मृ.	२१	४	प.	२	३	कौ.	१२	५२	१२	२८	६	१७	मिथुन	६	४०	५	३७	६	१०	३८	५७
२७	१८	६	र.	४५	४३	आ.	२४	२५	शि.	५९	५७	ग.	१४	३३	१३	२९	७	१८	मिथुन	६	४०	५	३५	६	११	३९	४
२७	१३	७	चं.	४९	१२	पुन.	२८	५२	सा.	५९	४७	वि.	१७	२७	१४	३०	८	१९	क.४२।४५	६	४१	५	३४	६	१२	३९	१५
२७	९	८	मं.	५३	३६	पु.	३४	२०	शु.	६०	०	बा.	२१	२४	१५	३१	९	२०	कर्क	६	४१	५	३३	६	१३	३९	२७
२७	५	९	बु.	५८	४०	आश्ले.	४०	२९	शु.	०	३५	तै.	२६	८	१६	न१	१०	२१	सिं४०।२९	६	४२	५	३२	६	१४	३९	४०
२७	१	१०	गु.	६०	०	म.	४६	५७	शु.	१	४९	व.	३१	१८	१७	२	११	२२	सिंह	६	४३	५	३१	६	१५	३९	५५
२६	५७	१०	शु.	३	५७	पू. फा.	५३	२२	ब्र.	३	१५	वि.	३	५७	१८	३	१२	२३	सिंह	६	४३	५	३१	६	१६	४०	११
२६	५३	११	श.	९	६	उ. फा.	५९	१८	ऐं.	४	२८	बा.	९	६	१९	४	१३	२४	क.९।५१	६	४४	५	३०	६	१७	४०	३१
२६	४९	१२	र.	१३	३७	ह	६०	०	वै.	५	१७	तै.	१३	३७	२०	५	१४	२५	कन्या	६	४५	५	२९	६	१८	४०	५२
२६	४५	१३	चं.	१७	१८	ह.	४	२२	वि.	१५	२३	व.	१७	१८	२१	६	१५	२६	तु.३६।२९	६	४६	५	२८	६	१९	४१	१५
२६	४१	१४	मं.	१९	४८	चि.	८	३०	प्री.	४	४१	श.	१९	४८	२२	७	१६	२७	तुला	६	४७	५	२७	६	२०	४१	४१
२६	३७	३०	बु.	२१	६	स्वा.	११	[illegible]	आ.	३	[illegible]	[illegible]	२१	६	२३	८	१७	[illegible]	[illegible]	६	[illegible]	५	[illegible]	६	[illegible]	[illegible]	०

ग्रहदर्शन—व. अस्त है। ति. ६ का बुध पूर्व में उदित होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में एवं सायं गु. श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होंगे। †गोल। हेमन्त ऋतु।

स्वा. में सूर्य १।१२,

भ. १३।२१ उ. ४२।३६ या.,
करक चतुर्थी (करवा चौथ),
व. बुध कन्या में ५०।५०,
भ. ४५।४३ उ., बुध पूर्व में उदित ३४।१०,
भ. १७।२७ या., आश्ले. ४ कर्क में राहु, धनि. २ मकर में केतु २४।१०
चित्रा में शुक्र २९।३०, अहोई ८,
नवम्बर ११ ता. ३०, बुध मार्गी २४।५,
भ. ३१।१८ उ.,
भ. ३।५७ या., उ. षा. ४ एवं अभि में गुरु ३९।३७,
वृश्चि. में मंगल २५।३०, तुला में बुध १२।५, रमा ११ व्र. स.,
तुला में शुक्र ५०।२०, प्रदोष व्र., यम को दीपदान,
भ. १७।१८ उ. ४८।३३ या., विशा. में सूर्य १८।३८, धन १३,
मघा ३ में वरुण २०।५७, दीपमाला, श्री महालक्ष्मीपूजन,
श्री हनुमान जयन्ती, नरक १४,

कार्तिक कृष्ण ८ भौमवार इष्ट ४० के अहर्गण २७६६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	५	९	५	९	३	९
१४	२७	२९	६	२३	०	२९	२९
४७	२३	५	१९	३७	४७	५५	५५
३३	३४	०	६	४९	४९	४९	४९
६०	४२	१	७	७४	३	३	३
३	१६	४१	०	४३	१८	११	११
मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	
अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८		गु. ६ बु.
९	सू. ७ मं.	५
श. १० के. गु.		चं. ४ रा.
११	१	३
१२		२

इस पक्ष में कहीं रोग भय हो एवं कहीं अराजकता की-सी स्थिति उत्पन्न हो। सूत, वस्त्र, अरहर, लाख, चपड़ा, केसर, कपूर तेज रहें। ति. ६ से सोना, चान्दी आदि धातु, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूँ, जौ, चना, हल्दी में तेजी और रुई में कुछ नरमाई रहे। ति. ९ से ११ तक चान्दी, सोना में कुछ मन्दी एवं ति. १२ से ३० तक सोना में १ टका, चान्दी में ३ टका के करीब तेजी आए। रुई में भी तेजी का योग है। अलसी, बिनौला, सरसों में मन्दी आए। ति. १२, १३ को शेअर बाजार में मन्दी व वस्त्रों के भाव में तेजी रहे। शासकों की नीति दोषपूर्ण हो। पूर्व-दक्षिण में भय हो। शासकों में परस्पर वैमनस्य बढ़े। यहाँ दीपमाला मंगलवार, स्वाती नक्षत्र और आयुष्मान् योग में आई है जो आगे घोर दुर्भिक्ष की सूचक है—

"शनि-भौमार्कवारेषु दर्शे आयुष्मता यतः। स्वातीयुक्तस्तदा चैव दुर्भिक्षं रौरवं भवेत् ॥"

आकाशलक्षण—ति. २, ३, ८, ९, १०, १४, ३० को कहीं-कहीं वायु के साथ बूंदाबांदी हो, विशेषकर पश्चिमी पंजाब (लायलपुर के आस पास) आन्ध्र प्रदेश, तथा दक्षिण पूर्वी (समुद्रतटवर्ती) मद्रास में।

[illegible]—कार्तिक [illegible] वर्षा [illegible] होय। [illegible] वर्षा अधिक [illegible] करो न कोय ॥

कार्तिक कृष्ण ३० बुधवार इष्ट ४२।०, के अहर्गण २७७८

८ मं.		६
९	सू. चं. ७ शु. बु.	५
श. के. १० गु.		४ रा.
११	१	३
१२		२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	६	९	६	९	३	९
२२	३	३	७	३	१	२९	२९
४८	३	४९	१९	३५	१६	३०	३०
४८	१	७	७	५१	४४	२२	२२
६०	४२	६७	८	७४	४	३	३
१८	४७	५७	१७	५८	०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. नवम्बर	रा. कार्ति.	मु. जमा.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	३३	१	गु.	२१	४	वि.	१३	३	सौ.	०	२७	ब.	२१	४	२४	९	१८	२९	वृश्चिक	६	४९	५	२६	६	२२	४२	४०
२६	३०	२	शु.	१९	४६	अनु.	१३	१७	अ.	५२	१३	कौ.	१९	४६	२५	१०	१९	ज१	वृश्चिक	६	५०	५	२६	६	२३	४३	१२
२६	२६	३	श.	१७	१६	ज्ये.	१२	४१	सु.	४६	४६	ग.	१७	१६	२६	११	२०	२	ध.१२।४१	६	५१	५	२५	६	२४	४३	४५
२६	२३	४	र.	१३	४८	मू.	१०	५४	धृ.	४०	३६	वि.	१३	४८	२७	१२	२१	३	धनु	६	५२	५	२५	६	२५	४४	१९
२६	१९	५	चं.	९	२६	पू. षा.	८	१९	शू.	३३	४८	बा.	९	२६	२८	१३	२२	४	म.२२।२	६	५२	५	२४	६	२६	४४	५६
२६	१५	६	मं.	४	२४	उ. षा.	४	५९	गं.	२६	२८	तै.	४	२४	२९	१४	२३	५	मकर	६	५३	५	२३	६	२७	४५	३४
अवम		७	मं.	५८	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	१२	८	बु.	५२	५९	श्र.	०	६	वृ.	१८	४७	वि.	२५	५५	३०	१५	२४	६	कुं. २९।५	६	५४	५	२३	६	२८	४६	१६
२६	८	९	गु.	४६	५६	ध.	५२	४६	ध्रु.	१०	५६	बा.	१९	५७	१	१६	२५	७	कुम्भ	६	५५	५	२२	६	२९	४६	५९
२६	५	१०	शु.	४१	७	पू. भा.	४८	४१	व्या.	३	३	तै.	१४	१	२	१७	२६	८	मी.३४।४२	६	५६	५	२२	७	०	४७	४२
२६	२	११	श.	३५	३०	उ. भा.	४४	५६	ह.	४७	४६	व.	८	१८	३	१८	२७	९	मीन	६	५६	५	२१	७	१	४८	२७
२५	५९	१२	र.	३०	२२	रे.	४१	३९	व.	४०	४४	ब.	२	५६	४	१९	२८	१०	मे. ४१।३९	६	५७	५	२१	७	२	४९	१२
२५	५६	१३	चं.	२५	५९	अ.	३९	८	सि.	३४	१६	तै.	२५	५९	५	२०	२९	११	मेष	६	५८	५	२०	७	३	५०	१
२५	५३	१४	मं.	२२	२६	भ.	३७	२७	व्य.	२८	२८	ब.	२२	२६	६	२१	३०	१२	वृ.५२।१६	६	५९	५	२०	७	४	५०	५२
२५	५०	१५	बु.	१९	५३	कृ.	३६	४५	व.	२३	३०	ब.	१९	५३	७	२२	म१	१३	वृष	७	०	५	२०	७	५	५१	४५

ग्रहदर्शन—म. अस्त है। बु. ति. १५को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः
बु. शु. पूर्व क्षितिज से कुछ ऊपर परस्पर आसन्नस्थ एवं सायं
गु. श. याम्योत्तरवृत्त से काफी पश्चिम की ओर ढलके दीखेंगे।

चंद्रदर्शन उ. शृं. उ., अनु. में मंगल ६।५०, अन्नकूट, गोवर्धन§
जयादि उलाखर मु. ६, भाई दूज, यम २, ✡हेमन्त ऋतु।
भ. ४५।३२ उ., स्वा. में बुध ४।२८, स्वा में शुक्र १०।१५,
भ.१३।४८ उ., §पूजा ('धर्मसिन्धु के मत से'),
† भीष्मपञ्चक प्रा., [वि.मु.रेव.] πमेला रामतीर्थ,
भ. ५८।५१ उ., जन्मदिन श्रीजवाहरलाल नेहरू, बालदिवस,
×ब कपाल मोचन, श्री गुरुनानक जयन्ती [वि. मु. रो.]
भ. २५।५५ पा., पंचक प्रा. २९।५, गोपाष्टमी (सायं गायों की
सं. वृश्चिकार्क १२।५०, मु. १५ पुण्य तारा दिन, कूष्माण्ड ९ ╤
निर्वाणदिवस ला. लाजपतराय, ╤का पूजन एवं अलंकरण),
भ. ८।१८ उ. ३५।३० पा., प्रबोधिनी ११व्र. स., तुलसीविवाह†
पंचक स.४१।३९, अनु में सूर्य ३०।२५, मन्वादि, [वि.मु.रेव.]
विशा. में बुध १४।३०, सोम प्रदोष व्र., वैकुण्ठ १४, ╤परिक्रमा ९
भ. २२।२६ उ. ५१।९ पा., विशा में शुक्र ४८।५५, सत्यव्र.,π
रा. सौर मार्ग. प्रा., सा. धनु में सूर्य ३०।०, बुध पूर्व में अस्त→
→५२।३०, भीष्म पंचक स., का. स्ना.स., मेला पुष्कर (अजमेर) ×

कार्तिक शुक्ल ८ बुधवार इष्ट ४२।४५, के. अहर्गण २७८१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	६	९	६	९	३	९
२९	८	१३	८	१२	१	२९	२९
५१	३	८	१९	२१	४६	८	८
२३	५२	४६	२८	४	२९	६	६
६०	४३	८८	९	७५	४	३	३
२९	११	११	७	८	३२	११	११
उदय	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

८ मं. | ६ | ९ | सू.७शु.बु. | ५ | श. | चं.१०के. | रा.४ | गु. | ११ | १ | ३ | १२ | चं.२

इस पक्ष में सत्पुरुषों को भय एवं दुर्जनों को प्रसन्नता हो। ज्वर या हृदयरोग फैले। पक्षारम्भ में सूत, रुई, तेल, सरसों, घी एवं सब प्रकार के ऊनी-रेशमी व सूती वस्त्रों में तेजी हो। सोना, चान्दी, खांड, गुड़ में कुछ मन्दी आए। गेहूँ, लाल मिर्च, लाल रत्न में कुछ तेजी रहे। ति. ९ से इलायची, जावित्री, जायफल, लोहा, नारियल में तेजी का असर रहे। मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, अरहर, मसूर में मन्दी आए। सोना, चान्दी, ताम्बे के भाव कुछ तेज होकर बाद में मन्दे हों। शण, जूट, पाट, गेरू, लौंग तेज हों। ति. १२ से दालचीनी, तोरिया, अलसी में मन्दी का रुख रहकर बाद में तेजी रहे। शेअर बाजार में भी तेजी रहे। कार्तिक शुक्ल ११ के दिन जहां वर्षा हो या बादल छाए हों, वहां आगे वर्षा ऋतु में समय-समय पर वर्षा अच्छी होती रहेगी।

आकाशलक्षण—ति. ४ से ८ और ११ से १५ तक कहीं बूँदाबांदी बादलवाल के योग हैं, विशेषकर उत्तरपूर्वी लंका में तथा मुल्तान एवं गुरदासपुर की ओर।

शकुनविचार—कार्तिक सुदी एकादशी बादल वर्षा होय। चार मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥

कार्तिक शुक्ल १५ बुधवार इष्ट ४२।३०, के अहर्गण २७८८

९ | शु.७बु. | गु. १०के. श. | सू. ८मं. | ६ | ११ | ५ | १२ | चं. २ | रा. ४ | १ | ३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	९	६	९	३	९
६	१३	२३	९	२१	२	२८	२८
५५	७	४९	२५	७	१९	४५	४५
१४	१२	४४	५४	१५	४५	५१	५१
६०	४३	९३	१०	७५	५	३	३
३९	३३	२९	०	१४	३	११	११
उदय	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष १८ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टैं टाईम | उदयकालिक | (२३नवंबर से ७ दिसम्बर तक सन् १९६१ई.) द. अयन-गोल।?

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	४७	१	गु.	१८	३१	रो.	३७	१७	शि.	१९	२७	कौ.	१८	३१	८	२३	२	१४	वृष	७	१	५	२०	७	६	५२	३९
२५	४४	२	शु.	१८	२४	मृ.	३९	२	सि.	१६	२२	ग.	१८	२४	९	२४	३	१५	मि. ८।९	७	१	५	१९	७	७	५३	३४
२५	४२	३	श.	१९	३५	आ.	४२	५	सा.	१४	१८	वि.	१९	३५	१०	२५	४	१६	मिथुन	७	२	५	१९	७	८	५४	३१
२५	३९	४	र.	२२	४	पुन.	४६	१५	शु.	१३	१३	बा.	२२	४	११	२६	५	१७	क. ३०।१३	७	३	५	१९	७	९	५५	२९
२५	३७	५	चं.	२५	४२	पु.	५१	२९	शु.	१३	१	तै.	२५	४२	१२	२७	६	१८	कर्क	७	४	५	१९	७	१०	५६	२७
२५	३४	६	मं.	३०	१३	आश्ले.	५७	२८	ब्र.	१३	३५	व.	३०	१३	१३	२८	७	१९	सिं५७।२८	७	५	५	१९	७	११	५७	२८
२५	३२	७	बु.	३५	२३	म.	६०	०	ऐं.	१४	३८	वि.	२	४८	१४	२९	८	२०	सिंह	७	५	५	१८	७	१२	५८	२९
२५	२९	८	गु.	४०	४७	म.		३ ५६	वै.	१६	०	बा.	८	५	१५	३०	९	२१	सिंह	७	६	५	१८	७	१३	५९	३४
२५	२७	९	शु.	४५	५९	पू. फा.	१०	२५	वि.	१७	१५	तै.	१३	२३	१६	दि१	१०	२२	कं. २६।५६	७	७	५	१८	७	१५	०	४०
२५	२४	१०	श.	५०	३१	उ. फा.	१६	३०	प्री.	१८	१०	व.	१८	१५	१७	२	११	२३	कन्या	७	८	५	१८	७	१६	१	४६
२५	२२	११	र.	५४	८	ह.	२१	५२	आ.	१८	३४	ब.	२२	१९	१८	३	१२	२४	तु. ५४।२	७	९	५	१८	७	१७	२	५४
२५	२०	१२	चं.	५६	४०	चि.	२६	१३	सौ.	१८	५	कौ.	२५	२४	१९	४	१३	२५	तुला	७	१०	५	१८	७	१८	४	४
२५	१७	१३	मं.	५७	५७	स्वा.	२९	२७	शो.	१६	४८	ग.	२७	१८	२०	५	१४	२६	तुला	७	११	५	१८	७	१९	५	१५
२५	१५	१४	बु.	५७	५९	वि.	३१	२३	अ.	१४	२८	वि.	२७	२६	२१	६	१५	२७	वृ. १५।५४	७	१२	५	१८	७	२०	६	२७
२५	१३	३०	गु.	५६	३८	अनु.	३२	४	सु.	११	८	च.	२७	१६	२२	७	१६	२८	वृश्चिक	७	१३	५	१८	७	२१	७	३९

ग्रहदर्शन—मं. बु. अस्त है। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज से कुछ ऊपर होगा। सायं गु. श. पश्चिमी क्षितिज से काफी ऊपर दीखेंगे।
?हेमन्त ऋतु।

भ. ४८।५९ उ.,
भ. १९।३५ या., श्रीगणेश ४ व्र.
वृश्चि. में बुध ४०।३२, श्रव. १ में गुरु ४।२२,
ज्ये. में मंगल ३५।२,
भ. ३०।१३ उ., अनु. में बुध ४६।१५,
भ. २।४८या., वृश्चि.में शुक्र४६।४०, श्री महाकाल भैरवाष्टमी,

दिसम्बर १२ ता. ३१, गुरु अभि. से निवृत्त५।२५,[वि.मु.उ..फा.]
भ. १८।१५ उ., ५०।३१ या., ज्ये. में सूर्य ३७।३०, अनु.में शुक्र†
उ. षा. ३ में शनि ५५।१८, उत्पन्ना११व्र. स्मा. वै. [वि.मु.ह.चि.]
उत्पन्ना ११ व्र. नि., मल्ल १२, [वि. मु. स्वा.]
भ. ५७।५७ उ., भौम प्रदोष व्र., †२५।३७, [वि. मु. ह.]
भ. २७।५६ या., वरुण वक्री २२।३, मेला पुरमण्डल
ज्ये. में बुध १४।२०,

मार्ग. कृष्ण ८ गुरुवार इष्ट ४२।१५, के. अहर्गण २७९६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	९	७	९	३	९
१५	१८	६	१०	१	३	२८	२८
१	५६	१२	४९	९	१	२०	२०
६	४७	१९	८	५८	५८	२५	२५
६०	४३	९४	१०	७५	५	३	३
५०	५५	२४	५४	२५	३३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	ब.	उ.	उ.	उ.	अ.	ब.

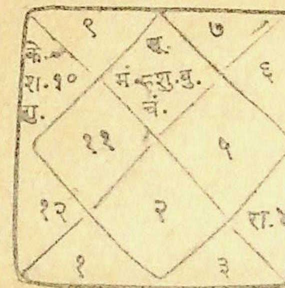


इस पक्ष में कर्याणे की वस्तुओं में तेजी रहेगी। गेहूँ आदि अन्न तथा घी में कुछ नरमाई रहेगी। रुई में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। सोना आदि धातुएं मन्दी और गाय भैंस आदि दुधारु पशु तेज हों। ति. ८ से रुई अलसी और चांदी के भाव में तेजी, गुड़ के भाव में घटाबढ़ी और मूंग, मोठ, ज्वार के भाव में मन्दी आएगी। ति. ११ से गेहूँ, जौ, चना, चावल, सरसों, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, गुग्गुल, हींग और पारे में तेजी रहे। ति. १२ से गुड़, शक्कर में अकस्मात् तेजी आए। यहां एकादशी को रविवार है, अतः यहां कपास सूत के संग्रह से आगे वैशाख में लाभ हो। इस पक्ष में कहीं यान दुर्घटना या कहीं प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट हो। शासक-वर्ग चिन्तित रहे। यहां चार ग्रह इकट्ठे हो रहे हैं अतः शासकों को शत्रुभय हो। लिखा है—

"चत्वारः पञ्च वा खेटा बलिनस्त्वेकराशिगाः। राज्ञां बहु भयं दद्युररिभिर्दुःखदा मताः।"

आकाशलक्षण—ति. ३ से ७ तक कहीं-कहीं बादलचाल व साधारण वर्षा के योग पाए जाते हैं, विशेषकर उत्तरपूर्वी लंका, मद्रास व पश्चिमी पाकिस्तान के उत्तरी भाग में।

मार्ग. कृष्ण ३० गुरुवार इष्ट ४१।५८, के. अहर्गण २८०३



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	९	७	९	३	९
२२	२४	१७	१२	९	३	२७	२[illegible]
७	५	२३	७	५८	४१	५८	५[illegible]
२०	१२	४४	२४	३२	५४	१०	१[illegible]
६०	४४	९४	११	७५	५	३	३
५६	१५	४१	३३	३१	५५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	ब.

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष १९ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | उदयकालिक | (८ दिसम्बर से २१ दिसम्बर तक सन् १९६१ई.) द. अयन-†

प्र. अं. रा. मु. | ग्रहदर्शन—मं. बु. अस्त है। शुक्र को प्रातः पूर्व में एवं सायं गु. श.

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ग्र. मार्ग.	अं. विसं.	रा. मार्गं.	मु. ज.उ.	सञ्चार	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
५	११	१	शु.	५४	९	ज्ये.	३१	३४	शू.	६	४९	कि.	२५	२३	२३	८	१७	२९	ध.३१।३४	७	१४	५	१८	७	२२	८	५२
५	१०	२	श.	५०	४१	मू.	३०	०	गं.	१ ५८	३६ ४०	बा.	२२	२५	२४	९	१८	३०	धनु	७	१४	५	१८	७	२३	१०	५
५	८	३	र.	४६	२१	पू. षा.	२	३८	वृ.	४९	१	तै.	१८	३१	२५	१०	१९	इ.१	ध.४१।५०	७	१५	५	१८	७	२४	११	१९
५	७	४	सो.	४१	१९	उ. षा.	२४	२५	ध्रु.	४१	४९	व.	१३	५०	२६	११	२०	२	मकर	७	१५	५	१८	७	२५	१२	१४
५	६	५	मं.	३५	४९	श्र.	२०	४२	व्या.	३४	१४	ब.	८	३४	२७	१२	२१	३	कु.४८।४०	७	१६	५	१८	७	२६	१३	४९
५	४	६	बु.	३०	१	ध.	१६	३९	ह.	२६	२६	कौ.	२	५५	२८	१३	२२	४	कुम्भ	७	१७	५	१९	७	२७	१५	८
५	३	७	गु.	२४	७	श.	१२	२७	व.	१८	३०	व.	२४	७	२९	१४	२३	५	मी.५४।२१	७	१८	५	१९	७	२८	१६	२७
५	२	८	शु.	१८	२०	पू. भा.	८	१९	सि.	१०	३८	ब.	१८	२०	१	१५	२४	६	मीन	७	१८	५	१९	७	२९	१७	४६
२५	१	९	श.	१२	५१	उ. भा.	४	२८	व्य.	३ ५५	० ४	कौ.	१२	५१	२	१६	२५	७	मीन	७	१९	५	१९	८	०	१९	८
२५	०	१०	र.	७	५०	रे.	५८	२२	व.	४९	२	ग.	७	५०	३	१७	२६	८	मे.१।५	७	२०	५	२०	८	१	२०	३०
२५	०	११	चं.	३	३४	भ.	५६	३२	शि.	४३	०	वि.	३	३४	४	१८	२७	९	मेष	७	२१	५	२१	८	२	२१	५९
२४	५९	१२	मं.	०	७	कृ.	५५	३७	सि.	३७	४३	बा.	०	७	५	१९	२८	१०	वृ.११।१८	७	२१	५	२१	८	३	२३	१३
अवम		१३	मं.	५७	४०	०/	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	५९	१४	बु.	५६	२६	रो.	५५	५२	सा.	३३	१७	ग.	२७	३	६	२०	२९	११	वृष	७	२२	५	२२	८	४	२४	३५
२४	५९	१५	गु.	५६	२८	मृ.	५७	२२	शु.	२९	५२	वि.	२६	२७	७	२१	३०	१२	मि.२६।३७	७	२२	५	२२	८	५	२५	५८

ग्रहदर्शन—मं. बु. अस्त हैं। शुक्र को प्रातः पूर्व में एवं सायं गु. श. को पश्चिम में देखें। गुरु शनि से ऊपर होगा।

†गोल। हेमन्त ऋतु।

चंद्रदर्शन उ. शु उ.,
रम्भाव्रत मु. ७,
भ. १३।५० उ. ४१।१९ या., [वि. मु. श्रव.,]
पंचक आ. ४८।४०, नागपंचमी, [वि. मु. श्रव.]
श्रव. २ में गु. ५१।८, ज्ये. में शुक्र ०।४५, चम्पा ६,
भ. २४।७ उ. ५१।१३ या.,
सं. सू. धनुरर्क ४१।१५, मु. ४५ पुण्य मध्याह्नोत्तर, मू. धनु ()
()में मंगल ४१।५, मू. धनु में बुध ३९।५०,
भ. ३५।४२ उ., पंचक स. १।५,
भ. ३।३४ या., मोक्षदा ११ व्र. स., श्री गीताजयन्ती,
भीम प्रबोधव्र.,

भ. ५६।२६ उ., पिशाचमोचन श्राद्ध,
भ. २६।२७ या., सत्यव्र., श्री दत्तजयन्ती,

मार्ग. शुक्ल ८ शुक्रवार इष्ट ४१।४५, क. अहर्गण २८११

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	८	८	८	९	७	९	३	९
	०	०	०	१३	२०	४	२७	२७
	१५	०	३	४२	२	३०	३२	३२
	१६	३४	२	२२	४९	४३	४३	४३
	६१	४४	९५	१२	७५	६	३	३
	४	३८	१२	१५	३३	१८	११	११
	दृश्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	मूल १	मूल १	मूल १	श्रव. २	ज्ये. २	उ.षा. ३	आश्ले. ४	धनि. २
	अग्नि	अग्नि	अग्नि	अमृत	वायु	नीर	अमृत	अमृत

श. के.१० गु. | ९ | शु. बु. ८ सू. मं. | ७ | ६ | ११ | ५ | १२ चं. | २ | रा.४ | १ | ३

इस पक्ष में प्रजा एवं शासक-वर्ग के मध्य संघर्ष रहे। यहाँ वृश्चिक राशि में चतुर्ग्रही योग है, जो विश्व में रोग, भय एवं कहीं युद्ध का-सा तनाव उत्पन्न करेगा। चीन, अमरीका, पाकिस्तान आदि देशों के शासक-मण्डल में कुछ उलट फेर हो। गेहूँ, जौ, चना, मटर के भाव सम रहें। गुड़, खांड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, अलसी, मूंग, मोठ में घटाबढ़ी चलेगी, अन्त में परिणाम मन्दी का ही रहेगा। ति. ५ से गेहूं, लाल रङ्ग, लाल मिर्च व लाल चन्दन में मन्दी हो। इस पक्ष में व्यापारियों को व्यापारिक वस्तुओं का स्टाक करना उचित नहीं। जहाँ तक हो सके स्टाक निकाल देना चाहिए। ति. ९ से बिनौला, सरसों, वस्त्र, सूत, सोना, चान्दी में तेजी का असर होगा। जिस देश में ति. ७ या ९ को बादल हों या ईशानकोण में बादल दिखाई दें तो वहाँ आगे वर्षा की कमी से कृषकों को कष्ट हो।

आकाशलक्षण—ति. ५ से १२ तक कहीं-कहीं बादलचाल व बंदाबांदी के योग हैं। भारत के पूर्वोत्तरी सीमाप्रान्त, मद्रास में इन दिनों में साधारण वर्षा होगी।

शकुनविचार—कार्ले[illegible] वर्षा अच्छी होग ॥

मार्ग. शुक्ल १५ गुरुवार इष्ट ४१।३५, क. अहर्गण २८१७

के.रा.गु. १० | ८ शु | ११ | सू.बु ९मं. | ७ | १२ | ६ | १ | ३ | ५ | चं. २ | रा. ४

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	८	८	८	९	७	९	३	९
	६	४	९	१४	२७	५	२७	२७
	२१	२९	३४	५६	३६	९	१३	१३
	५२	७	२६	५३	७	७	३९	३९
	६१	४४	९५	१२	७५	६	३	३
	८	५४	२८	४०	३४	३२	११	११
	दृश्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	मूल २	मूल २	मूल ३	श्रव. २	ज्ये. ४	उ.षा. ३	आश्ले. ४	धनि. २
	अग्नि	अग्नि	अग्नि	अमृत	वायु	नीर	अमृत	अमृत

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ पौष कृष्णपक्ष २० | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टाईम | उदयकालिक | (२२ दिसम्बर स. १९६१ से ६ जनवरी सन् १९६२ तक) उ. अयन।

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं. दिसम्बर	रा.	मु. जनवरी	चन्द्र संचार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२४	५८	१	शु.	५७	५१	आ.	६०	०	शु.	२७	२४	बा.	२७	९	८	२२	१	१३	मिथुन	७	२३	५	२२	८	६	२७	२२
२४	५८	२	श.	६०	०	आ.	०	८	ब्र.	२६	०	तै.	२९	८	९	२३	२	१४	क. ४८।४	७	२४	५	२३	८	७	२८	४६
२४	५९	२	र.	०	२५	पुन.	४	३	ऐं.	२५	२५	ग.	०	२५	१०	२४	३	१५	कर्क	७	२४	५	२४	८	८	३०	१०
२४	५९	३	चं.	४	१०	पु.	९	७	वै.	२५	४४	वि.	४	१०	११	२५	४	१६	कर्क	७	२४	५	२४	८	९	३१	३५
२५	०	४	मं.	८	४८	आश्ले.	१४	५९	वि.	२६	३८	बा.	८	४८	१२	२६	५	१७	सिं. १४।५९	७	२५	५	२५	८	१०	३३	०
२५	१	५	बु.	१४	२	म.	२१	२५	प्री.	२७	५३	तै.	१४	२	१३	२७	६	१८	सिंह	७	२५	५	२५	८	११	३४	२५
२५	२	६	गु.	१९	२८	पू. फा.	२७	५८	आ.	२९	१४	व.	१९	२८	१४	२८	७	१९	कं. ४४।३१	७	२५	५	२६	८	१२	३५	५०
२५	२	७	शु.	२४	३८	उ. फा.	३४	१२	सौ.	३०	१९	ब.	२४	३८	१५	२९	८	२०	कन्या	७	२६	५	२७	८	१३	३७	१५
२५	३	८	श.	२९	१०	ह.	३९	४८	शो.	३०	५७	कौ.	२९	१०	१६	३०	९	२१	कन्या	७	२६	५	२७	८	१४	३८	४१
२५	४	९	र.	३२	४६	चि.	४४	२७	अ.	३०	४८	तै.	०	५८	१७	३१	१०	२२	तु. १२।७	७	२६	५	२८	८	१५	४०	७
२५	५	१०	चं.	३५	१३	स्वा.	४७	५९	सु.	२९	४५	व.	३	५९	१८	ज१	११	२३	तुला	७	२७	५	२९	८	१६	४१	३३
२५	६	११	मं.	३६	२३	वि.	५०	१५	धृ.	२७	५०	ब.	५	४८	१९	२	१२	२४	वृ. ३४।४१	७	२७	५	२९	८	१७	४२	५९
२५	७	१२	बु.	३६	१४	अनु.	५१	१५	शू.	२४	५२	कौ.	६	१८	२०	३	१३	२५	वृश्चिक	७	२७	५	३०	८	१८	४४	२५
२५	९	१३	गु.	३४	५१	ज्ये.	५१	२	गं.	२०	५३	ग.	५	३२	२१	४	१४	२६	ध. ५१।२	७	२७	५	३१	८	१९	४५	५१
२५	१०	१४	शु.	३२	१९	मू.	४९	४२	वृ.	१६	०	वि.	३	३५	२२	५	१५	२७	धनु	७	२७	५	३१	८	२०	४७	१६
२५	१२	३०	श.	२८	४७	पू. षा.	४७	३८	ध्रु.	१०	१६	च.	०	३३	२३	६	१६	२८	धन	७	२७	५	३२	८	२१	४८	४१

ग्रहदर्शन— म. बु. अस्त है। ति. ८ को शु. पूर्व में एवं ति. १४ को श. पश्चिम में अस्त होगा। गु. को सायं पश्चिम में देखें।
†द. गोल शिशिर-ऋतु।

रा. सौर पौष प्रा., सा. मकर में सूर्य ०।४२, उ. शिशिर ऋतु प्रा.,
मू. धनु में शुक्र ३५।५०,
भ. ३२।१७ उ., पू षा. में बुध ३।५,
भ. ४।१० या., श्रीगणेश ४ व्र., क्रिस्मसड,

शुक्रवार्द्धक्य आरम्भ ४५।३६, मेला बाबा हरवल्लभ (जालंधर)
भ. १९।२८ उ. ५२।३ या., पू. षा. में सूर्य ४३।७,
श्रव ३ में गुरु ४०।३२, () राहु, धनि १ में केतु १६।१७,
शुक्र पूर्व में अस्त ४५।३६, [शु. अ]
सन् १९६१ ई. समाप्त न्यू इयर ईव,
भ. ३।५९ उ. ३५।१३ या., जनवरी १ ता. ३१, ई. सन् १९६२ प्रा.
पू. षा. में मंगल २६।१५, सफला ११ व्र. स.,
मकर में बुध २३।१५, पू. षा. में शुक्र १०।५५, व. वरुण मघा मा.
भ. ३४।५१ उ., उ. षा. ४ एवं अभि. में शनि ९।५०, प्रदोष व्र.,
भ. ३।३५ या., शनि अस्त ५४।५, मा. २ म ४९।१२,
शनैश्चरी ३० प्रा. उ. षा. में बुध १९।४२, आश्ले ३ में ()

पौष कृष्ण ८ शनिवार इष्ट ४१।२५ के. अहर्गण २८२६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	९	८	९	३	९
१५	११	२४	१६	८	६	२६	२६
२२	१५	०	५३	५६	९	४५	४५
८	१०	५४	२३	९	१८	०	०
१	४५	९७	१३	७५	६	३	३
०	२२	३	१६	३३	५०	११	११
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	
अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	

के. गु. श. १० | सू. | मं. ९ शु. | बु. | ८ | ११ | ७ | १२ | चं. ६ | १ | ३ | ५ | २ | रा. ४

इस पक्ष में पशु-पक्षियों को रोग भय हो एवं कहीं उपज को किसी प्रकार से हानि पहुँचेगी। गेहूँ, जौ, चना, सूत, वस्त्र, कपास, चान्दी, ताम्बा में तेजी रहेगी। ति. ६ से खांड, गुड़, हल्दी, कपूर, ऊनी वस्त्र, शण, जूट, पाट आदि में तेजी होगी। ति. १० से उड़द, चावल, घी, मूंगफली में तेजी और अनाज में कुछ नरमाई रहेगी। रुई में विशेष तेजी आएगी। पश्चात् में लोहा, लोहे की बनी वस्तुएं, सरसों, अलसी, तिलहन, तेल और शेयर बाजार में तेजी रहेगी। यहाँ अमावस्या के दिन शनिवार होने से प्रजा में किसी प्रकार का भय व्याप्त हो, एवं आ। चलकर मोटे अनाजों में तेजी आए। ति. ७ को आधी रात के समय जहाँ मेघ गरजे या वर्षा हो, वहाँ आगे वर्षाकाल में अच्छी वर्षा हो। लिखा है—

"पौषकृष्णस्य सप्तम्यां वारिवाहा महानिशि। यदा वर्षन्ति गर्जन्ति तदा प्रावृषि तोयदाः॥"

आकाशलक्षण—ति. ३ से ११ तक तथा ति. १४, ३० को बादलचाल व कहीं वर्षा के योग हैं। लंका, हिमाचल प्रदेश, शिलांग में इन तिथियों को ...

पौष कृष्ण ३० शनिवार इष्ट ४१।२३, के. अहर्गण २८३३

रा. गु. के. बु. १ | सू. | शु. ९ चं. | मं. | ८ | ११ | ७ | १२ | ६ | १ | ३ | ५ | २ | रा. ४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	९	९	८	९	३	९
२२	१६	५	१८	१७	६	२६	२६
४०	३३	२१	२७	४४	५७	२२	२२
१७	४२	११	२२	५७	३२	४७	४७
६१	४५	९७	१३	७५	६	३	३
१०	४१	५२	३७	३२	५८	११	११
	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.

वि० संवत् [illegible] शाक १८८३ पौष शुक्लपक्ष

वि.मा. घ.प.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		प्र. (पौष)	अं. (जन.)	रा. (पौष)	मु. (रज्ज.)	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
५	१४	१	र.	२४	२४	उ. षा.	४४	३६	व्या.	[illegible]	[illegible]	ब.	२४	२४	२४	७	१७	२९	म. १।५२	७	२७	५	३३	८	२२	५०	६
५	१६	२	चं.	१९	२२	श्र.	४१	२	व.	४९	२१	कौ.	१९	२२	२५	८	१८	शा१	मकर	७	२८	५	३४	८	२३	५१	३१
५	१८	३	मं.	१३	५०	ध.	३७	४	सि.	४१	३८	ग.	१३	५०	२६	९	१९	२	कुं. ९।३	७	२८	५	३५	८	२४	५२	५६
५	२१	४	बु.	८	२	श.	३२	५३	व्य.	३३	४२	वि.	८	२	२७	१०	२०	३	कुम्भ	७	२८	५	३५	८	२५	५४	२१
५	२३	५	गु.	२	९	पू. भा.	२८	४४	व.	२५	५०	बा.	२	९	२८	११	२१	४	मी. १४।४६	७	२७	५	३६	८	२६	५५	४७
ख	म	६	गु.	५६	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२६	७	शु.	५०	५६	उ. भा.	२४	४८	प.	१८	७	ग.	२३	४०	२९	१२	२२	५	मीन	७	२७	५	३७	८	२७	५७	१६
२५	२८	८	श.	४६	१	रे.	२१	१८	शि.	१०	४३	वि.	१८	२८	म१	१३	२३	६	मे. २१।१७	७	२७	५	३८	८	२८	५८	४०
२५	३१	९	र.	४१	५०	अ.	१८	२४	सि.	[illegible]	[illegible]	बा.	१३	५५	२	१४	२४	७	मेष	७	२७	५	३९	९	०	०	१
२५	३३	१०	चं.	३८	३१	भ.	१६	२६	शु.	५१	५९	तै.	१०	१०	३	१५	२५	८	वृ. ३।१८	७	२७	५	४०	९	१	१	२३
२५	३६	११	मं.	३६	१२	कृ.	१५	१६	शु.	४७	१५	व.	७	२१	४	१६	२६	९	वृष	७	२७	५	४१	९	२	२	४३
२५	३८	१२	बु.	३५	६	रो.	१५	१५	ब्र.	४३	२८	ब.	५	३९	५	१७	२७	१०	मि. ४५।५०	७	२७	५	४२	९	३	४	३
२५	४०	१३	गु.	३५	१६	मृ.	१६	२५	ऐं.	४०	४३	कौ.	५	११	६	१८	२८	११	मिथुन	७	२६	५	४२	९	४	५	२२
२५	४३	१४	शु.	३६	४५	आ.	१८	५४	वै.	३८	५८	ग.	६	०	७	१९	२९	१२	मिथुन	७	२६	५	४३	९	५	६	४१
२५	४६	१५	श.	३९	२६	पुन.	२२	३७	वि.	३८	११	वि.	८	५	८	२०	३०	१३	क. ६।४१	७	२६	५	४४	९	६	७	५९

ग्रहदर्शन—बु. ति. १ को पश्चिम में उदित होगा। मं. शु. श. अस्त हैं। गु. को सायं पश्चिम में देखें।

†गोल । शिशिर ऋतु ।

चन्द्रदर्शन उ. शृं. उ., बुध अभि. में प्रवृत्त २९।४२, बुध पश्चिम में उदित १२।३७,
शाबान मु. ८.
भ. ४०।५६ उ., पंचक प्रा. ९।३, श्रव में बुध ३४।१०,
भ. ८।२ या, उ. षा. में सूर्य ४४।३५, बुध अभि. से निवृत्त ७।४५,

☬ (पंजाब का उत्सव)
भ. ५०।५६ उ., जन्मदिन श्री गुरु गोविन्दसिंह जी, लोहड़ी ☬
भ. १८।२८ या., पंचक स. २१।१७, श्रव. ४ में गुरु २५।३०, +
विशा. १ में इन्द्र ५४।५०, + उ. षा. में शुक्र ४६।२७ सं. ( )
( ) मकरार्क ५९।५९, मु. ३० पुण्य दूसरे दिन,
भ. ७।२१ उ. ३६।१२ या., मकर में शुक्र २५।२७, पुत्रदा ११ व्र.स.

धनि. में बुध ४७।३७, प्रदोष व्र.,
भ. ३६।४५ उ., उ. षा. में मंगल ५३।२०,
भ. ८।५ या., सूर्य अभि. में प्रवृत्त ३१।२०, सा. कुम्भ में सूर्य ×
× २७।१० सत्यव्र., माघस्ना. प्रा.,

पौष शुक्ल ८ शनिवार इष्ट ४१।२३, के. अहर्गण २८४०

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	८	९	९	८	९	३	९
अं.	२९	२१	१६	२०	२६	७	२६	२६
क.	४८	५४	२४	३	३३	४६	०	०
वि.	१८	३४	८	४१	२९	५१	३१	३१
गति	६१	४६	९०	१३	७५	७	३	३
	८	०	३२	५६	२९	७	११	११
	दृश्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
	उ.षा. १	पू.षा. ३	श्रव. २	श्रव. ४	पू. षा. ४	उ.षा. ४	आश्ले. ३	धनि. १
	गौर	सौम्य	अमृत	अमृत	सौम्य	जल	अमृत	अमृत



इस पक्ष में कहीं बीमारी व भूकम्प आदि से जन धन की हानि, यान दुर्घटना, घोर हत्याकाण्ड या सीमाविवाद से अशान्ति हो। गेहूँ, मकई आदि अनाज पक्षारम्भ में कुछ मन्दे होकर बाद में तेज रहें। घी, तेल, कपास, व लाल पीली एवं काली चीजें तेज हों। ति. ११ से रुई चान्दी में घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। गुड़, खांड, तेल, सरसों व वस्त्रों के भाव तेज हों। पौष शुदी ११ को कृत्तिका नक्षत्र है, यह आगे लाल रङ्ग की वस्तुओं को तेज करेगा एवं अनाज का स्टाक करने वालों को आगामी वर्षाकाल के आरम्भ तक अच्छा लाभ होगा। लिखा है—

"एकादश्यां पौषशुक्ले कृत्तिकाभोगतः स्मृतः। रक्तवस्तुमहालाभः सुधान्यात्प्रथमाम्बुदे॥"

ति. १४ को यदि बिजली चमके तो आगे आषाढ़ कृष्ण में अच्छी वृष्टि हो।

पौष शुक्ल १५ शनिवार इष्ट ४१।२५, के. अहर्गण २८४

११
के.
मं. ९
१२
सू. गु. १० बु. शु. श.
८
१
७
२
४ रा.
६
चं. ३
५

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	८	९	९	९	९	३	९
अं.	६	२७	२५	२१	५	८	२५	२५
क.	५५	१७	१७	४१	२१	३६	३८	३८
वि.	५७	०	९	४९	३६	३७	१६	१६
गति	६१	४७	६४	१४	७५	७	३	३
	५	११	३१	७	२५	६	११	११
	दृश्य	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
	उ.षा. ४	उ.षा. १	धनि. १	श्रव. ४	उ.षा. ३	उ.षा. ४	आश्ले. ३	धनि. १
	जल	नीर	अमृत	अमृत	नीर	जल	अमृत	अमृत

आकाशलक्षण—इस पक्ष में कहीं शीताधिक्य एवं ओलों से उपज को हानि पहुँचे। ति. १ से ५ व ति. १० से १५ तक वायु के साथ वर्षा के योग पाए जाते हैं। लद्दाख, काश्मीर, मनीपुर में एवं लङ्का के पूर्वी तट पर उपरोक्त तिथियों को अच्छी वृष्टि होगी।

वि० संवत् २०१८ शाक १८८३ माघ कृष्णपक्ष २२ | तारीखें । चन्द्र । भा. स्टैं. टाईम | उदयकालिक | (२१ जनवरी से ४ फर्वरी तक सन १९६२ ई.) उत्तर †

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	४८	१	र.	४३	१६	पु.	२७	२७	प्री.	३८	१६	बा.	११	२१	९	२१	१	१४	कर्क	७	२५	५	४४	९	७	९	१६
२५	५१	२	चं.	४८	१	आश्ले.	३२	१०	आ	३९	०	तै.	१५	३८	१०	२२	२	१५	सिं ३३।१०	७	२५	५	४५	९	८	१०	३१
२५	५४	३	मं.	५३	१७	म.	३९	३४	सौ	४०	१६	व.	२०	३९	११	२३	३	१६	सिंह	७	२५	५	४६	९	९	११	४५
२५	५७	४	बु.	५८	४५	पू. फा.	४६	४	शो	४१	३७	ब.	२६	१	१२	२४	४	१७	सिंह	७	२४	५	४७	९	१०	१२	५७
२६	०	५	गु.	६०	०	उ. फा.	५२	२८	अ.	४२	५२	कौ.	३१	२०	१३	२५	५	१८	कं. २१४०	७	२४	५	४८	९	११	१४	८
२६	३	५	शु.	३	५५	ह.	५८	१४	सु.	४३	४१	तै.	३	५५	१४	२६	६	१९	कन्या	७	२४	५	४९	९	१२	१५	१७
२६	६	६	श.	८	२३	चि.	६०	०	धृ.	४३	५१	ग.	८	२३	१५	२७	७	२०	तु. ३०।४१	७	२४	५	५०	९	१३	१६	२५
२६	१०	७	र.	११	५२	चि.	३	८	शू.	४३	११	ब.	११	५२	१६	२८	८	२१	तुला	७	२३	५	५१	९	१४	१७	३३
२६	१३	८	चं.	१४	१५	स्वा.	६	५६	गं.	४१	३८	कौ.	१४	१५	१७	२९	९	२२	वृ. ५३।२२	७	२३	५	५२	९	१५	१८	४०
२६	१७	९	मं.	१५	१९	वि.	९	३१	वृ.	३९	०	ग	१५	१९	१८	३०	१०	२३	वृश्चिक	७	२२	५	५३	९	१६	१९	४६
२६	२०	१०	बु.	१५	२	अनु.	१०	४७	ध्रु.	३५	२५	वि.	१५	२	१९	३१	११	२४	वृश्चिक	७	२२	५	५४	९	१७	२०	५३
२६	२४	११	गु.	१३	३२	ज्ये.	१०	५३	व्या.	३०	५	बा.	१३	३२	२०	फ. १	१२	२५	ध. १०।५३	७	२१	५	५	९	१८	२१	५८
२६	२८	१२	शु.	१०	५४	मू.	९	४९	ह.	२५	२६	तै.	१०	५४	२१	२	१३	२६	धनु	७	२१	५	५६	९	१९	२३	४
२६	३१	१३	श.	७	१५	पू. षा.	७	५३	व	१९	१८	ग.	७	१५	२२	३	१४	२७	म. २२।१०	७	२०	५	५६	९	२०	२४	७
२६	३५	१४	र.	२	४७	उ. षा.	५	३	सि.	१२	३१	श	२	४७	२३	४	१५	२८	मकर	७	१९	५	५७	९	२१	२५	८
अवम		३०	र.	५७	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रहदर्शन—बु. एवं गुरु क्रमश: ति. ८ एवं ७ को पश्चिम में अस्त होंगे । शेष सभी ग्रह अस्त हैं ।

†अयन, द. गोल । शिशिर ऋतु ।

- रा. सौर माघ प्रा., अभि. में शुक्र ४३।५०,
- शब-ए-बरात
- भ. २०।३९ उ., ५३।१७ या., श्रव में सूर्य ४७।१७ जन्मदिन ‡
- सूर्य अभि. से निवृत्त ३९।३७, मकर में मंगल १२।५५, श्रव*
- शुक्र अभि. से निवृत्त ५।१८, गुरु वार्द्धक्य आरम्भ ४८।०,
- बुध वक्री ५५।१५, भारतीय गणतंत्रदिवस, ‡नेता जी श्री सुभाष,
- भ ८।२३ उ. ४०।७ या., धनि. १ में गुरु ३६।४०,
- गुरु अस्त ४८।०, जगद् गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती, | गु. अ |
- बुध पश्चिम में अस्त ३२।४८,
- भ ४५।१० उ., निर्वाण दिवस श्री म. गान्धी,
- भ १५।२ या., *में शुक्र २२।५०, श्री गणेश ४ व्र., संकटहारिणी
- फरवरी २ ता० २८, मंगल अभि. में प्रवृत्त ५०।४०, श्रव १ में ʃ
- प्रदोष व्र., ʃ शनि २६।५०, षट्तिला ११ व्र स..
- भ. ७।१५ उ. ३५।१ या.,
- धनि में शुक्र ०।२३, अर्द्धोदय पर्व. मौनी ३०,

माघ कृष्ण ८ चन्द्रवार इष्ट ४१।३३, के. अहर्गण २८५६

सू.	मं.	बु.	ग.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	९	९	९	३	९
१६	४	२८	२३	१६	९	२५	२५
५	१३	५३	४९	३९	४०	९	९
१	४०	१७	४५	५९	३०	३९	३९
६०	४६	३०	१४	७५	७	३	३
६	२७	१८	२०	२०	६	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	अ.	अ.	अ.	अ.	अ.
उ.षा. ३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

११ | के. ९ | ९ | १२ | सू.न.म.बु. शु.श. | ८ | १ | ७ चं. | २ | ४ रा. | ६ | ३ | ५

इस पक्ष में रुई में कुछ मन्दी और तोरिया, सरसों में कुछ तेजी आए । ति. ४ से घी, गुड़, खाड, तेल, सोना, चान्दी, ताम्बा में तेजी रहे । इस पक्ष के अन्त में ३,४,५ फरवरी को अष्टग्रही (कूट)-योग बन रहा है, जो विश्व के लिए भयप्रद है । इसका विशेष फल अलग 'आकाशी कौंसिल' लेख के अन्तर्गत विस्तारपूर्वक लिखा है—वहाँ देखें । इस पक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति अच्छी नहीं रहेगी । विश्व में अनेक भयावह समाचार सुनने को मिलेंगे । इन्हीं दिनों में चीन, बर्मा, भूटान, नेपाल एवं इनके निकटस्थ अन्य प्रदेशों में भी कहीं प्राकृतिक प्रकोप (भूकम्प-जलप्लावन आदि) या विस्फोट से हानि का भय है । शान्त्यर्थ सब को स्व-स्व सम्प्रदायानुसार ईश्वर चिन्तन करना चाहिए ।

आकाशलक्षण—आकाश मेघाच्छन्न रहेगा । बहुत जगह भारी वृष्टि होगी । बिजली व ओलों से भी हानि हो । वायु की प्रबलता से मकानों के छप्पर व टीन उड़ जाएं । इस पक्ष में वर्षा भारत में प्रायः जहाँ तहाँ होती ही रहेगी ।

माघ कृष्ण १ रविवार इष्ट ४१।४३, के. अहर्गण २८६२

११ | ९ | ० | शु. के. मं. चं. श. १० बु. गु. | ८ | १ | ७ | २ | ४ रा. | ६ | ३ | ५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
९	९	९	९	९	९	३	[illegible]
२२	८	२३	२५	२४	१०	२४	२
१०	५२	५५	१५	११	२२	५	५
१९	४७	५९	५३	४८	५०	३३	३
६०	४६	६७	१४	७		७	३
५०	३७	२१	२२	१५	०	११	१
हि	मा	व.	मा.	मा.	मा	व.	व
	अ	अ.	अ.	अ.	अ.	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि० संवत् २०१८ शाक १८८३ माघ शुक्लपक्ष २३ ... से १९ फरवरी तक सन १९६२ ई.) उ. अयन, द. गोल ।*

दि. मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	प्र. माघ	अ. फर्व.	रा. फाल्गु.	मु. शाबा.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि
२६	३९	१	चं.	५२	५	श्र.	५७	४२	व्य.	[illegible]	[illegible]	कि.	२४	५१	२४	५	१६	२९	कुं. २९।३९	७	१८	५	५८	९	२२	२६	८
२६	४३	२	मं.	४६	१५	ध.	५३	३५	प.	४९	४३	बा.	१९	१०	२५	६	१७	३०	कुम्भ	७	१८	५	५९	९	२३	२७	६
२६	४७	३	बु	४०	२१	पू. भा	४९	२५	शि.	४१	३८	तै.	१३	१८	२६	७	१८	२१	मी. ३५।२८	७	१७	६	०	९	२४	२८	२
२६	५१	४	गु.	३४	३३	उ. भा.	४५	२६	सि.	३४	२	व.	७	३७	२७	८	१९	२	मीन	७	१६	६	०	९	२५	२८	५६
२६	५५	५	शु	२९	९	रे.	४१	५२	सा.	२६	३३	ब.	१	५१	२८	९	२०	३	मे. ४१।५२	७	१५	६	१	९	२६	२९	४८
२७	०	६	श.	२४	१४	अ.	३८	५०	शु.	१९	३०	तै	२४	१४	२९	१०	२१	४	मेष	७	१४	६	२	९	२७	३०	३८
२७	४	७	र.	२०	७	भ.	३६	४१	शु.	१३	४	व.	२०	७	३०	११	२२	५	वृ. ५१।०	७	१३	६	३	९	२८	३१	२६
२७	८	८	चं.	१६	५१	कृ.	३५	१७	ब्र.	७	१५	ब.	१६	५१	फ१	१२	२३	६	वृष	७	१३	६	४	९	२९	३२	१२
२७	१३	९	मं	१४	३८	रो.	३५	१	ऐं.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१४	३८	२	१३	२४	७	वृष	७	१२	६	५	१०	०	३२	५७
२७	१७	१०	बु.	१३	३७	मृ.	३५	५७	वि.	५५	२०	ग.	१३	३७	३	१४	२५	८	मि. ५।२९	७	११	६	६	१०	१	३३	४१
२७	२१	११	गु.	१३	५२	आ	३८	८	प्री.	५३	१८	वि.	१३	५२	४	१५	२६	९	मिथुन	७	१०	६	६	१०	२	३४	२४
२७	२६	१२	शु	१५	२७	पुन.	४१	३८	आ.	५२	१८	बा.	१५	२७	५	१६	२७	१०	क. २५।४६	७	९	६	७	१०	३	३५	६
२७	३०	१३	श.	१८	११	पु.	४६	१४	सौ.	५२	९	तै.	१८	११	६	१७	२८	११	कर्क	७	८	६	८	१०	४	३५	४६
२७	३५	१४	र	२२	५	आश्ले	५१	४७	आ.	५२	४७	व.	२२	५	७	१८	२९	१२	सि. ५१।४७	७	७	६	९	१०	५	३६	२५
२७	३९	१५	चं.	२६	५१	म.	५८	१	अ.	५३	५६	व	२६	५१	८	१९	३०	१३	सिंह	७	६	६	१०	१०	६	३७	०

ग्रहदर्शन—ति. ७ को बु. पूर्व में और शनि ति. ४ को उदित होगा । शेष ग्रह अस्त हैं ।

* शिशिर-वसंत-ऋतु ।

पंचक प्रा. २९।३९, धनि. में सूर्य ५।३०, व श्रव. में बुध १३।४७,
चंद्रदर्शन उ. शृं उ., श्रव में मंगल ८।०,
रमजान मु. ९, मंगल अभि. से निवृत्त १६।५२,
भ. ७।२७ उ. ३४।३३ या., शनि उदित १६।२७, तिल ४,
पंचक स. ४१।५२, कुम्भ में शुक्र १९।३०, शनि अभि. से+
धनि. २ में गुरु ३३।२०, +निवृत्त ४।२०, वसन्त (श्री) ५,
भ. २०।७ उ. ४८।२९ या., बुध पूर्व में उदित ४२।३०, रथ ७,
सं. कुम्भार्क २७।३०, मु. ३० पुण्य सप्त. त्योहार, भीष्माष्टमी,
इन्द्र वक्री ४२।०,
भ. ४३।४४ उ., शत में शुक्र ३८।५७,
भ. १३।५२ या., जया ११ व्र. स.,
प्रदोष व्र., भीष्म १२,
बुध मार्गी ४६।३८,
भ. २२।५ उ., ५४।२८ या., सत्यव्र.,
शत में सूर्य २।५५, सा. मीन में सूर्य ३।२०, वसन्त ऋतु प्रा., +
+ माघ स्ना. स.,

माघ शुक्ल ८ चन्द्रवार इष्ट ४१। ८, के. अहर्गण २८७०

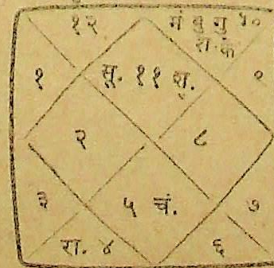
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	९	९	१०	९	३	९
०	१५	१५	२७	४	११	२४	२४
१६	६	३४	१०	१३	१८	२५	२५
२२	२१	१७	४६	२९	२०	८	८
६०	४७	३४	१४	७५	६	३	३
३९	४७	५०	२१	९	५२	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व
	अ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



इस पक्ष में संसार की अनेक ताजी घटनाओं एवं अफवाहों द्वारा कष्ट तथा करुणा से आप्लावित जनता के हृदयों में प्रभुचिन्तन की वृत्ति पाई जाएगी । व्यापार की स्थिति डावाँडोल रहेगी । अरहर, मूंग, मोठ, उड़द, मसूर, गेहूँ, मक्का, बाजरा में तेजी होगी । निर्धन जनता भारी कष्ट अनुभव करेगी । गुड़, खांड, शक्कर, ऊनी व रेशमी वस्त्रों के भाव में कुछ नरमाई रहेगी । रुई, सूत, बिनौला में घटा-बढ़ी एवं तिल, तेल, सरसों, अलसी में पहिले तेजी रहकर बाद में मन्दी रहेगी । किराने की वस्तुओं में मन्दी का वातावरण रहेगा । सोना, चान्दी आदि धातुओं के भाव मध्यम रहेंगे । यहां ति. १५ को आकाश बादलों से ढका रहे तो अन्न का संग्रह करने से लगभग सातवें मास में लाभ हो । लिखा है—

"साभ्रायां माघपूर्णायां धान्यसंग्रह इष्यते । विक्रयः सप्तमे मासि तस्य लाभाय सम्भवेत् ॥"

माघ शुक्ल १५ चन्द्रवार इष्ट ४२।१५, के. अहर्गण २८७७



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	९	९	१०	९	३	९
७	२०	१४	२८	१२	१२	२४	२४
२०	३४	१०	५०	५१	५	२	२
२३	२०	५५	५७	९	५३	५३	५३
६०	४६	१६	१४	७५	६	३	३
२७	५४	५९	१४	१	३९	११	११
[illegible]	[illegible]	मा.	मा.	मा	मा	व	व
	अ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—इस पक्ष में वायु के साथ वर्षा कहीं न कहीं होती ही रहेगी । ति. ३, ४, ति. ७ से ९ एवं ति. १२ से १५ तक अच्छी वर्षा के योग हैं, विशेष कर काबुल, लद्दाख, शिलांग, हिमाचल प्रदेश, पूर्वी पञ्जाब एवं केरल में ।

शकुन विचार—[illegible] चौमासा भयकार ॥

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ फाल्गुन कृष्णपक्ष २८ । तारीखें । चन्द्र । भा. स्टे टाईम । उदयकालिक (२० फरवरी से ६ मार्च तक सन् १९६२ ई.) उ.अयन, द. गोल ।√

वि.मा. घ.	प	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प	क.	घ.	प.	प्र. फ़ा.	अ. फ़र.	रा. फा.	मु. फ़र.	सञ्चार	सू. उ. घं.	मि	सू. अ. घं.	मि..	रा.	अं.	क.	वि.
२७	४३	१	मं.	३२	८	पू फा	६०	०	सु.	५५	३२	कौ.	३२	८	९	२०	१	१४	सिंह	७	५	६	१०	१०	७	३०	३५
२७	४[illegible]	२	बु	३७	३२	पू फा	४	३६	धृ	५६	४५	तै.	४	५०	१०	२१	२	१५	कं. २११६	७	४	६	११	१०	८	३८	६
२७	५२	३	गु	४२	३४	उ. फा	११	५	शू	५७	४०	व	१०	३	११	२२	३	१६	कन्या	७	३	६	१२	१०	९	३८	३७
२७	५७	४	शु	४६	५०	ह	१६	५२	गं	५८	१५	ब.	१४	४६	१२	२३	४	१७	तु. ४९।३४	७	२	६	१३	१०	१०	३९	४
२८	२	५	श	५०	१६	चि.	२२	१०	वृ.	५७	५३	कौ	१८	३८	१३	२४	५	१८	तुला	७	१	६	१४	१०	११	३९	२९
२८	६	६	र	[illegible]	३२	स्वा.	२६	१३	ध्रु	५६	४२	ग.	२१	२४	१४	२५	६	१९	तुला	७	०	६	१४	१०	१२	३९	५३
२८	११	७	चं.	५३	२७	वि	२९	५	व्या	५४	२८	वि	२२	९	१५	२६	७	२०	वृ. १३।२२	६	५९	६	१५	१०	१३	४०	१६
२८	१५	८	मं.	५३	०	अनु	३०	४२	ह	५१	१३	बा.	२२	२३	१६	२७	८	२१	वृश्चिक	६	५८	६	१६	१०	१४	४०	३८
२८	२०	९	बु	५१	२३	ज्ये.	३१	३	व	४७	०	तै	२२	११	१७	२८	९	२२	ध ३१।३	६	५७	६	१७	१०	१५	४०	५८
२८	२५	१०	गु	४८	३९	मू.	३०	[illegible]	सि	४१	५२	व.	२०	१	१८	१	१०	२३	धन	६	५५	६	१७	१०	१६	४१	१८
२८	२९	११	शु	४२	५५	पू. षा	२८	३	व्य	३६	१	व	१६	४३	१९	२	११	२४	म ४७।१०	६	५४	६	१८	१०	१७	४१	३८
२८	३४	१२	श.	४०	२९	उ षा	२६	४०	व	२९	२७	कौ	१२	३	२०	३	१२	२५	मकर	६	५३	६	१९	१०	१८	४१	४९
२८	३८	१३	र.	३५	६	श्र.	२	३३	प	२२	१९	ग.	७	४३	२१	४	१३	२६	कुं. ५।३८	६	५२	६	१९	१०	१९	४२	१
२८	४३	१४	चं	२९	२६	ध.	१८	४४	शि	१४	५०	वि.	२	१६	२२	५	१४	२७	कुम्भ	६	५१	६	२०	१०	२०	४२	१०
२८	४८	३०	मं	२३	३	श.	१६	६०	सि	७	७	ना	२३	३०	२३	६	१५	२८	मी १६।३२	६	५०	६	२१	१०	२१	४२	१७

ग्रहदर्शन—म. गु. पूर्व में शु पश्चिम में क्रमशः ति. १, ९ व १ को उदित होंगे। बु. एवं श सूर्योदय से पहले पूर्व क्षितिज से ऊपर परस्पर अल्पान्तर पर दीखेंगे। बु से श कुछ ऊपर होगा।

रा. सौर फाल्गुन प्रा., मंगल उदित ४४।१७, शुक्र पश्चिम में + उदित १४।२४* √वसन्त ऋतु।

भ. १०।३ उ. ४२।३४ या. *[बु. उ]

धनि. में मंगल १४।१७, शुक्र बाल्यनिवृत्ति १४।२४, श्री गणेश ‡४ व्र.,

धनि ३ कुम्भ में गुरु ३३।५५,

भ. ५२।३२ उ., पू. भा. में शुक्र १९।८,

भ. २२।५९ या., †२५।१२, विजया ११ व्र. नि.,

गुरु उदित २५।१२, [गु. उ.]

भ. २०।१ उ. ४८।३९ या., मार्च ३ ता. ३१,

विजया ११ व्र. स्मा. वै., जगत उल-विदा, ◡४ में केतु१२।३,

कुम्भ में मंगल ४५।४३, श्र. २ में शनि १२।३, गुरु बाल्यनिवृत्ति †

भ. ३५।६ उ., पञ्चक प्रा. ५०।३८, पू. भा. में सूर्य १७।५५, §

भ. २।१६ या., मीन में शुक्र २०।२३, [illegible] २ में राहु, श्र.◡

§धनि में बुध ४२।५७, प्रदोष व्र., श्री महाशिवरात्रि व्र.

फाल्गुन कृष्ण ८ [illegible] इष्ट ४२।२५ के अहर्गण २८८५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]							

१० के. श. | ८ | बु. ११२ | १ | ९ | २ | चं. | ८ | ३ | ५ | ७ | रा. ४ | ६

इस पक्ष में अनाज, गुड़, खांड, घी, तेल, तेल एवं लाल रंग की वस्तुएं कुछ मन्दी हों। पश्चिमी प्रान्तों में अनाज की उपज को हानि पहुँचे। ति. ५ से कपास, वस्त्र, तांबे के भाव में तेजी और ति. ९ से सोने के भाव में मन्दी आए। ति. १२ से रुई में विशेष घटाबढ़ी होगा एवं पक्षान्त में तेजी होगी। पूर्वी देशों में राज्यविग्रह तथा अराजकता की सी स्थिति उत्पन्न हो। यहां ति. १ को पू. फा. [illegible] होता [illegible] है—जो आगे अन्न के अभाव में खाद्य संकट को कम करेगा। ति. ८ के करीब चांदी खरीदने से आगे लाभ होगा [illegible] के साथ ही [illegible]। [illegible] में वर्षा अच्छी होगी।

आकाशलक्षण—ति. ७, ८, ९, ११ को वर्षा—बूंदाबांदी के योग हैं। ति. १३, १४ को कन्याकुमारी के आसपास एवं [illegible] की ओर अच्छी वर्षा होगी।

शकुनविचार—[illegible]

फाल्गुन कृष्ण ३० भौमवार इष्ट ४२।५५, के अहर्गण २८९२

१२ रा. | के. १० बु. | १ | म. व. ११ सू. | ९ | गु. | २ | ८ | ३ | ५ | ७ | रा. ४ | ६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]							

त्र संवत् २०१८ शाक १८८३ फाल्गुन [illegible]

दि. मा. घ. प.	ति	वा.	घ. प	न.	घ. प	यो	घ. प.	क	घ. प.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सञ्चार	सू. उ घं. नि	सू. अ. घं. नि	स्पष्ट सौर सूर्य रा. अं. क. वि.
२८ ५२	१	बु.	१३ ३१	पू. भा.	१० २२	शु.	११ ३०	ब.	१९ ३२	२८	७	१६	२९	नात	६ ४१	६ २२	१० २ ४२ २०
२८ ५७	२	गु.	१ ४३	उ. भा.	६ ०७	शु	४३ ५	का	२२ ४३	२५	८	२७	ना	बात	६ ४४	६ ०३	१० २३ ४० ३३
२९ २	३	शु.	६ १७	रे.	[illegible]	ब्र.	३६ ४७	ग.	६ १९	२६	९	१८	७	मं. २१४६	६ ४७	६ [illegible]	१० २४ ४२ २०
२९ ६	४	श.	१ २१	भ.	५७ १४	ऐं.	३० १४	वि.	१ २१	२०	१०	११	३	मेष	६ ४६	६ २४	१० २५ ४२ २०
अवम	५	ग.	५७ १४	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२९ ११	६	र.	५३ १६	कृ.	५५ ४१	वै.	२४ २२	को.	२५ ३१	२	११	२०	४	बु. ११।११	६ ४१	६ २५	१० २६ ४२ १७
२९ १६	७	च.	५१ ४४	रो.	५१ १०	वि.	१९ १९	ग.	२२ १०	१	१२	२१	५	बुध	६ ४३	६ २५	१० २७ ४२ १३
२९ २१	८	मं.	१० ४४	म.	११ ५०	प्री	२१	१ वि.	२१ १४	३०	१३	२२	८	मिर२१ ३१	६ ४२	६ २६	१० २८ ४० ८
२९ २६	९	बु.	५१ ०	आ.	४७ ४६	आ.	११ ४७	बा.	२० ५०	चै	१४	२३	९	मिथुन	६ ४१	६ २३	१० २९ ४० [illegible]
२९ ३	१०	गु.	५० ३६	पुन.	६० ०	सौ.	९ ३२	[illegible]	२१ ४४	२	१५	२४	६	क. ४५।१२	६ ३९	६ २७	११ ० ४१ ५३
२९ ३०	११	शु.	५५ २१	पुन	१	१ शो	८ २०	ब.	२३ ५०	३	१६	२५	१	कर्क	६ ३८	६ २८	११ १ ४१ ४०
२९ ४०	१२	श.	५१ १८	पु.	१ ५०	अ.	७ ०७	ब.	२१ ११	४	१७	२६	१०	कर्क	६ ३७	६ २८	११ [illegible] ४१ २४
२९ ४९	१३	र.	६० ०	आश्ले.	१० ४५	सु.	८ ०	का	३१ ३८	५	१८	२७	११	सिं ०।४१	६ ३६	६ ३०	११ [illegible] ४१ ५
२९ ४०	१३	च.	३ १९	म.	१६ ४०	ध	९ ३३	[illegible]	३ ५१	६	१९	२८	१२	सिंह	६ ३४	६ ३०	११ [illegible] ४० ४३
२९ ५४	१४	मं.	१ १२	पू. फ	२२ २३	शू	१० ५८	ब.	१ १२	७	२०	२९	१३	सि ४०।१	६ ३३	६ ३१	११ [illegible] ४० १८
२९ ५	[illegible]	बु	[illegible]	उ. फ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	२१	३०	[illegible]	कन्या	६ ३२	६ ३२	११ [illegible] ३९ [illegible]

[illegible] सूर्योदय में [illegible] परिवेष [illegible] उदय व अस्त [illegible] होगा। शुक्र का सूर्यास्त बाद पश्चिम दिशा में [illegible] वसंत ऋतु।

चन्द्रदर्शन उ. शृ. उ., [वि. मु. उ. ना.]

रामपाले मु.१०, इदुल फितर, उभा में शुक्र ११।१०, [वि. मु. रेव.]

भ. ३३।४९ उ., पचक स. २।४६, [वि.मु.अश्वि.]

भ. १।२१ या., कुम्भ में बुध २८।२७, वनि. ४ में गुरु ५०।७,

भ. ५१।४४ उ., शत. में मंगल १६।४५. [वि. मु. रो.]

भ. २१।१४ या., होलाष्टक प्रा.,

सं. मीनार्क १८।०, मु. १५ पुण्य २।० उ.,

शत में बुध २९।२५, व इन्द्र स्मा. ४ में ४४।२५,

भ. २३।५८ उ., ५५।२१ या., आमला ११ व्र. स्मा. वै.,

उ भा. में सूर्य ३८।४५, आमला ११ व्र. नि.,

रेव. में शुक्र ४४।५०, प्रदोष व्र.,

भ. ९।१२ उ. ४१।५० या., होलिकादहन, सत्यव्र.,

[illegible] शक १८८३ समाप्त. [illegible] मेष में सूर्य २।४४ उत्तर गोल प्रवेश.

फाल्गुन शुक्ल ८ गुरुवार इष्ट [illegible] क. [illegible]

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	१०	१	९	३	९
२९	७	४	३	१	१८	२२	२२
२४	४७	२५	५९	२०	२२	५२	५२
६	३१	४	३२	२	१	५	५६
५९	४६	८९	१३	७	५	३	३
५०	५०	११	३	३	४०	११	११
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	ब्र.	

[illegible]

फाल्गुन शुक्ल १५ बुधवार इष्ट ६३।४०, क. [illegible] २१।०७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	१०	१०	११	९	३	९
७	२४	१५	५	२०	१५	२२	२२
[illegible]	३	५०	४०	२१	६	२७	२७
४२	२०	[illegible]	१२	३४	४४	२९	२९
०	४६	३३	१३	७४	५	३	३
३२	५८	३०	१३	२४	१	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

[illegible] इस पक्ष में कहीं भारी रोग भय हो। तिथि [illegible] के [illegible] में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में गम्भीर हो। घी, तेल, अनाज एवं अन्य [illegible] वस्तुओं में तेजी का रुख रहे। सोना, चान्दी, [illegible] गुड़, शक्कर में [illegible] हो। तिथि ६ से तिथि [illegible] तेल में [illegible] तिथि ९ से [illegible] किराने की [illegible] मंदी के भाव [illegible] रहें। मक्का, ज्वार, बाजरे के भाव में [illegible] अन्न में कुछ तेजी रहे। तिथि ११ से [illegible] द्रव्य, तिल, तेल, [illegible] में तेजी [illegible] में मन्दा [illegible] रहे। तिथि १४ को बादल छाए हों या आकाश में [illegible] हों तो व्यापारियों का [illegible] करने से आगे [illegible] में लाभ हो। तिथि १५ को सूर्य व चन्द्र के चारों ओर परिवेष (मण्डल) हो, मेघ गर्जन हो, या इन्द्रधनुष दीखे तो प्रायः सभी व्यापार-सम्बन्धी वस्तुओं में तेजी आती है।

आकाशलक्षण——तिथि १, २, ४, ८, ९, १०, ११, १३, १४ को कहीं-कहीं बादलवाय व बूंदाबांदी हो।

शकुनविचार——[illegible] कराय॥

वि. संवत् २०१८ शाक १८८३ चैत्र कृष्णपक्ष २६ | तारीखें | चन्द्र | भा. स्टै. टाइम | उदयकालिक |(२२मार्च से ४ अप्रैल तक सन् १९६२ई.) उ. अयन, गोल। वसंत ऋतु

दि मा. घ.	दि मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो	घ.	प	क.	घ.	प.	प्र.	अं.	रा.	मु.	सञ्चार	सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	स्पष्ट सौर सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३	४	१	गु.	१९	२७	ह.	३६	१	वृ.	१३	४३	कौ	१९	२७	९	२२	१	१५	कन्या	६	३०	६	३२	११	७	३९	२५
३	९	२	शु.	२३	४०	चि.	४१	२३	ध्रु.	१४	१९	त.	२३	४०	१०	२३	२	१६	तु. ८।४२	६	२९	६	३३	११	८	३८	५७
३०	१३	३	श.	२६	४८	स्वा	४५	३८	व्या	१४	२७	बि.	२६	४८	११	२४	३	१७	तुला	६	२८	६	३४	११	९	३८	२५
३०	१	४	र.	२८	५९	वि.	४८	४९	ह	१३	३३	बा.	२८	५९	१२	२५	४	१८	वृ.३३। १	६	२७	६	३४	११	१०	३७	५४
३०	२३	५	चं.	२९	४३	अनु.	५०	४२	व.	११	४०	तै.	२९	४३	१३	२६	५	१९	वृश्चिक	६	२६	६	३५	११	११	३७	२०
३०	२८	६	मं.	२९	८	ज्ये.	५१	२०	सि.	८	४७	व.	२९	८	१४	२७	६	२०	ध.५१।२०	६	२४	६	३५	११	१२	३६	४०
३०	३२	७	बु.	२७	२२	मू.	५०	४३	व्य.	४	५३	ब.	२७	२२	१५	२८	७	२१	धनु	६	२३	६	३६	११	१३	३६	४
३०	३	८	गु.	२४	२८	पू.षा.	४२	१३	व.	५०	२७	कौ.	२४	२८	१६	२९	८	२२	धनु	६	२२	६	३७	११	१४	३५	२६
३०	४२	९	शु.	२०	४०	उ.षा.	४६	४६	शि.	४८	८	ग.	२०	४०	१७	३०	९	२३	म. ३।३६	६	२०	६	३७	११	१५	३५	४८
३०	४६	१०	श.	१५	५९	श्र	४३	३४	सि.	४१	१२	वि.	१५	५९	१८	३१	१०	२४	मकर	६	१९	६	३७	११	१६	३४	८
३०	५१	११	र.	१०	४१	ध.	३९	५३	सा.	३३	५०	बा.	१०	४१	१९	अ१	११	२५	कुं.११।४३	६	१८	६	३८	११	१७	३३	२६
३०	५५	१२	चं.	४	५७	श.	३५	५१	शु.	२६	१३	तै.	४	५७	२०	२	१२	२६	कुम्भ	६	१७	६	३९	११	१८	३२	४३
अवम		१३	चं.	५८	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	०	१४	मं.	५२	५५	पू. भा.	३१	४०	शु.	१८	२६	वि.	२५	५६	२१	३	१३	२७	मी.१७।४३	६	१६	६	४०	११	१९	३१	५६
३१	५	३०	बु.	४७	२	उ.भा.	२७	३६	ब्र	१०	४३	च.	१९	५८	२२	४	१४	२८	मीन.	६	१४	६	४०	११	२०	३१	८

ग्रहदर्शन—प्रातः काल पूर्व क्षितिज में मं. गु एवं शनि उत्तरोत्तर याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़े हुए दीखेंगे। शुक्र को सूर्यास्त बाद पश्चिम में देखें। बु ति. १२ को पूर्व में अस्त होगा।

रा. सौर चैत्र शक सं० १८८४ प्रा., होला १, मेला श्री आनन्दपुर साहिब, आम्रपुष्पप्राशन, भ. ५५।१४ उ.,
भ. २६।४८ या., पू. भा. में बुध २२।१०, श्री गणेश ४ व्र.,
शत. १ में गुरु ४५।७,
*१४।५०, पापमोचिनी ११ व्र.स.,
भ. २९।८ उ., ५८।१५ या.

भा. में मंगल १९।४७, अश्वि. मेषमें शुक्र ३०।५७, मेला +
भ.४८।१९ उ., मीन में बुध २१।१०,
भ. १५।५९ या. रेव में सूर्य ५।५५, +शीतला (कुराली)
पञ्चक प्रा. ११।४३, अप्रैल ४ ता० ३०, उ. भा. में बुध*
भ. ५८।५८ उ., बुध पूर्व में अस्त ५९।५२, व. वरुण सप्त १ सं ५१०।४८, सोम प्रदोष व्र.,
भ. २५।५६ या., मेला पिहोवा,
वि.सं. २०१८ समाप्त,

चैत्र कृष्ण ८ गुरुवार इष्ट ४४।५, के. अहर्गण २११५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	१०	१०	०	९	३	९
१५	२०	२८	७	०	१५	२२	२२
१७	१८	५५	३१	१६	४६	२	२
१	५५	२९	१५	१०	३९	४	४
५९	४६	[illegible]	१२	७४	४	३	३
१६	५३		४३	१४	३८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१ मं.११बु. गु. के. १०रा.
२ सू.१२श
३ ९ चं.
रा.४ ६ ८
५ ७

इस पक्ष में शासकों को व्याकुलता एवं किसी महापुरुष को भय हो। प्रजा में किसी कारण से अशांति फैले। रुई के भाव में घटाबढ़ी एवं सोना, चान्दी, लोहा, तांबा तथा अनाज के भाव में कुछ नरमाई रहे। ति. ५ से केसर, मजीठ, हल्दी के भाव में मन्दापन रहे। ति. ८ से अलसी, सरसों, नारियल, तिल, घी, मूंगफली और सूत में तेजी रहे एवं एरण्डी में साधारण मन्दी आए। ति. १० से गुड़, शक्कर, पाट, बारदाना, में घटाबढ़ी के बाद तेजी और सोना, चान्दी में अच्छी तेजी आए। अफगानिस्तान, चीन, नेपाल, अफ्रीका में साम्प्रदायिकता के कारण जनता को हानि उठानी पड़े। ति. ७ को आकाश मेघाच्छन्न रहे तो लाल वस्तुएं निस्सन्देह मन्दी हों। ति. ८ एवं १४ को बादल छाए हों, एवं उत्तर की पवन चले तो आगामी वर्ष में सुभिक्ष तथा देश में शान्ति हो।

आकाशलक्षण—ति. २,३,६,७, ११,१२, १४ को लङ्का के पश्चिमी [illegible] पूर्वी [illegible] तान एवं पूर्वी बिहार में

चैत्र कृष्ण ३० बुधवार इष्ट ४४।२५, के. अहर्गण २१२१

शु. १ ११गु.म. के. १०श.
२ बु.सू १२ चं.
३ ९
४ रा. ६ ८
५ ७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	१०	०	९	३	९
२१	२५	९	८	७	१६	२१	२१
१२	०	४१	४६	४१	१३	४२	४२
१२	०	३५	३०	२०	१९	५८	५८
५९	४६	[illegible]	१२	७४	४	३	३
७	४७		२२	१०	१५	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

बिना गुणा भाग किये इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करने की सरल विधि :—

इस पञ्चाङ्ग में पृष्ठ १२३ पर "लघुरिक्थ कोष्ठक" दिया गया है। उसके आधार पर दैनिक स्पष्ट ग्रहों से इष्टकालिक ग्रह बनाना अत्यन्त सरल है। इस कोष्ठक द्वारा ग्रह स्पष्ट करने की विधि जानने से पूर्व इष्ट घण्टा-मिनट एवं अंश-कला-विकलाओं का लघुरिक्थ प्राप्त करने की विधि समझ लीजिए—अभीष्ट घण्टा मिनटों का लघुरिक्थ "लघुरिक्थ कोष्ठक" में से अभीष्ट घण्टे के नीचे एवं अभीष्ट मिनट के आगे प्राप्त करें। जैसे ६ घण्टा ४० मिनट का लघुरिक्थ ५५६३ है। इस प्रकार कोष्ठक में दिए गए घण्टों को कला एवं मिनटों को विकला मान कर २४ कला से कम ग्रहगति का लघुरिक्थ प्राप्त किया जा सकता है। २४ कला या इससे अधिक ग्रहगति का लघुरिक्थ कोष्ठक में दिए गए घण्टों का अंश एवं मिनटों का कला मानकर पूर्ववत् प्राप्त किया जा सकता है।

ग्रह स्पष्ट करने की विधि—इष्ट कालिक इं. स्टैं. टा. एवं पञ्चाङ्ग में दिए गए स्पष्ट ग्रहों के इं. स्टैं. टा. के घण्टा-मिनटात्मक अन्तर का लघुरिक्थ ले कर उसमें ग्रह की दैनिक गति का लघुरिक्थ जोड़ें और योग फल की संख्या को "लघुरिक्थ कोष्ठक" में ही ढूंढें (यदि कोष्ठक में वह संख्या न मिले तो उसकी आसन्नतम संख्या को ढूंढें)। योग फल जिसका लघुरिक्थ हो उसे कलादि या अंशादि फल (यदि कलादि ग्रहगति का लघुरिक्थ जोड़ा गया हो तो वह फल कलादि होगा यदि अंशादि ग्रहगति का लघुरिक्थ जोड़ा गया हो तो वह फल अंशादि होगा) जानें। इस फल को अभीष्ट तारीख के स्पष्ट ग्रह में मार्गी होने पर जोड़ देने से एवं वक्री होने पर घटा देने से इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट होगा। अभीष्ट तारीख एवं आगामी तारीख के स्पष्ट ग्रह का अन्तर उस ग्रह की दैनिक गति होती है।

उदाहरण—१७ मार्च सन् १९६१ को इं. स्टैं. टा. के अनुसार दिन के ४ बज कर ३० मिनट (अर्थात् १६ बज कर ३० मिनट) पर गुरु स्पष्ट करना है। इसकी गति १० कला ४१ विकला के लघुरिक्थ ३५१५ में १६ घं. ३० मि. का लघुरिक्थ १६२७ जोड़ देने पर योग फल ५१४२ हुआ। कोष्ठक में देखने से मालूम हुआ कि यह ७ कला २१ विकला का लघुरिक्थ है। अतः १७ मार्च के स्पष्ट गुरु में ७ कला २१ विकला को जोड़ देने से (क्योंकि गुरु मार्गी है) ९।७।५।१ इष्टकालिक गुरु स्पष्ट हुआ।

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं. मि. ०।० भारतीय स्टैंडर्ड टाईम)

(१७ मार्च को अयनांश २३।१७'।५९")

तारीख मार्च सन् १९६१	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं. मि. ०।० (घं. मि. से.)	सूर्य (रा. अं. क. वि.)	मंगल (रा. अं. क. वि.)	बुध (रा. अं. क. वि.)	गुरु (रा. अं. क. वि.)	शुक्र (रा. अं. क. वि.)	शनि (रा. अं. क. वि.)	राहु (रा. अं. क. वि.)	वरुण (वक्री) (रा. अं. क. वि.)	इन्द्र (वक्री) (रा. अं. क. वि.)
१७	११।३६।२९	११। २।३८।४१	२।१४।४५।४६	१०। ५।२६।२४	९। ६।५७।४०	०। ५।३६।११	९। ४।१२।१४	४।१२। ३।५६	३।२८।५८।१५	६।१७।४६।१४
१८	११।४०।२५	११। ३।३८।२३	२।१५। ६।३०	१०। ६।१३। १	९। ७। ८।२१	०। ५।४४।४३	९। ४।१७। १	४।१२। ०।४५	३।२८।५६।१२	६।१७।४५।५३
१९	११।४४।२२	११। ४।३८। ३	२।१५।२७।२४	१०। ७। ३।२५	९। ७।१८।५६	०। ५।५०।५२	९। ४।२१।४४	४।११।५७।३४	३।२८।५४।१२	६।१७।४४।५१
२०	११।४८।१८	११। ५।३७।४१	२।१५।४८।३२	१०। ७।५७।३५	९। ७।२९।२७	०। ५।५४।४३	९। ४।२६।२२	४।११।५४।२४	३।२८।५२।१५	६।१७।४३।४८
२१	११।५२।१५	११। ६।३७।१८	२।१६। ९।५८	१०। ८।५४।३२	९। ७।३९।५२	०। ५।५६। १	९। ४।३०।५६	४।११।५१।१३	३।२८।५०।१८	६।१७।४२।४४
२२	११।५६।११	११। ७।३६।५३	२।१६।३१।४०	१०। ९।५४।१४	९। ७।५०। ९	व०। ५।५४।५२	९। ४।३५।२५	४।११।४८। २	३।२८।४८।२४	६।१७।४१।३८
२३	१२। ०। ८	११। ८।३६।२६	२।१६।५३।४१	१०।१०।५६।४३	९। ८। ०।१९	०। ५।५१।१७	९। ४।३९।५०	४।११।४४।५२	३।२८।४६।३३	६।१७।४०।३०
२४	१२। ४। ४	११। ९।३५।५७	२।१७।१५।५९	१०।१२। १।५९	९। ८।१०।२२	०। ५।४५।१५	९। ४।४४।१०	४।११।४१।४१	३।२८।४४।४५	६।१७।३९।२१
२५	१२। ८। १	११।१०।३५।२७	२।१७।३८।३५	१०।१३।१०। १	९। ८।२०।२०	०। ५।३६।४७	९। ४।४८।२६	४।११।३८।३०	३।२८।४२।५८	६।१७।३८।१०
२६	१२।११।५७	११।११।३४।५३	२।१८। १।२७	१०।१४।२०। ९	९। ८।३०। ९	०। ५।२५।५२	९। ४।५२।३८	४।११।३५।१९	३।२८।४१।१३	६।१७।३६।५७
२७	१२।१५।५४	११।१२।३४।१७	२।१८।२४।३८	१०।१५।३२।११	९। ८।३९।५३	०। ५।१२।३१	९। ४।५६।४६	४।११।३२। ८	३।२८।३९।३१	६।१७।३५।४२
२८	१२।१९।५०	११।१३।३३।३९	२।१८।४८। ५	१०।१६।४६। ६	९। ८।४९।३०	०। ४।५६।४२	९। ५। ०।४९	४।११।२८।५७	३।२८।३७।५२	६।१७।३४।२६
२९	१२।२३।४७	११।१४।३२।५९	२।१९।११।५१	१०।१८। १।५५	९। ८।५९। १	०। ४।३८।२८	९। ५। ४।४७	४।११।२५।४७	३।२८।३६।१६	६।१७।३३। ८
३०	१२।२७।४४	११।१५।३२।१६	२।१९।३५।५४	१०।१९।२०।१०	९। ९। ८।२४	०। ४।१७।४६	९। ५। ८।४१	४।११।२२।३६	३।२८।३४।३९	६।१७।३१।४८
३१	१२।३१।४१	११।१६।३१।३१	२।२०। ०।१४	१०।२०।३९।१२	९। ९।१७।४१	०। ३।५४।३९	९। ५।१२।३०	४।११।१९।२५	३।२८।३३। ६	६।१७।३०।२७

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं. मि. ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अप्रैल को अयनांश २३°।१८'।२")

तारीख अप्रैल सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	वरुण (वक्री)	इन्द्र (वक्री)
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	१२।३५।३७	११।१७।३०।४४	२।२०।२४।५२	१०।२२। ०।४१	९। ९।२६।५१	०। ३।२९। ५	९। ५।१६।१४	४।११।१६।१५	३।२८।३१।३६	६।१७।२९। ४
२	१२।३९।३३	११।१८।२९।५५	२।२०।४९।४८	१०।२३।२४। ४	९। ९।३५।५६	०। ३। १। ५	९। ५।१९।५३	४।११।१३। ४	३।२८।३०। ७	६।१७।२७।४०
३	१२।४३।३०	११।१९।२९। ४	२।२१।१५।१३	१०।२४।४९।४८	९। ९।४४।४९	०। २।२९।१९	९। ५।२३।२६	४।११। ९।५३	३।२८।२८।४१	६।१७।२६।१६
४	१२।४७।२६	११।२०।२८।१२	२।२१।४०।४८	१०।२६।१७। ८	९। ९।५३।२८	०। १।५७।१५	९। ५।२६।५०	४।११। ६।४३	३।२८।२७।१८	६।१७।२४।५२
५	१२।५१।२३	११।२१।२७।१८	२।२२। ६।३४	१०।२७।४६। ६	९।१०। १।५९	०। १।२४।५३	९। ५।३०। ८	४।११। ३।३२	३।२८।२६। ०	५।१७।२३।२६
६	१२।५५।१९	११।२२।२६।२२	२।२२।३२।३०	१०।२९।१६।४१	९।१०।१०।२५	०। ०।५२।१३	९। ५।३३।२२	४।११। ०।२१	३।२८।२४।४५	६।१७।२२। ०
७	१२।५९।१६	११।२३।२५।२३	२।२२।५८।३७	११। ०।४८।५३	९।१०।१८।४२	०। ०।१७।४५	९। ५।३६।३०	४।१०।५७।१०	३।२८।२३।३२	६।१७।२०।३३
८	१३। ३।१२	११।२४।२४।२३	२।२३।२४।५४	११। २।२२।४१	९।१०।२६।५०	११।२९।४१।४१	९। ५।३९।३३	४।१०।५३।५९	३।२८।२२।२३	६।१७।१९। ६
९	१३। ७। ९	११।२५।२३।२१	२।२३।५१।२२	११। ३।५८। ७	९।१०।३४।५०	११।२९। ४।५५	९। ५।४२।३२	४।१०।५०।४८	३।२८।२१।१८	६।१७।१७।३७
१०	१३।११। ५	११।२६।२२।१७	२।२४।१८। ०	११। ५।३५। ९	९।१०।४२।४३	११।२८।२८।३४	९। ५।४५।२५	४।१०।४७।३७	३।२८।२०।१५	६।१७।१६। ८
११	१३।१५। २	११।२७।२१। ९	२।२४।४४।४९	११। ७।१३।४२	९।१०।५०।२६	११।५७।५३।१०	९। ५।४८।१२	४।१०।४४।२७	३।२८।१९।१७	६।१७।१४।३८
१२	१३।१८।५८	११।२८।२०। ०	२।२५।११।४८	११। ८।५३।४८	९।१०।५८। १	११।२७।१७।२७	९। ५।५०।५४	४।१०।४१।१६	३।२८।१८।२१	६।१७।१४। ७
१३	१३।२२।५५	११।२९।१८।५०	२।२५।३८।५८	११।१०।३५।२६	९।११। ५।२८	११।२६।४१।२६	९। ५।५३। १	४।१०।३८। ५	३।२८।१७।२९	६।१७।११।३५
१४	१३।२६।५२	०। ०।१७।३८	२।२६। ६।१८	११।१२।१८।३७	९।११।१२।४८	११।२६। ५। ८	९। ५।५६। ३	४।१०।३४।५५	३।२८।१६।४१	६।१७।१०। ३
१५	१३।३०।४९	०। १।१६।२३	२।२६।३३।४९	११।१४। ३।१९	९।११।१९।५८	११।२५।२८।३१	९। ५।५८।२९	४।१०।३१।४४	३।२८।१५।५४	६।१७। ८।३०
१६	१३।३४।४५	०। २।१५। ६	२।२७। १।३०	११।१५।४९।३४	९।११।२७। ०	११।२४।५१।३७	९। ६। ०।५०	४।१०।२८।३३	३।२८।१५।१०	६।१७। ६।५७
१७	१३।३८।४२	०। ३।१३।४७	२।२७।२९।२२	११।१७।३७।२२	९।११।३३।५४	११।२४।१४।२४	९। ६। ३। ६	४।१०।२५।२०	३।२८।१४।३०	६।१७। ५।२२
१८	१३।४२।३८	०। ४।१२।२४	२।२७।५७।२५	११।१९।२६।४२	९।११।४०।४१	११।२३।३६।५४	९। ६। ५।१५	४।१०।२२।११	३।२८।१३।५४	६।१७। ३।४७
१९	१३।४६।३५	०। ५।११। ०	२।२८।२५।३२	११।२१।१७।३२	९।११।४७।१८	११।२३। ३।४८	९। ६। ७।१८	४।१०।१९। ०	३।२८।१३।१६	६।१७। २।११
२०	१३।५०।३१	०। ६। ९।३५	२।२८।५३।४४	११।२३। ९।५५	९।११।५३।४६	११।२२।३३। ५	९। ६। ९।१४	४।१०।१५।४९	३।२२।१८।३८	६।१७। ०।३४
२१	१३।५४।२८	०। ७। ८। ७	२।२९।२२।१३	११।२५। ३।४८	९।१२। ०। ३	११।२२। ४।४३	९। ६।११। ५	४।१०।१२।३९	३।२८।१२। २	६।१६।५८।५८
२२	१३।५८।२४	०। ८। ६।३६	२।२९।५०।५०	११।२६।५९।१४	९।१२। ६।१०	११।२१।३८।४४	९। ६।१२।५०	४।१०। ९।२८	३।२८।११।३२	६।१६।५७।२२
२३	१४। २।२१	०। ९। ५। ६	३। ०।१९।३५	११।२८।५६।११	९।१२।१२। ८	११।२१।१५। ५	९। ६।१४।२९	४।१०। ६।१७	३।२८।११। ६	६।१६।५५।४५
२४	१४। ६।१७	०।१०। ३।३३	३। ०।४८।२५	०। ०।५४।४०	९।१२।१७।५६	११।२०।५३।४९	९। ६।१६। ३	४।१०। ३। ६	३।२८।१०।४४	६।१६।५४। ८
२५	१४।१०।१४	०।११। २। ०	३। १।१७।३१	०। २।५४।२०	९।१२।२३।३४	११।२०।३४।५५	९। ६।१७।३१	४। ९।५९।५५	३।२८।१०।२७	६।१६।५२।३१
२६	१४।१४।१०	०।१२। ०।२३	३। १।४६।४८	०। ४।५६।१२	९।१२।२९। २	११।२०।१८।२२	९। ६।१८।५४	४। ९।५६।४४	३।२८।१०।१४	६।१६।५०।५३
२७	१४।१८। ७	०।१२।५८।४५	३। २।१६।१०	०। ६।५९।३९	९।१२।३४।२०	११।२०। ४।११	९। ६।२०।१०	४। ९।५३।३४	३।२८।१०। ४	६।१६।४९।१५
२८	१४।२२। ३	०।१३।५७। ६	३। २।४५।४०	०। ९। ४।१७	९।१२।३९।२८	११।१९।५२।२२	९। ६।२१।२१	४। ९।५०।२३	३।२८। ९।५९	६।१६।४७।३७
२९	१४।२६। ०	०।१४।५५।२५	३। ३।१५।२२	०।११।१०। ६	९।१२।४४।२६	११।१९।४२।५५	९। ६।२२।२६	४। ९।४७।१२	३।२८। ९।५८	६।१६।४५।५८
३०	१४।२९।५७	०।१५।५३।४२	३। ३।४५।१३	०।१३।१७। ६	९।१२।४९।१४	११।१९।३५।५०	९। ६।२३।२६	४। ९।४४। २	३।२८।१०। २	[illegible]

[illegible] (… भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

० । ०

(१ मई को अयनांश २३°१८'१६")

तारीख मई सन् १९६१	साम्पातिककाल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र (वक्री) रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१४।३३।५४	०।१६।५१।५८	३।४।१५।११	०।१५।२५।१८	९।१२।५३।५२	११।१९।३१।५	९।६।२४।२०	४।९।४०।५१	३।२८।१०।११	६।१६।४२।४१
२	१४।३७।५०	०।१७।५०।११	३।४।४५।१६	०।१७।३४।४०	९।१२।५८।२०	११।१९।२८।४३	९।६।२५।८	४।९।३७।४०	३।२८।१०।२१	६।१६।४१।२
३	१४।४१।४७	०।१८।४८।२४	३।५।१५।३६	०।१९।४५।१८	९।१३।२।३८	११।१९।२८।४३	९।६।२५।५१	४।९।३४।३०	३।२८।१०।३५	६।१६।३९।२३
४	१४।४५।४३	०।१९।४६।३५	३।५।४६।८	०।२१।५६।५८	९।१३।६।४७	म११।१९।३१।१५	९।६।२६।२८	४।९।३१।१९	३।२८।१०।५०	६।१६।३७।४३
५	१४।४९।४०	०।२०।४४।४४	३।६।१६।५०	०।२४।९।१७	९।१३।१०।४४	११।१९।३६।५९	९।६।२६।५९	४।९।२८।८	३।२८।११।७	६।१६।३६।३
६	१४।५३।३६	०।२१।४२।४८	३।६।४७।३७	०।२६।२१।३	९।१३।१४।३२	११।१९।४४।४१	९।६।२७।२५	४।९।२४।५७	३।२८।११।२६	६।१६।३४।२३
७	१४।५७।३३	०।२२।४०।५२	३।७।१८।२९	०।२८।३३।२६	९।१३।१८।९	११।१९।५४।१२	९।६।२७।४५	४।९।२१।४६	३।२८।११।४८	६।१६।३२।४२
८	१५।१।२९	०।२३।३८।५५	३।७।४९।३०	१।०।४०।४४	९।१३।२१।३६	११।२०।५।३२	९।६।२७।५९	४।९।१८।३५	३।२८।१२।१४	६।१६।३१।३
९	१५।५।२६	०।२४।३६।५८	३।८।२०।३५	१।२।४८।५४	९।१३।२४।५०	११।२०।१८।४०	९।६।२८।६	४।९।१५।२४	३।२८।१२।४३	६।१६।२९।२६
१०	१५।९।२२	०।२५।३४।५९	३।८।५१।४५	१।४।५५।५९	९।१३।२७।५५	११।२०।३३।३७	९।६।२८।८	४।९।१२।१४	३।२८।१३।१५	६।१६।२७।५१
११	१५।१३।१९	०।२६।३३।०	३।९।२३।२	१।७।१।५७	९।१३।३०।४८	११।२०।५०।२२	व९।६।२८।४	४।९।९।३	३।२८।१३।५०	६।१६।२६।१६
१२	१५।१७।१५	०।२७।३०।५७	३।९।५४।२५	१।९।६।५०	९।१३।३३।३२	११।२१।८।५६	९।६।२७।५४	४।९।५।५३	३।२८।१४।२८	६।१६।२४।४१
१३	१५।२१।१२	०।२८।२८।५२	३।१०।२५।५४	१।११।९।१०	९।१३।३६।३	११।२१।२९।१८	९।६।२७।३७	४।९।२।४२	३।२८।१५।८	६।१६।२३।७
१४	१५।२५।८	०।२९।२६।४४	३।१०।५७।२८	१।१३।७।३६	९।१३।३८।२५	११।२१।५१।२९	९।६।२७।१५	४।८।५९।३२	३।२८।१५।५३	६।१६।२१।३३
१५	१५।२९।५	१।०।२४।३५	३।११।२९।८	१।१५।३।३९	९।१३।४०।३५	११।२२।१५।२८	९।६।२६।४७	४।८।५६।२१	३।२८।१६।४०	६।१६।१९।५९
१६	१५।३३।२	१।१।२२।२५	३।१२।०।५५	१।१६।५६।४९	९।१३।४२।३६	११।२२।४१।१६	९।६।२६।१३	४।८।५३।१०	३।२८।१७।३२	६।१६।१८।२५
१७	१५।३६।५९	१।२।२०।१४	३।१२।३२।४७	१।१८।४७।५	९।१३।४४।२४	११।२३।८।५२	९।६।२५।३२	४।८।४९।५९	३।२८।१८।२६	६।१६।१६।५१
१८	१५।४०।५५	१।३।१८।२	३।१३।४।४५	१।२०।३४।२७	९।१३।४६।२	११।२३।३८।१७	९।६।२४।४६	४।८।४६।४८	३।२८।१९।२४	६।१६।१५।१८
१९	१५।४४।५२	१।४।१५।५०	३।१३।३६।५०	१।२२।१८।५६	९।१३।४७।२९	११।२४।९।३०	९।६।२३।५३	४।८।४३।३७	३।२८।२०।२५	६।१६।१३।४६
२०	१५।४८।४८	१।५।१३।३६	३।१४।९।०	१।२४।०।३२	९।१३।४८।४७	११।२४।४२।३२	९।६।२२।५५	४।८।४०।२७	३।२८।२१।३०	६।१६।१२।१४
२१	१५।५२।४५	१।६।११।१९	३।१४।४१।१८	१।२५।३९।१८	९।१३।४९।५०	११।२५।१६।४४	९।६।२१।५३	४।८।३७।१६	३।२८।२२।३८	६।१६।१०।४२
२२	१५।५६।४१	१।७।९।०	३।१५।१३।४५	१।२७।१४।४७	९।१३।५०।४१	११।२५।५१।५६	९।६।२०।४५	४।८।३४।५	३।२८।२३।४९	६।१६।९।१०
२३	१६।०।३८	१।८।६।४१	३।१५।४६।१४	१।२८।४७।०	९।१३।५१।२२	११।२६।२८।७	९।६।१९।३२	४।८।३०।५४	३।२८।२५।९	६।१६।७।४१
२४	१६।४।३४	१।९।४।२१	३।१६।१८।४७	२।०।१५।५८	९।१३।५१।५०	११।२७।५।१८	९।६।१८।१३	४।८।२७।४३	३।२८।२६।३२	६।१६।६।१२
२५	१६।८।३१	१।१०।२।०	३।१६।५१।२५	२।१।४१।४०	९।१३।५२।६	११।२७।४३।२८	९।६।१६।४९	४।८।२४।३३	३।२८।२७।५७	६।१६।४।४३
२६	१६।१२।२७	१।१०।५९।३७	३।१७।२४।८	२।३।४।६	९।१३।५२।११	११।२८।२२।३९	९।६।१५।१९	४।८।२१।२२	३।२८।२९।२४	६।१६।३।१६
२७	१६।१६।२४	१।११।५७।१४	३।१७।५६।५५	२।४।२३।१६	व९।१३।५२।५	११।२९।२।४९	९।६।१३।४४	४।८।१८।१२	३।२८।३०।५३	६।१६।१।४९
२८	१६।२०।२०	१।१२।५४।५०	३।१८।२९।४६	२।५।३९।११	९।१३।५१।४७	११।२९।४३।५९	९।६।१२।४	४।८।१५।१	३।२८।३२।२४	६।१६।०।२४
२९	१६।२४।१७	१।१३।५२।२४	३।१९।२।४२	२।६।५१।१३	९।१३।५१।१७	०।०।२६।८	९।६।१०।१७	४।८।११।५१	३।२८।३३।५८	६।१५।५९।१
३०	१६।२८।१४	१।१४।४९।५६	३।१९।३५।४२	२।८।०।१९	९।१३।५०।३५	०।१।९।१८	९।६।८।२५	४।८।८।४०	३।२८।३५।३५	६।१५।५७।३८
३१	१६।३२।११	१।१५।४७।२८	३।२०।[illegible]	२।९।[illegible]	९।१३।४९।४२	०।१।५३।२६	९।६।६।२८	४।८।५।२९	३।२८।३७।१५	६।१५।५६।१६

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जून को अयनांश २३°।१८'।१०")

तारीख जून सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं० मि० से०	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१६।३६। ८	१।१६।४४।५८	३।२०।४१।५७	२।१०। ५।४२	९।१३।४८।३७	०। २।३८।३५	९। ६। ४।२५	४। ८। २।१८	३।२८।३८।५६	६।१५।५४।५५
२	१६।४०। ४	१।१७।४२।२७	३।२१।१५।११	२।११। २। ०	९।१३।४७।२०	०। ३।२४।४३	९। ६। २।१६	४। ७।५९। ७	३।२८।४०।४१	६।१५।५३।३५
३	१६।४४। १	१।१८।३९।५५	३।२१।४८।२९	२।११।५५।२२	९।१३।४५।५२	०। ४।११।५१	९। ६। ०। २	४। ७।५५।५६	३।२८।४२।२९	६।१५।५२।१६
४	१६।४७।५७	१।१९।३७।२२	३।२२।२१।५२	२।१२।४४।१७	९।१३।४४।१३	०। ४।५९।५८	९। ५।५७।४२	४। ७।५२।४५	३।२८।४४।२०	६।१५।५०।५८
५	१६।५१।५४	१।२०।३४।४९	३।२२।५५।१९	२।१३।२९।१७	९।१३।४२।२२	०। ५।४९। ५	९। ५।५५।१६	४। ७।४९।३४	३।२८।४६।१२	६।१५।४९।४१
६	१६।५५।५०	१।२१।३२।१५	३।२३।२८।५५	२।१४। ९।२१	९।१३।४०।२२	०। ६।३८।३४	९। ५।५२।४७	४। ७।४६।२३	३।२८।४८। ४	६।१५।४८।२४
७	१६।५९।४७	१।२२।२९।४०	३।२४। २।३६	२।१४।४५। १	९।१३।३८।१३	०। ७।२८।३६	९। ५।५०।१४	४। ७।४३।१२	३।२८।४९।५८	६।१५।४७। ८
८	१७। ३।४३	१।२३।२७। ४	३।२४।३६।२०	२।१५।१६।१६	९।१३।३५।५२	०। ८।१९।१०	९। ५।४७।३६	४। ७।४०। १	३।२८।५१।५६	६।१५।४५।५३
९	१७। ७।४०	१।२४।२४।२७	३।२५।१०। ७	२।१५।४३। ८	९।१३।३३।२२	०। ९।१०।१६	९। ५।४४।५४	४। ७।३६।५१	३।२८।५३।५६	६।१५।४४।४१
१०	१७।११।३६	१।२५।२१।४९	३।२५।४३।५७	२।१६। ५।३५	९।१३।३०।३९	०।१०। १।५६	९। ५।४२। ८	४। ७।३३।४०	३।२८।५६। ०	६।१५।४३।३०
११	१७।१५।३३	१।२६।१९। ९	३।२६।१७।५२	२।१६।२३।३८	९।१३।२७।४७	०।१०।५४। ९	९। ५।३९।१८	४। ७।३०।२९	३।२८।५८। ६	६।१५।४२।२०
१२	१७।१९।२९	१।२७।१६।२९	३।२६।५१।५०	२।१६।३७।१६	९।१३।२४।४३	०।११।४६।५४	९। ५।३६।२३	४। ७।२७।१९	३।२९। ०।१६	६।१५।४१।११
१३	१७।२३।२७	१।२८।१३।४८	३।२७।२५।५२	२।१६।४६।३०	९।१३।२१।२९	०।१२।४०।१२	९। ५।३३।२५	४। ७।२४। ८	३।२९। २।२८	६।१५।४०। ५
१४	१७।२७।२३	१।२९।११। ६	३।२७।५९।५७	२।१६।५०।३३	९।१३।१८। ३	०।१३।३४। ५	९। ५।३०।२२	४। ७।२०।५७	३।२९। ४।४३	६।१५।३८।५९
१५	१७।३१।२०	२। ०। ८।२४	३।२८।३४। ७	२।१६।५०।४३	९।१३।१४।२८	०।१४।२८।३१	९। ५।२७।१५	४। ७।१७।४७	३।२९। ७। १	६।१५।३७।५५
१६	१७।३५।१७	२। १। ५।४२	३।२९। ८।२०	२।१६।४६।५९	९।१३।१०।४२	०।१५।२३।२९	९। ५।२४। ३	४। ७।१४।३६	३।२९। ९।२२	६।१५।३६।५२
१७	१७।३९।१४	२। २। ३। ०	३।२९।४२।३६	२।१६।३९।२२	९।१३। ६।४६	०।१६।१९। ०	९। ५।२०।४७	४। ७।११।२५	३।२९।११।४५	६।१५।३५।५१
१८	१७।४३।१०	२। ३। ०।१७	४। ०।१६।५६	२।१६।२७।५१	९।१३। २।३८	०।१७।१५। ४	९। ५।१७।२७	४। ७। ८।१४	३।२९।१४।१२	६।१५।३४।५१
१९	१७।४७। ७	२। ३।५७।३३	४। ०।५१।२०	२।१६।१२।२६	९।१२।५८।२०	०।१८।११।४१	९। ५।१४। ३	४। ७। ५। ३	३।२९।१६।४१	६।१५।३३।५३
२०	१७।५१। ३	२। ४।५४।४९	४। १।२५।४७	२।१५।५३। ८	९।१२।५३।५१	०।१९। ८।५०	९। ५।१०।३४	४। ७। १।५३	३।२९।१९।१४	६।१५।३२।५७
२१	१७।५५। ०	२। ५।५२। ४	४। २। ०।१८	२।१५।२९।५६	९।१२।४९।१२	०।२०। ६।३२	९। ५। ७।३१	४। ६।५८।४२	३।२९।२१।४८	६।१५।३२। ३
२२	१७।५८।५६	२। ६।४९।१९	४। २।३५। ०	२।१५। ३।१७	९।१२।४४।२०	०।२१। ४।२८	९। ५। ३।२६	४। ६।५५।३१	३।२९।२४।२३	६।१५।३१।११
२३	१८। २।५३	२। ७।४६।३३	४। ३। ९।५२	२।१४।३५।२५	९।१२।३९।२०	०।२२। २।३५	९। ४।५९।४८	४। ६।५२।२१	३।२९।२६।५८	६।१५।३०।२०
२४	१८। ६।४९	२। ८।४३।४७	४। ३।४४।४९	२।१४। ६।१६	९।१२।३४।१३	०।२३। ०।५२	९। ४।५६। ८	४। ६।४९।१०	३।२९।२९।३६	६।१५।२९।२९
२५	१८।१०।४६	२। ९।४१। ०	४। ४।१९।५०	२।१३।३५।५३	९।१२।२८।५८	०।२३।५९।१९	९। ४।५२।२६	४। ६।४५।५९	३।२९।३२।१५	६।१५।२८।४०
२६	१८।१४।४२	२।१०।३८।१३	४। ४।५४।५४	२।१३। ४।१४	९।१२।२३।३५	०।२४।५८।५०	९। ४।४८।४०	४। ६।४२।४८	३।२९।३४।५८	६।१५।२७।५३
२७	१८।१८।३९	२।११।३५।२५	४। ५।२९।५९	२।१२।३१।२२	९।१२।१८। ४	०।२५।५८।२४	९। ४।४४।५२	४। ६।३९।३८	३।२९।३७।४२	६।१५।२७। ९
२८	१८।२२।३५	२।१२।३२।३७	४। ६। ५। ७	२।११।५७।१३	९।१२।१२।२६	०।२६।५८। ०	९। ४।४१। १	४। ६।३६।२७	३।२९।४०।३०	६।१५।२६।३६
२९	१८।२६।३२	२।१३।२९।४८	४। ६।४०।१९	२।११।२२।५०	९।१२। ६।४०	०।२७।५७।४३	९। ४।३७। ६	४। ६।३३।१६	३।२९।४३।१९	६।१५।२५।[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] स्टैण्डर्ड टाइम)

०।०

(१ जुलाई को अयनांश २३°।१८'।१४")

तारीख जुलाई सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।०	सूर्य	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	वरुण	इन्द्र (वक्री)
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	१८।३४।२५	२।१५।२४।१२	४। ७।५०।५२	२।१०।१५।१८	९।११।५४।४३	०।२९।५९।२१	९। ४।२९। ३	४। ६।२६।५४	३।२९।४९। ६	६।१५।२४।२७
२	१८।३८।२१	२।१६।२१।२३	४। ८।२६।१४	२। ९।४६।२४	९।११।४८।३४	१। १। ०।३६	९। ४।२४।५८	४। ६।२३।४३	३।२९।५२। ४	६।१५।२३।५०
३	१८।४२।१८	२।१७।१८।३५	४। ९। १।३९	२। ९।२०।२४	९।११।४२।१७	१। २। १।५९	९। ४।२०।५१	४। ६।२०।३३	३।२९।५५। २	६।१५।२३।१५
४	१८।४६।१४	२।१८।१५।४६	४। ९।३७। ७	२। ८।५७।१९	९।११।३५।५१	१। ३। ३।५०	९। ४।१६।४३	४। ६।१७।२२	३।२९।५८। ४	६।१५।२२।४२
५	१८।५०।११	२।१९।१२।५८	४।१०।१२।३९	२। ८।३७। ९	९।११।२९।१८	१। ४। ६। ८	९। ४।१२।३५	४। ६।१४।११	४। ०। १। ७	६।१५।२२।१०
६	१८।५४। ७	२।२०।१०।१०	४।१०।४८।१४	२। ८।१९।५४	९।११।२२।३८	१। ५। ८।३७	९। ४। ८।२६	४। ६।११। ०	४। ०। ४।१३	६।१५।२१।४०
७	१८।५८। ४	२।२१। ७।२२	४।११।२३।५३	२। ८। ५।३३	९।११।१५।५०	१। ६।११।१७	९। ४। ४।१४	४। ६। ७।४९	४। ०। ७।२१	६।१५।२१।११
८	१९। २। ०	२।२२। ४।३५	४।११।५९।३८	२। ७।५६। २	९।११। ८।५८	१। ७।१४।२०	९। ३।५९।५९	४। ६। ४।३८	४। ०।१०।२९	६।१५।२०।४४
९	१९। ५।५७	२।२३। १।४८	४।१२।३५।२७	२। ७।५२। ६	९।११। २। २	१। ८।१७।२८	९। ३।५५।४०	४। ६। १।२७	४। ०।१३।३७	६।१५।२०।१९
१०	१९। ९।५३	२।२३।५९। ०	४।१३।११।१८	मा२। ७।५३।४५	९।१०।५५। ०	१। ९।२०।४३	९। ३।५१।२१	४। ५।५८।१७	४। ०।१६।४५	६।१५।१९।५६
११	१९।१३।५०	२।२४।५६।१२	४।१३।४७।१२	२। ८। ०।५८	९।१०।४७।५४	१।१०।२४। ५	९। ३।४७। २	४। ५।५५। ६	४। ०।१९।५५	६।१५।१९।३६
१२	१९।१७।४६	२।२५।५३।२४	४।१४।२३।१०	२। ८।१३।४६	९।१०।४०।४२	१।११।२७।५९	९। ३।४२।४२	४। ५।५१।५५	४। ०।२३। ७	६।१५।१९।१८
१३	१९।२१।४३	२।२६।५०।३५	४।१४।५९। ९	२। ८।३२। ८	९।१०।३३।२७	१।१२।३१।५९	९। ३।३८।२१	४। ५।४८।४४	४। ०।२६।१९	६।१५।१९। २
१४	१९।२५।३९	२।२७।४७।४६	४।१५।३५।११	२। ८।५६। ५	९।१०।२६। ६	१।१३।३६। ६	९। ३।३४। १	४। ५।४५।३३	४। ०।२९।३४	६।१५।१८।४८
१५	१९।२९।३६	२।२८।४४।५८	४।१६।११।१७	२। ९।२५।३७	९।१०।१८।४३	१।१४।४०।१९	९। ३।२९।३९	४। ५।४२।२२	४। ०।३२।४९	६।१५।१८।३६
१६	१९।३३।३३	२।२९।४२।११	४।१६।४७।२६	२।१०। १।१९	९।१०।११।१८	१।१५।४५। ४	९। ३।२५।१६	४। ५।३९।१२	४। ०।३६। ६	६।१५।१८।२७
१७	१९।३७।३०	३। ०।३९।२५	४।१७।२३।३५	२।१०।४२। ५	९।१०। ३।५१	१।१६।४९।५६	९। ३।२०।५१	४। ५।३६। १	४। ०।३९।२४	६।१५।१८।१९
१८	१९।४१।२६	३। १।३६।४०	४।१७।५९।५२	२।११।२७।५६	९। ९।५६।२०	१।१७।५४।५५	९। ३।१६।२३	४। ५।३२।५०	४। ०।४२।४४	६।१५।१८।१३
१९	१९।४५।२३	३। २।३३।५५	४।१८।३६। ९	२।१२।१८।५०	९। ९।४८।४६	१।१९। ०। ०	९। ३।११।५३	४। ५।२९।४०	४। ०।४६। ६	६।१५।१८।१०
२०	१९।४९।१९	३। ३।३१।११	४।१९।१२।३०	२।१३।१४।४७	९। ९।४१। ५	१।२०। ५।३७	९। ३। ७।२४	४। ५।२६।२९	४। ०।४९।२९	६।१५।१८। ९
२१	१९।५३।१६	३। ४।२८।२७	४।१९।४८।५२	२।१४।१५।४९	९। ९।३३।२०	१।२१।११।२०	९। ३। २।५६	४। ५।२३।१८	४। ०।५२।५३	मा६।१५।१८।११
२२	१९।५७।१२	३। ५।२५।४४	४।२०।२५।१८	२।१५।२१।५४	९। ९।२५।२९	१।२२।१७।१०	९। २।५८।२८	४। ५।२०। ८	४। ०।५६।१९	६।१५।१८।१४
२३	२०। १। ९	३। ६।२३। २	४।२१। १।५०	२।१६।३३। ४	९। ९।१७।३५	१।२३।२३। ६	९। २।५४। ०	४। ५।१६।५७	४। ०।५९।४६	६।१५।१८।१८
२४	२०। ५। ५	३। ७।२०।२०	४।२१।३८।३०	२।१७।४८।५७	९। ९। ९।४१	१।२४।२९।१९	९। २।४९।३२	४। ५।१३।४७	४। १। ३।१५	६।१५।१८।२४
२५	२०। ९। २	३। ८।१७।३८	४।२२।१५।१६	२।१९। ८।५४	९। ९। १।४९	१।२५।३५।४०	९। २।४५। ६	४। ५।१०।३६	४। १। ६।४४	६।१५।१८।३२
२६	२०।१२।५८	३। ९।१४।५७	४।२२।५२। ४	२।२०।३२।५५	९। ८।५४। ०	१।२६।४२।११	९। २।४०।४१	४। ५। ७।२५	४। १।१०।१५	६।१५।१८।४२
२७	२०।१६।५५	३।१०।१२।१६	४।२३।२८।५५	२।२२। १। १	९। ८।४६।१२	१।२७।४०।५०	९। २।३६।१९	४। ५। ४।१४	४। १।१३।४७	६।१५।१८।५५
२८	२०।२०।५१	३।११। ९।३६	४।२४। ५।५१	२।२३।३३।१०	९। ८।३८।२७	१।२८।५५।३७	९। २।३१।५७	४। ५। १। ३	४। १।१७।२०	६।१५।१९।१०
२९	२०।२४।४८	३।१२। ६।५६	४।२४।४२।४७	२।२५। ९।२४	९। ८।३०।४४	२। ०। २।३१	९। २।२७।३७	४। ४।५७।५३	४। १।२०।५४	६।१५।१९।२६
३०	२०।२८।४५	३।१३। ४।१७	४।२५।१९।४६	२।२६।४९।४०	९। ८।२३। ३	२। १। ९।३२	९। २।२३।१८	४। ४।५४।४२	४। १।२४।२९	६।१५।१९।४४
३१	२०।३२।४१	३।१४। १।३८	४।२५।५६।४९	२।२८।३४। १	९। ८।१५।२५	२। २।१६।५०	९। २।१९। १	४। ४।५१।३१	४। १।२८। ५	६।१५।२०। ५

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अगस्त को अयनांश २३°।१८'।१८")

तारीख अगस्त सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	२०।३६।३७	३।१४।५९।०	४।२६।३३।५६	३।०।२४।४६	९।८।७।४९	२।३।२४।१८	९।२।१४।४५	४।४।४८।२०	४।१।३१।४२	६।१५।२०।२७
२	२०।४०।३३	३।१५।५६।२४	४।२७।११।१७	३।२।१६।५२	९।८।०।१४	२।४।३१।४९	९।२।१०।३१	४।४।४५।१०	४।१।३५।११	६।१५।२०।५१
३	२०।४४।३०	३।१६।५३।४९	४।२७।४८।२२	३।४।१०।१७	९।७।५२।४२	२।५।३९।२७	९।२।६।१८	४।४।४१।५९	४।१।३८।५८	६।१५।२१।१७
४	२०।४८।२६	३।१७।५१।१५	४।२८।२५।४०	३।६।५।२	९।७।४५।१२	२।६।४७।१३	९।२।२।६	४।४।३८।४८	४।१।४२।३७	६।१५।२१।४५
५	२०।५२।२३	३।१८।४८।४३	४।२९।३।१	३।८।१।७	९।७।३७।४५	२।७।५५।९	९।१।५७।५६	४।४।३५।३७	४।१।४६।१८	६।१५।२२।१४
६	२०।५६।१९	३।१९।४६।१३	४।२९।४०।२७	३।९।५८।३२	९।७।३०।२०	२।९।३।१४	९।१।५३।४८	४।४।३२।२६	४।१।४९।५३	६।१५।२२।४६
७	२१।०।१६	३।२०।४३।४३	५।०।१७।५५	३।११।५७।१७	९।७।२२।५७	२।१०।११।२९	९।१।४९।४१	४।४।२९।१५	४।१।५३।४२	६।१५।२३।२०
८	२१।४।१२	३।२१।४१।१३	५।०।५५।२५	३।१३।५९।२२	९।७।१५।३६	२।११।१९।५२	९।१।४५।३६	४।४।२६।५	४।१।५७।२५	६।१५।२३।५५
९	२१।८।९	३।२२।३८।४३	५।१।३२।५७	३।१६।६।२६	९।७।८।१९	२।१२।२८।२५	९।१।४१।३३	४।४।२२।५४	४।२।१।६	६।१५।२४।३२
१०	२१।१२।५	३।२३।३६।१४	५।२।१०।३२	३।१८।१४।१५	९।७।१।८	२।१३।३७।४	९।१।३७।३५	४।४।१९।४३	४।२।४।४८	६।१५।२५।१०
११	२१।१६।२	३।२४।३३।४६	५।२।४८।१०	३।२०।२०।४९	९।६।५४।४	२।१४।४५।५१	९।१।३३।४०	४।४।१६।३२	४।२।८।३०	६।१५।२५।५१
१२	२१।१९।५८	३।२५।३१।२०	५।३।२५।५१	३।२२।२६।६	९।६।४७।६	२।१५।५४।४४	९।१।२९।४८	४।४।१३।२१	४।२।१२।१२	६।१५।२६।३३
१३	२१।२३।५५	३।२६।२८।५३	५।४।३।३३	३।२४।३०।८	९।६।४०।१५	२।१७।३।४७	९।१।२६।०	४।४।१०।११	४।२।१५।५५	६।१५।२७।१६
१४	२१।२७।५१	३।२७।२६।२९	५।४।४१।१७	३।२६।३२।५४	९।६।३३।३०	२।१८।१२।५६	९।१।२२।१५	४।४।७।०	४।२।१९।३८	६।१५।२८।२
१५	२१।३१।४८	३।२८।२४।५	५।५।१९।४	३।२८।३४।२५	९।६।२६।५२	२।१९।२२।८	९।१।१८।३३	४।४।३।४९	४।२।२३।२१	६।१५।२८।५०
१६	२१।३५।४४	३।२९।२१।४३	५।५।५६।५३	४।०।३४।४१	९।६।२०।२०	२।२०।३१।२६	९।१।१४।५६	४।४।०।३८	४।२।२७।४	६।१५।२९।४०
१७	२१।३९।४१	४।०।१९।२३	५।६।३४।४७	४।२।३४।२५	९।६।१३।५५	२।२१।४०।५४	९।१।११।२१	४।३।५७।२८	४।२।३०।४८	६।१५।३०।३१
१८	२१।४३।३७	४।१।१७।६	५।७।१२।४६	४।४।३२।५१	९।६।७।३६	२।२२।५०।२९	९।१।७।५०	४।३।५४।१७	४।२।३४।३२	६।१५।३१।२३
१९	२१।४७।३४	४।२।१४।५०	५।७।५०।४९	४।६।३०।०	९।६।१।२४	२।२४।०।११	९।१।४।२२	४।३।५१।७	४।२।३८।१६	६।१५।३२।१८
२०	२१।५१।३०	४।३।१२।३५	५।८।२८।५५	४।८।२५।५२	९।५।५५।१९	२।२५।१०।१०	९।१।०।५८	४।३।४७।५६	४।२।४२।०	६।१५।३३।१५
२१	२१।५५।२७	४।४।१०।२१	५।९।७।४	४।१०।२०।२७	९।५।४९।२०	२।२६।१९।५६	९।०।५७।३७	४।३।४४।४५	४।२।४५।४५	६।१५।३४।१३
२२	२१।५९।२३	४।५।८।९	५।९।४५।१६	४।१२।१३।४५	९।५।४३।२७	२।२७।२९।५८	९।०।५४।२०	४।३।४१।३४	४।२।४९।३०	६।१५।३५।१३
२३	२२।३।२०	४।६।५।५८	५।१०।२३।३१	४।१४।५।४७	९।५।३७।४१	२।२८।४०।८	९।०।५१।६	४।३।३८।२३	४।२।५३।१४	६।१५।३६।१५
२४	२२।७।१६	४।७।३।४९	५।११।१।४८	४।१५।५६।३१	९।५।३२।२	२।२९।५०।२४	९।०।४७।५६	४।३।३५।१२	४।२।५६।५७	६।१५।३७।१८
२५	२२।११।१३	४।८।१।४०	५।११।४०।८	४।१७।४५।५०	९।५।२६।३२	३।१।०।४२	९।०।४४।५०	४।३।३२।१	४।३।०।३८	६।१५।३८।२१
२६	२२।१५।९	४।८।५९।३४	५।१२।१८।३१	४।१९।३४।३२	९।५।२१।१२	३।२।११।३	९।०।४१।४८	४।३।२८।५०	४।३।४।१९	६।१५।३९।२६
२७	२२।१९।६	४।९।५७।२९	५।१२।५६।५८	४।२१।२१।२०	९।५।१६।२	३।३।२२।३१	९।०।३८।५२	४।३।२५।३९	४।३।७।५२	६।१५।४०।३३
२८	२२।२३।२	४।१०।५५।२५	५।१३।३५।२९	४।२३।७।३०	९।५।११।३	३।४।३२।६	९।०।३६।१	४।३।२२।२८	४।३।११।२८	६।१५।४१।४१
२९	२२।२६।५९	४।११।५३।२३	५।१४।१४।३	४।२४।५१।४४	९।५।६।१३	३।५।४२।४६	९।०।३३।१४	४।३।१९।१७	४।३।१५।५	६।१५।४२।५२
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं॰ ० मि॰ ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ सितम्बर को अयनांश २३°।१८′।२३″)

तारीख सितम्बर सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	वरुण	इन्द्र
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	२२।३८।५०	४।१४।४७।२३	५।१६।१०। ८	४।२९।५८।१९	९। ४।५२।४४	३। ९।१५।२५	९। ०।२५।१९	४। ३। ९।४६	४। ३।२५।५८	६।१५।४६।३८
२	२२।४२।४६	४।१५।४५।२७	५।१६।४८।५७	५। १।३७।५४	९। ४।४८।३४	३।१०।२६।२९	९। ०।२२।४७	४। ३। ६।३५	४। ३।२९।३६	६।१५।४७।५५
३	२२।४६।४३	४।१६।४३।३२	५।१७।२७।५०	५। ३।१६।१८	९। ४।४४।३४	३।११।३७।३९	९। ०।२०।२३	४। ३। ३।२४	४। ३।३३।१४	६।१५।४९।१३
४	२२।५०।३९	४।१७।४१।४०	५।१८। ६।४७	५। ४।५३।३२	९। ४।४०।४४	३।१२।४८।५५	९। ०।१८। ९	४। ३। ०।१४	४। ३।३६।५२	६।१५।५०।३३
५	२२।५४।३६	४।१८।३९।४९	५।१८।४५।४७	५। ६।२९।३७	९। ४।३७। ४	३।१४। ०।१८	९। ०।१६। ०	४। २।५७। ३	४। ३।४०।३०	६।१५।५१।५५
६	२२।५८।३२	४।१९।३८। ०	५।१९।२४।५२	५। ८। ४।३१	९। ४।३३।३४	३।१५।११।४६	९। ०।१३।५३	४। २।५३।५२	४। ३।४४। ८	६।१५।५३।१८
७	२३। २।२९	४।२०।३६।१२	५।२०। ४। ३	५। ९।३८।१६	९। ४।३०।१४	३।१६।२३।२१	९। ०।११।४९	४। २।५०।४१	४। ३।४७।४६	६।१५।५४।४२
८	२३। ६।२५	४।२१।३४।२७	५।२०।४३।१७	५।११।१०।५१	९। ४।२७। ४	३।१७।३५। १	९। ०। ९।४८	४। २।४७।३०	४। ३।५१।२४	६।१५।५६। ८
९	२३।१०।२२	४।२२।३२।४४	५।२१।२२।३४	५।१२।४२।१६	९। ४।२४। ४	३।१८।४६।४४	९। ०। ७।५२	४। २।४४।२०	४। ३।५५। १	६।१५।५७।३६
१०	२३।१४।१८	४।२३।३१। १	५।२२। २। ०	५।१४।१२।४२	९। ४।२१।१६	३।१९।५८।२९	९। ०। ६। ६	४। २।४१। ९	४। ३।५८।३६	६।१५।५९। ६
११	२३।१८।१५	४।२४।२९।२०	५।२२।४१।३१	५।१५।४१।४९	९। ४।१८।४१	३।२१।१०।१६	९। ०। ४।२७	४। २।३७।५९	४। ४। २। ८	६।१६। ०।३७
१२	२३।२२।११	४।२५।२७।४२	५।२३।२१। ६	५।१७। ९।३४	९। ४।१६।१६	३।२२।२२। ६	९। ०। २।५३	४। २।३४।४८	४। ४। ५।४०	६।१६। २। ८
१३	२३।२६। ८	४।२६।२६। ५	५।२४। ०।४२	५।१८।३६। ०	९। ४।१४। ४	३।२३।३४। ०	९। ०। १।२५	४। २।३१।३७	४। ४। ९।११	६।१६। ३।४१
१४	२३।३०। ४	४।२७।२४।३०	५।२४।४०।२१	५।२०। १। ६	९। ४।१२। २	३।२४।४६। ३	९। ०। ०। २	४। २।२८।२६	४। ४।१२।४१	६।१६। ५।१६
१५	२३।३४। १	४।२८।२२।५६	५।२५।२०। ०	५।२१।२४।५१	९। ४।१०।१२	३।२५।५८।१२	८।२९।५८।४५	४। २।२५।१५	४। ४।१६।१०	६।१६। ६।५३
१६	२३।३७।५८	४।२९।२१।२५	५।२५।५९।४२	५।२२।४७।१६	९। ४। ८।३४	३।२७।१०।२७	८।२९।५७।३३	४। २।२२। ४	४। ४।१९।३९	६।१६। ८।३१
१७	२३।४१।५५	५। ०।१९।५५	५।२६।३९।२५	५।२४। ८।२०	९। ४। ७। ८	३।२८।२२।४६	८।२९।५६।२८	४। २।१८।५४	४। ४।२३। ८	६।१६।१०।११
१८	२३।४५।५१	५। १।१८।२७	५।२७।१९।१०	५।२५।२८।२८	९। ४। ५।५२	३।२९।३५। ७	८।२९।५५।२८	४। २।१५।४३	४। ४।२६।३६	६।१६।११।५२
१९	२३।४९।४८	५। २।१७। १	५।२७।५८।५७	५।२६।४६।५३	९। ४। ४।४९	४। ०।४७।२९	८।२९।५४।३४	४। २।१२।३२	४। ४।३०। ३	६।१६।१३।३४
२०	२३।५३।४४	५। ३।१५।३८	५।२८।३८।४४	५।२८। ३।३३	९। ४। ३।५६	४। १।५९।५७	८।२९।५३।४५	४। २। ९।२२	४। ४।३३।३०	६।१६।१५।१८
२१	२३।५७।४१	५। ४।१४।१६	५।२९।१८।३२	५।२९।१८।१९	९। ४। ३।१६	४। ३।१२।२९	८।२९।५३। ३	४। २। ६।११	४। ४।३६।५६	६।१६।१७। ३
२२	०। १।३७	५। ५।१२।५७	५।२९।५८।२२	६। ०।३१।४०	९। ४। २।४६	४। ४।२५। ६	८।२९।५२।२५	४। २। ३। ०	४। ४।४०।२१	६।१६।१८।५०
२३	०। ५।३४	५। ६।११।३९	६। ०।३८।१५	६। १।४३। ७	९। ४। २।२९	४। ५।३७।४७	८।२९।५१।५४	४। १।५९।४९	४। ४।४३।४५	६।१६।२०।३८
२४	०। ९।३०	५। ७।१०।२४	६। १।१८।१०	६। २।५२।४९	९। ४। २।२२	४। ६।५०।३२	८।२९।५१।२८	४। १।५६।३९	४। ४।४७।१०	६।१६।२२।२७
२५	०।१३।२७	५। ८। ९।१०	६। १।५८। ८	६। ४। ०।४७	म९। ४। २।२८	४। ८। ३।२२	८।२९।५१। ७	४। १।५३।२८	४। ४।५०।३१	६।१६।२४।१९
२६	०।१७।२३	५। ९। ७।५८	६। २।३८।१६	६। ५। ६।४२	९। ४। २।४६	४। ९।१६।१६	८।२९।५०।५५	४। १।५०।१७	४। ४।५३।४९	६।१६।२६।१२
२७	०।२१।२०	५।१०। ६।४९	६। ३।१८।२९	६। ६। ९।५६	९। ४। ३।१६	४।१०।२९।१४	८।२९।५०।४९	४। १।४७। ६	४। ४।५७। ३	६।१६।२८। ५
२८	०।२५।१६	५।११। ५।४२	६। ३।५८।४८	६। ७।१०।२९	९। ४। ३।५७	४।११।४२।१७	८।२९।५०।४९	४। १।४३।५६	४। ५। ०।१५	६।१६।२९।५९
२९	०।२९।१३	५।१२। ४।३७	६। ४।३९। ८	६। ८। ८।२०	९। ४। ४।४९	४।१२।५५।२५	म८।२९।५०।५५	४। १।४०।४५	४। ५। ३।२७	६।१६।३१।५४
३०	०।३३।१०	५।१३। ३।३४	६। ५।१९।२८	६। ९। ३।२९	९। ४। ५।५३	४।१४। ८।३८	८।२९।५१। ५	४। १।३७।३४	४। ५। ६।३७	६।१६।३३।४९

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अक्तूबर को अयनांश २३°।१८'।२७")

तारीख अक्तूबर सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	०।३७। ७	५।१४। २।३२	६। ५।५९।५१	६। ९।५५।५६	९। ४। ७। ९	४।१५।२२।५६	८।२९।५१।१९	४। १।३४।२३	४। ५। ९।४७	६।१६।३५।४४
२	०।४१। ३	५।१५। १।३३	६। ६।४०।१७	६।१०।४५।४२	९। ४। ८।३६	४।१६।३५।१६	८।२९।५१।३९	४। १।३१।१२	४। ५।१२।५५	६।१६।३७।४१
३	०।४५। ०	५।१६। ०।३६	६। ७।२०।४८	६।११।३२।४६	९। ४।१०।१६	४।१७।४८।४०	८।२९।५२। ५	४। १।२८। १	४। ५।१६। १	६।१६।३९।४०
४	०।४८।५६	५।१६।५९।४१	६। ८। १।२६	६।१२।१७।००	९। ४।१२। ६	४।१९। २। ५	८।२९।५२।३९	४। १।२४।५०	४। ५।१९। ३	६।१६।४१।४१
५	०।५२।५३	५।१७।५८।४७	६। ८।४२।१४	६।१२।५५।४९	९। ४।१४। ८	४।२०।१५।३२	८।२९।५३।१८	४। १।२१।३९	४। ५।२२। ०	६।१६।४३।४३
६	०।५६।४९	५।१८।५७।५६	६। ९।२३। ३	६।१३।२९।१३	९। ४।१६।२१	४।२१।२९। ३	८।२९।५४। ३	४। १।१८।२९	४। ५।२४।५६	६।१६।४५।४५
७	१। ०।४६	५।१९।५७। ७	६।१०। ३।५३	६।१३।५७।११	९। ४।१८।४७	४।२२।४२।३६	८।२९।५४।५४	४। १।१५।१८	४। ५।२७।५०	६।१६।४७।४८
८	१। ४।४२	५।२०।५६।२०	६।१०।४४।४९	६।१४।१९।४४	९। ४।२१।२४	४।२३।५६।१४	८।२९।५५।५१	४। १।१२। ७	४। ५।३०।४३	६।१६।४९।५१
९	१। ८।३९	५।२१।५५।३५	६।११।२५।४६	६।१४।३६।५०	९। ४।२४।१३	४।२५। ९।५४	८।२९।५६।५४	४। १। ८।५६	४। ५।३३।३५	६।१६।५१।५६
१०	१।१२।३५	५।२२।५४।५२	६।१२। ६।४७	६।१४।४८।३१	९। ४।२७।१३	४।२६।२३।३८	८।२९।५८। २	४। १। ५।४५	४। ५।३६।२५	६।१६।५४। २
११	१।१६।३२	५।२३।५४।११	६।१२।४७।४९	६।१४।५४।४७	९। ४।३०।२५	४।२७।३७।२४	८।२९।५९।१७	४। १। २।३४	४। ५।३९।१४	६।१६।५६। ९
१२	१।२०।२८	५।२४।५३।३१	६।१३।२८।५६	व६।१४।५२।३६	९। ४।३३।५३	४।२८।५१।१४	९। ०। ०।३७	४। ०।५९।२४	४। ५।४१।५९	६।१६।५८।१६
१३	१।२४।२५	५।२५।५२।५३	६।१४।१०। ८	६।१४।४१।५३	९। ४।३७।३१	५। ०। ५। ७	९। ०। २। ३	४। ०।५६।१३	४। ५।४४।४४	६।१७। ०।२४
१४	१।२८।२२	५।२६।५२।१८	६।१४।५१।२३	६।१४।२२।३७	९। ४।४१।१९	५। १।१९। ४	९। ०। ३।३५	४। ०।५३। २	४। ५।४७।२७	६।१७। २।३२
१५	१।३२।१९	५।२७।५१।४४	६।१५।३२।४२	६।१३।५४।५०	९। ४।४५।१८	५। २।३३। ३	९। ०। ५।१४	४। ०।४९।५१	४। ५।५०। ८	६।१७। ४।४१
१६	१।३६।१५	५।२८।५१।१३	६।१६।१४। ४	६।१३।१८।२९	९। ४।४९।२७	५। ३।४७। ७	९। ०। ६।५८	४। ०।४६।४०	४। ५।५२।४७	६।१७। ६।५०
१७	१।४०।१२	५।२९।५०।४३	६।१६।५५।२९	६।१२।३३।३६	९। ४।५३।४७	५। ५। १।१३	९। ०। ८।४८	४। ०।४३।३०	४। ५।५५।२३	६।१७। ९। ०
१८	१।४४। ८	६। ०।५०।१५	६।१७।३६।५७	६।११।४०।१०	९। ४।५८।१६	५। ६।१५।२३	९। ०।१०।४४	४। ०।४०।१९	४। ५।२७।५६	६।१७।११।१०
१९	१।४८। ५	६। १।४९।५०	६।१८।१८।२९	६।१०।३८।१३	९। ५। २।५६	५। ७।२९।३५	९। ०।१२।४७	४। ०।३७। ८	४। ६। ०।२४	६।१७।१३।२०
२०	१।५२। १	६। २।४९।२८	६।१९। ०। ३	६। ९।२८।४९	९। ५। ७।४७	५। ८।४३।४७	९। ०।१४।५४	४। ०।३३।५८	४। ६। २।५०	६।१७।१५।३०
२१	१।५५।५८	६। ३।४९। ८	६।१९।४१।४२	६। ८।१३।५९	९। ५।१२।४६	५। ९।५७।५९	९। ०।१७। ८	४। ०।३०।४७	४। ६। ५।१३	६।१७।१७।४१
२२	१।५९।५४	६। ४।४८।५०	६।२०।२३।२४	६। ७। ३।४२	९। ५।१७।५६	५।११।१२।१५	९। ०।१९।२८	४। ०।२७।३६	४। ६। ७।३३	६।१७।१९।५३
२३	२। ३।५१	६। ५।४८।३४	६।२१। ५। ९	६। ५।५४। ०	९। ५।२३।१७	५।१२।२६।३४	९। ०।२१।५४	४। ०।२४।२६	४। ६। ९।५२	६।१७।२२। ५
२४	२। ७।४७	६। ६।४८।२०	६।२१।४६।५७	६। ४।४६।५०	९। ५।२८।४८	५।१३।४०।५५	९। ०।२४।२६	४। ०।२१।१५	४। ६।१२। ८	६।१७।२४।१७
२५	२।११।४४	६। ७।४८। ७	६।२२।२८।४९	६। ३।४१।१५	९। ५।३४।३०	५।१४।५५।१८	९। ०।२७। ४	४। ०।१८। ४	४। ६।१४।२२	६।१७।२६।३०
२६	२।१५।४०	६। ८।४७।५७	६।२३।१०।४४	६। २।३७।१२	९। ५।४०।२१	५।१६। ९।४४	९। ०।२९।४८	४। ०।१४।५३	४। ६।१६।३४	६।१७।२८।४३
२७	२।१९।३७	६। ९।४७।४९	६।२३।५२।४०	६। १।३४।४४	९। ५।४६।२३	५।१७।२४।१२	९। ०।३२।३८	४। ०।११।४२	४। ६।१८।४४	६।१७।३०।५७
२८	२।२३।३३	६।१०।४७।४२	६।२४।३४।३९	६। ०।४०।५७	९। ५।५२।३६	५।१८।३८।४२	९। ०।३५।३०	४। ०। ८।३२	४। ६।२०।५२	६।१७।३३।१२
२९	२।२७।३०	६।११।४७।३७	६।२५।१६।३९	६। ०। ३।४१	९। ५।५९। ०	५।१९।५३।१४	९। ०।३८।२६	४। ०। ५।२१	४। ६।२२।२४	६।१७।३५।२७
३०	२।३१।२७	६।१२।४७।३४	६।२५।५८।४३	५।२९।३३।५३	९। ६। ५।३०	५।२१। ७।४२	९। ०।४१।२२	४। ०। २।१०	४। ६।२४।[illegible]	६।१७।३७।४१

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय [illegible] भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

०।०

(१ नवम्बर को अयनांश २३°। ८'।३१")

तारीख नवम्बर सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।० घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	२।३९।२१	६।१४।४७।३३	६।२७।२३। ३	५।२९। ५।४५	९। ६।१९। ०	५।२३।३७। ६	९। ०।४७।४९	३।२९।५५।४९	७। ६।२८।३८	६।१७।४२।१०
२	२।४३।१७	६।१५।४७।३६	६।२८। ५।१९	५।२९। ७।२६	९। ६।२६। ०	५।२४।५१।४९	९। ०।५१। ७	३।२९।५२।३८	७। ६।३०।२८	६।१७।४४।२५
३	२।४७।१४	६।१६।४७।४०	६।२८।४७।३९	५।२९।१९।३५	९। ६।३३। ८	५।२६। ६।३२	९। ०।५४।३०	३।२९।४९।२७	७। ६।३२।१५	६।१७।४६।३९
४	२।५१।१०	६।१७।४७।४६	६।२९।३०' ४	५।२९।४२।१४	९। ६।४०।२६	५।२७।२१।१८	९। ०।५७।५८	३।२९।४६।१६	७। ६।३४। १	६।१७।४८।५४
५	२।५५। ७	६।१८।४७।५५	७। ०।१२।३२	६। ०।१९।१५	९। ६।४७।५१	५।२८।३६।१०	९। १। १।३३	३।२९।४३। ५	७। ६।३५।४३	६।१७।५१। ८
६	२।५९। ३	६।१९।४८। ६	७। ०।५५। ३	६। १। २।२७	९। ६।५५।२७	५।२९।५१। ३	९। १। ५।१२	३।२९।३९।५५	७। ६।३७।२३	६।१७।५३।२३
७	३। ३। ०	६।२०।४८।१८	७। १।३७।३८	६। १।५१।५१	९। ७। ३।११	६। १। ५।५८	९। १। ८।५७	३।२९।३६।४४	७। ६।३९। ०	६।१७।५५।३७
८	३। ६।५६	६।२१।४८।३३	७। २।२०।१८	६। २।४७।२४	९। ७।११। ५	६। २।२०।५३	९। १।१२।४७	३।२९।३३।३३	७। ६।४९।३५	६।१७।५७।५२
९	३।१०।५३	६।२२।४८।४८	७। ३। ३। १	६। ३।४९। ७	९। ७।१९। ७	६। ३।३५।५१	९। १।१६।४४	३।२९।३०।२२	७। ६।४२। ६	६।१८। ०। ६
१०	३।१४।४९	६।२३।४९। ६	७। ३।४५।४८	६। ४।५७। ३	९। ७।२७।२०	६। ४।५०।४९	९। १।२०।४४	३।२९।२७।११	७। ६।४३।३७	६।१८। २।२१
११	३।१८।४६	६।२४।४९।२५	७। ४।२८।४०	६। ६।११। ९	९। ७।३५।४०	६। ६। ५।४९	९। १।२४।५१	३।२९।२४। ०	७। ६।४५। ५	६।१८। ४।३५
१२	३।२२।४२	६।२५।४९।४५	७। ५।११।३५	६। ७।३१।२६	९। ७।४४।१०	६। ७।२०।४९	९। १।२९। २	३।२९।२०।५०	७। ६।४६।२९	६।१८। ६।४९
१३	३।२६।३९	६।२६।५०। ७	७। ५।५४।३५	६। ८।५३।२७	९। ७।५२।४८	६। ८।३५।५२	९। १।३३।१७	३।२९।१७।३९	७। ६।४७।४८	६।१८। ९। २
१४	३।३०।३५	६।२७।५०।३१	७। ६।३७।३८	६।१०।१७। १	९। ८। १।३४	६। ९।५०।५५	९। १।३७।३६	३।२९।१४।२८	७। ६।४९। २	६।१८।११।१४
१५	३।३४।३२	६।२८।५०।५६	७। ७।२०।४३	६।११।४२। ७	९। ८।१०।२८	६।११। ५।५९	९। १।४२। ०	३।२९।११।१७	७। ६।५०।१३	६।१८।१३।२६
१६	३।३८।२९	६।२९।५१।२३	७। ८। ३।५२	६।१३। ८।४६	९। ८।१९।२८	६।१२।२१। ४	९। १।४६।२९	३।२९। ८। ६	७। ६।५१।२०	६।१८।१५।३८
१७	३।४२।२६	७। ०।५१।५२	७। ८।४७। ३	६।१४।३६।५७	९। ८।२८।३५	६।१३।३६।१२	९। १।५१। १	३।२९। ४।५५	७। ६।५२।२५	६।१८।१७।४९
१८	३।४६।२२	७। १।५२।२२	७। ९।३०।१८	६।१६। ६।४०	९। ८।३७। ५	६।१४।५१।२०	९। १।५५।३७	३।२९। १।४४	७। ६।५३।२६	६।१८।२०। ०
१९	३।५०।१९	७। २।५२।५४	७।१०।१३।३५	६।१७।३७।५६	९। ८।४७।१२	६।१६। ६।३०	९। २। ०।१८	३।२८।५८।३४	७। ६।५४।२४	६।१८।२२।११
२०	३।५४।१५	७। ३।५३।२७	७।१०।५६।५५	६।१९।१०।४४	९। ८।५६।४२	६।१७।२१।४०	९। २। ५। ४	३।२८।५५।२३	७। ६।५५।१९	६।१८।२४।२२
२१	३।५८।१२	७। ४।५४। १	७।११।४०।१८	६।२०।४३।३०	९। ९। ६।१८	६।१८।३६।५१	९। २। ९।५३	३।२८।५२।१३	७। ६।५६।१२	६।१८।२६।३२
२२	४। २। ८	७। ५।५४।३८	७।१२।२३।४४	६।२२।१६।३०	९। ९।१६। ३	६।१९।५२। ३	९। २।१४।४७	३।२८।४९। २	७। ६।५७। १	६।१८।२८।४२
२३	४। ६। ५	७। ६।५५।१४	७।१३। ७।१२	६।२३।४९।४४	९। ९।२५।५४	६।२१। ७।१५	९। २।१९।४५	३।२८।४५।५१	७। ६।५७।४७	६।१८।३०।५२
२४	४।१०। १	७। ७।५५।५३	७।१३।५०।४५	६।२५।२३।१३	९। ९।३५।५४	६।२२।२२।२९	९। २।२४।४८	३।२८।४२।४०	७। ६।५८।३०	६।१८।३३। २
२५	४।१३।५८	७। ८।५६।३५	७।१४।३४।२०	६।२६।५६।५६	९। ९।४६। ०	६।२३।३७।४५	९। २।२९।५४	३।२८।३९।२९	७। ६।५९।१०	६।१८।३५।११
२६	४।१७।५४	७। ९।५७।१८	७।१५।१७।५६	६।२८।३०।५३	९। ९।५६।१३	६।२४।५३। ४	९। २।३५। ५	३।२८।३६।१८	७। ६।५९।४७	६।१८।३७।२०
२७	४।२१।५१	७।१०।५८। २	७।१६। १।३६	७। ०। ५। ४	९।१०। ६।३३	६।२६। ८।२५	९। २।४०।२०	३।२८।३३। ८	७। ७। ०।२१	६।१८।३९।२९
२८	४।२५।४७	७।११।५८।४६	७।१६।४५।२०	७। १।३९।२९	९।१०।१७। २	६।२७।२३।४६	९। २।४५।४०	३।२८।२९।५७	७। ७। ०।५१	६।१८।४१।३८
२९	४।२९।४४	७।१२।५९।३१	७।१७।२९। ५	७। ३।१३।४३	९।१०।२७।३८	६।२८।३९।११	९। २।५१। ३	३।२८।२६।४६	७। ७। १।१८	६।१८।४३।४५
३०	४।३३।४१	७।१४। ०।१८	७।१८।१३।५५	७। ४।४८। ०	९।१०।३८।२१	६।२९।५४।३५	९। २।५६।२९	३।२८।२३।३६	७। ७। १।४३	६।१८।४५।५१

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ दिसम्बर को अयनांश २३°।१८'।३५")

तारीख दिसम्बर सन् १९६१	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	वरुण	इन्द्र
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. विं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	४।३७।३७	७।१५।१।६	७।१८।५६।४७	७।६।२२।१९	९।१०।४९।८	७।१।९।१८	९।३।१।५८	३।२८।२०।२९	४।७।२।४	६।१८।४७।५६
२	४।४१।३३	७।१६।१।५६	७।१९।४०।४२	७।७।५६।४३	९।११।०।२	७।२।२५।२३	९।३।७।३१	३।२८।१७।१५	४।७।२।२२	६।१८।५०।०
३	४।४५।३०	७।१७।२।४७	७।२०।२४।४०	७।९।३१।८	९।११।११।१	७।३।४०।५१	९।३।१३।६	३।२८।१४।४	४।७।२।३७	६।१८।५२।२
४	४।४९।२६	७।१८।३।४०	७।२१।८।४०	७।११।५।३७	९।११।२२।७	७।४।५६।२१	९।३।१८।४५	३।२८।१०।५३	४।७।२।४८	६।१८।५४।४
५	४।५३।२३	७।१९।४।३४	७।२१।५२।४३	७।१२।४०।७	९।११।३३।१८	७।६।११।५४	९।३।२४।२७	३।२८।७।४२	४।७।२।५६	६।१८।५६।५
६	४।५७।१९	७।२०।५।२९	७।२२।३६।५०	७।१४।१४।४२	९।११।४४।३५	७।७।२७।२७	९।३।३०।१२	३।२८।४।३१	४।७।३।०	६।१८।५८।५
७	५।१।१६	७।२१।६।२४	७।२३।२१।०	७।१५।४९।१	९।११।५५।५६	७।८।४३।०	९।३।३६।१	३।२८।१।२०	४।७।३।१	६।१९।०।४
८	५।५।१२	७।२२।७।२०	७।२४।५।१२	७।१७।२३।४४	९।१२।७।२४	७।९।५८।३२	९।३।४१।५४	३।२७।५८।१०	४।७।२।५९	६।१९।२।३
९	५।९।९	७।२३।८।१६	७।२४।४९।२७	७।१८।५८।२५	९।१२।१८।५७	७।११।१४।३	९।३।४७।४९	३।२७।५४।५९	४।७।२।५३	६।१९।४।०
१०	५।१३।५	७।२४।९।१३	७।२५।३३।४५	७।२०।३३।११	९।१२।३०।३६	७।१२।२९।३५	९।३।५३।४८	३।२७।५१।४८	४।७।२।४४	६।१९।५।५६
११	५।१७।२	७।२५।१०।११	७।२६।१८।७	७।२२।७।५८	९।१२।४२।२०	७।१३।४५।७	९।३।५९।४९	३।२७।४८।३८	४।७।२।३२	६।१९।७।५१
१२	५।२०।५८	७।२६।११।१०	७।२७।२।३१	७।२३।४२।४९	९।१२।५४।१०	७।१५।०।३८	९।४।५।५४	३।२७।४५।२७	४।७।२।१६	६।१९।९।४६
१३	५।२४।५५	७।२७।१२।१०	७।२७।४६।५६	७।२५।१७।४४	९।१३।६।५	७।१६।१६।११	९।४।१२।२	३।२७।४२।१६	४।७।१।५६	६।१९।११।३९
१४	५।२८।५१	७।२८।१३।११	७।२८।३१।२६	७।२६।५२।४३	९।१३।१८।७	७।१७।३१।४४	९।४।१८।१४	३।२७।३९।५	४।७।१।३४	६।१९।१३।३२
१५	५।३२।४८	७।२९।१४।१३	७।२९।१५।५९	७।२८।२७।५२	९।१३।३०।१३	७।१८।४७।१६	९।४।२४।२८	३।२७।३५।५४	४।७।०।५८	६।१९।१५।२२
१६	५।३६।४५	८।०।१५।१६	८।०।०।३४	८।०।३।२	९।१३।४२।२२	७।२०।२।४९	९।४।३०।४३	३।२७।३२।४३	४।७।०।२०	६।१९।१७।१०
१७	५।४०।४२	८।१।१६।२०	८।०।४५।१२	८।१।३८।१४	९।१३।५४।३७	७।२१।१८।२२	९।४।३७।१	३।२७।२९।३२	४।६।५९।३९	६।१९।१८।५७
१८	५।४४।३८	८।२।१७।२५	८।१।२९।५४	८।३।१३।२६	९।१४।६।५६	७।२२।३३।५४	९।४।४३।२१	३।२७।२६।२२	४।६।५८।५६	६।१९।२०।४३
१९	५।४८।३५	८।३।१८।३०	८।२।१४।३७	८।४।४८।४०	९।१४।१९।१९	७।२३।४९।२७	९।४।४९।४४	३।२७।२३।११	४।६।५८।१०	६।१९।२२।२७
२०	५।५२।३१	८।४।१९।३६	८।२।५९।२५	८।६।२३।५४	९।१४।३१।४६	७।२५।५।०	९।४।५६।९	३।२७।२०।०	४।६।५७।२२	६।१९।२४।१०
२१	५।५६।२८	८।५।२०।४४	८।३।४४।१४	८।७।५९।१०	९।१४।४४।१७	७।२६।२०।३३	९।५।२।३७	३।२७।१६।४९	४।६।५६।३१	६।१९।२५।५२
२२	६।०।२४	८।६।२१।५२	८।४।२९।७	८।९।३४।२६	९।१४।५६।५३	७।२७।३६।७	९।५।९।७	३।२७।१३।३९	४।६।५५।३८	६।१९।२७।३२
२३	६।४।२१	८।७।२३।०	८।५।१४।१	८।११।९।५४	९।१५।९।३३	७।२८।५१।४१	९।५।१५।३९	३।२७।१०।२८	४।६।५४।४२	६।१९।२९।१०
२४	६।८।१७	८।८।२४।८	८।५।५९।०	८।१२।४५।३४	९।१५।२२।१७	८।०।७।१५	९।५।२२।१३	३।२७।७।१७	४।६।५३।४४	६।१९।३०।४७
२५	६।१२।१४	८।९।२५।१६	८।६।४४।१	८।१४।२१।२७	९।१५।३५।६	८।१।२२।४९	९।५।२८।५०	३।२७।४।७	४।६।५२।४३	६।१९।३२।२३
२६	६।१६।१०	८।१०।२६।२४	८।७।२९।६	८।१५।५७।३१	९।१५।४७।५९	८।२।३८।२३	९।५।३५।३०	३।२७।०।५६	४।६।५१।४०	६।१९।३३।५८
२७	६।२०।७	८।११।२७।३२	८।८।१४।१२	८।१७।३३।४८	९।१६।०।५६	८।३।५३।५६	९।५।४२।१२	३।२६।५७।४६	४।६।५०।३४	६।१९।३५।३२
२८	६।२४।३	८।१२।२८।४०	८।८।५९।२३	८।१९।१०।१७	९।१६।१३।५६	८।५।९।३०	९।५।४८।५५	३।२६।५४।३५	४।६।४९।२६	६।१९।३७।४
२९	६।२८।०	८।१३।२९।४९	८।९।४४।३६	८।२०।४६।५८	९।१६।२७।२	८।६।२५।३	९।५।५५।४२	३।२६।५१।२४	४।६।४८।१५	६।१९।३८।३४
३०	६।३१।५७	८।१४।३०।५९	८।१०।२९।५२	८।२२।२३।५२	९।१६।४०।१२	८।७।४०।३७	९।६।२।३०	३।२६।४८।१३	४।६।४७।१	६।१९।४०।३

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं. मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम) ० । ०

(१ जनवरी को अयनांश २३°।१८'।३९")

तारीख जनवरी सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ० । ०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	वरुण (वक्री)	इन्द्र
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	६।३९।५०	८।१६।३३।१८	८।१२। ०।३२	८।२५।३७।२७	९।१७। ६।४२	८।१०।११।४२	९। ६।१६। ८	३।२६।४१।५१	४। ६।४४।२६	६।१९।४२।५७
२	६।४३।४६	८।१७।३४।२७	८।१२।४५।५६	८।२७।१५। ४	९।१७।२०। २	८।११।२७।१५	९। ६।२२।५८	३।२६।३८।४०	४। ६।४३। ५	६।१९।४४।२०
३	६।४७।४३	८।१८।३५।३७	८।१३।३१।२४	८।२८।५२।१२	९।१७।३३। ४	८।१२।४२।४८	९। ६।२९।५०	३।२६।३५।३०	४। ६।४१।४०	६।१९।४५।४१
४	६।५१।३९	८।१९।३६।४७	८।१४।१६।५३	९। ०।२९।२४	९।१७।४६।४९	८।१३।५८।२०	९। ६।३६।४३	३।२६।३२।१९	४। ६।४०।१२	६।१९।४७। ०
५	६।५५।३६	८।२०।३७।५७	८।१५। २।२७	९। २। ६।३६	९।१८। ०।१७	८।१५।१३।५२	९। ६।४३।३८	३।२६।२९। ८	४। ६।३८।४०	६।१९।४८।१८
६	६।५९।३२	८।२१।३९। ७	८।१५।४८। ३	९। ३।४३।५३	९।१८।१३।४८	८।१६।२९।२४	९। ६।५०।३४	३।२६।२५।५८	४। ६।३७। ६	६।१९।४९।३५
७	७। ३।२९	८।२२।४०।१७	८।१६।३३।४२	९। ५।२१।११	९।१८।२७।२२	८।१७।४४।५७	९। ६।५७।३२	३।२६।२२।४७	४। ६।३५।२८	६।१९।५०।५१
८	७। ७।२५	८।२३।४१।२७	८।१७।१९।२३	९। ६।५९। ३	९।१८।४०।५९	८।१९। ०।२९	९। ७। ४।३०	३।२६।१९।३६	४। ६।३३।४७	६।१९।५२। ५
९	७।११।२२	८।२४।४२।३७	८।१८। ५। ८	९। ८।३५।५१	९।१८।५४।३८	८।२०।१६। ०	९। ७।११।३०	३।२६।१६।२६	४। ६।३२। २	६।१९।५३।१६
१०	७।१५।१८	८।२५।४३।४६	८।१८।५०।५५	९।१०।११।३६	९।१९। ८।२१	८।२१।३१।३१	९। ७।१८।३२	३।२६।१३।१५	४। ६।३०।१५	६।१९।५४।२५
११	७।१९।१५	८।२६।४४।५४	८।१९।३६।४६	९।११।४६।१९	९।१९।२२। ७	८।२२।४७। १	९। ७।२५।३५	३।२६।१०। ४	४। ६।२८।२४	६।१९।५५।३३
१२	७।२३।११	८।२७।४६। २	८।२०।२२।३८	९।१३।१९।५८	९।१९।३५।५५	८।२४। २।३१	९। ७।३२।३९	३।२६। ६।५३	४। ६।२६।३०	६।१९।५६।३९
१३	७।२७। ८	८।२८।४७।११	८।२१। ८।३५	९।१४।५२।३५	९।१९।४९।४६	८।२५।१८। ०	९। ७।३९।४४	३।२६। ३।४२	४। ६।२५।३४	६।१९।५७।४३
१४	७।३१। ४	८।२९।४८।१८	८।२१।५४।३४	९।१६।२४। ८	९।२०। ३।४१	८।२६।३३।२९	९। ७।४६।५१	३।२६। ०।३१	४। ६।२२।३४	६।१९।५८।४६
१५	७।३५। १	९। ०।४९।२६	८।२२।४०।३४	९।१७।५४।४०	९।२०।१७।३७	८।२७।४८।५८	९। ७।५३।५८	३।२५।५७।२१	४। ६।२०।३३	६।१९।५९।४७
१६	७।३८।५७	९। १।५०।३२	८।२३।२६।३६	९।१९।२९।१५	९।२०।३१।३५	८।२९। ४।२५	९। ८। १। ५	३।२५।५४।१०	४। ६।१८।३२	६।२०। ०।४५
१७	७।४२।५४	९। २।५१।३७	८।२४।१२।३७	९।२०।४९।५३	९।२०।४५।३५	९। ०।१९।५२	९। ८। ८।१२	३।२५।५१। ०	४। ६।१६।३१	६।२०। १।४२
१८	७।४६।५१	९। ३।५२।४२	८।२४।५८।४०	९।२१। ३।३४	९।२०।५९।३६	९। १।३५।१९	९। ८।१५।१९	३।२५।४७।४९	४। ६।१४।२९	६।२०। २।३७
१९	७।५०।४८	९। ४।५३।४७	८।२५।४४।४५	९।२३।१३।१७	९।२१।१३।३९	९। २।५०।४६	९। ८।२२।२५	३।२५।४४।३८	४। ६।१२।२६	६।२०। ३।३०
२०	७।५४।४४	९। ५।५४।५२	८।२६।३०।५१	९।२४।१७।४२	९।२१।२७।४३	९। ४। ६।११	९। ८।२९।३१	३।२५।४१।२७	४। ६।१०।२०	६।२०। ४।२१
२१	७।५८।४१	९। ६।५५।५७	८।२७।१७। ०	९।२५।१७। ९	९।२१।४१।४९	९। ५।२१।३६	९। ८।३६।३७	३।२५।३८।१६	४। ६। ८।१२	६।२०। ५।१०
२२	८। २।३७	९। ७।५७। २	८।२८। ३।११	९।२६।२१।४०	९।२१।५५।५६	९। ६।३७। १	९। ८।४३।४३	३।२५।३५। ५	४। ६। ६। २	६।२०। ५।५७
२३	८। ६।३४	९। ८।५८। ६	८।२८।४९।२३	९।२७।३३।१२	९।२२।१०। ५	९। ७।५२।२६	९। ८।५०।४९	३।२५।३१।५४	४। ६। ३।५०	६।२०। ६।४२
२४	८।१०।३०	९। ९।५९। ९	८।२९।३५।३६	९।२८।१४।२७	९।२२।२४।१५	९। ९। ७।५०	९। ८।५७।५५	३।२५।२८।४३	४। ६। १।३६	६।२०। ७।२५
२५	८।१४।२७	९।११। ०।११	९। ०।२१।५२	९।२८।४७।१२	९।२२।३८।२६	९।१०।२३।१२	९। ९। ५। १	३।२५।२५।३३	४। ५।५९।२०	६।२०। ८। ६
२६	८।१८।२३	९।१२। १।११	९। १। ८।१०	९।२९। ९।२६	९।२२।५२।३८	९।११।३८।३५	९। ९।१२। ७	३।२५।२२।२२	४। ५।५७। ३	६।२०। ८।४५
२७	८।२२।२०	९।१३। २।१०	९। १।५४।३०	९।२९।२१।११	९।२३। ६।५३	९।१२।५३।५७	९। ९।१९।१३	३।२५।१९।१२	४। ५।५४।४३	६।२०। ९।२२
२८	८।२६।१६	९।१४। ३। ८	९। २।४०।५१	९।२९।२२।२३	९।२३।२१। ९	९।१४। ९।१९	९। ९।२६।१८	३।२५।१६। १	४। ५।५२।२१	६।२०। ९।५७
२९	८।३०।१३	९।१५। ४। ५	९। ३।२७।१४	९।२९।१३। ६	९।२३।३५।२६	९।१५।२४।३९	९। ९।३३।२४	३।२५।१२।५०	४। ५।४९।५९	६।२०।१०।३०
३०	८।३४। ९	९।१६। ५। १	९। ४।१३।४०	९।२८।५३।१७	९।२३।४९।४५	९।१६।३९।५९	९। ९।४०।३०	३।२५। ९।३९	४। ५।४५। ७	६।२०।११।३१
३१	८।३८। ६	९।१७। ५।५७	९। ५। ०। ७	९।२८।२२।५९	९।२४। ४। ५	९।१७।५५।१९	९। ९।४७।३६	३।२५। ६।२८	४। ५।४५। ७	६।२०।११।३१

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ०।० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ फर्वरी को अयनांश २३°।१८'।४३")

तारीख फर्वरी सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं. मि. ०।० घ. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र रा. अं. क. वि.
१	८।४२। ३	९।१८। ६।५१	९। ५।४६।३५	९।२७।३३।५७	९।२४।१८।२६	९।१९।१०।३८	९। ९।५४।४१	३।२५। ३।१७	४। ५।४२।४०	६।२०।११।५८
२	८।४५।५९	९।१९। ७।४५	९। ६।३३। ६	९।२६।५०।१४	९।२४।३२।४८	९।२०।२५।५५	९।१०। १।४४	३।२५। ०। ६	४। ५।४०।१३	६।२०।१२।२३
३	८।४९।५६	९।२०। ८।३७	९। ७।१९।३८	९।२५।५६।४६	९।२४।४७।१०	९।२१।४१।१३	९।१०। ८।४७	३।२४।५६।५५	४। ५।३७।४६	६।२०।१२।४६
४	८।५३।५२	९।२१। ९।२९	९। ८। ६।१२	९।२४।५८।३७	९।२५। १।३२	९।२२।५६।३१	९।१०।१५।४९	३।२४।५३।४४	४। ५।३५।१५	६।२०।१३। ८
५	८।५७।४९	९।२२।१०।१९	९। ८।५२।४७	९।२३।५५।५९	९।२५।१५।५३	९।२४।११।४८	९।१०।२२।५०	३।२४।५०।३३	४। ५।३३।४४	६।२०।१३।२७
६	९। १।४५	९।२३।११। ९	९। ९।३९।२४	९।२२।४८।३८	९।२५।३०।१५	९।२५।२७। ३	९।१०।२९।५०	३।२४।४७।२३	४। ५।३०।१३	६।२०।१३।४६
७	९। ५।४२	९।२४।११।५७	९।१०।२६। १	९।२१।३६। ३	९।२५।४४।३७	९।२६।४२।१८	९।१०।३६।४९	३।२४।४४।१२	४। ५।२७।४१	६।२०।१३।५९
८	९। ९।३८	९।२५।१२।४५	९।११।१२।४१	९।२०।१८।४७	९।२५।५८।५९	९।२७।५७।३२	९।१०।४३।४८	३।२४।४१। २	४। ५।२५। ८	६।२०।१४।१२
९	९।१३।३५	९।२६।१३।३१	९।११।५९।२१	९।१९। ७।१५	९।२६।१३।२०	९।२९।१२।४५	९।१०।५०।४४	३।२४।३७।५१	४। ५।२२।३३	६।२०।१४।२२
१०	९।१७।३१	९।२७।१४।१६	९।१२।४६। ४	९।१८। ३। ६	९।२६।२७।४२	१०। ०।२७।५८	९।१०।५७।४०	३।२४।३४।४०	४। ५।१९।५८	६।२०।१४।३२
११	९।२१।२८	९।२८।१५। ०	९।१३।३२।४८	९।१७। ६। ७	९।२६।४२। ३	१०। १।४३। १	९।११। ४।३४	३।२४।३१।३०	४। ५।१७।२१	६।२०।१४।३९
१२	९।२५।२४	९।२९।१५।४२	९।१४।१९।३४	९।१६।१६।३०	९।२६।५६।२५	१०। २।५८।२०	९।११।११।२८	३।२४।२८।१९	४। ५।१४।४४	६।२०।१४।४५
१३	९।२९।२१	१०। ०।१६।२२	९।१५। ६।२१	९।१५।३४।१७	९।२७।१०।४६	१०। ४।१३।२९	९।११।१८।२०	३।२४।२५। ८	४। ५।१२। ५	६।२०।१४।४७
१४	९।३३।१७	१०। १।१७। १	९।१५।५३। ९	९।१४।५९।२७	९।२७।२५। ७	१०। ५।२८।३८	९।११।२५।१२	३।२४।२१।५८	४। ५। ९।२६	६।२०।१४।४८
१५	९।३७।१४	१०। २।१७।३८	९।१६।३९।५८	९।१४।३६।५७	९।२७।३९।२८	१०। ६।४३।४५	९।११।३२। ३	३।२४।१८।४७	४। ५। ६।४६	व६।२०।१४।४७
१६	९।४१।१०	१०। ३।१८।१४	९।१७।२६।५०	९।१४।११।४९	९।२७।५३।४९	१०। ७।५८।५२	९।११।३८।५३	३।२४।१५।३६	४। ५। ४। ५	६।२०।१४।४४
१७	९।४५। ७	१०। ४।१८।४९	९।१८।१३।४२	९।१४। २।२९	९।२८। ८। ७	१०। ९।१३।५८	९।११।४५।४१	३।२४।१२।२६	४। ५। १।२५	६।२०।१४।३८
१८	९।४९। ३	१०। ५।१९।२२	९।१९। ०।३४	९।१३।५९।१३	९।२८।२२।२५	१०।१०।२९। ३	९।११।५२।२८	३।२४। ९।१५	४। ४।५८।४५	६।२०।१४।३१
१९	९।५३। ०	१०। ६।१९।५३	९।१९।४७।२७	व९।१४। २। २	९।२८।३६।४१	१०।११।४४। ६	९।११।५९।११	३।२४। ६। ४	४। ४।५६। ६	६।२०।१४।२२
२०	९।५६।५७	१०। ७।२०।२३	९।२०।३४।२०	९।१४।१०।५५	९।२८।५०।५७	१०।१२।५९। ९	९।१२। ५।५३	३।२४। २।५३	४। ४।५३।२८	६।२०।१४।११
२१	१०। ०।५४	१०। ८।२०।५०	९।२१।२१।१४	९।१४।२५।५४	९।२९। ५।११	१०।१४।१४।१०	९।१२।१२।३२	३।२३।५९।४२	४। ४।५०।५०	६।२०।१३।५८
२२	१०। ४।५०	१०। ९।२१।१७	९।२२। ८। ८	९।१४।४६।५७	९।२९।१९।२५	१०।१५।२९।११	९।१२।१९। ९	३।२३।५६।३२	४। ४।४८।१२	६।२०।१३।४३
२३	१०। ८।४७	१०।१०।२१।४२	९।२२।५५। ३	९।१५।१४। ५	९।२९।३३।३७	१०।१६।४४।११	९।१२।२५।४४	३।२३।५३।२१	४। ४।४५।३५	६।२०।१३।२५
२४	१०।१२।४३	१०।११।२२। ६	९।२३।४१।५९	९।१५।४७।१७	९।२९।४७।४९	१०।१७।५९।१०	९।१२।३२।१७	३।२३।५०।१०	४। ४।४२।५८	६।२०।१३। ५
२५	१०।१६।४०	१०।१२।२२।२८	९।२४।२८।५५	९।१६।२५।३४	१०। ०। २। १	१०।१९।१४। ८	९।१२।३८।४६	३।२३।४६।५९	४। ४।४०।२१	६।२०।१२।४४
२६	१०।२०।३६	१०।१३।२२।४९	९।२५।१५।५१	९।१७। ५। ७	१०। ०।१६।११	१०।२०।२९। ४	९।१२।४५।१४	३।२३।४३।४८	४। ४।३७।४५	६।२०।१२।२१
२७	१०।२४।३३	१०।१४।२३। ७	९।२६। २।४८	९।१७।४८।५८	१०। ०।३०।२०	१०।२१।४४। ०	९।१२।५१।३९	३।२३।४०।३८	४। ४।३५।१०	६।२०।११।५५
२८	१०।२८।३०	१०।१५।२३।२४	९।२६।४९।४६	९।१८।३६। ४	१०। ०।४४।२८	१०।२२।५८।५४	९।१२।५८। ३	३।२३।३७।२७	४। ४।३२।३५	६।२०।११।२८

दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) ०।०

(१ मार्च को अयनांश २३°।१८'।४७")

तारीख मार्च सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ०।०	सूर्य	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	वरुण (वक्री)	इन्द्र
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	१०।३२।२७	१०।१६।२३।३८	९।२७।३६।४४	९।१९।२६।२८	१०। ०।५८।३५	१०।२४।१३।४७	९।१३। ४।२३	३।२३।३४।१६	४। ४।३०। ०	६।२०।१०।५८
२	१०।३६।२३	१०।१७।२३।५२	९।२८।२३।४३	९।२०।२०। ७	१०। १।१२।४१	१०।२५।२८।३८	९।१३।१०।४१	३।२३।३१। ५	४। ४।२७।२६	६।२०।१०। २
३	१०।४०।२०	१०।१८।२४। ३	९।२९।१०।४२	९।२१।१७। ४	१०। १।२६।४६	१०।२६।४३।२९	९।१३।१६।५७	३।२३।२७।५४	४। ४।२४।५२	६।२०। ९।५४
४	१०।४४।१६	१०।१९।२४।१३	९।२९।५७।४१	९।२२।१७।१३	१०। १।४०।४९	१०।२७।५८।१८	९।१३।२३।१२	३।२३।२४।४३	४। ४।२२।१९	६।२०। ९।१९
५	१०।४८।१३	१०।२०।२४।२०	१०। ०।४४।४१	९।२३।१९।५२	१०। १।५४।५२	१०।२९।१३। ६	९।१३।२९।२४	३।२३।२१।३३	४। ४।१९।४७	६।२०। ८।४१
६	१०।५२। ९	१०।२१।२४।२६	१०। १।३१।४२	९।२४।२४।३०	१०। २। ८।५४	११। ०।२७।५३	९।१३।३५।३३	३।२३।१८।२२	४। ४।१७।१७	६।२०। ८। २
७	१०।५६। ६	१०।२२।२४।३०	१०। २।१८।४२	९।२५।३१। ९	१०। २।२२।५४	११। १।४२।३९	९।१३।४१।३८	३।२३।१५।११	४। ४।१४।४९	६।२०। ७।२१
८	११। ०। २	१०।२३।२४।३२	१०। ३। ५।४२	९।२६।३९।५०	१०। २।३६।५१	११। २।५७।२३	९।१३।४७।४०	३।२३।१२। ०	४। ४।१२।२३	६।२०। ६।३९
९	११। ३।५९	१०।२४।२४।३१	१०। ३।५२।४२	९।२७।५०।३३	१०। २।५०।४४	११। ४।१२। ६	९।१३।५३।४०	३।२३। ८।५०	४। ४। ९।५८	६।२०। ५।५५
१०	११। ७।५५	१०।२५।२४।३०	१०। ४।३९।४२	९।२९। ३।१७	१०। ३। ४।३५	११। ५।२६।४७	९।१३।५९।३६	३।२३। ५।३९	४। ४। ७।३५	६।२०। ५। ९
११	११।११।५२	१०।२६।२४।२६	१०। ५।२६।४२	१०। ०।१८। ३	१०। ३।१८।२३	११। ६।४१।२८	९।१४। ५।३०	३।२३। २।२८	४। ४। ५।१४	६।२०। ४।२२
१२	११।१५।४८	१०।२७।२४।२१	१०। ६।१३।४१	१०। १।३४।५२	१०। ३।३२।१०	११। ७।५६। ८	९।१४।११।२०	३।२२।५९।१७	४। ४। २।५६	६।२०। ३।३४
१३	११।१९।४५	१०।२८।२४।१४	१०। ७। ०।४०	१०। २।५४। ६	१०। ३।४५।५२	११। ९।१०।४७	९।१४।१७। ६	३।२२।५६। ६	४। ४। ०।३९	६।२०। २।४३
१४	११।२३।४१	१०।२९।२४। ६	१०। ७।४७।३९	१०। ४।१५। ४	१०। ३।५९।३२	११।१०।२५।२५	९।१४।२२।५०	३।२२।५२।५५	४। ३।५८।२३	६।२०। १।५०
१५	११।२७।३८	११। ०।२३।५६	१०। ८।३४।३८	१०। ५।३६।१५	१०। ४।१३। ९	११।११।४०। २	९।१४।२८।३०	३।२२।४९।४४	४। ३।५६। ८	६।२०। ०।५६
१६	११।३१।३४	११। १।२३।४४	१०। ९।२१।३७	१०। ६।५९।१०	१०। ४।२६।४४	११।१२।५४।३६	९।१४।३४। ८	३।२२।४६।३३	४। ३।५३।५६	६।२०। ०। १
१७	११।३५।३१	११। २।२३।३०	१०।१०। ८।३६	१०। ८।२४।१७	१०। ४।४०।१५	११।१४। ९। ९	९।१४।३९।४१	३।२२।४३।२३	४। ३।५१।४५	६।१९।५९। ४
१८	११।३९।२७	११। ३।२३।१३	१०।१०।५५।३५	१०। ९।५०। ९	१०। ४।५३।४४	११।१५।२३।४१	९।१४।४५।१२	३।२२।४०।१२	४। ३।४९।३६	६।१९।५८। ५
१९	११।४३।२४	११। ४।२२।५३	१०।११।४२।३३	१०।११।१८।१३	१०। ५। ७।१०	११।१६।३८।१२	९।१४।५०।४०	३।२२।३७। १	४। ३।४७।२८	६।१९।५७। ५
२०	११।४७।२१	११। ५।२२।३२	१०।१२।२९।३१	१०।१२।४७। २	१०। ५।२०।३५	११।१७।५२।४१	९।१४।५६। ६	३।२२।३३।५१	४। ३।४५।२२	६।१९।५६। ३
२१	११।५१।१८	११। ६।२२। ८	१०।१३।१६।२९	१०।१४।१७।५४	१०। ५।३३।५६	११।१९। ७। ८	९।१५। १।२९	३।२२।३०।४०	४। ३।४३।१७	६।१९।५४।५८
२२	११।५५।१४	११। ७।२१।४२	१०।१४। ३।२७	१०।१५।५०। ६	१०। ५।४७।१३	११।२०।२१।३४	९।१५। ६।४८	३।२२।२७।२९	४। ३।४१।१२	६।१९।५३।५२
२३	११।५९।११	११। ८।२१।१४	१०।१४।५०।२५	१०।१७।२३।३६	१०। ६। ०।२६	११।२१।३५।५८	९।१५।१२। ३	३।२२।२४।१८	४। ३।३९। ९	६।१९।५२।४४
२४	१२। ३। ७	११। ९।२०।४४	१०।१५।३७।२२	१०।१८।५८।२६	१०। ६।१३।३६	११।२२।५०।२१	९।१५।१७।१३	३।२२।२१। ७	४। ३।३७। ९	६।१९।५१।३५
२५	१२। ७। ४	११।१०।२०।११	१०।१६।२४।१८	१०।२०।३४।३३	१०। ६।२६।४२	११।२४। ४।४२	९।१५।२२।१८	३।२२।१७।५७	४। ३।३५।११	६।१९।५०।२५
२६	१२।११। ०	११।११।१९।३६	१०।१७।११।१४	१०।२२।१२। ०	१०। ६।३९।४४	११।२५।१९। २	९।१५।२७।१९	३।२२।१४।४६	४। ३।३३।१४	६।१९।४९।१५
२७	१२।१४।५७	११।१२।१८।५९	१०।१७।५८। ९	१०।२३।५०।४५	१०। ६।५२।४१	११।२६।३३।२१	९।१५।३२।१५	३।२२।११।३५	४। ३।३१।२०	६।१९।४८। ३
२८	१२।१८।५३	११।१३।१८।२१	१०।१८।४५। ५	१०।२५।३०।५०	१०। ७। ५।३५	११।२७।४७।३८	९।१५।३७। ८	३।२२। ८।२५	४। ३।२९।२८	६।१९।४६।५१
२९	१२।२२।५०	११।१४।१७।४२	१०।१९।३२। १	१०।२७।१२।३०	१०। ७।१८।२६	११।२९। १।५४	९।१५।४१।५५	३।२२। ५।१४	४। ३।२७।३९	६।१९।४५।३८
३०	१२।२६।४६	११।१५।१७। १	१०।२०।१८।५५	१०।२८।५५।२९	१०। ७।३१।१५	०। ०।१६।१०	९।१५।४६।३९	३।२२। २। ४	४। ३।२५।५१	६।१९।४४।२३
३१	१२।३०।४३	११।१६।१६।१७	१०।२१। ५।४९	११। ०।३९।५०	१०। ७।४३।५८	०। १।३०।२४	९।१५।५१।१७	३।२१।५८।५३	४। ३।२४। ४	६।१९।४३। ७

तारीख अप्रैल सन् १९६२	साम्पातिक काल स्थानीय समय घं० मि० ० । ०	दैनिक दृश्य स्पष्ट निरयण ग्रह (समय घं० मि० ० । ० भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) (१ अप्रैल को अयनांश २३°।१८'।५१")								
	घं. मि. से.	सूर्य रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	वरुण (वक्री) रा. अं. क. वि.	इन्द्र (वक्री) रा. अं. क. वि.
१	१२।३४।३९	११।१७।१५।३२	१०।२१।५२।४३	११। २।२५।३०	१०। ७।५६।३८	०। २।४४।३८	९।१५।५५।५१	३।२१।५५।४२	४। ३।२२।२२	६।१९।४१।५०
२	१२।३८।३६	११।१८।१४।४५	१०।२२।३९।३७	११। ४।१२।३०	१०। ८। ९।१२	०। ३।५८।४९	९।१६। ०।२०	३।२१।५२।३१	४। ३।२०।४२	६।१९।४०।१२
३	१२।४२।३३	११।१९।१३।५६	१०।२३।२६।२५	११। ६। ०।५१	१०। ८।२१।४३	०। ५।१३। ०	९।१६। ४।४४	३।२१।४९।२०	४। ३।१९। ७	६।१९।३९।१३
४	१२।४६।३०	११।२०।१३। ५	१०।२४।१३।१३	११। ७।५०।३३	१०। ८।३४। ८	०। ६।२७।१०	९।१६। ९। ४	३।२१।४६। ९	४। ३।१७।३७	६।१९।३७।५३
५	१२।५०।२६	११।२१।१२।१०	१०।२५। ०। ०	११। ९।४१।३५	१०। ८।४६।३०	०। ७।४१।२०	९।१६।१३।१९	३।२१।४२।५८	४। ३।१६।१२	६।१९।३६।३२

—: विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त ज्ञात करना :—

पृ. ११७ से १२० तक २-२ अक्षांशों के अन्तर पर ३२° से ६०° अक्षांश तक के स्थलों के सूर्योदयास्त स्थानीयकाल में ६-६ दिन के व्यवधान से दिए गए हैं (३२° से कम अक्षांशों के लिए गतवर्षीय पञ्चाङ्ग देखें)। इन सूर्योदयास्त कालों में किरणवक्रीभवन संस्कार किया गया है। जिस नगर का सूर्योदयास्त जानना हो उसके अक्षांश 'अक्षांशादि सारिणी' (पृ. १२१-१२२) में देखें। तदनन्तर पृ. ११७-१२० पर उस अक्षांश के नीचे अभीष्ट तारीख के सम्मुख सूर्योदयास्त काल प्राप्त करें। ये इन उदयास्त कालों में अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनट, जो 'अक्षांशादि सारिणी' में दिए गए हैं, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटाएं [अर्थात् ऋण (—) चिह्न हो तो जोड़ें, धन (+) चिह्न हो तो घटाएं]। इस प्रकार वे उदयास्त स्वदेशीय स्टैण्डर्ड काल में हो जाएंगे। जैसे— ६ फरवरी को पठान कोट (पंजाब) में सूर्य का उदयकाल भा. स्टै. टा. में ज्ञात करना है। पठानकोट के अक्षांश ३२°।१७' उत्तर हैं। इनके पृ. ११७ से सूर्योदय काल ६।५० (घण्टादि) मिला। इसमें पठानकोट के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनट २७ जोड़े तो पठानकोट में ६ फरवरी को सूर्योदय काल (भा. स्टै. टा. में) ७।१७ हुआ। इसी प्रकार सूर्यास्त भी निकालें। नोट:—इस प्रकार आया हुआ सूर्य के उदय या अस्त का काल सूर्य-बिम्ब के शीर्ष का क्षितिज से स्पर्श बतलाता है इसमें लगभग ४ मिनट जोड़ने व घटाने से क्रमशः सूर्यकेन्द्र-सम्बन्धी उदयास्तकाल प्राप्त होंगे। लग्न के लिए इष्टसाधन सूर्यकेन्द्रोदय से ही करना चाहिए।

विशेष:—उपरोक्त विधि से केवल उत्तराक्षांशीय स्थलों के ही उदयास्त ज्ञात होते हैं। दक्षिणाक्षांशीय स्थलों के लिए तारीखें दाएं (अन्तिम) कालम में देखनी चाहिएं, जबकि उत्तराक्षांशीय स्थलों के लिए तारीखें बाएं (अन्तिम) कालम में देखी जाती हैं। दक्षिणाक्षांशीय नगरों के उदयास्तकाल उपरोक्त विधि से जानकर उनमें पृ. ११९-१२० पर दाईं ओर दिए गए मिनटात्मक 'दक्षिणाक्षांश संस्कार' को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से वहाँ के वास्तविक उदयास्तकाल प्राप्त होंगे॥

६—६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण ग्रह, चन्द्रगति, चन्द्रशर तथा चन्द्रादिपात (समय भा. स्टै. टा. दिया गया है)

– इष्टकालिक चन्द्र साधन करने की विधि –

दैनिक नक्षत्रों पर से स्पष्ट किया गया चन्द्र स्थूल होता है। उसमें अंशों तक का अन्तर पाया जाता है। अतः हमने इस वर्ष सूक्ष्म दृश्य चन्द्र ६-६ घण्टे के अन्तर पर स्पष्ट किया है। यहाँ चन्द्रमा कला तक सूक्ष्म दिया गया है। चन्द्रमा के अतिशीघ्रगति होने से विकलाओं की उपेक्षा कर देने पर भी उसमें किसी प्रकार की स्थूलता नहीं आती। इस कलान्त चन्द्रमा से ग्रहण के स्पर्श मोक्ष काल भी मिनट तक की सूक्ष्मता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

इस ६-६ घण्टे के अन्तर पर स्पष्ट चन्द्र से "लघुरिक्थ कोष्ठक" (पृ. १२३) द्वारा इष्टकालिक चन्द्र अनायास ही बनाया जा सकता है। ६२ पृष्ठ पर दी गई विधि के अनुसार चन्द्र की ६ घण्टे की गति का लघुरिक्थ लेकर उसमें अपने इष्ट घण्टा मिनटों के (चन्द्रमा जितने घण्टे मिनट आगे का स्पष्ट करना है उसे इष्ट घण्टा मिनट समझें) लघुरिक्थ को जोड़ें एवं उसमें से ६०२१ घटाकर शेष संख्या से "लघुरिक्थ कोष्ठक" में से अंश एवं कलाएं जानकर निकटतम चन्द्र में जोड़ो बस यही आपका इष्टकालिक चन्द्र है। उदाहरण —पृ. ८३ पर देखें।

तारीख मार्च १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	अं. क.	अं. क.	घ. मि.	घ. मि.
१७	११। २।२७	११। ६। ४	११। ९।४१	११।१३।१७	–३।१८	–१।४३	६।५३	१९।१४
१८	११।१६।५२	११।२०।२५	११।२३।५७	११।२७।२८	+१।१९	२।५५	७।३४	२०।१५
१९	०। ०।५८	०। ४।२६	०। ७।५३	०।११।१८	५।४५	३।५३	८।१४	२०।१९
२०	०।१४।४२	०।१८। ५	०।२१।२६	०।२४।४६	९।४७	४।३८	८।५४	२१।१९
२१	०।२८। ४	१। १।१९	१। ४।३७	१। ७।४५	१३।११	५। ५	९।३६	२२।१६
२२	१।१०।५७	१।१४। ७	१।१७।१५	१।२०।२३	१५।५०	५।१४	१०।१८	....
२३	१।२३।३०	१।२६।३५	१।२९।३९	२। २।४३	१७।३९	५। ८	११। ३	०।१०
२४	२। ५।४५	२। ८।४६	२।११।४७	२।१४।४७	१८।३६	४।५०	११।५०	१। २
२५	२।१७।४६	२।२०।४५	२।२३।४४	२।२६।४२	१८।४२	४।१८	१२।३९	१।५१
२६	२।२९।४०	३। २।३८	३। ५।३५	३। ८।३२	१७।५८	३।३५	१३।३०	२।३७
२७	३।११।२८	३।१४।२४	३।१७।२१	३।२०।१९	१६।२६	२।४४	१४।२२	३।१८
२८	३।२३।१७	३।२६।१५	३।२९।१४	४। २।१३	१४।११	१।४६	१५।१४	३।५८
२९	४। ५।१३	४। ८।१३	४।११।१४	४।१४।१५	११।२२	–०।४२	१६। ७	४।३६
३०	४।१७।१७	४।२०।२०	४।२३।२४	४।२६।२८	८। ०	+०।२३	१७। १	५।१०
३१	४।२९।३३	५। २।३८	५। ५।४४	५। ८।५१	+४।१४	+१।२९	१७।५७	५।४४

तारीख अप्रैल १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अ. क.	अं. क.	अं. क.	घ. मि.	घ. मि.
१	५।१२। ०	५।१५। ९	५।१८।२०	५।२१।३३	+०।१४	+२।३१	१८।५२	६।२०
२	५।२४।४६	५।२७।५९	६। १।१३	६। ४।२८	–३।५०	३।२८	१९।५०	६।५५
३	६। ७।४४	६।११। १	६।१४।१८	६।१७।३७	७।५०	४।१६	२०।४९	७।३३
४	६।२०।५७	६।२४।१८	६।२७।४०	७। १। २	११।३०	४।४८	२१।४८	८।१३
५	७। ४।२५	७। ७।४९	७।११।१३	७।१४।३८	१४।३९	५। ६	२२।४९	८।५७
६	७।१८। ३	७।२१।२९	७।२४।५६	७।२८।२४	१७। ३	५। ८	२३।४९	९।४६
७	८। १।५२	८। ५।२१	८। ८।५०	८।१२।१९	१८।२९	४।५६	....	१०।३९
८	८।१५।४९	८।१९।२०	८।२२।५१	८।२६।२२	१८।५०	४।१९	०।४७	११।३५
९	८।२९।५४	९। ३।२६	९। ६।५९	९।१०।३२	१८। १	३।२९	१।४२	१२।३८
१०	९।१४। ५	९।१७।३८	९।२१।१२	९।२४।४६	१६। ४	२।२८	२।३२	१३।४२
११	९।२८।२०	१०। १।५५	१०। ५।३०	१०। ९। ५	१३। ८	+१।१६	३।२०	१४।४६
१२	१०।१२।४०	१०।१६।१५	१०।१९।५०	१०।२३।२४	९।२२	–०। १	४। ५	१५।५२
१३	१०।२६।५८	११। ०।३२	११। ४। ५	११। ७।३८	५। ५	१।१७	४।४७	१६।५५
१४	११।११।११	११।१४।४३	११।१८।१४	११।२१।४५	–०।३१	२।२८	५।२६	१७।५८
१५	११।२५।१५	११।२८।४४	०। २।१३	०। ५।४०	+४। १	३।३०	६। ६	१९। १
१६	०। ९। ७	०।१२।३३	०।१५।५७	०।१९।१९	८।१७	४।१७	६।४६	२०। २
१७	०।२२।४१	०।२६। १	०।२९।२१	१। २।३९	११।५९	४।४९	७।२७	२१। २
१८	१। ५।५६	१। ९।११	१।१२।२५	१।१५।३८	१५। १	५। ७	८।११	२१।५९
१९	१।१८।५०	१।२२। ०	१।२५। ९	१।२८।१७	१७।१३	५। ३	८।५२	२२।५३
२०	२। १।२३	२। ४।२९	२। ७।३३	२।१०।३७	१८।३२	४।४८	९।४२	२३।४३
२१	२।१३।४०	२।१६।४२	२।१९।४३	२।२२।४३	१८।५७	४।१९	१०।३१	...
२२	२।२५।४२	२।२८।४१	३। १।३९	३। ४।३७	१८।२९	३।३९	११।२१	०।३१
२३	३। ७।३५	३।१०।३३	३।१३।३०	३।१६।२७	१७।१२	२।५१	१२।१२	१।१४
२४	३।१९।२४	३।२२।२०	३।२५।१७	३।२८।१५	१५।१०	२। ०	१३। ५	१।५४
२५	४। १।१३	४। ४।१२	४। ७।११	४।१०।११	१२।३१	–०।५७	१३।५८	२।३३
२६	४।१३।११	४।१६।१२	४।१९।१४	४।२२।१६	९।१८	+०।१०	१४।५१	३। ८
२७	४।२५।२०	४।२८।२५	५। १।३०	५। ४।३६	५।३९	१।१३	१५।४६	३।४१
२८	५। ७।४३	५।१०।५२	५।१४। २	५।१७।१३	+१।४१	२।१५	१६।४१	४।१७
२९	५।२०।२५	५।२३।३८	५।२६।५३	६। ०। ९	–२।२५	३। २	१७।३९	४।५३
३०	६। ३।२७	६। ६।४५	६।१०। ४	६।१३।२५	–६।३३	+४। ०	१८।३८	५।३०

६-६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

तारीख मई १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे कान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	६।१६।४७	६।२०।१०	६।२३।३४	६।२६।५९	-१०।२७	+४।३६	१९।३९	६।१०
२	७। ०।२५	७। ३।५२	७। ७।२१	७।१०।५०	१३।५३	४।५७	२०।४१	६।५३
३	७।१४।१९	७।१७।४९	७।२१।१९	७।२४।५०	१६।३५	५। १	२१।४३	७।४१
४	७।२८।२१	८। १।५३	८। ५।२६	८। ८।५९	१८।२३	४।४८	२२।४२	८।३४
५	८।१२।३२	८।१६। ४	८।१९।३६	८।२३। ९	१९। ३	४।१६	२३।३९	९।३१
६	८।२६।४२	९। ०।१६	९। ३।४९	९। ७।२२	१८।३१	३।२९	....	१०।३२
७	९।१०।५४	९।१४।२६	९।१७।५९	९।२१।३१	१६।४९	२।२९	०।३२	११।३५
८	९।२५। ३	९।२८।३५	१०। २। ६	१०। ५।३७	१४। ५	१।२०	१।२०	१२।३९
९	१०। ९। ८	१०।१२।३८	१०।१६। ८	१०।१९।३७	१०।३३	+०। ७	२। ४	१३।४२
१०	१०।२३। ७	१०।२६।३६	११। ०। ५	११। ३।३३	६।२६	-१। ७	२।४५	१४।४६
११	११। ७। २	११।१०।३०	११।१३।५७	११।१७।२४	-१।५९	२।१६	३।२५	१५।४७
१२	११।२०।५०	११।२४।१५	११।२७।४०	०। १। ५	+२।३०	३।१७	४। ३	१६।४८
१३	०। ४।२९	०। ७।५२	०।११।१४	०।१४।३६	६।५०	४। ५	४।४२	१७।४९
१४	०।१७।५८	०।२१।१८	०।२४।३७	०।२७।५५	१०।४६	४।३९	५।२२	१८।४८
१५	१। १।१३	१। ४।३०	१। ७।४५	१।११।००	१४। ५	४।५७	६। ३	१९।४७
१६	१।१४।१३	१।१७।२५	१।२०।३६	१।२३।४६	१६।३८	४।५९	६।४७	२०।४२
१७	१।२६।५५	२। ०। ४	२। ३।११	२। ६।१८	१८।२९	४।४६	७।३३	२१।३५
१८	२। ९।२३	२।१२।२६	२।१५।२९	२।१८।३२	१९। ५	४।१९	८।२१	२२।२५
१९	२।२१।३४	२।२४।३५	२।२७।३६	३। ०।३६	१८।५७	३।४१	९।१२	२३।१०
२०	३। ३।३६	३। ६।३५	३। ९।३३	३।१२।३१	१७।५६	२।५४	१०। ३	२३।५२
२१	३।१५।२८	३।१८।२५	३।२१।२२	३।२४।१९	१६।१०	२। ०	१०।५५	....
२२	३।२७।१६	४। ०।१३	४। ३।१०	४। ६। ८	१३।४२	-१। ०	११।४८	०।३०
२३	४। ९। ६	४।१२। ५	४।१५। ४	४।१८। ४	१०।४०	+०। ३	१२।४०	१। ७
२४	४।२१। ४	४।२४। ५	४।२७। ७	५। ०।१०	७।११	१। ५	१३।३४	१।४१
२५	५। ३।१४	५। ६।१९	५। ९।२५	५।१२।३२	+३।२०	२। ६	१४।२८	२।१५
२६	५।१५।४०	५।१८।५०	५।२२। १	५।२५।१४	-०।४३	३। २	१५।२४	२।५०
२७	५।२८।२८	६। १।४४	६। ५। २	६। ८।२०	४।५२	३।५१	१६।२३	३।२५
२८	६।११।४०	६।१५। २	६।१८।२६	६।२१।५१	८।५६	४।२८	१७।२३	४। ३
२९	६।२५।१७	६।२८।४५	७। २।१३	७। ५।४३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तारीख जून १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे कान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अ. क.	रा. अं. क.	रा. अ. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	८। ८। १	८।११।३९	८।१५।१८	८।१८।५७	-१९। ६	+४।१९	२१।३२	७।२१
२	८।२२।३६	८।२६।१५	८।२९।५३	९। ३।३२	१८।५९	३।३३	२२।२८	८।२२
३	९। ७।१०	९।१०।४७	९।१४।२४	९।१८। १	१७।३५	२।३३	२३।१९	९।२६
४	९।२१।३७	९।२५।१२	९।२८।४६	१०। २।२०	१५। ४	१।२२	....	१०।३१
५	१०। ५।५४	१०। ९।२६	१०।१२।५८	१०।१६।३०	११।३९	+०। ८	०। ५	११।३५
६	१०।२०। १	१०।२३।३०	१०।२६।५८	११। ०।२७	७।३७	-१। ६	०।४७	१२।३९
७	११। ३।५४	११। ७।२०	११।१०।४५	११।१४।१०	-३।१३	२।१५	१।२६	१३।४१
८	११।१७।३४	११।२०।५८	११।२४।२०	११।२७।४२	+१।१६	३।१७	२। ४	१४।४१
९	०। १। ४	०। ४।२४	०। ७।४३	०।११। २	५।३७	४। ४	२।४२	१५।४१
१०	०।१४।२०	०।१७।३७	०।२०।५४	०।२४।११	९।३९	४।३८	३।२०	१६।३९
११	०।२७।२७	१। ०।४२	१। ३।५५	१। ७। ८	१३। ८	४।५७	४। ०	१७।३८
१२	१।१०।२१	१।१३।३२	१।१६।४३	१।१९।५३	१५।५७	५। १	४।४२	१८।३४
१३	१।२३। २	१।२६। ९	१।२९।१६	२। २।२२	१७।५६	४।४१	५।२८	१९।२८
१४	२। ५।२८	२। ८।३३	२।११।३८	२।१४।४२	१९। २	४।२४	६।१५	२०।१८
१५	२।१७।४६	२।२०।४८	२।२३।४९	२।२६।५०	१९।१३	३।४७	७। ४	२१। ५
१६	२।२९।५०	३। २।५०	३। ५।४९	३। ८।४८	१८।२१	३। ०	७।५५	२१।४९
१७	३।११।४६	३।१४।४३	३।१७।४०	३।२०।३७	१६।५९	२। ५	८।४६	२२।२९
१८	३।२३।३५	३।२६।३२	३।२९।२९	४। २।२५	१४।४५	१। ५	९।३९	२३। ५
१९	४। ५।२२	४। ८।१८	४।११।१५	४।१४।१३	११।५४	-०। ३	१०।३२	२३।४१
२०	४।१७।११	४।२०।१०	४।२३। ९	४।२६। ८	८।३५	+ ०	११।२४	....
२१	४।२९। ८	५। २। ८	५। ५।१०	५। ८।१३	४।५२	२। १	१२।१८	०।१४
२२	५।११।१७	५।१४।२३	५।१७।२९	५।२०।३६	+०।५२	२।५९	१३।११	०।४८
२३	५।२३।४३	५।२६।५३	६। ०। ५	६। ३।१८	-३। ९	३।४७	१४। ८	१।२२
२४	६। ६।३२	६। ९।४८	६।१३। ६	६।१६।२५	७।१३	४।२७	१५। ६	१।५७
२५	६।१९।४६	६।२३। ९	६।२६।३४	७। ०। ०	११। ४	४।५४	१६। ७	२।३७
२६	७। ३।२८	७। ६।५८	७।१०।२९	७।१४। २	१४।२८	५। ५	१७।१०	३।२१
२७	७।१७।३६	७।२१।१२	७।२४।५०	७।२८।२८	१७। ८	४।५९	१८।१३	४। ९
२८	८। २। ७	८। ५।४७	८। ९।२९	८।१३।१२	१८।४४	४।३४	१९।१६	५। ४
२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८।२८। ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तारीख जुलाई १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	९।१६।४७	९।२०।३१	९।२४।१४	९।२७।५५	-१६।११	+१।३७	२२। ९	८।१७
२	१०। १।३६	१०। ५।१६	१०। ८।५५	१०।१२।३२	१२।५७	+०।१३	२२।४६	९।२५
३	१०।१६। ९	१०।१९।४५	१०।२३।२०	१०।२६।५३	८।५८	-०।५४	२३।४७	१०।३१
४	११। ०।२६	११। ३।५७	११। ७।२७	११।१०।५६	-४।३२	२।२२	....	११।३३
५	११।१४।२४	११।१७।५०	११।२१।१५	११।२४।३९	+०। २	३।१५	०। ६	१२।३५
६	११।२८। २	०। १।२३	०। ४।४४	०। ८। ३	४।२७	४। ६	०।४४	१३।३६
७	०।११।२१	०।१४।३९	०।१७।५६	०।२१।१२	८।३७	४।४३	१।२२	१४।३४
८	०।२४।२७	०।२७।४१	१। ०।५३	१। ४। ४	१२।१४	५। ४	२। ०	१५।३२
९	१। ७।१५	१।१०।२५	१।१३।३४	१।१६।४३	१५।१३	५। ९	२।४१	१६।२८
१०	१।१९।५१	१।२२।५८	१।२६। ४	१।२९। ९	१७।२५	४।५३	३।२५	१७।२२
११	२। २।१४	२। ५।१९	२। ८।२३	२।११।२६	१८।४७	४।३५	४।११	१८।१३
१२	२।१४।२९	२।१७।३१	२।२०।३२	२।२३।३२	१९।१५	३।५८	४।५३	१९। २
१३	२।२६।३२	२।२९।३२	३। २।३१	३। ५।३०	१८।४९	३।११	५।४९	१९।४६
१४	३। ८।२८	३।११।२६	३।१४।२४	३।१७।२१	१७।३२	२।२१	६।४०	२०।२८
१५	३।२०।१८	३।२३।१४	३।२६।११	३।२९। ७	१५।३८	१।१६	७।३२	२१। ६
१६	४। २। ४	४। ५। १	४। ७।५८	४।१०।५५	१२।५३	-०।१२	८।२५	२१।४२
१७	४।१३।५२	४।१६।४८	४।१९।४५	४।२२।४३	९।४२	+०।५१	९।१८	२२।१६
१८	४।२५।४१	४।२८।४०	५। १।३९	५। ४।३९	६। ९	१।५३	१०।११	२२।४९
१९	५। ७।३९	५।१०।४०	५।१३।४२	५।१६।४४	+२।१७	२।५२	११। ३	२३।२२
२०	५।१९।४७	५।२२।५१	५।२५।५७	५।२९। ४	-२।४२	३।४३	११।५८	२३।५६
२१	६। २।१२	६। ५।२२	६। ८।३२	६।११।४४	५।४३	४।२५	१२।५४	....
२२	६।१४।५७	६।१८।१२	६।२१।२८	६।२४।४५	९।३४	४।५५	१३।५२	०।३२
२३	६।२८। ५	७। १।२७	७। ४।५२	७। ८।१९	१३। ५	५।१२	१४।५२	१।१३
२४	७।११।४६	७।१५।१५	७।१८।४६	७।२२।१८	१६। २	५।११	१५।५३	१।५७
२५	७।२५।५०	७।२९।२७	८। ३। ५	८। ६।४४	१८। ९	४।५२	१६।५५	२।४८
२६	८।१०।२४	८।१४। ६	८।१७।४८	८।२१।३२	१९।१०	४।१८	१७।५८	३।४४
२७	८।२५।१७	८।२९। ३	९। २।५०	९। ६।३८	१८।५३	३।१८	१८।५६	४।४८
२८	९।१०।२३	९।१४।११	९।१७।५८	९।२१।४६	१७।१७	२। ८	१९।४९	५।५५
२९	९।२५।३३	९।२९।२०	१०। ३। ६	१०। ६।५२	१४।२६	+०।४८	२०।३८	७। ५
३०	१०।१०।३७	१०।१४।२१	१०।१८। ४	१०।२१।४७	१०।३८	-०।३४	२१।२३	८।१३
३१	१०।२५।२९	१०।२९।१०	११। २।४९	११। ६।२६	-६।१३	१।५४	२२। ४	९।२०

तारीख अगस्त १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क	रा. अं. क	रा. अं. क	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	११।१०। २	११।१३।३६	११।१७। ९	११।२०।४०	-३।३१	-३। ५	२२।४४	१०।२४
२	११।२४।११	११।२७।३९	०। १। ६	०। ४।३२	+३। ७	४। २	२३।२२	११।२७
३	०। ७।५६	०।११।१८	०।१४।३९	०।१७।५८	७।२७	४।४३	....	१२।२८
४	०।२१।१७	०।२४।३४	०।२७।४९	१। १। ३	११।१७	५। ८	०। २	१३।२७
५	१। ४।१६	१। ७।२७	१।१०।३८	१।१३।४८	१४।२८	५।१६	०।४२	१४।२४
६	१।१६।५६	१।२०। ३	१।२३।१०	१।२६।१६	१६।५३	५। ८	१।२४	१५।१८
७	१।२९।२०	२। २।२४	२। ५।२८	२। ८।३०	१८।२८	४।४७	२। ९	१६।१०
८	२।११।३२	२।१४।३३	२।१७।३४	२।२०।३४	१९।१०	४।१२	२।५६	१७। ०
९	२।२३।३४	२।२६।३३	२।२९।३२	३। २।३०	१८।५८	३।२६	३।४५	१७।४५
१०	३। ५।२८	३। ८।२५	३।११।२३	३।१४।२०	१७।५६	२।३२	४।३६	१८।२७
११	३।१७।१८	३।२०।१५	३।२३।१२	३।२६। ९	१६। ७	१।३२	५।२८	१९। ७
१२	३।२९। ६	४। २। ३	४। ४।५८	४। ७।५५	१३।३८	-०।२८	६।२१	१९।४३
१३	४।१०।५२	४।१३।४९	४।१६।४६	४।१९।४४	१०।३५	+०।३७	७।१३	२०।१८
१४	४।२२।४२	४।२५।४०	४।२८।३८	५। १।३७	७। ६	१।४१	८। ६	२०।५१
१५	५। ४।३६	५। ७।३६	५।१०।३६	५।१३।३७	+३।१९	२।४१	८।५९	२१।२३
१६	५।१६।३८	५।१९।४०	५।२२।४२	५।२५।४६	-०।३७	३।३५	९।५२	२१।५७
१७	५।२८।५०	६। १।५५	६। ५। १	६। ८। ९	४।३५	४।१९	१०।४६	२२।३२
१८	६।११।१८	६।१४।२७	६।१७।३७	६।२०।४९	८।२६	४।५२	११।४२	२३। ९
१९	६।२४। २	६।२७।१६	७। ०।३२	७। ३।५०	११।५१	५।१२	१२।४०	२३।५१
२०	७। ७। ९	७।१०।२९	७।१३।५१	७।१७।१४	१५। ४	५।१७	१३।३९	....
२१	७।२०।३९	७।२४। ६	७।२७।३४	८। १। ४	१७।२६	५। ५	१४।४०	०।३७
२२	८। ४।३५	८। ८। ८	८।११।४२	८।१५।१८	१८।५१	४।३३	१५।४०	१।३०
२३	८।१८।५५	८।२२।३४	८।२६।१४	८।२९।५६	१९। ९	३।४८	१६।३९	२।२८
२४	९। ३।३९	९। ७।२३	९।११। ८	९।१४।५४	१८। ९	२।४३	१७।३३	३।३१
२५	९।१८।४०	९।२२।२६	९।२६।१३	१०। ०। १	१५।५२	१।२५	१८।२४	४।३९
२६	१०। ३।५०	१०। ७।३९	१०।११।२७	१०।१५।१४	१२।२८	+०। ३	१९।१२	५।४९
२७	१०।१९। १	१०।२२।४७	१०।२६।३२	११। ०।१७	८।१३	-१।२१	१९।५५	६।५८
२८	११। ४। १	११। ७।४३	११।११।२४	११।१५। ५	-३।३०	२।३७	२०।३८	८। ५
२९	११।१८।४५	११।२२।२३	११।२६। १	११।२९।३३	+१।११	३।४२	२१।१८	९।११
३०	०। ३। ६	०। ६।३८	०।१०। ८	०।१३।३६	५।५६	४।३२	२१।५९	१०।१५
३१	०।१७। २	०।२०।२५	०।२३।४७	०।२७। ८	+१०।१६	-५। ३	२२।३९	११।१६

६-६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)

तारीख मई १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	घं. मि. ६।० बजे	घं. मि. १२।० बजे	घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	शर	चण्डीगढ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	६।१६।४७	६।२०।१०	६।२३।३४	६।२६।५९	-१०।२७	+४।३६	१९।३९	६।१०
२	७। ०।२५	७। ३।५२	७। ७।२१	७।१०।५०	१३।५३	४।५७	२०।४१	६।५३
३	७।१४।१९	७।१७।४९	७।२१।१९	७।२४।५०	१६।३५	५। १	२१।४३	७।४१
४	७।२८।२१	८। १।५३	८। ५।२६	८। ८।५९	१८।२३	४।४८	२२।४२	८।३४
५	८।१२।३२	८।१६। ४	८।१९।३६	८।२३। ९	१९। ३	४।१६	२३।३९	९।३१
६	८।२६।४२	९। ०।१६	९। ३।४९	९। ७।२२	१८।३१	३।२९	....	१०।३२
७	९।१०।५४	९।१४।२६	९।१७।५९	९।२१।३१	१६।४९	२।२९	०।३२	११।३५
८	९।२५। ३	९।२८।३५	१०। २। ६	१०। ५।३७	१४। ५	१।२०	१।२०	१२।३९
९	१०। ९। ८	१०।१२।३८	१०।१६। ८	१०।१९।३७	१०।३३	+०। ७	२। ४	१३।४२
१०	१०।२३। ७	१०।२६।३६	११। ०। ५	११। ३।३३	६।२६	-१। ७	२।४५	१४।४६
११	११। ७। २	११।१०।३०	११।१३।५७	११।१७।२४	-१।५९	२।१६	३।२५	१५।४७
१२	११।२०।५०	११।२४।१५	११।२७।४०	०। १। ५	+२।३०	३।१७	४। ३	१६।४८
१३	०। ४।२९	०। ७।५२	०।११।१४	०।१४।३६	६।५०	४। ५	४।४२	१७।४९
१४	०।१७।५८	०।२१।१८	०।२४।३७	०।२७।५५	१०।४६	४।३९	५।२२	१८।४८
१५	१। १।१३	१। ४।३०	१। ७।४५	१।११।००	१४। ५	४।५७	६। ३	१९।४७
१६	१।१४।१३	१।१७।२५	१।२०।३६	१।२३।४६	१६।३८	४।५९	६।४७	२०।४२
१७	१।२६।५५	२। ०। ४	२। ३।११	२। ६।१८	१८।२९	४।४६	७।३३	२१।३५
१८	२। ९।२३	२।१२।२६	२।१५।२९	२।१८।३२	१९। ५	४।१९	८।२१	२२।२५
१९	२।२१।३४	२।२४।३५	२।२७।३६	३। ०।३६	१८।५७	३।४१	९।१२	२३।१०
२०	३। ३।३६	३। ६।३५	३। ९।३३	३।१२।३१	१७।५६	२।५४	१०। ३	२३।५२
२१	३।१५।२८	३।१८।२५	३।२१।२२	३।२४।१९	१६।१०	२। ०	१०।५५	....
२२	३।२७।१६	४। ०।१३	४। ३।१०	४। ६। ८	१३।४२	-१। ०	११।४८	०।३०
२३	४। ९। ६	४।१२। ५	४।१५। ४	४।१८। ४	१०।४०	+०। ३	१२।४०	१। ७
२४	४।२१। ४	४।२४। ५	४।२७। ७	५। ०।१०	७।११	१। ५	१३।३४	१।४१
२५	५। ३।१४	५। ६।१९	५। ९।२५	५।१२।३२	+३।२०	२। ६	१४।२८	२।१५
२६	५।१५।४०	५।१८।५०	५।२२। १	५।२५।१४	-०।४३	३। २	१५।२४	२।५०
२७	५।२८।२८	६। १।४४	६। ५। २	६। ८।२०	४।५२	३।५१	१६।२३	३।२५
२८	६।११।४०	६।१५। २	६।१८।२६	६।२१।५१	८।५६	४।२८	१७।२३	४। ३
२९	६।२५।१७	६।२८।४५	७। २।१३	७। ५।४३	१२।३८	४।५३	१८।२६	४।४५
३०	७। ९।१५	७।१२।४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तारीख जून १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	घं. मि. ६।० बजे	घं. मि. १२।० बजे	घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	शर	चण्डीगढ चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	८। ८। १	८।११।३९	८।१५।१८	८।१८।५७	-१९। ६	+४।१९	२१।३२	७।२१
२	८।२२।३६	८।२६।१५	८।२९।५३	९। ३।३२	१८।५९	३।३३	२२।२८	८।२२
३	९। ७।१०	९।१०।४७	९।१४।२४	९।१८। १	१७।३५	२।३३	२३।१९	९।२६
४	९।२१।३७	९।२५।१२	९।२८।४६	१०। २।२०	१५। ४	१।२२	....	१०।३१
५	१०। ५।५४	१०। ९।२६	१०।१२।५८	१०।१६।३०	११।३९	+०। ८	०। ५	११।३५
६	१०।२०। ०	१०।२३।३०	१०।२६।५८	११। ०।२७	७।३७	-१। ६	०।४७	१२।३९
७	११। ३।५४	११। ७।२०	११।१०।४५	११।१४।१०	-३।१३	२।१५	१।२६	१३।४१
८	११।१७।३४	११।२०।५८	११।२४।२०	११।२७।४२	+१।१६	३।१७	२। ४	१४।४१
९	०। १। ४	०। ४।२४	०। ७।४३	०।११। २	५।३७	४। ४	२।४२	१५।४१
१०	०।१४।२०	०।१७।३७	०।२०।५४	०।२४।११	९।३९	४।३८	३।२०	१६।३९
११	०।२७।२७	१। ०।४२	१। ३।५५	१। ७। ८	१३। ८	४।५७	४। ०	१७।३८
१२	१।१०।२१	१।१३।३२	१।१६।४३	१।१९।५३	१५।५७	५। १	४।४२	१८।३४
१३	१।२३। २	१।२६। ९	१।२९।१६	२। २।२२	१७।५६	४।४९	५।२८	१९।२८
१४	२। ५।२८	२। ८।३३	२।११।३८	२।१४।४२	१९। २	४।२४	६।१५	२०।१८
१५	२।१७।४६	२।२०।४८	२।२३।४९	२।२६।५०	१९।१३	३।४७	७। ४	२१। ५
१६	२।२९।५०	३। २।५०	३। ५।४९	३। ८।४८	१८।३१	३। ०	७।५५	२१।४९
१७	३।११।४६	३।१४।४३	३।१७।४०	३।२०।३७	१६।५९	२। ५	८।४६	२२।२९
१८	३।२३।३५	३।२६।३२	३।२९।२९	४। २।२५	१४।४५	१। ५	९।३९	२३। ५
१९	४। ५।२२	४। ८।१८	४।११।१५	४।१४।१३	११।५४	-०। ३	१०।३२	२३।४१
२०	४।१७।११	४।२०।१०	४।२३। ९	४।२६। ८	८।३५	+ ०	११।२४	....
२१	४।२९। ८	५। २। ८	५। ५।१०	५। ८।१३	४।५२	२। १	१२।१८	०।१४
२२	५।११।१७	५।१४।२३	५।१७।२९	५।२०।३६	+०।५५	२।५९	१३।११	०।४८
२३	५।२३।४३	५।२६।५३	६। ०। ५	६। ३।१८	-३। ९	३।४७	१४। ८	१।२२
२४	६। ६।३२	६। ९।४८	६।१३। ६	६।१६।२५	७।१३	४।२७	१५। ६	१।५७
२५	६।१९।४६	६।२३। ९	६।२६।३४	७। ०। ०	११। ४	४।५४	१६। ७	२।३७
२६	७। ३।२८	७। ६।५८	७।१०।२९	७।१४। २	१४।२८	५। ५	१७।१०	३।२१
२७	७।१७।३६	७।२१।१२	७।२४।५०	७।२८।२८	१७। ८	४।५९	१८।१३	४। ९
२८	८। २। ७	८। ५।४७	८। ९।२९	८।१३।१२	१८।४४	४।३७	१९।१६	५। ४
२९	८।१६।५५	८।२०।३९	८।२४।२३	८।२८। ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्ट. टा. दिया गया है)

तारीख जुलाई १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	३।१६।४७	३।२०।३१	३।२४।१४	३।२७।५५	-१६।११	+१।३७	२२। १	८।१७
२	१०। १।३६	१०। ५।१६	१०। ८।५५	१०।१२।३२	१२।५७	+०।१३	२२।४६	९।२५
३	१०।१६। ९	१०।१९।४५	१०।२३।२०	१०।२६।५३	८।५८	-०।५८	२३।४७	१०।३१
४	११। ०।२६	११। ३।५७	११। ७।२७	११।१०।५६	-४।३२	२।१२	...	११।३३
५	११।१४।२४	११।१७।५०	११।२१।१५	११।२४।३९	+०। २	३।२५	०। ६	१२।३५
६	११।२८। २	०। १।२३	०। ४।४४	०। ८। ३	४।२७	४। ६	०।४४	१३।३६
७	०।११।२१	०।१४।३९	०।१७।५६	०।२१।१२	८।३७	४।४३	१।२२	१४।३४
८	०।२४।२७	०।२७।४१	१। ०।५३	१। ४। ४	१२।१४	५। ४	२। ०	१५।३२
९	१। ७।१५	१।१०।२५	१।१३।३४	१।१६।४३	१५।१३	५। ९	२।४१	१६।२८
१०	१।१९।५१	१।२२।५८	१।२६। ४	१।२९। ९	१७।२५	४।५१	३।२५	१७।२२
११	२। २।१४	२। ५।१९	२। ८।२३	२।११।२६	१८।४७	४।३५	४।११	१८।१३
१२	२।१४।२९	२।१७।३१	२।२०।३२	२।२३।३२	१९।१५	३।५८	४।५३	१९। १
१३	२।२६।३२	२।२९।३२	३। २।३१	३। ५।३०	१८।४१	३।११	५।४१	१९।४६
१४	३। ८।२८	३।११।२६	३।१४।२४	३।१७।२१	१७।३२	२।२१	६।४०	२०।२८
१५	३।२०।१८	३।२३।१४	३।२६।११	३।२९। ७	१५।३८	१।१६	७।३२	२१। ६
१६	४। २। ४	४। ५। १	४। ७।५८	४।१०।५५	१२।५३	-०।१२	८।२५	२१।४२
१७	४।१३।५२	४।१६।४८	४।१९।४५	४।२२।४३	९।४२	+०।५१	९।१८	२२।१६
१८	४।२५।४१	४।२८।४०	५। १।३९	५। ४।३९	६। ९	१।५३	१०।११	२२।४९
१९	५। ७।३९	५।१०।४०	५।१३।४२	५।१६।४४	+२।१३	२।५२	११। ३	२३।२२
२०	५।१९।४७	५।२२।५१	५।२५।५७	५।२९। ४	-१।४२	३।४३	११।५८	२३।५६
२१	६। २।१२	६। ५।२२	६। ८।३२	६।११।४४	५।४३	४।२५	१२।५४	....
२२	६।१४।५७	६।१८।१२	६।२१।२८	६।२४।४५	९।३४	४।५५	१३।५२	०।३२
२३	६।२८।५५	७। १।२७	७। ४।५२	७। ८।१९	१३। ५	५।१२	१४।५२	१।१३
२४	७।११।४६	७।१५।१५	७।१८।४६	७।२२।१८	१६। २	५।११	१५।५३	१।५७
२५	७।२५।५०	७।२९।२७	८। ३। ५	८। ६।४४	१८। १	४।५२	१६।५५	२।४८
२६	८।१०।२४	८।१४। ६	८।१७।४८	८।२१।३२	१९।१०	४।१४	१७।५८	३।४४
२७	८।२५।१७	८।२९। ३	९। २।५०	९। ६।३९	१८।५३	३।१८	१८।५६	४।४४
२८	९।१०।२३	९।१४।११	९।१७।५८	९।२१।४६	१७।१७	२। ८	१९।४९	५।५५
२९	९।२५।३३	९।२९।२०	१०। ३। ६	१०। ६।५२	१४।२६	+०।४४	२०।३८	७। ५
३०	१०।१०।३७	१०।१४।२१	१०।१८। ४	११।२१।४७	१०।३८	-०।३४	२१।२३	८।१३
३१	१०।२५।२९	१०।२९।१०	११। २।४९	११। ६।२६	-६।१३	१।५४	२२। ४	९।२०

तारीख अगस्त १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	११।१०। २	११।१३।३६	११।१७। ९	११।२०।४०	-१।३१	-३। ५	२२।४४	१०।२४
२	११।२४।११	११।२७।३९	०। १। ६	०। ४।३२	+३। ७	४। २	२३।२२	११।२७
३	०। ७।५६	०।११।१८	०।१४।३९	०।१७।५८	७।२७	४।४३	....	१२।२८
४	०।२१।१७	०।२४।३४	०।२७।४९	१। १। ३	११।१७	५। ८	०। २	१३।२७
५	१। ४।१६	१। ७।२७	१।१०।३८	१।१३।४८	१४।२८	५।१६	०।४२	१४।२४
६	१।१६।५६	१।२०। ३	१।२३।१०	१।२६।१६	१६।५३	५। ८	१।२४	१५।१८
७	१।२९।२०	२। २।२४	२। ५।२८	२। ८।३०	१८।२८	४।४७	२। ९	१६।१०
८	२।११।३२	२।१४।३३	२।१७।३४	२।२०।३४	१९।१०	४।१२	२।५६	१७। ०
९	२।२३।३४	२।२६।३३	२।२९।३२	३। २।३०	१८।५८	३।२६	३।४५	१७।४५
१०	३। ५।२८	३। ८।२५	३।११।२३	३।१४।२०	१७।५६	२।३२	४।३६	१८।२७
११	३।१७।१८	३।२०।१५	३।२३।१२	३।२६। ९	१६। ७	१।३२	५।२८	१९। ७
१२	३।२९। ६	४। २। ३	४। ४।५८	४। ७।५५	१३।३८	-०।२८	६।२१	१९।४३
१३	४।१०।५२	४।१३।४९	४।१६।४६	४।१९।४४	१०।३५	+०।३७	७।१३	२०।१८
१४	४।२२।४२	४।२५।४०	४।२८।३८	५। १।३७	७। ६	१।४१	८। ६	२०।५१
१५	५। ४।३६	५। ७।३६	५।१०।३६	५।१३।३[illegible]	+३।१९	२।४१	८।५९	२१।२३
१६	५।१६।३८	५।१९।४०	५।२२।४२	५।२५।४[illegible]	-०।३७	३।३५	९।५२	२१।५७
१७	५।२८।५०	६। १।५५	६। ५। १	६। ८। ९	४।३५	४।१९	१०।४६	२२।३२
१८	६।११।१८	६।१४।२७	६।१७।३७	६।२०।४९	८।२६	४।५२	११।४२	२३। ९
१९	६।२४। २	६।२७।१६	७। ०।३२	७। ३।५०	११।५९	५।१२	१२।४०	२३।५१
२०	७। ७। ९	७।१०।२९	७।१३।५१	७।१७।१४	१५। ४	५।१७	१३।३९	....
२१	७।२०।३९	७।२४। ६	७।२७।३४	८। १। ४	१७।२६	५। ५	१४।४०	०।३७
२२	८। ४।३५	८। ८। ८	८।११।४२	८।१५।१८	१८।५१	४।३३	१५।४०	१।३०
२३	८।१८।५५	८।२२।३४	८।२६।१४	८।२९।५६	१९। ९	३।४६	१६।३९	२।२८
२४	९। ३।३९	९। ७।२३	९।११। ८	९।१४।५४	१८। ९	२।४३	१७।३३	३।३१
२५	९।१८।४०	९।२२।२६	९।२६।१३	१०। ०। १	१५।५२	१।२५	१८।२४	४।३९
२६	१०। ३।५०	१०। ७।३९	१०।११।२७	१०।१५।१४	१२।२८	+०। ३	१९।१२	५।४९
२७	१०।१९। १	१०।२२।४७	१०।२६।३२	११। ०।१७	८।१३	-१।२१	१९।५५	६।५८
२८	११। ४। १	११। ७।४३	११।११।२४	११।१५। ५	-३।३०	२।३७	२०।३८	८। ५
२९	११।१८।४५	११।२२।२३	११।२५।५२	११।२९।३३	+१।१९	३।४२	२१।१८	९।११
३०	०। ३। ६	०। ६।३८	०।१०। ८	०।१३।३६	५।५६	४।३२	२१।५९	१०।१५
३१	०।१७। २	०।२०।२५	०।२३।४७	०।२७। ८	+१०।१६	-५।१३	२२।३९	११।१६

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

तारीख मई १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।१० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।१० बजे	घं. मि. ०।१० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।१० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	६।१६।४७	६।२०।१०	६।२३।३४	६।२६।५९	−१०।२७	+४।३६	१९।३९	६।१०
२	७। ०।२५	७। ३।५२	७। ७।२१	७।१०।५०	१३।५३	४।५७	२०।४१	६।५३
३	७।१४।१९	७।१७।४९	७।२१।१९	७।२४।५०	१६।३५	५। १	२१।४३	७।४१
४	७।२८।२१	८। १।५३	८। ५।२६	८। ८।५९	१८।२३	४।४८	२२।४२	८।३४
५	८।१२।३२	८।१६। ४	८।१९।३६	८।२३। ९	१९। ३	४।१६	२३।३९	९।३१
६	८।२६।४२	९। ०।१६	९। ३।४९	९। ७।२२	१८।३१	३।२९	....	१०।३२
७	९।१०।५४	९।१४।२६	९।१७।५९	९।२१।३१	१६।४९	२।२९	०।३२	११।३५
८	९।२५। ३	९।२८।३५	१०। २। ६	१०। ५।३७	१४। ५	१।२०	१।२०	१२।३९
९	१०। ९। ८	१०।१२।३८	१०।१६। ८	१०।१९।३७	१०।३३	+०। ७	२। ४	१३।४२
१०	१०।२३। ७	१०।२६।३६	११। ०। ५	११। ३।३३	६।२६	−१। ७	२।४५	१४।४६
११	११। ७। २	११।१०।३०	११।१३।५७	११।१७।२४	−१।५९	२।१६	३।२५	१५।४७
१२	११।२०।५०	११।२४।१५	११।२७।४०	०। १। ५	+२।३०	३।१७	४। ३	१६।४८
१३	०। ४।२९	०। ७।५२	०।११।१४	०।१४।३६	६।५०	४। ५	४।४२	१७।४९
१४	०।१७।५८	०।२१।१८	०।२४।३७	०।२७।५५	१०।४६	४।३९	५।२२	१८।४८
१५	१। १।१३	१। ४।३०	१। ७।४५	१।११।००	१४। ५	४।५७	६। ३	१९।४७
१६	१।१४।१३	१।१७।२५	१।२०।३६	१।२३।४६	१६।३८	४।५९	६।४७	२०।४२
१७	१।२६।५५	२। ०। ४	२। ३।११	२। ६।१८	१८।२९	४।४६	७।३३	२१।३५
१८	२। ९।२३	२।१२।२६	२।१५।२९	२।१८।३२	१९। ५	४।१९	८।२१	२२।२५
१९	२।२१।३४	२।२४।३५	२।२७।३६	३। ०।३६	१८।५७	३।४१	९।१२	२३।१०
२०	३। ३।३६	३। ६।३५	३। ९।३३	३।१२।३१	१७।५६	२।५४	१०। ३	२३।५२
२१	३।१५।२८	३।१८।२५	३।२१।२२	३।२४।१९	१६।१०	२। ०	१०।५५	....
२२	३।२७।१६	४। ०।१३	४। ३।१०	४। ६। ८	१३।४२	−१। ०	११।४८	०।३०
२३	४। ९। ६	४।१२। ५	४।१५। ४	४।१८। ४	१०।४०	+०। ३	१२।४०	१। ७
२४	४।२१। ४	४।२४। ५	४।२७। ७	५। ०।१०	७।११	१। ५	१३।३४	१।४१
२५	५। ३।१४	५। ६।१९	५। ९।२५	५।१२।३२	+३।२०	२। ६	१४।२८	२।१५
२६	५।१५।४०	५।१८।५०	५।२२। १	५।२५।१४	−०।४३	३। २	१५।२४	२।५०
२७	५।२८।२८	६। १।४४	६। ५। २	६। ८।२०	४।५२	३।५१	१६।२३	३।२५
२८	६।११।४०	६।१५। २	६।१८।२६	६।२१।५१	८।५६	४।२८	१७।२३	४। ३
२९	६।२५।१७	६।२८।४५	७। २।१३	७। ५।४३	१२।३८	४।५३	१८।२६	४।४५
३०	७। ९।२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५। ०	[illegible]	[illegible]

तारीख जून १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।१० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।१० बजे	घं. मि. ०।१० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।१० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	८। ८। १	८।११।३९	८।१५।१८	८।१८।५७	−१९। ६	+४।१९	२१।३२	७।२१
२	८।२२।३६	८।२६।१५	८।२९।५३	९। ३।३२	१८।५९	३।३३	२२।२८	८।२२
३	९। ७।१०	९।१०।४७	९।१४।२४	९।१८। १	१७।३५	२।३३	२३।१९	९।२६
४	९।२१।३७	९।२५।१२	९।२८।४६	१०। २।२०	१५। ४	१।२२	....	१०।३१
५	१०। ५।५४	१०। ९।२६	१०।१२।५८	१०।१६।३०	११।३९	+०। ८	०। ५	११।३५
६	१०।२०। ०	१०।२३।३०	१०।२६।५८	११। ०।२७	७।३७	−१। ६	०।४७	१२।३९
७	११। ३।५४	११। ७।२०	११।१०।४५	११।१४।१०	−३।१३	२।१५	१।२६	१३।४१
८	११।१७।३४	११।२०।५८	११।२४।२०	११।२७।४२	+१।१६	३।१७	२। ४	१४।४१
९	०। १। ४	०। ४।२४	०। ७।४३	०।११। २	५।३७	४। ४	२।४२	१५।४१
१०	०।१४।२०	०।१७।३७	०।२०।५४	०।२४।११	९।३९	४।३८	३।२०	१६।३९
११	०।२७।२७	१। ०।४२	१। ३।५५	१। ७। ८	१३। ८	४।५७	४। ०	१७।३८
१२	१।१०।२१	१।१३।३२	१।१६।४३	१।१९।५३	१५।५७	५। १	४।४२	१८।३४
१३	१।२३। २	१।२६। ९	१।२९।१६	२। २।२२	१७।५६	४।४९	५।२८	१९।२८
१४	२। ५।२८	२। ८।३३	२।११।३८	२।१४।४२	१९। २	४।२४	६।१५	२०।१८
१५	२।१७।४६	२।२०।४८	२।२३।४९	२।२६।५०	१९।१३	३।४७	७। ४	२१। ५
१६	२।२९।५०	३। २।५०	३। ५।४९	३। ८।४८	१८।३१	३। ०	७।५५	२१।४९
१७	३।११।४६	३।१४।४३	३।१७।४०	३।२०।३७	१६।५९	२। ५	८।४६	२२।२९
१८	३।२३।३५	३।२६।३२	३।२९।२९	४। २।२५	१४।४५	१। ५	९।३९	२३। ५
१९	४। ५।२२	४। ८।१८	४।११।१५	४।१४।१३	११।५४	−०। ३	१०।३२	२३।४१
२०	४।१७।११	४।२०।१०	४।२३। ९	४।२६। ८	८।३५	+ ०	११।२४	....
२१	४।२९। ८	५। २। ८	५। ५।१०	५। ८।१३	४।५२	२। १	१२।१८	०।१४
२२	५।११।१७	५।१४।२३	५।१७।२९	५।२०।३६	+०।५५	२।५९	१३।११	०।४८
२३	५।२३।४३	५।२६।५३	६। ०। ५	६। ३।१८	−३। ९	३।४७	१४। ८	१।२२
२४	६। ६।३२	६। ९।४८	६।१३। ६	६।१६।२५	७।१३	४।२७	१५। ६	१।५७
२५	६।१९।४६	६।२३। ९	६।२६।३४	७। ०। ०	११। ४	४।५४	१६। ७	२।३७
२६	७। ३।२८	७। ६।५८	७।१०।२९	७।१४। २	१४।२८	५। ५	१७।१०	३।२१
२७	७।१७।३६	७।२१।१२	७।२४।५०	७।२८।२८	१७। ८	४।५९	१८।१३	४। ९
२८	८। २। ७	८। ५।४७	८। ९।२९	८।१३।१२	१८।४८	४।३४	१९।१६	५। ४
२९	८।१६।५५	८।२०।३९	८।२४।२३	८।२८। ७	१९।१४	३।४९	२०।१६	६। ४

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

तारीख जुलाई १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	९।१६।४७	९।२०।३१	९।२४।१४	९।२७।५५	-१६।११	+१।३७	२२। १	८।१७
२	१०। १।३६	१०। ५।१६	१०। ८।५५	१०।१२।३२	१३।५७	+०।१९	२२।४६	९।२५
३	१०।१६। ९	१०।१९।४५	१०।२३।२०	१०।२६।५३	८।१८	-०।५८	२३।४७	१०।३१
४	११। ०।२६	११। ३।५७	११। ७।२७	११।१०।५६	-४।३२	२।१२	....	११।३३
५	११।१४।२४	११।१७।५०	११।२१।१५	११।२४।३९	+०। ७	३।१५	०। ६	१२।३५
६	११।२८। २	०। १।२३	०। ४।४४	०। ८। ३	४।२७	४। ६	०।४४	१३।३६
७	०।११।२१	०।१४।३९	०।१७।५६	०।२१।१२	८।३७	४।४३	१।२२	१४।३४
८	०।२४।२७	०।२७।४१	१। ०।५३	१। ४। ४	१२।१४	५। ४	२। ०	१५।३२
९	१। ७।१५	१।१०।२५	१।१३।३४	१।१६।४३	१५।१३	५। ९	२।४१	१६।२८
१०	१।१९।५१	१।२२।५८	१।२६। ४	१।२९। ९	१७।२५	४।५९	३।२५	१७।२२
११	२। २।१४	२। ५।१९	२। ८।२३	२।११।२६	१८।४७	४।३५	४।११	१८।१३
१२	२।१४।२९	२।१७।३१	२।२०।३२	२।२३।३२	१९।१५	३।५८	४।५९	१९। २
१३	२।२६।३२	२।२९।३२	३। २।३१	३। ५।३०	१८।४९	३।११	५।४९	१९।४६
१४	३। ८।२८	३।११।२६	३।१४।२४	३।१७।२१	१७।३२	२।२१	६।४०	२०।२८
१५	३।२०।१८	३।२३।१४	३।२६।११	३।२९। ७	१५।३८	१।१६	७।३२	२१। ६
१६	४। २। ४	४। ५। १	४। ७।५८	४।१०।५५	१२।५३	-०।१२	८।२५	२१।४२
१७	४।१३।५२	४।१६।४८	४।१९।४५	४।२२।४३	९।४२	+०।५१	९।१८	२२।१६
१८	४।२५।४१	४।२८।४०	५। १।३९	५। ४।३९	६। ९	१।५३	१०।११	२२।४९
१९	५। ७।३९	५।१०।४०	५।१३।४२	५।१६।४४	+२।१७	२।५२	११। ३	२३।२२
२०	५।१९।४७	५।२२।५१	५।२५।५७	५।२९। ४	-१।४२	३।४३	११।५८	२३।५६
२१	६। २।१२	६। ५।२२	६। ८।३२	६।११।४४	५।४३	४।२५	१२।५४	....
२२	६।१४।५७	६।१८।१२	६।२१।२८	६।२४।४५	९।३४	४।५५	१३।५२	०।३२
२३	६।२८।५५	७। १।२७	७। ४।५२	७। ८।१९	१३। ५	५।१२	१४।५२	१।१३
२४	७।११।४६	७।१५।१५	७।१८।४६	७।२२।१८	१६। २	५।११	१५।५३	१।५७
२५	७।२५।५०	७।२९।२७	८। ३। ५	८। ६।४४	१८। ९	४।५२	१६।५५	२।४८
२६	८।१०।२४	८।१४। ६	८।१७।४८	८।२१।३२	१९।१०	४।१४	१७।५८	३।४४
२७	८।२५।१७	८।२९। ३	९। २।५०	९। ६।३९	१८।५३	३।२८	१८।५६	४।४८
२८	९।१०।२३	९।१४।११	९।१८। १	९।२१।५१	१७।१७	२। ८	१९।४९	५।५५
२९	९।२५।३३	९।२९।२०	१०। ३। ६	१०। ६।५२	१४।२६	+०।४८	२०।३८	७। ५
३०	१०।१०।३७	१०।१४।२१	१०।१८। ४	१०।२१।४७	१०।३८	-०।३४	२१।२३	८।१३
३१	१०।२५।२९	१०।२९।१०	११। २।४९	११। ६।२६	-६।१३	१।५४	२२। ४	९।२०

तारीख अगस्त १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	११।१०। २	११।१३।३६	११।१७। ९	११।२०।४०	-१।३१	-३। ५	२२।४४	१०।२४
२	११।२४।११	११।२७।३९	०। १। ६	०। ४।३२	+३। ७	४। २	२३।२२	११।२७
३	०। ७।५६	०।११।१८	०।१४।३९	०।१७।५८	७।२७	४।४३	....	१२।२८
४	०।२१।१७	०।२४।३४	०।२७।४९	१। १। ३	११।१७	५। ८	०। २	१३।२७
५	१। ४।१६	१। ७।२७	१।१०।३८	१।१३।४८	१४।२८	५।१६	०।४२	१४।२४
६	१।१६।५६	१।२०। ३	१।२३।१०	१।२६।१६	१६।५३	५। ८	१।२४	१५।१८
७	१।२९।२०	२। २।२४	२। ५।२८	२। ८।३०	१८।२८	४।४०	२। ९	१६।१०
८	२।११।३२	२।१४।३३	२।१७।३४	२।२०।३४	१९।१०	४।१२	२।५६	१७। ०
९	२।२३।३४	२।२६।३३	२।२९।३२	३। २।३०	१८।५८	३।२६	३।४५	१७।४५
१०	३। ५।२८	३। ८।२५	३।११।२३	३।१४।२०	१७।५६	२।३२	४।३६	१८।२७
११	३।१७।१८	३।२०।१५	३।२३।१२	३।२६। ९	१६। ७	१।३२	५।२८	१९। ७
१२	३।२९। ६	४। २। २	४। ४।५८	४। ७।५५	१३।३८	-०।२८	६।२१	१९।४३
१३	४।१०।५२	४।१३।४९	४।१६।४६	४।१९।४४	१०।३५	+०।३७	७।१३	२०।१८
१४	४।२२।४२	४।२५।४०	४।२८।३८	५। १।३७	७। ६	१।४१	८। ६	२०।५१
१५	५। ४।३६	५। ७।३६	५।१०।३६	५।१३।३७	+३।१९	२।४१	८।५९	२१।२३
१६	५।१६।३८	५।१९।४०	५।२२।४२	५।२५।४४	-०।३७	३।३५	९।५२	२१।५७
१७	५।२८।५०	६। १।५५	६। ५। १	६। ८। ९	४।३५	४।१९	१०।४६	२२।३२
१८	६।११।१८	६।१४।२७	६।१७।३७	६।२०।४९	८।२६	४।५२	११।४२	२३। ९
१९	६।२४। २	६।२७।१६	७। ०।३२	७। ३।५०	११।५९	५।१२	१२।४०	२३।५१
२०	७। ७। ९	७।१०।२९	७।१३।५१	७।१७।१४	१५। ४	५।१७	१३।३९	....
२१	७।२०।३९	७।२४। ६	७।२७।३४	८। १। ४	१७।२६	५। ५	१४।४०	०।३७
२२	८। ४।३५	८। ८। ८	८।११।४२	८।१५।१८	१८।५१	४।३३	१५।४०	१।३०
२३	८।१८।५५	८।२२।३४	८।२६।१४	८।२९।५५	१९। ९	३।४४	१६।३९	२।२८
२४	९। ३।३९	९। ७।२३	९।११। ८	९।१४।५४	१८। ९	२।४३	१७।३३	३।३१
२५	९।१८।४०	९।२२।२६	९।२६।१३	१०। ०। १	१५।५२	१।२५	१८।२४	४।३९
२६	१०। ३।५०	१०। ७।३९	१०।११।२७	१०।१५।१४	१२।२८	+०। ३	१९।१२	५।४९
२७	१०।१९। १	१०।२२।४७	१०।२६।३२	११। ०।१७	८।१३	-१।२१	१९।५५	६।५८
२८	११। ४। १	११। ७।४३	११।११।२४	११।१५। ५	-३।३०	२।३७	२०।३८	८। ५
२९	११।१८।४५	११।२२।२३	११।२६। ३	११।२९।३३	+१।११	३।४२	२१।१८	९।११
३०	०। ३। ६	०। ६।३८	०।१०। ८	०।१३।३६	५।५६	४।३२	२१।५९	१०।१५
३१	०।१७। २	०।२०।२५	०।२३।४७	०।२७। ८	+१०।१६	-५। ३	२२।३९	११।१६

६-६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चंद्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

तारीख सित. १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।१० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।१० बजे	घं. मि. ०।१० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।१० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क	अं. क.	अं. क	घं. मि.	घं. मि.
१	१। ०।२७	१। ३।४५	१। ७। १	१।१०।१६	+१३।३६	−५।१६	२३।२२	१२।१९
२	१।१३।३०	१।१६।४२	१।१९।५२	१।२३। १	१६।१८	५।१२	....	१३।१[illegible]
३	१।२६। ९	१।२९।१५	२। २।२१	२। ५।२६	१८। ८	४।५४	०। ७	१४। ६
४	२। ८।२९	२।११।३२	२।१४।३४	२।१७।३५	१९। ४	४।२३	०।५२	१४।५६
५	२।२०।३५	२।२३।३५	२।२६।३४	२।२९।३२	१९। ६	३।४०	१।४२	१५।४[illegible]
६	३। २।२९	३। ५।२६	३। ८।२४	३।११।२२	१८।१३	२।४६	२।३२	१६।२९
७	३।१४।१९	३।१७।१६	३।२०।१३	३।२३।१०	१६।३९	१।४८	३।२३	१७। ५
८	३।२६। ७	३।२९। ३	४। २। ०	४। ४।५७	१४।१९	−०।४५	४।१४	१७।४[illegible]
९	४। ७।५४	४।१०।५२	४।१३।४९	४।१६।४७	११।२३	+०।२०	५। ९	१८।१९
१०	४।१९।४४	४।२२।४३	४।२५।४२	४।२८।४२	८। ०	१।२५	६। २	१८।५[illegible]
११	५। १।४१	५। ४।४१	५। ७।४२	५।१०।४३	४।१५	२।२६	६।५५	१९।२६
१२	५।१३।४४	५।१६।४६	५।१९।४८	५।२२।५२	+०।१९	३।२१	७।४८	१९।५९
१३	५।२५।५७	५।२९। २	६। २। ७	६। ५।१३	−३।४१	४। ७	८।४२	२०।३[illegible]
१४	६। ८।२०	६।११।२८	६।१४।३६	६।१७।४६	७।३५	४।४३	९।३७	२१।१०
१५	६।२०।५६	६।२४। ७	६।२७।१९	७। ०।३३	११।१३	५। ५	१०।३३	२१।४९
१६	७। ३।४७	७। ७। ३	७।१०।१९	७।१३।३६	१४।२४	५।१४	११।३२	२२।३[illegible]
१७	७।१६।५४	७।२०।१४	७।२३।३६	७।२६।५८	१६।५६	५। ६	१२।३०	२३।२१
१८	८। ०।२१	८। ३।४५	८। ७।१०	८।१०।३७	१८।३७	४।४१	१३।२८	....
१९	८।१४। ५	८।१७।३५	८।२१। ६	८।२४।३८	१९।१५	४। ०	१४।२६	०।१५
२०	८।२८।१२	९। १।४७	९। ५।२३	९। ९। ०	१८।४१	३। ३	१५।२०	१।१५
२१	९।१२।३८	९।१६।१७	९।१९।५६	९।२३।३७	१६।५८	१।५४	१६।११	२।१९
२२	९।२७।१९	१०। १। ३	१०। ४।४७	१०। ८।३१	१४। ३	+०।३६	१७। ०	३।२५
२३	१०।१२।१५	१०।१५।५९	१०।१९।४४	१०।२३।२९	१०।१२	−०।४५	१७।४४	४।३४
२४	१०।२७।१४	११। ०।५८	११। ४।४३	११। ८।२७	५।४०	२। ३	१८।२७	५।४२
२५	११।१२।११	११।१५।५३	११।१९।३५	११।२३।१६	−०।४८	३।१३	१९। ९	६।४९
२६	११।२६।५६	०। ०।३४	०। ४।११	०। ७।४७	+४। १	४। ९	१९।५०	७।५५
२७	०।११।२१	०।१४।५३	०।१८।२४	०।२१।५३	८।३२	४।४७	२०।३२	९। ०
२८	०।२५।२०	०।२८।४६	१। २।१०	१। ५।३३	१२।२६	५। ७	२१।१५	१०। १
२९	१। ८।५४	१।१२।१२	१।१५।३०	१।१८।४६	१५।३२	५। ९	२२। ०	११। १
३०	१।२२। १	१।२५।२३	१।२८।२४	२। १।३४	+१७।४५	−४।५५	२२।४७	११।५८

तारीख अक्तू. १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।१० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।१० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।१० बजे	घं. मि. ०।१० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।१० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क	अं. क	घं. मि.	घं. मि.
१	२। ४।४३	२। ७।५०	२।१०।५६	२।१४। १	+१९।१०	−४।२७	२३।३६	१२।५१
२	२।१७। ४	२।२०। ६	२।२३। ७	२।२६। ८	१९।१८	३।४६	....	१३।४०
३	२।२९। ८	३। २। ६	३। ५। ५	३। ८। ४	१८।४२	२।५५	०।२६	१४।२५
४	३।११। १	३।१३।५८	३।१६।५४	३।१९।५१	१७।१७	१।५८	१।१८	१५। ५
५	३।२२।४८	३।२५।४५	३।२८।४२	४। १।३९	१५। ७	−०।५७	२।१०	१५।४३
६	४। ४।३६	४। ७।३३	४।१०।३०	४।१३।२८	१२।१९	+०। ७	३। ३	१६।१९
७	४।१६।२६	४।१९।२५	४।२२।२५	४।२५।२५	९। १	१।१०	३।५५	१६।५४
८	४।२८।२४	५। १।२४	५। ४।२४	५। ७।२६	५।१९	२।११	४।४८	१७।२६
९	५।१०।२८	५।१३।३१	५।१६।३५	५।१९।४०	+१।२२	३। ६	५।४२	१८। ०
१०	५।२२।४६	५।२५।५२	५।२८।५९	६। २। ६	−२।४१	३।५३	६।३७	१८।३५
११	६। ५।१४	६। ८।२३	६।११।३३	६।१४।४४	६।४३	४।३१	७।३२	१९।१०
१२	६।१७।५६	६।२१। ९	६।२४।२२	६।२७।३५	१०।३०	४।५५	८।२९	१९।४९
१३	७। ०।४९	७। ४। ५	७। ७।२१	७।१०।३७	१३।५१	५। ५	९।२७	२०।३१
१४	७।१३।५४	७।१७।१३	७।२०।३३	७।२३।५३	१६।३५	५। ०	१०।२६	२१।१८
१५	७।२७।१३	८। ०।३५	८। ३।५८	८। ७।२२	१८।२९	४।३८	११।२३	२२।१०
१६	८।१०।४६	८।१४।११	८।१७।३६	८।२१। २	१९।२३	४। ०	१२।२०	२३। ७
१७	८।२४।२९	८।२७।५७	९। १।२६	९। ४।५५	१९।१०	३। ८	१३।१४	....
१८	९। ८।२५	९।११।५६	९।१५।२८	९।१९। ०	१७।४७	२। ५	१४। ५	०। ७
१९	९।२२।३३	९।२६। ७	९।२९।४२	१०। ३।१८	१५।१६	+०।५२	१४।५३	१।११
२०	१०। ६।५५	१०।१०।३२	१०।१४।१०	१०।१७।४८	११।४८	−०।२४	१५।३८	२।१६
२१	१०।२१।२६	१०।२५। ४	१०।२८।४३	११। २।२२	७।३४	१।४०	१६।२३	३।२२
२२	११। ६। १	११। ९।४०	११।१३।२०	११।१६।५९	−२।५३	२।४९	१७। ०	४।२८
२३	११।२०।३८	११।२४।१५	११।२७।५३	०। १।३०	+१।५८	३।४८	१७।४१	५।३४
२४	०। ५। ६	०। ८।४१	०।१२।१५	०।१५।४८	६।४१	४।३०	१८।२२	६।३९
२५	०।१९।२१	०।२२।५२	०।२६।२२	०।२९।५१	१०।५६	४।५५	१९। ५	७।४३
२६	१। ३।१९	१। ६।४४	१।१०। ८	१।१३।३०	१४।२९	५। २	१९।५०	८।४५
२७	१।१६।५१	१।२०।१०	१।२३।२८	१।२६।४४	१७।१०	४।५१	२०।३७	९।४५
२८	१।२९।५९	२। ३।१२	२। ६।२३	२। ९।३३	१८।५१	४।२६	२१।२७	१०।४०
२९	२।१२।४२	२।१५।५०	२।१८।५६	२।२२। १	१९।३१	३।४७	२२।१७	११।३२
३०	२।२५। ५	२।२८। ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

६-६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चंद्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

तारीख नवं. १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	३।१९। ५	३।२२। २	३।२४।५०	३।२७।५६	+१६। ५	−१। ३	०। १	१३।४२
२	४। ०।५३	४। ३।५०	४। ६।४७	४। ९।४४	१३।२६	−०। १	०।५४	१४।१९
३	४।१२।४१	४।१५।३९	४।१८।३७	४।२१।३६	१०।१६	+१। १	१।४७	१४।५३
४	४।२४।३५	४।२७।३४	५। ०।३४	५। ३।३५	६।३९	२। १	२।४०	१५।२६
५	५। ६।३६	५। ९।३८	५।१२।४०	५।१५।४४	+२।४५	२।५७	३।३२	१५।५९
६	५।१८।४९	५।२१।५५	५।२५। २	५।२८। ९	−१।२०	३।४४	४।२७	१६।३३
७	६। १।१८	६। ४।२८	६। ७।४०	६।१०।५२	५।२७	४।२२	५।२३	१७। ९
८	६।१४। ५	६।१७।१९	६।२०।३४	६।२३।५०	९।२६	४।४८	६।२०	१७।४७
९	६।२७। ६	७। ०।२४	७। ३।४३	७। ७। ३	१३। ३	४।५९	७।१८	१८।२८
१०	७।१०।२४	७।१३।४५	७।१७। ७	७।२०।३०	१६। ३	४।५५	८।१८	१९।१४
११	७।२३।५४	७।२७।१८	८। ०।४३	८। ४। ८	१८।१६	४।३६	९।१७	२०। ५
१२	८। ७।३४	८।११। ०	८।१४।२६	८।१७।५३	१९।२९	३।५८	१०।१६	२१। १
१३	८।२१।२१	८।२४।४९	८।२८।१७	९। १।४६	१९।३३	३। ७	११।११	२२। २
१४	९। ५।१५	९। ८।४४	९।१२।१४	९।१५।४४	१८।२६	२। ४	१२। ३	२३। ३
१५	९।१९।१४	९।२२।४४	९।२६।१४	९।२९।४५	१६।१०	+०।५४	१२।५१	....
१६	१०। ३।१६	१०। ६।४७	१०।१०।१९	१०।१३।५१	१२।५९	−०।२०	१३।३६	०। ७
१७	१०।१७।२४	१०।२०।५६	१०।२४।२९	१०।२८। २	९। ०	१।३३	१४।१७	१।११
१८	११। १।३४	११। ५। ६	११। ८।३९	११।१२।१२	−४।३१	२।४०	१४।५७	२।१५
१९	११।१५।४५	११।१९।१७	११।२२।५०	११।२६।२२	+०।१५	३।३७	१५।२६	३।१८
२०	११।२९।५४	०। ३।२५	०। ६।५६	०।१०।२६	४।५७	४।२२	१६।१६	४।२२
२१	०।१३।५७	०।१७।२७	०।२०।५६	०।२४।२४	९।११	४।५०	१६।५८	५।२६
२२	०।२७।५१	१। १।१७	१। ४।४२	१। ८। ६	१३।१३	५। ०	१७।४१	६।२८
२३	१।११।२९	१।१४।५०	१।१८।११	१।२१।३०	१६।१८	४।५३	१८।२७	७।२८
२४	१।२४।४९	१।२८। ६	२। १।२२	२। ४।३७	१८।२७	४।२९	१९।१६	८।२७
२५	२। ७।५१	२।११। २	२।१४।१२	२।१७।२१	१९।३४	३।५३	२०। ७	९।२२
२६	२।२०।३०	२।२३।३६	२।२६।४२	२।२९।४७	१९।४१	३। ५	२१। ०	१०।११
२७	३। २।५१	३। ५।५४	३। ८।५६	३।११।५७	१८।४९	२। ९	२१।५२	१०।५६
२८	३।१४।५८	३।१७।५७	३।२०।५६	३।२३।५४	१७। ६	१। ९	२२।४५	११।३९
२९	३।२६।५२	३।२९।४९	४। २।४६	४। ५।४३	१४।४६	−०। ६	२३।३८	१२।१७
३०	४। ८।४१	४।११।३८	४।१४।३५	४।१७।३२	+११।४०	+०।५६	....	१२।५३

तारीख दिसं १९६१	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	४।२०।२९	४।२३।२७	४।२६।२५	४।२९।२४	+८।११	+१।५६	०।३०	१३।२६
२	५। २।२३	५। ५।२३	५। ८।२४	५।११।२५	४।२२	२।५२	१।२३	१३।५८
३	५।१४।२७	५।१७।३०	५।२०।३४	५।२३।३९	+०।२०	३।४०	२।१६	१४।३१
४	५।२६।४५	५।२९।५२	६। ३। १	६। ६।१०	−३।४८	४।१८	३।१०	१५। ६
५	६। ९।२१	६।१२।३३	६।१५।४७	६।१९। २	७।५३	४।४७	४। ६	१५।४१
६	६।२२।१८	६।२५।३७	६।२८।५५	७। २।१५	११।४२	५। १	५। ४	१६।२२
७	७। ५।३७	७। ९। ०	७।१२।२४	७।१५।५०	१५। ३	४।५९	६। ४	१७। ७
८	७।१९।१७	७।२२।४४	७।२६।१२	७।२९।४१	१७।४०	४।४१	७। ५	१७।५७
९	८। ३।११	८। ६।४२	८।१०।१३	८।१३।४५	१९।१९	४। ५	८। ६	१८।५१
१०	८।१७।१७	८।२०।४९	८।२४।२२	८।२७।५६	१९।४९	३।१४	९। ५	१९।५२
११	९। १।३१	९। ५। ५	९। ८।३९	९।१२।१३	१९। ३	२।१०	१०। ०	२०।५५
१२	९।१५।४७	९।१९।२१	९।२२।५५	९।२६।२९	१७। ४	+०।५८	१०।५०	२२। ०
१३	१०। ०। ३	१०। ३।३६	१०। ७। ९	१०।१०।४२	१४। २	−०।१८	११।३७	२३। ४
१४	१०।१४।१४	१०।१७।४६	१०।२१।१८	१०।२४।५०	१०।११	१।३८	१२।१९	....
१५	१०।२८।२२	११। १।५२	११। ५।२२	११। ८।५२	५।४७	२।४१	१२।५८	०। ९
१६	११।१२।२२	११।१५।५१	११।१९।१९	११।२२।४७	−१। ७	३।३९	१३।३७	१।१२
१७	११।२६।१५	११।२९।४२	०। ३। ९	०। ६।३५	+३।३३	४।२४	१४।१५	२।१४
१८	०।१०। ०	०।१३।२५	०।१६।५०	०।२०।१४	८। १	४।५३	१४।५४	३।१६
१९	०।२३।३८	०।२७। ०	१। ०।२२	१। ३।४३	१२। ०	५। ५	१५।३५	४।१६
२०	१। ७। ४	१।१०।२३	१।१३।४२	१।१७। ०	१५।२०	५। १	१६।२०	५।१६
२१	१।२०।१८	१।२३।३५	१।२६।५०	२। ०। ५	१७।४९	४।४०	१७। ७	६।१५
२२	२। ३।१८	२। ६।३०	२। ९।४१	२।१२।५१	१९।२०	४। ५	१७।५६	७।११
२३	२।१६। १	२।१९।१०	२।२२।१७	२।२५।२४	१९।५१	३।१७	१८।४८	८। ३
२४	२।२८।३१	३। १।३६	३। ४।४०	३। ७।४४	१९।२२	२।२१	१९।४१	८।५२
२५	३।१०।४७	३।१३।४९	३।१६।४९	३।१९।४९	१७।५८	१।२०	२०।३५	९।३५
२६	३।२२।४९	३।२५।४८	३।२८।४७	४। १।४५	१५।४७	−०।१६	२१।२८	१०।१४
२७	४। ४।४२	४। ७।३९	४।१०।३७	४।१३।३४	१२।५६	+०।४८	२२।२०	१०।५१
२८	४।१६।३१	४।१९।२८	४।२२।२५	४।२५।२२	९।३७	१।५०	२३।१३	११।२५
२९	४।२८।१९	५। १।१६	५। ४।१४	५। ७।१३	५।५४	२।४८	....	११।५८
३०	५।१०।१२	५।१३।१२	५।१६।१२	५।१९।१३	+१।५८	३।३८	०। ५	१२।२९
३१	५।२२।१४	५।२५।१७	५।२८।२१	६। १।२५	−२। ६	+४।११	०।५८	१३। ३

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

तारीख जन. १९६२	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	६।४।३१	६।७।३८	६।१०।४७	६।१३।५७	−६।१०	+४।५०	१।५२	१३।३७
२	६।१७।८	६।२०।२१	६।२३।३५	६।२६।५१	१०।३	५।७	२।५०	१४।१८
३	७।०।८	७।३।२७	७।६।४७	७।१०।९	१३।३६	५।८	३।५०	१५।३
४	७।१३।३२	७।१६।५७	७।२०।२४	७।२३।५२	१६।३१	४।५३	४।५१	१५।४९
५	७।२७।२१	८।०।५२	८।४।२४	८।७।५८	१८।३९	४।२२	५।५१	१६।४३
६	८।११।३२	८।१५।६	८।१८।४०	८।२२।१६	१९।४०	३।३३	६।५१	१७।३८
७	८।२५।५४	८।२९।३३	९।३।१३	९।६।५५	१९।२६	२।३०	७।४८	१८।४३
८	९।१०।३८	९।१४।२०	९।१८।२	९।२१।४३	१७।५३	+१।१६	८।४५	१९।४७
९	९।२५।२४	९।२९।५	१०।२।४५	१०।६।२५	१५।१०	−०।३	९।३३	२०।५३
१०	१०।१०।५	१०।१३।४५	१०।१७।२४	१०।२१।३	११।२९	१।२२	१०।२१	२२।०
११	१०।२४।४०	१०।२८।१६	११।१।५१	११।५।२६	७।७	२।३६	११।१	२३।४
१२	११।९।०	११।१२।३३	११।१६।५	११।१९।३६	−२।२४	३।३७	११।४०	...
१३	११।२३।६	११।२६।३५	०।०।३	०।३।३०	+२।२०	४।२६	१२।१९	०।८
१४	०।६।५६	०।१०।२१	०।१३।४५	०।१७।८	६।५१	४।५७	१२।५९	१।९
१५	०।२०।३०	०।२३।५१	०।२७।११	१।०।३०	१०।५९	५।१३	१३।४०	२।११
१६	१।३।४८	१।७।५	१।१०।२२	१।१३।३८	१४।२४	५।१०	१४।२१	३।८
१७	१।१६।५३	१।२०।७	१।२३।२०	१।२६।३३	१७।६	४।५०	१५।७	४।५
१८	१।२९।४३	२।२।५४	२।६।४	२।९।१३	१८।५१	४।१९	१५।५३	५।०
१९	२।१२।२१	२।१५।२८	२।१८।३५	२।२१।४१	१९।४१	३।३[illegible]	१६।४४	५।५६
२०	२।२४।४६	२।२७।५०	३।०।५५	३।३।५८	१९।३०	२।३८	१७।३५	६।४०
२१	३।७।१	३।१०।३	३।१३।५	३।१६।६	१८।२७	१।३०	१८।२७	७।२५
२२	३।१९।६	३।२२।५	३।२५।५	३।२८।४	१६।३१	−०।३[illegible]	१९।२०	८।७
२३	४।१।२	४।४।०	४।६।५८	४।९।५६	१३।५४	+०।३[illegible]	२०।१३	८।५०
२४	४।१२।५४	४।१५।५१	४।१८।४८	४।२१।४६	१०।४३	१।३८	२१।७	९।२३
२५	४।२४।४१	४।२७।३८	५।०।३६	५।३।३३	७।९	२।३९	२१।५९	९।५७
२६	५।६।३०	५।९।२७	५।१२।२५	५।१५।२४	+३।१७	३।३३	२२।५२	१०।३०
२७	५।१८।२३	५।२१।२३	५।२४।२३	५।२७।२४	−०।४३	४।१६	....	११।४
२८	६।०।२५	६।३।२७	६।६।३०	६।९।३५	४।४३	४।४९	०।४५	११।३९
२९	६।१२।४०	६।१५।४६	६।१८।५३	६।२२।१	८।३६	५।१०	०।३८	१२।१४
३०	६।२५।१२	६।२८।२२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तारीख फर. १९६२	चन्द्र घं. मि. ०।० बजे	चन्द्र घं. मि. ६।० बजे	चन्द्र घं. मि. १२।० बजे	चन्द्र घं. मि. १८।० बजे	घं. मि. ०।० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०।० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.
१	७।२१।२४	७।२४।४८	७।२८।१२	८।१।४१	−१७।४६	+४।४३	३।३२	१४।२
२	८।५।१०	८।८।४१	८।१२।१३	८।१५।४७	१९।१७	४।०	४।३२	१५।२
३	८।१९।२२	८।२२।५९	८।२६।३८	९।०।१८	१९।४०	३।३	५।३१	१६।१
४	९।३।५९	९।७।४०	९।११।२२	९।१५।७	१८।४४	१।५२	६।२६	१७।२
५	९।१८।५२	९।२२।३८	९।२६।२४	१०।०।१०	१६।३१	+०।३१	७।२१	१८।३
६	१०।३।५६	१०।७।४	१०।११।२८	१०।१५।१	१३।९	−०।५२	८।८	१९।४
७	१०।१९।१	१०।२२।४	१०।२६।३५	११।०।१५	८।५३	२।१२	८।५६	२०।४
८	११।३।५८	११।७।४०	११।११।२२	११।१५।१	−४।७	३।२१	९।३६	२१।५
९	११।१८।४६	११।२२।१०	११।२५।५५	११।२९।३	+०।४८	४।१७	१०।१६	२३।१
१०	०।३।४	०।६।३	०।१०।५	०।१३।३५	५।३३	४।५४	१०।५६	..
११	०।१७।४	०।२०।३	०।२३।५४	०।२७।१५	९।५४	५।१४	११।३७	०।
१२	१।०।३०	१।३।५०	१।७।१८	१।१०।३०	१३।३५	५।१५	१२।२०	१।
१३	१।१३।५	१।१७।०	१।२०।२०	१।२३।३०	१६।२९	४।५९	१३।३	१।५
१४	१।२६।४६	१।२९।५०	२।३।०	२।६।१३	१८।३०	४।२८	१३।५१	२।५
१५	२।९।२१	२।१२।२०	२।१५।३३	२।१८।३८	१९।३४	३।४५	१४।३९	३।४
१६	२।२२।४	२।२४।४	२।२७।४०	३।०।५०	१९।३८	२।४३	१५।३१	४।४
१७	३।३।५३	३।६।५३	३।९।५५	३।१२।५	१८।४८	१।५३	१६।२४	५।२
१८	३।१५।५४	३।१८।५	३।२१।५	३।२४।५	१७।६	−०।४९	१७।१३	६।१
१९	३।२७।४०	४।०।४	४।३।४०	४।६।४	१४।४१	+०।१७	१८।२	६।४
२०	४।९।४	४।१२।३	४।१५।३	४।१८।३	११।३८	१।२१	१८।५७	७।२
२१	४।२१।२०	४।२४।२६	४।२७।२३	५।०।२	८।९	२।२३	१९।५२	७।५
२२	५।३।१०	५।६।१०	५।९।१३	५।१२।१	४।२०	३।१७	२०।४६	८।३
२३	५।१५।०	५।१८।०	५।२१।७	५।२४।६	+०।२३	४।३	२१।४०	९।
२४	५।२७।६	६।०।९	६।३।७	६।६।०	−३।३८	४।३९	२२।३३	९।३
२५	६।९।१	६।१२।१	६।१५।१०	६।१८।२४	७।१८	५।४	२३।२६	१०।१
२६	६।२१।२०	६।२४।३३	६।२७।४	७।०।४०	११।११	५।१४	..	१०।४
२७	७।३।५०	७।७।६	७।१०।१९	७।१३।३	१४।२५	५।१०	०।२१	११।२
२८	७।१६।४०	७।२०।०	७।२३।१९	७।२६।३५	−१७।[illegible]	+४।५१	१।१७	१२।१

६–६ घंटे के अन्तर पर स्पष्ट दृश्य निरयण चन्द्र, चन्द्रक्रान्ति, चन्द्रशर तथा चन्द्रोदयास्त

(सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)

तारीख मार्च १९६२	चन्द्र घं. मि. ०|० बजे	चन्द्र घं. मि. ६|० बजे	चन्द्र घं. मि. १२|० बजे	चन्द्र घं. मि. १८|० बजे	घं. मि. ०|० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०|० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अ. क.	रा. अं. क.	रा. अ. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि	घं. मि
१	७।२९।५४	८। ३।१५	८। ६।३८	८।१०। ३	-१८।५२	+४।१७	२।१९	१३। २
२	८।१३।३०	८।१६।५८	८।२०।२७	८।२३।५८	१९।४२	३।२६	३।१३	१४। १
३	८।२७।३०	९। १। ५	९। ४।४१	९। ८।१९	१९।२१	२।२३	४।१०	१५। १
४	९।११।५८	९।१५।३९	९।१९।२१	९।२३। ४	१७।४५	+१। ८	५। २	१६। ८
५	९।२६।४८	१०। ०।३३	१०। ४।२०	१०। ८। ८	१४।५२	-०।१३	५।५४	१७।१५
६	१०।११।५५	१०।१५।४२	१०।१९।३०	१०।२३।१९	१०।५८	१।३४	६।४०	१८।२४
७	१०।२७। ८	११। ०।५६	११। ४।४५	११। ८।३३	६।२०	२।४८	७।२७	१९।३४
८	११।१२।२०	११।१६। ६	११।१९।५१	११।२३।३६	-१।१९	३।५१	८। ९	२०।४०
९	११।२७।२०	०। १। ३	०। ४।४३	०। ८।२२	+३।४४	४।३८	८।५१	२१।४६
१०	०।१२। ०	०।१५।३६	०।१९। ९	०।२२।४१	८।२७	५। ४	९।३३	२२।४९
११	०।२६।१३	०।२९।४२	१। ३। ९	१। ६।३५	१२।३६	५।११	१०।१५	२३।५३
१२	१। ९।५९	१।१३।२१	१।१६।४१	१।२०। ०	१५।४९	४।५९	११। १	....
१३	१।२३।१७	१।२६।३२	१।२९।४६	२। २।५९	१८। ८	४।३२	११।४७	०।५१
१४	२। ६।१०	२। ९।२०	२।१२।२८	२।१५।३५	१९।२८	३।५२	१२।३६	१।४८
१५	२।१८।४१	२।२१।४५	२।२४।४९	२।२७।५२	१९।४७	३। १	१३।२६	२।३७
१६	३। ०।५५	३। ३।५६	३। ६।५७	३। ९।५७	१९। ९	२। ४	१४।१८	३।२६
१७	३।१२।५७	३।१५।५६	३।१८।५४	३।२१।५२	१७।३८	-१। २	१५।१०	४। ८
१८	३।२४।५०	३।२७।४८	४। ०।४५	४। ३।४२	१५।२२	+०। ३	१६। ३	४।५१
१९	४। ६।३९	४। ९।३६	४।१२।३३	४।१५।३०	१२।२८	१। ६	१६।५६	५।२६
२०	४।१८।२७	४।२१।२४	४।२४।२१	४।२७।१८	९। ५	२। ७	१७।४८	६। २
२१	५। ०।१६	५। ३।१३	५। ६।११	५। ९।१०	५।१८	३। २	१८।४१	६।३५
२२	५।१२। ९	५।१५। ८	५।१८। ८	५।२१। ७	+१।२०	३।५०	१९।३३	७। ८
२३	५।२४। ७	५।२७। ८	६। ०। ९	६। ३।१०	-२।४२	+४।२७	२०।२६	७।४०
२४	६। ६।१२	६। ९।१५	६।१२।१८	६।१५।२२	६।४४	५। ०	२१।२२	८।१३
२५	६।१८।२५	६।२१।३०	६।२४।३५	६।२७।४१	१०।४९	५। ३	२२।१८	८।५०
२६	७। ०।४८	७। ३।५५	७। ७।३५	७।१०।१२	१३।५५	५। ५	२३।१३	९।२७
२७	७।१३।२३	७।१६।३५	७।१९।४७	७।२३। ०	१७। १	४।४१	....	१०।१०
२८	७।२६।१४	७।२९।२८	८। २।४३	८। ६। ०	१८।४७	४।१६	०। ८	१०।५४
२९	८। ९।१९	८।१२।३९	८।१६। ०	८।१९।२२	१९।५६	३।३०	१। ४	११।४७
३०	८।२२।४६	८।२६।११	८।२९।३८	९। ३। ६	१९।४०	२।२६	१।५८	१२।४६
३१	९। ६।३५	९।१०। ६	९।१३।३८	९।१७।१२	१८।५१	१।२२	२।५२	१३।४५

तारीख अप्रैल १९६२	चन्द्र घं. मि. ०|० बजे	चन्द्र घं. मि. ६|० बजे	चन्द्र घं. मि. १२|० बजे	चन्द्र घं. मि. १८|० बजे	घं. मि. ०|० बजे क्रान्ति	घं. मि. ०|० बजे शर	चण्डीगढ़ चन्द्रोदय	चण्डीगढ़ चन्द्रास्त
	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि	घं. मि
१	९।२०।४७	९।२४।२३	९।२८। १	१०। १।४०	-१५।५१	+०। ५	३।४१	१४।५३
२	१०। ५।२१	१०। ९। २	१०।१२।४५	१०।१६।२९	१३।२३	-१।१२	४।३०	१६। २
३	१०।२०।१३	१०।२३।५८	१०।२७।४५	११। १।३२	८। २	२।२१	५।१४	१७।१०
४	११। ५।१९	११। ९। ६	११।१२।५३	११।१६।४०	-३।४७	३।३२	५।५७	१८।१८
५	११।२०।२७	११।२४।१३	११।२७।५८	०। १।४३	+१।२४	-४।२४	६।३८	१९।२४

७७ पृष्ठ का शेषांश

उदाहरण—२ फरवरी १९६२ को दिन के १ बजकर ३५ मिनिट भा. स्ट. टा. (अर्थात् १३।३५) पर सूक्ष्म चन्द्र साधन करना है।

क्योंकि २ फर्व. के १२ बजे सूक्ष्म चन्द्र ८।१२।१३ सारिणी में दिया हुआ है अतः केवल १ घं. ३५ मि. का चालन देना होगा।

इस समय चन्द्रमा की ६ घण्टा की गति ३।३४ है इस का लघुरिक्थ (सारिणी से) .८२७९ प्राप्त हुआ। इसमें १ घं. ३५ मि. का लघुरिक्थ १.१८०६ जोड़ा तो योगफल २.००८५ आया। इस योगफल में से ६ घण्टा ० मि. का लघुरिक्थ ६०२१ घटाने से अन्तरफल १.४०६४ आया इस अन्तरफल से सारिणी द्वारा विलोमविधि से धन चालन ०°।५६′ प्राप्त हुआ। इसे ८।१२।१३ में जोड़ने से इष्टकालिक सूक्ष्म चन्द्र ८।१३।९ हुआ। यही इष्टकालिक सूक्ष्म स्पष्ट निरयण चन्द्र है। इसी प्रकार किसी भी इष्टकाल में चन्द्र स्पष्ट किया जा सकता है।

मङ्गल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (भा. स्ट. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०१८)

सन् १९६१ तारीख	मङ्गल क्रान्ति	मङ्गल शर	बुध क्रान्ति	बुध शर	गु क्रान्ति	गु शर	शुक्र क्रान्ति	शुक्र शर	शनि क्रान्ति	शनि शर	वरुण क्रान्ति	वरुण शर	इन्द्र क्रान्ति	इन्द्र शर
	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
१७मार्च	+२५।५४	+२।४१	−१२।२२	−०।२७	−२०।१९	−०।१४	+१७।१५	+६।३९	−२०।३७	+०। १	+१४।४५	+०।४६	−१३।२४	+१।४९
२१ ,,	२५।४४	२।३६	११।४३	१। ६	२०।१०	०।१४	१७।४७	७। ७	२०।३४	०। १	१४।४८	०।४६	१३।२३	१।४९
२५ ,,	२५।३३	२।३१	१०।३८	१।३८	२०। २	०।१५	१८। २	७।३०	२०।३१	०। १	१४।५०	०।४६	१३।२१	१।४९
२९ ,,	२५।१३	२।२७	९। ९	२। २	१९।५४	०।१५	१७।५४	७।४४	२०।२८	०। १	१४।५२	०।४५	१३।२०	१।४९
२अप्रै.	२५। ६	२।२२	७।२०	२।१९	१९।४६	०।१६	१७।२२	७।४८	२०।२५	+०। ०	१४।५४	०।४५	१३।१८	१।५०
६ ,,	२४।५०	२।१८	५। ९	२।२७	१९।३९	०।१७	१६।२६	७।३९	२०।२२	−०। ०	१४।५५	०।४५	१३।१६	१।५०
१० ,,	२४।३३	२।१४	−२।४०	२।२८	१९।३२	०।१७	१५।१०	७।१७	२०।२०	०। ०	१४।५७	०।४५	१३।१४	१।५०
१४ ,,	२४।१४	२।१०	+०। ६	२।२१	१९।२६	०।१८	१३।४०	६।४१	२०।१८	०। १	१४।५८	०।४५	१३।१२	१।५०
१८ ,,	२३।५३	२। ६	३। ७	२। ६	१९।२०	०।१९	१२। ४	५।५५	२०।१७	०। १	१४।५९	०।४५	१३।१०	१।५०
२२ ,,	२३।३१	२। २	६।२२	१।४३	१९।१४	०।१९	१०।३०	५। २	२०।१६	०। १	१४।५९	०।४५	१३। ८	१।५०
२६ ,,	२३। ७	१।५९	९।४६	१।१२	१९। ९	०।२०	९। ७	४। ६	२०।१५	०। २	१४।५९	०।४५	१३। ६	१।५०
३० ,,	२२।४१	१।५५	१३।१२	−०।३४	१९। ५	०।२१	७।५९	३। ९	२०।१४	०। २	१४।५९	०।४४	१३। ४	१।५०
४मई	२२।१३	१।५१	१६।३१	+०। ८	१९। १	०।२१	७। ७	२।१५	२०।१४	०। २	१४।५९	०।४४	१३। २	१।५०
८ ,,	२१।४३	१।४८	१९।३२	०।५०	१८।५८	०।२२	६।३५	१।२५	२०।१४	०। ३	१४।५८	०।४४	१३। ०	१।५०
१२ ,,	२१।११	१।४५	२२। १	१।२७	१८।५६	०।२३	६।१८	०।३९	२०।१४	०। ३	१४।५७	०।४४	१२।५८	१।५०
१६ ,,	२०।३८	१।४१	२३।५२	१।५६	१८।५४	०।२४	६।१८	−०। १	२०।१५	०। ३	१४।५६	०।४४	१२।५६	१।५०
२० ,,	२०। २	१।३८	२५। २	२।१३	१८।५४	०।२४	६।३१	०।३६	२०।१६	०। ४	१४।५५	०।४४	१२।५४	१।५०
२४ ,,	१९।२५	१।३५	२५।३४	२।१८	१८।५४	०।२५	६।५६	१। ७	२०।१७	०। ४	१४।५३	०।४३	१२।५२	१।५०
२८ ,,	१८।४६	१।३२	२५।३५	२। ९	१८।५४	०।२६	७।३१	१।३४	२०।१९	०। ४	१४।५१	०।४३	१२।५१	१।५०
१जून	१८। ५	१।२९	२५।१०	१।४६	१८।५६	०।२७	८।१५	१।५६	२०।२१	०। ५	१४।४९	०।४३	१२।४९	१।५०
५ ,,	१७।२३	१।२६	२४।२७	१।१०	१८।५८	०।२८	९। ५	२।१४	२०।२३	०। ५	१४।४७	०।४३	१२।४७	१।४९
९ ,,	१६।३९	१।२३	२३।३०	+०।४२	१९। १	०।२८	१०। १	२।२९	२०।२५	०। ६	१४।४४	०।४३	१२।४६	१।४९
१३ ,,	१५।५३	१।२०	२२।२६	−०।३७	१९। ५	०।२९	११। ०	२।४१	२०।२८	०। ६	१४।४१	०।४३	१२।४५	१।४९
१७ ,,	१५। ६	१।१७	२१।२१	१।४२	१९।१०	०।३०	१२। २	२।४९	२०।३१	०। ६	१४।३८	०।४३	१२।४४	१।४९
२१ ,,	१४।१७	१।१४	२०।२०	२।४८	१९।१४	०।३१	१३। ६	२।५५	२०।३४	०। ७	१४।३५	०।४३	१४।४३	१।४९
२५ ,,	१३।२७	१।११	१९।२९	३।४७	१९।२०	०।३२	१४।१०	२।५९	२०।३८	०। ७	१४।३१	०।४३	१२।४२	१।४९
२९ ,,	१२।३५	१। ८	१८।५४	४।२७	१९।२६	०।३२	१५।१३	३। ०	२०।४१	०। ७	१४।२७	०।४२	१२।४१	१।४८
३जुला.	११।४२	१। ६	१८।४०	४।४५	१९।३३	०।३३	१६।१४	२।५८	२०।४५	०। ८	१४।२४	०।४२	१२।४०	१।४८
७ ,,	१०।४८	१। ३	१८।४७	४।३९	१९।४०	०।३४	१७।११	२।५५	२०।४८	०। ८	१४।१९	०।४२	१२।४०	१।४८
११ ,,	९।५२	१। ०	१९।१४	४।२२	१९।४८	०।३४	१८। ७	२।५०	२०।५२	०। ९	१४।१५	०।४२	१२।४०	१।४८
१५ ,,	८।५५	०।५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मङ्गल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (भा. स्ट. टा. ० घं. ० मि.)

मङ्गल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (भा. स्टै. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०१८)

सन् १९६१ तारीख	मङ्गल क्रान्ति	मङ्गल शर	बुध क्रान्ति	बुध शर	गुरु क्रान्ति	गुरु शर	शुक्र क्रान्ति	शुक्र शर	शनि क्रान्ति	शनि शर	वरुण क्रान्ति	वरुण शर	इन्द्र क्रान्ति	इन्द्र शर
	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.	अ. क.
२३ जुला.	६।५९	०।५२	२१।२५	१।४०	२०।१०	०।३६	२०।२१	२।२७	२१। ३	०।१०	१४। १	०।४२	१२।४०	१।४७
२७ ,,	६। ०	०।५०	२१।४९	− ०।४३	२०।१८	०।३७	२०।५३	२।१६	२१। ७	०।१०	१३।५७	०।४२	१२।४०	१।४७
३१ ,,	४।५९	०।४७	२१।४८	+ ०।१०	२०।२५	०।३७	२१।१८	२। ४	२१।११	०।१०	१३।५२	०।४२	१२।४१	१।४७
४ अग.	३।५८	०।४४	२१। ७	०।५२	२०।३२	०।३८	२१।३४	१।५२	२१।१४	०।११	१३।४७	०।४२	१२।४१	१।४६
८ ,,	२।५७	०।४२	१९।४३	१।२३	२०।३९	०।३८	२१।४२	१।३९	२१।१७	०।११	१३।४२	०।४२	१२।४२	१।४६
१२ ,,	१।५५	०।३९	१७।४३	१।४०	२०।४६	०।३९	२१।४१	१।२६	२१।२०	०।११	१३।३७	०।४२	१२।४३	१।४६
१६ ,,	+ ०।५२	०।३७	१५।१३	१।४६	२०।५२	०।३९	२१।३१	१।१५	२१।२३	०।१२	१३।३२	०।४२	१२।४५	१।४६
२० ,,	− ०।११	०।३४	१२।२५	१।४०	२०।५७	०।३९	२१।१२	०।५८	२१।२६	०।१२	१३।२७	०।४२	१२।४६	१।४५
२४ ,,	१।१४	०।३१	९।२५	१।२४	२१। ३	०।४०	२०।४३	०।४४	२१।२९	०।१२	१३।२२	०।४२	१२।४७	१।४५
२८ ,,	२।१८	०।२९	६।२१	१। ५	२१। ७	०।४०	२०। ५	०।३०	२१।३१	०।१२	१३।१७	०।४२	१२।४९	१।४५
१ सितं.	३।२१	०।२६	३।१७	०।४१	२१।११	०।४०	१९।१८	०।१७	२१।३३	०।१३	१३।१२	०।४२	१२।५१	१।४५
५ ,,	४।२४	०।२४	+ ०।१७	+ ०।१२	२१।१४	०।४०	१८।२३	− ०। ३	२१।३५	०।१३	१३। ७	०।४२	१२।५३	१।४५
९ ,,	५।२७	०।२१	− २।३६	− ०।१९	२१।१७	०।४०	१७।१९	+ ०। ९	२१।३७	०।१३	१३। २	०।४२	१२।५५	१।४४
१३ ,,	६।३०	०।१९	५।२५	०।५०	२१।१९	०।४०	१६। ७	०।२१	२१।३८	०।१४	१२।५७	०।४२	१२।५७	१।४४
१७ ,,	७।३३	०।१६	८। ३	१।२३	२१।२१	०।४०	१४।४८	०।३३	२१।३९	०।१४	१२।५२	०।४२	१२।५९	१।४४
२१ ,,	८।३५	०।१४	१०।२९	१।५४	२१।२१	०।४०	१३।२१	०।४४	२१।४०	०।१४	१२।४७	०।४२	१३। १	१।४४
२५ ,,	९।३६	०।११	१२।४१	२।२५	२१।२१	०।४०	११।५०	०।५४	२१।४१	०।१४	१२।४३	०।४२	१३। ४	१।४४
२९ ,,	१०।३७	०। ९	१४।३४	२।५०	२१।२१	०।४०	१०।१२	१। ३	२१।४१	०।१४	१२।३९	०।४२	१३। ६	१।४४
३ अक्तू.	− ११।३६	+ ०। ६	− १६। ६	− ३।१२	− २१।२०	− ०।४०	+ ८।२९	+ १।११	− २१।४१	− ०।१५	+ १२।३४	+ ०।४३	− १३। ९	+ १।४३
७ ,,	− १२।३५	+ ०। ४	− १७। ६	− ३।२५	− २१।१८	− ०।४०	+ ६।४२	+ १।१८	− २१।४१	− ०।१५	+ १२।३०	+ ०।४३	− १३।१२	+ १।४३
११ ,,	१३।३३	+ ०। १	१७।२५	३।२५	२१।१६	०।४०	४।५३	१।२३	२१।४०	०।१५	१२।२६	०।४३	१३।१४	१।४३
१५ ,,	१४।२८	− ०। १	१६।४६	३। ५	२१।१३	०।४०	३। ०	१।२८	२१।३९	०।१५	१२।२३	०।४३	१३।१७	१।४३
१९ ,,	१५।२२	०। ३	१५। ०	२।१८	२१। ९	०।४०	+ १। ५	१।३२	२१।३८	०।१६	१२।१९	०।४३	१३।२०	१।४३
२३ ,,	१६।१५	०। ६	१२।१२	− १। ६	२१। ५	०।४०	− ०।५१	१।३४	२१।३७	०।१६	१२।१६	०।४३	१३।२२	१।४३
२७ ,,	१७। ५	०। ८	९।१९	+ ०।१६	२१। ०	०।४०	२।४७	१।३५	२१।३५	०।१६	१२।१३	०।४३	१३।२५	१।४३
३१ ,,	१७।५५	०।११	७।२२	१।२२	२०।५४	०।४०	४।४३	१।३५	२१।३३	०।१६	१२।१०	०।४४	१३।२८	१।४३
४ नवं.	१८।४१	०।१३	७। ७	२। १	२०।४८	०।४०	६।३७	१।३३	२१।३१	०।१६	१२। ८	०।४४	१३।३१	१।४३
८ ,,	१९।२६	०।१५	८। ४	२।१५	२०।४२	०।३९	८।३०	१।३१	२१।२९	०।१७	१२। ६	०।४४	१३।३३	१।४३
१२ ,,	२०। ७	०।१८	९।४६	२।१०	२०।३५	०।३९	१०।२०	१।२८	२१।२६	०।१७	१२। ४	०।४४	१३।३६	१।४३
१६ ,,	२०।४६	०।२०	११।५४	१।५५	२०।२७	०।३९	१२। ७	१।२३	२१।२३	०।१७	१२। २	०।४४	१३।३९	१।४३
२० ,,	२१।२२	०।२२	१४। ८	१।३२	२०।१८	०।३९	१३।४९	१।१८	२१।२०	०।१७	१२। १	०।४४	१३।४२	१।४३
२४ ,,	२१।५४	०।२५	१६।२०	१। ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०।१७	१२। ०	०।४५	१३।४४	१।४३

मङ्गल आदि ग्रहों की क्रान्ति एवं शर (भा. स्टैं. टा. ० घं. ० मि.)

(सं. २०१८)

सन् १९६१	मङ्गल		बुध		गु		शुक्र		शनि		वरुण		इन्द्र	
ता. –६२	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
२८ नवं.	२२।२४	०।२७	१८।२३	०।३९	२०। ०	०।३९	१६।५५	१। ४	२१।१३	०।१८	११।५९	०।४५	१३।४७	१।४३
२ दिसं.	२२।५०	०।२९	२०।१६	+०।१०	१९।४९	०।३९	१८।१७	०।५७	२१। ९	०।१८	११।५९	०।४५	१३।४९	१।४३
६ ,,	२३।१३	०।३२	२१।५१	– ०।१६	१९।३९	०।३९	१९।३२	०।४८	२१। ५	०।१८	११।५९	०।४५	१३।५१	१।४४
१० ,,	२३।३२	०।३४	२३।१०	०।४३	१९।२८	०।३९	२०।३८	०।४०	२१। ०	०।१८	११।५९	०।४५	१३।५४	१।४४
१४ ,,	२३।४७	०।३६	२४।१०	१। ६	१९।१६	०।३९	२१।३४	०।३१	२०।५६	०।१९	१२। ०	०।४५	१३।५६	१।४४
१८ ,,	२३।५८	०।३८	२४।५०	१।२७	१९। ३	०।३९	२२।२१	०।२१	२०।५१	०।१९	१२। १	०।४६	१३।५८	१।४४
२२ ,,	२४। ६	०।४०	२५। ९	१।४५	१८।५१	०।३९	२२।५६	०।१२	२०।४६	०।१९	१२। २	०।४६	१४। ०	१।४४
२६ ,,	२४। ९	०।४२	२५। ६	१।५८	१८।३७	०।४०	२३।२१	+०। २	२०।४१	०।१९	१२। ४	०।४६	१४। २	१।४५
३० ,,	२४। ७	०।४४	२४।३८	२। ७	१८।२३	०।४०	२३।३४	– ०। ८	२०।३५	०।१९	१२। ५	०।४६	१४। ३	१।४५
३ जन.	२४। १	०।४६	२३।४४	२। ९	१८। ९	०।४०	२३।३६	०।१९	२०।३०	०।२०	१२। ७	०।४६	१४। ५	१।४५
७ ,,	२३।५३	०।४८	२२।२६	२। ४	१७।५४	०।४०	२३।२५	०।२७	२०।२४	०।२०	१२।१०	०।४६	१४। ७	१।४५
११ ,,	२३।३८	०।४९	२०।४६	१।४८	१७।३९	०।४०	२३। ४	०।३५	२०।१९	०।२०	१२।१२	०।४५	१४। ८	१।४६
१५ ,,	२३।२०	०।५१	१८।३९	१।२२	१७।२३	०।४०	२२।३१	०।४४	२०।१३	०।२०	१२।१५	०।४५	१४। ९	१।४६
१९ ,,	२२।५८	०।५३	१६।३१	– ०।४१	१७। ७	०।४०	२१।४५	०।५२	२०। ७	०।२१	१२।१७	०।४५	१४।१०	१।४६
२३ ,,	२२।३२	०।५५	१४।२५	+०।१३	१६।५१	०।४१	२०।५२	०।५९	२०। १	०।२१	१२।२०	०।४५	१४।११	१।४७
२७ ,,	२२। १	०।५६	१२।४२	१।२१	१६।३४	०।४१	१९।४७	१। ६	१९।५४	०।२१	१२।२३	०।४५	१४।११	१।४७
३१ ,,	२१।२७	०।५८	११।५४	२।२९	१६।१७	०।४१	१८।३४	१।१२	१९।४८	०।२२	१२।२७	०।४५	१४।१२	१।४७
४ फर.	२०।४९	०।५९	१२।१०	३।२१	१५।५९	०।४१	१७।१०	१।१६	१९।४२	०।२२	१२।३०	०।४५	१४।१२	१।४७
८ ,,	२०। ७	१। ०	१३।१४	३।४०	१५।४२	०।४२	१५।४२	१।२०	१९।३५	०।२२	१२।३४	०।४५	१४।१२	१।४८
१२ ,,	१९।२२	१। २	१४।३४	३।२३	१५।२४	०।४२	१४। ४	१।२३	१९।२९	०।२३	१२।३७	०।४५	१४।११	१।४८
१६ ,,	१८।३३	१। ३	१५।४५	२।४२	१५। ६	०।४२	१२।२१	१।२५	१९।२३	०।२३	१२।४१	०।४५	१४।११	१।४८
२० ,,	१७।४१	१। ४	१६।३४	१।५४	१४।४८	०।४३	१०।३४	१।२७	१९।१७	०।२३	१२।४५	०।४५	१४।१०	१।४८
२४ ,,	१६।४८	१। ५	१६।५८	१। २	१४।२९	०।४३	८।३९	१।२७	१९।१०	०।२४	१२।४९	०।४४	१४।१०	१।४९
२८ ,,	१५।४९	१। ६	१६।५७	+०।१६	१४।११	०।४३	६।४५	१।२६	१९। ४	०।२४	१२।५२	०।४४	१४। ९	१।४९
४ मार्च	१४।४९	१। ७	१६।३३	– ०।२५	१३।५३	०।४४	४।४४	१।२४	१८।५८	०।२४	१२।५५	०।४४	१४। ९	१।४९
८ ,,	१३।४६	१। ७	१५।४५	१। ०	१३।३५	०।४४	२।४३	१।२१	१८।५२	०।२५	१२।५८	०।४४	१४। ८	१।५०
१२ ,,	१२।४१	१। ८	१४।३५	१।३१	१३।१६	०।४५	– ०।४०	१।१७	१८।४७	०।२५	१३। २	०।४४	१४। ७	१।५०
१६ ,,	११।३४	१। ८	१३। ४	१।५३	१२।५७	०।४५	+ १।२३	१।१२	१८।४१	०।२५	१३। ५	०।४४	१४। ६	१।५०
२० ,,	१०।२६	१। ८	११।१३	२। ८	१२।३९	०।४६	३।२६	१। ६	१८।३६	०।२६	१३। ८	०।४४	१४। ५	१।५०
२४ ,,	९।१७	१। ९	९। ९	२।२२	१२।२१	०।४६	५।२७	०।५९	१८।३२	०।२६	१३।१०	०।४४	१४। ४	१।५१
२८ ,,	८। ६	१। ९	६।३६	२।२३	१२। ४	०।४६	७।२७	०।५१	१८।२९	०।२७	१३।१२	०।४४	१४। २	१।५१
१ अप्रै.	६।५३	१। ९	३।४५	२।२६	११।४६	०।४७	९।२३	०।४३	१८।२५	०।२७	१३।१५	०।४४	१४। [illegible]	१।५१

– ग्रह निरयण राशिप्रवेश –

सूर्य क्रान्ति (भा. स्टै. टा. ० घं. ० मि. के लिए)

(सं० २०१८)

तारीख	मार्च १९६१	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्तूबर	नवंबर	दिसंबर	जनवरी १९६२	फर्वरी	मार्च	अप्रैल
	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
१	...	+४।१६	+१४।५१	+२१।५९	+२३। ९	+१८।१२	+८।३३	-२।५४	-१४।१२	-२१।४	-२३। ४	-१७।२२	-७।५७	+४।१०
२	...	४।३९	१५।१०	२२। ६	२३। ५	१७।५९	८।१०	३।१८	१४।३१	२१।५	२३। ०	१७। ५	७।३४	४।३४
३	...	५। २	१५।२८	२२।१३	२३। १	१७।४२	७।४८	३।४१	१४।५०	२२।	२२।५४	१६।४८	७।११	४।५७
४	...	५।२५	१५।४६	२२।२१	२२।५६	१७।२६	७।२७	४। ४	१५। ९	२२।	२२।४९	१६।३१	६।४८	५।२०
५	...	५।४८	१६। ३	२२।२८	२२।५१	१७।१०	७। ५	४।२७	१५।२७	२२।१	२२।४३	१६।१३	६।२५	+५।४३
६	...	६। ७	१६।२०	२२।३४	२२।४५	१६।५४	६।४३	४।५०	१५।४६	२२।२	२२।३७	१५।५५	६। २	...
७	...	६।३३	१६।३७	२२।४०	२२।३९	१६।३९	६।२१	५।१३	१६। ४	२२।३	२२।३०	१५।३६	५।३९	...
८	...	६।५६	१६।५४	२२।४६	२२।३४	१६।२१	५।५८	५।३६	१६।२१	२२।३	२२।२२	१५।१७	५।१६	...
९	...	७।१८	१७।१०	२२।५२	२२।२७	१६। ४	५।३५	५।५९	१६।३९	२२।४	२२।१४	१४।५९	४।५२	...
१०	...	७।४१	१७।२६	२२।५९	२२।२०	१६।४६	५।१३	६।२२	१६।५६	२२।५०	२२। ६	१४।३९	४।२९	...
११	...	८। ४	१७।४२	२३। १	२२।१२	१५।२९	४।५०	६।४५	१७।१४	२२।५	२१।५७	१४।२०	४। ५	...
१२	...	८।२६	१७।५७	२३। ५	२२। ४	१५।११	४।२७	७। ७	१७।३०	२३।	२१।४७	१४। ०	३।४१	...
१३	...	८।४८	१८।१२	२३।१०	२१।५६	१४।५४	४। ५	७।३०	१७।४७	२३।	२१।३८	१३।४०	३।१८	...
१४	...	९। ९	१८।२७	२३।१३	२१।४७	१४।३५	३।४२	७।५२	१८। २	२३।१	२१।२८	१३।२०	२।५४	...
१५	...	९।३१	१८।४१	२३।१६	२१।३८	१४।१७	३।१८	८।१४	१८।१८	२३।१	२१।१७	१३। ०	२।३१	...
१६	...	९।५२	१८।५५	२३।१९	२१।२९	१३।५८	२।५५	८।३७	१८।३३	२३।१	२१। ७	१२।३९	२। ७	...
१७	-१।३७	१०।१४	१९। ९	२३।२२	२१।१९	१३।३९	२।३२	८।५९	१८।४८	२३।१	२०।५६	१२।१८	१।४३	...
१८	१।१३	१०।३५	१९।२३	२३।२३	२१। ९	१३।२०	२। ९	९।२१	१९। ३	२३।२	२०।४४	११।५७	१।१९	...
१९	०।५०	१०।५६	१९।३७	२३।२५	२०।५९	१३। १	१।४६	९।४३	१९।१७	२३।२	२०।३२	११।३६	०।५६	...
२०	-०।२६	११।१७	१९।५०	२३।२६	२०।४८	१२।४१	१।२३	१०। ५	१९।३१	२३।२	२०।१९	११।१५	०।३२	...
२१	+०। ३	११।३७	२०। २	२३।२६	२०।३७	१२।२१	०।५९	१०।२७	१९।४६	२३।२	२०। ६	१०।५४	-०। ८	...
२२	०।२१	११।५७	२०।१५	२३।२६	२०।२५	१२। १	०।३६	१०।४८	१९।५९	२३।२	१९।५३	१०।३३	+०।१५	...
२३	०।४४	१२।१८	२०।२६	२३।२६	२०।१३	११।४१	+०।१३	११।१०	२०।१२	२३।२	१९।४०	१०।११	०।३९	...
२४	१। ८	१२।३७	२०।३८	२३।२५	२०। १	११।२१	-०।११	११।३१	२०।२४	२३।२	१९।२६	९।४८	१। ३	...
२५	१।३२	१२।५७	२०।४९	२३।२४	१९।४८	११। ०	०।३४	११।५१	२०।३६	२३।२	१९।१२	९।२६	१।२७	...
२६	१।५६	१३।१७	२१। ०	२३।२२	१९।३६	१०।४०	०।५८	१२।१२	२०।४७	२३।२	१८।५७	९। ४	१।५१	...
२७	२।१९	१३।३६	२१।१०	२३।२०	१९।२२	१०।१९	१।२१	१२।३३	२१। ०	२३।२	१८।४२	८।४१	२।१४	...
२८	२।४३	१३।५५	२१।२०	२३।१८	१९। ९	९।५८	१।४४	१२।५३	२१।११	२३।१	१८।२७	-८।१९	२।३६	...
२९	३। ६	१४।१४	२१।३०	२३।१५	१८।५५	९।३७	२। ८	१३।१३	२१।२१	२३।१	१८।११	...	२।५९	...
३०	३।२९	+१४।३३	२१।३९	+२३।१२	१८।४१	९।१५	-२।३१	१३।३३	-२१।३१	२३।१	१७।५५	...	३।२३	...
३१	+३।५३	...	+२१।४९	...	+१८।२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	...	[illegible]	[illegible]	...	+३।४७	...

– ग्रह निरयण राशिप्रवेश –

(सं० २०१८)

सूर्य

राशि	तारीख
मेष	१३- ४-६१
वृष	१४- ५-६१
मिथु.	१५- ६-६१
कर्क	१६- ७-६१
सिंह	१७- ८-६१
कन्या	१७- ९-६१
तुला	१७-१०-६१
वृश्चि.	१६-११-६१
धनु	१५-१२-६१
मकर	१४- १-६२
कुम्भ	१२- २-६२
मीन	१४- ३-६२

भौम

राशि	तारीख
कर्क	२२- ४-६१
सिंह	१७- ६-६१
कन्या	६- ८-६१
तुला	२२- ९-६१
वृश्चि.	४-११-६१
धनु.	१५-१२-६१
मकर	२४- १-६२
कुम्भ	४- ३-६२

बध

राशि	तारीख
मीन	६- ४-६१
मेष	२३- ४-६१
वृष	७- ५-६१
मिथु.	२३- ५-६१
कर्क	३१- ७-६१
सिंह	१५- ८-६१
कन्या	१- ९-६१
तुला	२१- ९-६१
व. कन्या	२९-१०-६१
तुला	४-११-६१

बध

राशि	तारीख
वृश्चि.	२६-११-६१
धनु	१५-१२-६१
मकर	३- १-६२
कुम्भ	१०- ३-६२
मीन	३०- ३-६२

ग

राशि	तारीख
कुम्भ	[illegible]-६२

शुक्र

राशि	तारीख
मीन	७- ४-६१
मेष	२८- ५-६१
वृष	१- ७-६१
मिथु.	२८- ७-६१
कर्क	२४- ८-६१
सिंह	१८- ९-६१
कन्या	१२-१०-६१
तुला	६-११-६१
वृश्चि.	३०-११-६१
धनु	२३-१२-६१
मकर	१६- १-६२
कुम्भ	९- २-६२
मीन	५- ३-६२
मेष	[illegible]९- ३-[illegible]

शनि

राशि	तारीख
व. धनु	१४- ९-६१
मकर	११-१०-६१

राहु

राशि	तारीख
कर्क	३०-१०-६१

केतु

राशि	तारीख
मकर	३०-१०-६१

वरुण

राशि	तारीख
सिंह	४- ७-६१

इन्द्र वर्ष भर तुला में ही रहेगा।

चन्द्र के अतिरिक्त सब ग्रहों की समकल युतियें (सं० २०१८)

युत ग्रह	युति की तारीख
सू. मं.	१५-१२-६१
सू. बु.	२- ५-६१
" "	२७- ६-६१
" "	१४- ८-६१
" "	२३-१०-६१
" "	१६-१२-६१
" "	५- २-६२
सू. गु.	८- २-६२
सू. शु.	११- ४-६१
	२७- १-६२
सू. श.	२२- १-६२
सू. रा.	२०- ८-६१
सू. के.	७- २-६२
सू. व.	१९- ८-६१
सू. इं.	४-११-६१
मं. बु.	२१- ९-६१
" "	२३-१०-६१
" "	१५-१२-६१
" "	१३- २-६२
" "	१९- ३-६२
मं. गु.	७- ३-६२
मं. शु.	४- १-६२
मं. श.	७- २-६२
मं. रा.	२८- ६-६१
मं. के.	२४- २-६२
मं. व.	१६- ६-६१
मं. इं.	१७-१०-६१
बु. गु.	१६- १-६२
" "	३- २-६२
" "	२३- ३-६२
बु. श.	[illegible] ४-६[illegible]
[illegible]	[illegible]

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थानों में चन्द्रदर्शन के दिन व उन्नत शृंग की दिशा का निर्णय (सं० २०१८)

मास → / भारतीय अक्षांश ↓	चै. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	वै. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	प्र.ज्ये. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	द्वि.ज्ये.शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश
१०°	२ श.	द.	४	१ र.	उ.	७	२ म.	उ.	११	१ बु.	उ.	२३
१५°	"	उ.	१	"	"	१२	"	"	१६	"	"	२८
२०°	"	"	६	"	"	१७	"	"	२२	"	"	३३
२५°	"	"	१२	"	"	२२	"	"	२७	" +	"	३८
३०°	"	"	१७	"	"	२७	"	"	३२	२ ग.	"	३८
३५°	"	"	२३	"	"	३३	"	"	३७	"	"	४३

मास → / भारतीय अक्षांश ↓	आषा. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	श्रा.शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	भा.शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	आश्वि.शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश
१०°	२ शु.	उ.	२६	२ र.	उ.	२६	१ चं.	उ.	२३	२ बृ.	उ.	१९
१५°	"	"	३१	"	"	३१	"	"	२८	"	"	२४
२०°	"	"	३५	"	"	३६	"	"	३३	"	"	२९
२५°	"	"	४१	"	"	४२	"	"	३८	"	"	३४
३०°	"	"	४६	"	"	४७	" *	"	४३	"	"	३९
३५°			५१	"	"	५२	२ मं.	"	५३	"	"	४५

मास → / भारतीय अक्षांश ↓	का. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	मार्ग. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	पौ. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	माघ शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश	फा. शु. चन्द्रदर्शन	उन्नतशृंग	शृंगोन्नत्यंश
१०°	१ गु.	उ.	५	२ श.	उ.	३	१ र.	द.	५	२ मं.	द.	२	१ च.	उ.	१
१५°	"	"	१०	"	"	८	"	०	०	"	उ.	३	"	"	६
२०°	"	"	५	"	"	३	"	उ.	५	"	"	८	"	"	१[illegible]
२५°	"	"	२०	"	"	१९	"	"	०(?)	"	"	१३	"	"	१६
३०°	"	"	२५	"	"	२४	"	"	१५	"	"	१९			२[illegible]
३५°	२ शु ×	"	४०	"	"	२१(?)	"	"	२०	"	"	२४	"	[illegible]	६

+पूर्वी भारत एवं बर्मा में इस अक्षांश पर द्वितीया को चन्द्रदर्शन होगा। *ल्हासा (तिब्बत) एवं चीन (३० अक्षांश) में चन्द्रदर्शन द्वितीया को होगा।

×भारत से पश्चिम में स्थित प्रदेशों में ३५ अक्षांश पर चन्द्रदर्शन गुरुवार को ही होगा।

समकल युतिएं (२०१८)

युतग्रह	युति की ता०	युतग्रह	युति की ता०
बृ. के.	२३- ३-६१	ग. के	३- २-६२
"	२१- १-६२	शु. श.	२३- १-६२
"	४- २-६२	शु. रा.	२०- ९-६१
"	५- ३-६२	शु. के.	५- २-६२
बु. व.	२६- ८-६१	शु. व.	२२- ९-६१
[illegible]	१९-११-६१	[illegible]	२०-११-६१

ग्रहों के उदय एवं अस्त (सं २०१८)

ग्रह	उदय	उ. दिशा	अस्त	अस्त दिशा
मंगल	....	....	१७ १०-६१	पश्चिम
"	२१- २-६२	पूर्व	......	....
बुध	....	....	१६- ४-६१	पूर्व
"	१३- ५-६१	पश्चिम	१८- ६-६१	पश्चिम
"	६- ७ ६१	पूर्व	२- ८-६१	पूर्व
"	२६- ८-६१	पश्चिम	१६-१०-६१	पश्चिम
"	२६-१०-६१	पूर्व	२३-११-६१	पूर्व
"	७- १-६२	पश्चिम	२६- १-६२	पश्चिम
"	१२ २-६२	पूर्व	३- ४-६२	पूर्व
"	....	......	२८- १-६२	पश्चिम
गुरु	....	......	....	....
"	२८- २-६२	पूर्व	८- ४-६१	पश्चिम
शुक्र	....	....	....	....
"	१३- ४-६१	पूर्व	३०-१२ ६१	पूर्व
"	....	....	....	....
शनि	३०- २-६२	पश्चिम	६- १-६२	पश्चिम

ग्रहों के वक्र-मार्ग काल (सं० २०१८)

ग्रह	वक्री	मार्गी
बुध	१४- ६-६१	९- ७-६१
"	११-१०-६१	१-११-६१
"	२७- १-६२	१८- २-६२
गुरु	२५- ५-६१	२४- ९-६१
शुक्र	२१- ३-६१	२- ५-६१
शनि	९- ५-६१	२७- ९-६१
वरुण	....	२८- ४-६१
"	६-१२-६१	....
इन्द्र	....	१९- ७-६१
"	१४- २-६२	....

...कार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्म... | मुद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः | ...

सर्वशुभकार्यों के लिए वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतीपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां, ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्यरात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का काल, पापग्रह का नवांशक, ग्रहण के पहले के ३ दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त) वर्जित हैं, स्वराशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं।

सब शुभ कार्यों के लिए साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान—इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुण्डनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिए॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय॥

द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप-दर्शने	सर्वस-त्कार्ये	संग्रामे	विद्या-भ्यासे	विवाहे-चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूर-कृत्ये	एषु कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः—वधबंधविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत्। तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्ट्यां तु सिद्धयति॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं सर्वतो नाशमाप्नुयात्॥ आवश्यके परिहारः—दिवा-परार्द्धजा विष्टिः पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ	नै.	ई.	द.	वा.	.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी५कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ले शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदास्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः)॥ एकराशौ गुरौ सूर्ये न विवाहः कदाचन। नद्यन्तरे गुरौ सूर्ये तदा दोषो विनश्यति॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। नद्यन्तरे नाये सिंहेज्ये च शुभप्रदः॥ आवश्यके परिहारः—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। मेषस्थिते दिवागंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत्॥ नीचराशि—मकरे च गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता॥ यात्रोद्वाही प्रतिष्ठाञ्च गृहचूडाव्रतादिकम्। वर्जयेद्वलतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे॥ अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेवच। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत्॥ अन्यच्च—वक्रो सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्याः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽ वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परम मित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो वह शास्त्रसम्मत शुभ मुहूर्त में करे तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४.५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो।

चित्रा. पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन ; संध्याकाल, मंगल, रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १, लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घडी, निधनतारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चंद्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु.ह.मूल और श्रवण नक्षत्र में १.२.३,५,७.१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १,४, ५,७,९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम. बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी [illegible] ... [illegible] तिथियों, वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ

गर्भ रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और नक्षत्र में शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐभूस्त्वयि दधामि, ॐभुवस्त्वयि दधामि, ॐस्वस्त्वयि दधामि, ॐभूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. सृ. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीनों उत्तरा, रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में, १,२,३,५,७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है ; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२ वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा, रो. ह. अश्विनी पुष्य, अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९। १०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मृ. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे इसी दिन सूर्य

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह [illegible] ... [illegible] के दिन, स्नान करके, शरीर मे [illegible] लगवाकर या भोज ... के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी पर ... इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनीकाटसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्र—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, अस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं ॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म में से १२वें दिन या १६वें दिन ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टमस्थान शुभ हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हार्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका-छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे., ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में. जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर जब लग्न में आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. र. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठमास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभसमय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथा-कुलधर्मतः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, सोमवार, हजामत से नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना ..., स्नान करके, शरीर में ... लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनावाना अशुभ है।

विशेष फल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और कलजीवी जैसे नट, भांड इत्यादि वह किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह०, अश्वि, पुष्य, अभि श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६ १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में मृ. आर्द्रा, पुन. हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले. अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७ ९, १० स्थान में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ल. मं. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र सूर्य, बुध, चन्द्र बृ०, शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जन्मतो इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) गु. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) शु. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु संपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचंद्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. ध्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू. फा.	पू. फा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	बानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	बानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूँगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	बानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	बानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक । स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ क इ ए उ ...	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि, नाड़ी, गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं।

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिले उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गुणमहादोष की जगह (१) भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष, और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मम-र्थांकुके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़िगुणि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्।

अपवाद—न वर्गवर्गो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशो नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा [illegible] तो वर का ना[illegible] है, [illegible] दोष नहीं।

मेलापक सारणी

	वश्य	मेष			वृष			मिथुन				कर्क		सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पुन	पुन	पु	श्ले	म	पूफा	उफा	उफा	ह	चि	चि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	मू	पूषा	उषा	उषा	श्र	ध	ध	शत	पूभा	पूभा	उभा	रे
मेष	अ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	भ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	कृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष	कृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	रो	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	मृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मिथुन	मृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	पुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कर्क	पुन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	पु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	श्ले	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सिंह	म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	पूफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	उफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कन्या	उफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	ह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	चि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

मेलापक सारिणी

राशि	नक्षत्र	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ।।	२२	१४ २६	२८	२३ ६+	१८।। १६	१०।। ३६	१२ ३५	२० १५	१८।। ५+	१९	११ ३	२५	२४।।	१०।। १२	१७।। १२	१७।। १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३।।	२२।। ४	६।। ३४	२०।। ४	२७	१३ १३	२१ १	२३।। १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८।। १५	१२ १६	३ १३६३	१२ ६
	स्वा १	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७।।	२८	२३ ३	१२।। ३	२४	२५।।	२५।। .४	२७।। ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१।। ४	१६।। ४	२३	२७	३२ ३	२१।। ३	२२।। ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८।। ६	१९ ६	११ ३६
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८।। ५+	२० १५	२० ५+	२०।।	२०।।	१७ ३	१६।। ३	१८।। १	१७।। १२	१७।। १४२	१८।। ४+	२६ ४+	३३।।	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१।। ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५।। १३	१५।। ३	२१।।	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३।। १६	१२।। १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	१६।। ६+	१६।। १६	१४।। ३६	१२।। ३	१३।। १३	२१।।	११ ६	१२।। १६	१२।। ६	१८ -५	१८ ५-	१४।। -३५	२४।। ३	२२।। १	२१।। १२	१७ १२	१८	२६	२१।। ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१।।	२१।। ४+	१५।। ४१	७।। १३४	११ १३	११ ३	२५	२५	२५।।	१९।। १	१९ १५	१८ १५२	९।। ३५
	अनु १	२३।। ६	१४।। ३६	१८।। -६	२३।।	२७।।	२०।। ३	१० ३६	१५ २६	१९।। ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४।।	२०।। ३	२८।।	२४	२५	२१ ३	६।। ३४	२०।। ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५।। २४+	१३।। ३४	२१।। ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४।।	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७।। १६	२३।। -६	२८।।	२२।। १	२९।।	१२ ६	२ ३१६४	४ ६३	१९।। ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३।। १	१५।। १३	११ १३	११ ३	२४	१९।। ४	१४।। ४	१९ ४	३१।।	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६।। १४	१६।। १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९।। १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	१९।। ३५	१२ १५	२५ ५+	१९।। ६	१२।। १६	१२।। ६	२१	१४ १३	१२ ३	७।। ३६	१७।। ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९।। १५२	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२।। ४+	१६।। +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५।। १	१३।। १४	१४।। ४	१९।। ४	२८।।	२१।। ३	१४।। १३	१६।। १३	२४।। १	२६
	पूषा १	२५।। +५	१७।। ३५	१९।। -१२५	१४ १६२	१८।। ६	२०।। ३६	२९ ३	२६	२७	२२।। ६	१४।। २३६	१६।। १६	२२ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८।।	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६।। -१४	१५।। ३४	१७।। -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२।। ४	५।। १३४	१४।। १३	२३।। १	२८।।	२९।।	२२।। ३	३०।।
	उषा ।	२४ ५+	२५।। ५+	११।। १३५	६ १३६	१० २३६	१६।। २६	२५ २+	२६	२७	२२।। ६	२२।। ६	८।। १६३	८।। १५३	२४ ५+	२ ५+	२८।।	२८।।	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८।। १३४	२३।। ४+	१७।। -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३।। १४	२२।। १	२३।। १	२८।।	२९।।	३०।।	२२।। ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८।।	१४।। १२	१२ १३५	१६ २३५	२२।। २५+	१९।। २६+	२४।। -६	२१।। -६	२८	२८	१४ १२	४।। १३६	२०	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५।। १५	२२।। -१	२१।। ३	१४।। १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४।। १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५।। १+	१५।। +१४	१६।। १४+	२२।। ४+	२९।।	३०।।	२२।। ३
	श्र १	२८	२७	१४।। ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९।। -६	२१।। -६	२८	२८ २+	१४ ३	५।। ३६	१८।। ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१।। ३	१४।। ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२।। ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७।। ४+	२०।। ४+	२८।।	२९।।	३३।। ३
	ध ।।	२०	११ १३२	२६	२३।। +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४।। -६	२३	१३ ३	२७	१८।। ६	४।। १३६	१०।। १६	१५।। १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८।।	२६	१२ ३	२६	२०।। ४	६।। ३४१	१४।। ४१	२५।। १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७।। १४	२४।। १	१५ १३	२२।। +२
कुम्भ	ध ।।	२१।।	१०।। १३२	२५।।	३०	२५।। १	१७।। ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२३।।	२०।। १३	१८।। १	१७।। १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४।। -५	२५	११ ३	२५	२९।।	१५।। १३	२३।। १	१६।। १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७।। १	१६।। १४	६।। १३४	१३।। ४२
	शत १	२४।। ३	२६।। १	२६।।	३१	२५ १	२६।।	२७ ५+	१२ १३५	१२ ३५	६।। ३६	१३ ६	१२ ६	२५।।	१९।। १	११।। १३	१०।। १३६	१०।। २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६।।	२०	१८ ३	२२।। ३	२४।। १	२४।। १	१७ १४	१७।। ४+	२४ ४+	३३	२८ ३०	२९ ०१३	८ १३४०	१४।। १४	१५।। ४
	पूभा ।।।	१७।। ३	२४।। ५+	१९।। -१	२४ -१	३०	३०	२३।। ५+	१७ ३५	१७ ३५	११।। ३६	१२।। ६	१२ १६	१८।। १	२४।।	१६।। ३	१५।। ३६	१५।। ३६+	१७।। १६	१८।। १५-	२६ ५+	२० -१५	२०।। १	२६।।	११ १३	१५ १३	२१।।	२१।।	२२।। +४	२२।। ४+	१८।। -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९।। ४२
मीन	पूभा ।	२४।। २४	२१।। १२	१६।। -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७।। ३	१७।। ३	१७ ३५	२५ ५	१७।। १५	१६।। -१६	२२।। ६+	१४।। ३६	१६ ३	१६ ३	१८ २+	११ १६	१८।। ६	२३।। १६	१९ -१५	२५ +५	२०।। १३५	१४ १२	२८।।	२८।।	२८।।	२८।।	१४।। १	१५।। १२	७ १२४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०।। +२
	उभा १	२३।। ४+	१५।। ३४	१८।। -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६।।	१६ ५	१९ ३५	२० १५	१७।। -१६	१५ ३६	२५।। ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६६	१९ ६	१९।। १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३।। -१	२१।। ३	२९।।	२९।।	२९।।	१३।। १३	[illegible]	२४।। १५	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ४+	२३।। ४+	१०।। ३४	१३ ३	१० ३	२६	२५	२४	२५	२४।। ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२।। ६+	२२।। ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०।। ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८।।	२०।। ३	२३।। १	२१।। ३	२२।। -२	३।।	१५।। ४	१७।। ४२	२९। +२	३३	२८ ३

...मनुष्य तथा शुक्र में यदि १।४।७।८।१२ ... विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से ...

ग्रहमेलापकविचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, ... यदि १।४।७।८।१२

इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा
चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-
कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली
में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी
मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों
उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार
कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए
और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र
आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उनपर दृष्टि होने से सौभाग्य योग
का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजा कन्यामच्युतविवाहादिशान्ति
विधाय दारयोग्यायामुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-
सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन,
नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह
से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने
वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू
अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी
वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना
जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक, तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए
षडष्टकादि मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित
पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिए—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य,
(४) व्यभिचार, (५) सन्तान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़कर शुभ
तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के
घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि
से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करें
और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़,बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन्
कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥"
यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता
तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३, अनू. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ
समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाहकालनिर्णय—३० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से ... (कुचों
के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजो...
के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत
श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचंद्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रया-
दूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादय
गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य
वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे
तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। वसिष्ठः—
दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मत.॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर
को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय
पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की
उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर
मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर
का नहीं। कन्या का-नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे
जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (---) का चिह्न लिखा
हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर
जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—(आगे देखो पृष्ठ ९६ के शुरु में)

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग
प्रारम्भ नक्षत्र तक
गणना करें।

स्थान नक्षत्र फलानि
शीर्षे ३ नार्थसिद्धिः
मुखे ३ सुमंत्रसिद्धिः
कंठे ३ मृत्युदायकः
हस्ते ४ शत्रुभीतिः
हृदि ४ ष्टाप्तिः
उदरे ३ धनहानिः
कट्यां ३ साधनार्थं.
चरण ४ साधनाद्धितः

मंत्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग.
मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३
तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार
में वृष. मि. सिंह. क. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१०
वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना
उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा
श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चांगशुद्धि
का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा.
फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य
तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह.
स्वा. वि अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारा
अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने
पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्नगण्डान्त—कर्क, सिंह की वृश्चिक, धनु की और मीन, मेष के आदि अन्त की आधी
आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। यह भी जन्म में भयप्रद होता है।

(९५ पृष्ठ का शेष) "राश्यभिधानकल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिसमें अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारिणी आदि देखकर बदलना चाहिए।

अथ विवाहमासाः—विवाहशुद्धौ मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो-ऽर्को धनुःपश्चान्ते मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्त्यीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्ग-स्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़कर वर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करे।

षड्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—लाहे चिठ्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह-दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास, कुल वालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शांति करके अथवा विशेष शांति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं करना [illegible]। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (मु० म० चं०) शुद्धि [illegible]

(बृ०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः—धनमावनगतो दिवाकरस्तोलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्याङ्गिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशरात्र्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः—२।५।७।९।११
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—१।२।५।७।९
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बन्न) दिनसंख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	३	९	५	९	५

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३. भ. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेवरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहित-तिथिषु कात्यायनमते अश्वि. चि. श्र. धनि-ष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भमुहूर्त—वर कन्या को चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रयत्नोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण गढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोवा बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्व कार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य और दग्धातिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त लग्न दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१ लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्नतक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त [illegible]

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

[illegible] बाण गतांशाः प्रति ५ कम वार-समयपरत्वेन

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहित
०	मृ	श्र	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	[illegible]	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पू.फा.	ध	पुष्य	पू.भा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उ.फा	म	
चि	म	ह	०	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	०	पूफा	
मू.	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	पूषा.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीच के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये.	ध.	पू. भा.	उ. भा.	अ.	कृ.	मू.	पुन.	उ. फा.	ह.	ग्र. न.

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गलदोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ स्थूल क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थूल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चंद्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में।

बाण नाम	गतांशाः राशौ	प्रति ५ कर्म अर्कस्य वर्ज्याः	वार-समय	परत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ रात्रौ	त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे सदैव	वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे दिवा	त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे रात्रौ	वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे संध्ययोः	वर्ज्यम्

१० द[illegible]

९	२	४	६	५	१०	सूर्ये
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर)-जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वैः (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तार्भं त्यजेद् सिद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेषपरिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगघातः ॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः) ॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम् ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) ॥ अथ पापग्रहेण भुक्त-भोग्यक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ जामित्रपरिहारः—(व्यवहार-समुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हृत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम् ॥ मूहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं पाप	०	०	रा.	०	चं. शु. लग्नेशः	सर्वे	चं मं. शुभाः लग्नेशः	०	०	०	श.	त्याज्याः
चं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं		चं	विद्धमञ्च				गोधूली त्याज्याः

लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्चः मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जागुरुसमौ) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रद.। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदा लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंग्वन्धादिलग्नाना गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्याह्वयास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरीदोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ॥ "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरीदोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमे दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादान्तरम्। उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश-ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायतर्तुमासोत्थाः पक्षति-थ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रलग्ना-देकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय वैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः ॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

ग्रहाः	र	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	मुहूर्तगणपतौ
स्थानानि	३	२	३	१	१	१	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम्।
	६	३	६	२	२	२	६	३	३	
	८	११	११	३	३	४	८	८	८	
	११			४	४	५	११	११	११	
				५	५	९				
				६	६	१०				
				९	९	११				
				१०	१०					
				११	११					
विंशोपकाबलम्	३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।	

अथ गोधूलिलग्नविचारः—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या [illegible]

वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग. माघ, फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिक क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः। "अस्तं याते गुरुदिवसे सौर साक" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्यं निषिद्धम्। संकीर्णाना दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३ मृत्यु	३ धन	३ मरण	३ मृत्यु	३ पुत्र	३ दुर्भग	३ श्री	३ उन्नति	नक्षत्र फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ सख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के शुक्रत्व का भी विचार नहीं करना। व्यनिपाते अयनतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि तां चरेत् ॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३ पुष्य. अनु. इन नक्षत्रों में और च. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, मास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—व्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पाचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य [illegible]

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. शे. मू. मृ. र. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवासरान्ते एकादशाहं समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुख दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो. छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक को मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाहसम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ॥

प्रथमस्त्रीसंगममुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे। और विशेषाधिकार भी न दे. क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक दो हो सकती हैं। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड भैंस आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वाः पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. चि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. र. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्यवारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।

भूषणघट्टनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दूकान खोलने का मुहूर्त—ह. चि. रो. र. उत्तरा ३. पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भूगृहात्धिगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं. बु. शु. वारेषु सतिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने।

नक्षत्र स्थान फल	२ आसन सौख्य	३ मव विक्रयनाश	४ अग्नि अर्थनाश	४ नैर्ऋत मुख	३ सम्मुख महाश्रेष्ठ	४ वायव्य चौर भय	४ ईशान सर्वहानि	४ मध्य शभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी)-मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र. बु. वृ. शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशोर्योनिमैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही)-पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. नु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अन्यावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण ने के लिये वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। कृ. रो. आर्द्रा, श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रयमुहूर्तः—पुष्य. पू. भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३, आश्ले. रे. एषु. भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बध, रवि श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पू. फा. पू. षा. पू. भा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फी सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो [illegible] सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो. कृ. आर्द्रा. श. अ. श्ले. म. ज्ये. म. वि. पूर्वा ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

ग्रामभात् वासकर्तुं नक्षत्रं यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ ६ गदर्भ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में. रो. मृ. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में., २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुख	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. ३ रो. म. आर्द्रा. पू.षा. इनमें से जिस पर वृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुध-वार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिसपर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय। इस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तन्नात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचारः

मध्य	ई.	पृ.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानिः	सुपुष्टिः	सुप्राप्तिः	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

अथ चुल्लिचक्रविचार

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग)-कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में चं, वृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वें स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शव.

रोगिणीशान्ति वापीचक्रम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त :—

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैऋंत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्यः	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धनु मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्यः	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनु
खातदिशाज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैऋंत्यां

द्वारशाखाचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्

सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों. उ., रो. ध. श. म. पू.षा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पाप ग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋंत्य ३ अमृत जल

गणनाक्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाह वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० न० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाह'।

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त :—

ईशान	पूर्व	आग्नेय
अ. भ. कृ. मध्यजल	पुन. पु. श्ले. जलाभाव	म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर	मध्य	दक्षिण
पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	रो. मृ. आर्द्रा शीघ्रजलम्	ह. चि. स्वा. जलाभाव
वायव्य	पश्चिम	नैऋंत्य
श्र. ध. श. क्षारजलम्	मू. पू. उषा. अमृतजलम्	वि. अनु. ज्ये बहुजलम्

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।

अश्वि० रो० मृ० पुष्य, ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा० ३. रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८ १०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर-(२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधास्वरे क्षुद्राद्यं ददेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० म. अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोर ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्र यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालय अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी ॥ दुर्गभंग गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्ष्यते ॥

अवश्य ... कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच हैं।

गृहारम्भे वत्सचक्रम् | विशेषः—पुष्य. ३ रो. म. आश्ले. पू.षा. इनमें

गां दद्याद ब्राह्मणाय कुटम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्र-मधुगन्धाद्यरचितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गंद्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भाग योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

यथा—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोडना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पु. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठचष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)—द्यपादस्थे यदि संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. र. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. र. नक्षत्र में गौ लेना बचना। अन्य पशु पुन. पूर्वा ३. ह. अनु. ज्ये. मू. धनि.. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभ-फल सूर्य नक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गृहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	३	६	४	४	४	४	नक्षत्र

यात्रा में ...

... १ ७० अग्नि० दक्षि० नैर्ऋ० पश्चि० ...

लतावृक्षाद्यारोपणमुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य, अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है। तृणकाष्ठादिसंग्रह निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए।

औषध का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. र. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा श्रत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्या-

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
१	१ ४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० भ०

दिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांक में यात्रा कदापि न करे। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो। अन्यच्च यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प	उ.
चं. श.	चं.व.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. श.	वारः	ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहार:—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ रविवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे ...

... त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

यात्रा में ...

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्यां
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट	

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तर	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बांये की शुभ,युद्ध यात्रा की बांयें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषा काल में पूर्व को,गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रिमें उत्तर को और मध्याह्नकालमें दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त—गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्च (५७) अरुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

दिने चतुर्घटिकामुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध.	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिकामुहूर्तम्

घटी	सू	च	मं	बु	गु	शु	श.
३॥	शु	चं.	का	उ	अ	रो	ल.
७॥	अ.	रो.	ला	शु	चं	का	उ.
११।	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
१५	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
१८॥	का.	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	च
२२॥	ला.	शु.	चं	का	उ	अ.	रो.
२६।	उ	अ.	रो.	ला	शु	च	का.
३०	शु	चं	का.	उ	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी फल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बायें दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, सजलपूर्णघट यात्रा पश्चाद्रिक्त घट, यात्रा समय देखने में शुभ है। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिक्का, दुष्ट-वाणी, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

चन्द्रवासचक्रम्			
पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-

घट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०.	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचंद्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयायार्द्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः॥

रामदैवज्ञोक्तम् आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमश ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; चि. कृ. पू ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि ; ४।९।१४।६। १२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशया
मे.	क.	कु.	सि.	म.	सि.	ध	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	वृष.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष.	चन्द्रघात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	ऽगं	वृष.	वै.	गं	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	३१	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्वातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल [illegible]

अथांगविभागे पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	एश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. व नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्काफलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल होनी। छीकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाखे; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जय कारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोवन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अनुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रे विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम् ॥

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	उरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्ववृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा का भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल बर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्धमहर्घता
पत्थर बर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हो	राजविघ्न	सवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिनअंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देश क्षय	वनपशुगाववसे	मनु, शून्य हो
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बाकी कबूतर-	गृहस्वा. नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु मंहगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनकापक्ष	प्रजानाश

... विधिश्च | तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

सू.	च.	म०	बु	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तदात्राह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च विष्टयां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

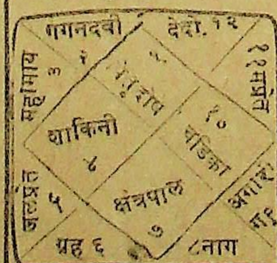
विशेष——यदि प्रतिदिन तैल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादी फलम्——मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

अथकाकवचनफलविचारः——काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। दत्वा षड्भिर्भं क्तं समाहरेत्। लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। त्रयोदशपदं मरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्। निश्शेष—

कपोतः (कबूतर)——सिर पर गिरे वा स्वपालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर घर में बसें वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोषनिवृत्यर्थं दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

मुष्टिचक्र



अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावे। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचन से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हु को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना) चतुर्थ प्रार्थित (जागतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु १।२। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।३।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६। १२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ. १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है—विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

म.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशया
म.	क.	कु.	मि.	म.	सि.	ध	वृष.	मिथुन	सिंह	ध.	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	वृष.	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि	वृश्चि	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष.	चन्द्रघात
का.	मा	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	आ.	श्राव.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	ऽगं	वृष.	वै.	गं	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	३१	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल [illegible]

अथांगविभागे पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठ	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती ह। पु. अश्विनी, रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. य नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्काफलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूँघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल होनी। छीकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषे; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जय कारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसें छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोवन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रे विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम् ॥

अंगस्फुरणफलम्

अङ्गस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है ।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	उरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्ववृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजला उठे तो भी चक्रावत फल जानना । पैर के तलओं में खुजली उठे तो यात्रा हो । राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है । साधारण व्यक्ति को लाभ होता है ।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा का भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल बर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्धमहर्घता
पत्थर बर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हो	राजविघ्न	सवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिनअंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देश क्षय	वनपशुगांवबसे	मनु. शून्य हो
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	वर्फ पत्थर पड़े	बाकी कबूतर-	गृहस्वा. नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु मंहगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनकापक्ष	प्रजानाश

[illegible] विधिश्च

सू.	च.	म०	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त	विपत्ति	सुख	फलम्
तापम्				हानि		सुयोग	
पूर्ण	०	मति	०	दर्वी	गोमय	०	पातन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदात्राह—

रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ठचष्टम्योश्च विष्टयां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु ।

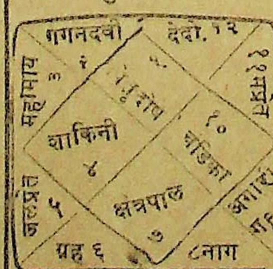
विशेष—यदि प्रतिदिन तैल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है । अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है ।

काकस्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है । कमर, कन्धे पर अशुभ होता है । स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है । वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है । काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है । इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे । इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं ।

अथकाकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत् । त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भङ्गं समाहरेत् । लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम् । निश्शेष-मरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम् ।

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्वपालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर घर में बसें वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोष निवृत्यर्थ दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो ।

मुष्टिचक्र



अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावे या लिखावे । उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे । यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश होवे । ११ बचे तो सिद्धि, २ बचन से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे ।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हु[illegible]ो सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना) चतर्थ प्रार्थित (जागतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण) सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो दैव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ क सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना. मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों या बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश व तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर हो कर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और निरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको [illegible] लेना चाहिये कि उसको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि [illegible]

हो जाएगा, और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभस्वप्न—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीमपलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सार बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर लेजाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोगसंकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगीतमंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशामें जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदीमें डूबना अथवा नदीके प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतुके वर्षा देखना बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी, का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े महलध्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवास्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उसपर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांतसे मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुनिर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे। दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्मलग्न, होरालग्न से आई आयु ठीक समझे; चरे चरे स्थिरे-द्विःस्वभाव-दीर्घायुः। द्विःस्वभावे-द्विःस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे-स्थिरे, चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११,१,४,७,१०,५,९, इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है, ३।८ में पापग्रह हों, पणफर में भी यदि पापग्रह हों तो मध्यायु इसके अतिरिक्त

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा.				पु. अनु उ. भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्र	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं	१	७	०
र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	२
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशायोर्ज्ञानार्थंचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. अनु.पूभा		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२६
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०

भद्रा व. ६			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८		
बुध			शनि			शुक्र			केतु		
भ. म.ज्ये. उभा			कृ. पू.फा.मू.रे.			रो उ.फा.पू.षा.			मृ. ह. उषा		
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	१०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

दशा तथा वर्ष
दशेशग्रहाः
जन्म नक्षत्र

अन्तर्दशामासादि
शुभदशा—म. धा. भ. सि.
नष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणें, भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दे लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	पृ भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदयः	राज्यला.	धनला.	विरो.
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभः	जयः	वाह. ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभ :	दुःखम्	पुत्रपी.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्तिः	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेश :	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मृन्यः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टि.	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्राः	लाभः	कष्टम

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण) सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" में पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्जन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन करे शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, देव ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों या बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश व तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर हो कर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और निरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिये कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि [illegible]

हो जाएगा, और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभस्वप्न—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीमपलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा, मिलना, इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सार बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर लेजाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोगसंकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगीतमंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना, बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशामें जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदीमें डूबना अथवा नदीके प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतुके वर्षा देखना बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी, का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े महलध्वजा का गिरते देखना अशुभकष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवास्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उसपर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांतसे मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुनिर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे। दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्मलग्न, होरालग्न से आई आयु ठीक समझे; चरे चरे स्थिरे-द्विःस्वभाव-दीर्घायुः। द्विःस्वभावे-द्विःस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे-स्थिरे, चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११,१,४,७,१०,५,९, इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है, ३।८ में पापग्रह हो, पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त

सूर्यदशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७				राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९				बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.				आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू. भा.				पु. अनु उ. भा.				श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्र	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	,
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	चं.	१	८	०
रा.	०	१०	१४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	र.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	र.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	चं	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	र.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	२
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्वर्षयोर्ज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ६			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेशग्रहाः
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. अनु.पूभा			म. म.ज्ये. उभा			कृ. पू.फा.मू.रे.			रो उ.फा.पू.षा.			मृ. ह. उषा			जन्म नक्षत्र
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२६	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	१०	भ्रा.	१०	२०	
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	मं	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

अन्तर्दशामासादि
शुभदशा—म धा. भ. सि.
नष्ठदशा—पि. भ्रा. उ. सं.

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणें, भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दे लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थग्रहफलबोधचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	पृ भीः	धनलाभः	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाशः	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गतिः	शत्रुनाशः	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदयः	राज्यला.	धनला.	विरो.
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यलाभः	पुत्रलाभः	कलहः	धनलाभः	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभः	जयः	दाह. ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीतिः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभ :	दुःखम्	पुत्रपी.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिन्ता
राहुः	शिरोर्तिः	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुनाशः	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभः	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मन्यः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टि.	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनम्	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्राः	लाभः	कष्टम

अथ केरलमते प्रश्न-विचारः

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत्। सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौ तु देवतां वदेत् ॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	अष्टवर्गः
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	प्रश्ननिर्णयः
धा	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	प्रश्नः
कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी	प्रवासीप्रश्न
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	स्थिर	स्थिर	कष्ट	प्रवासीचरादि
समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासीकामार्ग
स्वल्प	सप्त	एकविंश	१ मास	सार्धमा	२ मास	६मास	१ वर्ष	प्रश्न दिनादि
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्न
गोधूम	तिल	पातान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव	धान्य ज्ञान
कौसुम्भ	श्वेत	लोहितांग	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि वर्ण
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्न
सप्तदिन	दो मास	पक्ष	१ मास	पक्ष	मास १	सप्तदिन	२ मास	कष्टदिन
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभः
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्षुनष्ट
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धानक	नौकर	टहलन	नाई	चौर जाति
ऊखले	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्षे	भांडगते	काष्ठशिल	गृहे	भुविमध्ये	नष्टस्थानम्
भैरव	जगदंबा	सूर्य्य	हनुमत	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितृ	देव पूजा
आगम	न आगम	आगम	नआगम	आगम	न आगम	आगम	नआगम	बन्धुगमागमौ
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	शत्रुजयहानि
न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	बंदीमोक्षप्रश्न
सप्तदिन	१ वर्ष	पक्ष १५	मास ६	मास १	मास ६	मास ३	वर्ष १	दिनानि
स्थिर	न सिद्धि	त्वरितं	दीर्घकाल	त्वरितं	दीर्घकालं	स्थिर	न सिद्धि	कार्य्यसिद्धि
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	व्यवहार प्रश्न
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	स्त्रीलाभप्रश्न
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्रकन्या प्रश्न
शत	एक	शत	२०	६०	४५	७५	१५	आयु प्रश्न
विलंब	उत्तम	विलंब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	न वर्षा	वृष्टि प्रश्न
२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०	दिनादि

रोगोत्पत्ति सन्तान-प्रतिबन्धादि में देवदोषज्ञान

प्रश्नलग्न से ३।६।९।१२ स्थान शुभरहित कोई पापग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानें। यदि ८।१२ व स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, गुरु हो तो पितृदोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो बलदेवी का दोष, सूर्य हो तो देवीदोष, (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष), शनि हो तो सतीदोष, बुध हो तो भूतदोष, भौम हो तो शाकिनीदोष ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है। भौम स्वक्षेत्री १२ में हो तो छाया चुड़ैल, चौथे श. मं. राहु चौपाटिया, बली वा नीच भौम १।४।८ वें हो तो शत्रु के घर से मसाणी, १० सू. मं. सीकण, १२ भौम नणद बडी, ८ वें भौम नणद छोटी, ४ भौम भैण, १० म. गु. सती कुल की, १० मं. चं. अपने दुर्गास्थान का दोष कहना यह ग्रह योग न हो तो केवल प्रश्नलग्न से दोष निम्न-लिखित जानें। बलवान् मेषलग्न में प्रश्न हो तो पितृदोष कहें, वृष में हो तो आकाशदेवी का, मिथुन में हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलभय प्रेतदोष, कन्या में केवल कुलदेव, तुला में क्षेत्रपाल का, वृश्चिक में नाग का, धन में कर्मजन्य, मकर में श्रीदुर्गा का, कुम्भ में भूतप्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें। बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता

मूक-प्रश्न का अनुभूत प्रकार

अर्थात् जिस राशि का ग्रह हो नवांश में भी उस राशि का) हो, वह लग्न से जिस भाव में हो उस भाव की निःसन्देह प्रश्न कहें। यदि उस ग्रह की स्थिति द्वारा दो तीन प्रश्न निकलें

मूक-प्रश्न का अनुभूत प्रकार

बिना पूछे किसी के मन का प्रश्न कह देने से ज्योतिषी की मानप्रतिष्ठा विशेष होती है और ज्योतिश्शास्त्र पर प्रष्टा की श्रद्धा भी बढ़ती है। एतदर्थ हम श्रीमार्तण्डपञ्चांग प्रेमी पण्डितों के हितार्थ अनुभवसिद्ध मूक-प्रश्न का प्रकार लिखते हैं, जिस से मूक-प्रश्न पूर्ण मिलता है। स्मरण रहे कि प्रश्नकालिक शुद्ध स्वदेशीय लग्न स्पष्ट तथा तात्कालिक सूक्ष्म ग्रह स्पष्ट बनाने में गलती न हो। हमारे पञ्चांग के दैनिक ग्रह स्पष्टों से केवल घटयादि चालन द्वारा तात्कालिक प्रश्नोपयोगी सूक्ष्म ग्रह आते हैं।

प्रश्न कथन प्रकार—प्रश्न कुण्डली में नव ग्रहों में से इष्टदेव नमस्कृति पूर्वक देखिए जो ग्रह अधिक बली (उच्च, स्वराशि, मित्रराशि, मूलत्रिकोण, केन्द्रस्थ, स्वनवांश, वर्गोत्तमांश [illegible] भी उस राशि का) हो, वह लग्न से जिस भाव में हो उस भाव का निःसन्देह प्रश्न कहे। यदि उस ग्रह की स्थिति द्वारा दो तीन प्रश्न निकलें तो उनमें से प्रष्टा की परिस्थिति, आयु, देश और कालादि का विचार करके बुद्धि द्वारा जो ठीक बैठे वही प्रश्न कहे। जैसे किसी ने प्रश्न किया तो उस समय अन्य ग्रहों से बली राहु मिला और वह बैठा भी लग्न में है, तो राहु के प्रथम भाव में होने से पुत्र और विद्या का प्रश्न समझें। ऐसे दो प्रश्न निकले, अब प्रष्टा की ओर देखा तो उसकी आयु १६ वर्ष के लगभग है तो पुत्र एवं विद्या दोनों प्रश्नों में से ज्योतिषी को चाहिए कि उसे कहे आपका विद्या संबंधी प्रश्न है अगर वही प्रष्टा बड़ी उमर का हो तो पुत्र विद्या दोनों में से पुत्र का प्रश्न कहना युक्तिसंगत था, इत्यादि बुद्धिमान् ज्योतिषी को चाहिए कि मूक-प्रश्न कहने के लिए शास्त्र और बुद्धि दोनों का उपयोग करके जो निकले वही कहे तो सत्य होगा।

सूर्य—

१ भाव में बली—शरीर संबंधी प्रश्न
२ „ में—धनसम्बन्धी
३ „ में—झगड़े का प्रश्न
४ „ में—जय उच्चता का
५ „ में—पुत्र सम्बन्धी
६ „ में—यात्रा सम्बन्धी
७ „ में—स्त्री सम्बन्धी
८ „ में—जहाज बेड़ी दरिया जल सम्बन्धी
९ „ में—यात्रा विदेश सम्बन्धी
१० „ में—राज कर्म सम्बन्धी
११ „ में—धनलाभ क्रयविक्रय-विषयक
१२ „ में—शत्रु झगड़ा परदेश खर्च का प्रश्न समझे

चन्द्रमा—

१ भाव में बली होकर बैठा हो तो क्षेत्र धन और भोजन का प्रश्न
२ „ में—धन और झगड़े का
३ „ में—वर्षा और जल का
४ „ में—माता व मकान का
५ „ में—पुत्र का
६ „ में—रोग का
७ „ में—स्त्री का
८ „ में—भोजन चिन्ता का
९ „ में—मकान का
१० „ में—यात्रा का
११ „ में—क्षेत्र खाता, दुष्ट पुरुष, पवित्रता वस्त्र कपड़े, आदि का
१२ „ में—नष्ट वस्तु के लाभ का

मंगल—

१ भाव में बली हो तो—भय वा झगड़े का प्रश्न कहे।
२ „ में—नष्ट वस्तु का
३ „ में—भाई मित्र व क्लेश का
४ „ में—मित्र व वैरी का चौपाया व क्रयविक्रय का
५ „ में—क्रोध, नीति नौकरी का
६ „ में—सोना, सिक्का कली चांदी का
७ „ में—नष्ट वस्तु, नौकर, धन घर जमीन का
८ „ में—यात्रा का
९ „ में—झगड़े का
१० „ में—शत्रु के आने का
११ „ में लाभ का
१२ „ में—झगड़े युद्ध का

बुध—

१ भाव में हो तो—शस्त्र व सुख का प्रश्न समझें।
२ „ में—वस्त्र, धन, शरीर का
३ „ में—सास भाई का
४ „ में—बावली, जल, खेती, बगीचा का
५ „ में—सन्तान और कार्य-सिद्धि का
६ „ में—कार्यसिद्धि, धन, खोई हुई गुप्त स्त्री की मैत्री का
७ „ में—पक्षी और स्त्री का
८ „ में—राजा व आज्ञा नष्ट चीज का
९ „ में—पशु पक्षी का
१० „ में—शास्त्र, कथा व सुख का
११ „ में—धन लाभ का
१२ „ में—पाखण्ड, द्रोह छल और सुख का

गुरु—

१ भाव में बली हो तो—सुख का प्रश्न समझो।
२ „ में—धन, कल्याण, सुखका
३ „ में—सम्बन्धी श्वसुर का
४ „ में—कुल संबन्धी विवाह का
५ „ में—पुत्र, प्रीति, विवाह का
६ भाव में—स्त्री विवाद, और गर्भ का
७ „ में—अर्थ द्रव्य मंत्र सिद्धि
८ „ में—सूम का
९ „ में—परदेश, मार्ग, धन-प्राप्ति का
१० „ में—मित्र फूटना और सुख का
११ „ में—स्थिति, सुख का
१२ „ में—यश का

शुक्र—

१ भाव में बली हो तो इष्ट देव, नावना और मित्र सुख का
२ भाव म—रत्न धन और वस्त्र का
३ „ में—स्त्री, गर्भ, बहिन, भाई का
४ „ में—विवाह सुख का
५ „ में—मित्र, भाई, और पुत्र का
६ „ में—गर्भोत्पत्ति का
७ „ में—स्त्री, योगाभ्यास और प्रीति का
८ भाव में—दूसरे की स्त्री का
९ „ में—स्वप्न का
१० „ में—श्रेष्ठ कर्म का
११ „ में—स्त्री व झगड़े का
१२ „ में—नष्ट वस्तु का

शनि—

१ भाव बली हो तो—रोग वा स्त्री का
२ भाव में—विद्या पुत्र का
३ „ में—भाई के नाश का
४ „ में—स्त्री के दूध व अन्य दूध का
५ „ में—दो पुरुषों की कार्य सिद्धि का
६ „ में—शत्रु का
७ „ में—स्त्री वा पुत्र का
८ „ में—व्यापार का
९ „ में—यात्रा का
१० „ में—धन व आरोग्य का
११ „ में—विद्या वा यश का
१२ „ में—शुभकर्म, खर्च अथवा शुभ कर्म में खर्च का प्रश्न कहे।

राहु	केतु
१ भाव में हो तो—पुत्र और विद्या का प्रश्न समझे	१ भाव में हो तो—लाभ व खर्च का
२ „ में—यश वा आरोग्य का	२ „ में—मैत्री व जय का
३ „ में—मित्र व भाई का	३ „ में—शोक पुत्र भाई का
४ „ में—स्त्री सुख का	४ „ में—द्रव्य वा वृक्ष का
५ „ म—द्रव्य का	५ „ में—स्त्री नौकर वा अधिकार का
६ „ में—व्यापार का	६ „ में—नृत्य गायन वा रोग का
७ „ में—अन्य देश का	७ „ में—मन्त्रसिद्धि का
८ „ में—नष्ट द्रव्य, कूप, जमीन, धन का	८ „ में—क्रूर कर्म वा मरने का
९ „ में—जय का	९ „ में—विद्याभ्यास वा पर-स्त्री संग का
१० „ में—शोक, दुःख व भयका	१० „ में—घर मकान वा सुखका
११ „ में—लाभ का	११ „ में—सब प्रकार के लाभ का
१२ „ में—विवाह व खर्च का	१२ „ में—नष्ट वस्तु, नजर वा खर्च का प्रश्न कहना चाहिए।

अथवा—लग्नेश लाभेश दोनों में से जो ग्रह बली हो और फिर उससे चन्द्रमा जिस भावमें वर्तमान हो प्रश्नकर्ता के मनमें उसी विचारणीय भाव की विचारणीय वस्तु की चिन्ता कहे, सत्य होगी।

कार्याकार्य प्रश्न विचार

दिशा प्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्॥
पंचके त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रयम्।
त्रिसप्तके विलंबस्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ॥

अर्थः—प्रश्नकर्त्ता का मुख जिस दिशा में हो पूर्व से आदि लेकर उस दिशा की संख्या उस समय का नक्षत्र वार और समय की प्रहर सब मिलाकर ८ का भाग देवे शेष १ तथा ५ बचे तो कार्यसिद्धि, ६–४ बचे तो ३ दिन में कार्य होगा, ३–७ बचे तो देरी से कार्यसिद्धि होगी और २–८ बचे तो कार्यसिद्धि नहीं होगी, ऐसा कह देना।

वस्तु खरीदने बेचने का चमत्कारी मुहूर्त

रवि, बुध, गुरु, शुक्रवार को २।३।७।१३।१५ तिथि हो और अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शतभिषा, रेवती इनमें से कोई नक्षत्र भी हो तो मंदी हुई वस्तु खरीदने से अवश्य लाभ रहता है। इसी तरह गुरुवार व सोमवार को ४।९।१४ तिथि से अतिरिक्त अन्य तिथि हो और भरिणी, कृत्तिका, आश्लेषा, विशाखा, तीनों पूर्वा इनमें से कोई नक्षत्र भी हो तो भाव हुई वस्तु बेचने से लाभ [illegible] है।

ठेकेदारों को टेन्डर देने का मुहूर्त

टेन्डर देने के समय होरा का विचार मुख्य है जो इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक वार को सूर्योदय के समय होरा उसी वार को होती है। होरा का समय २॥ घटी यानि १ घण्टा का होता है और दूसरी होरा उसी वार के छठे वार की होती है इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा निकाल लेनी चाहिए। चं. ब. गु. शु. की होरायें शुभ हैं।

होरा (क्षणवार) फल

सूर्य की होरा—टेन्डर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है।

चन्द्रकी होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।

मंगल की होरा—युद्ध, द्युत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकदमा के कार्यों में उत्तम होती है।

बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।

गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य, लेखन प्रकाशन, अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है)

शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीनवस्त्र धारण, सौभाग्य—वर्द्धक कार्य शुभ होते हैं।

शनि की होरा—द्रव्य संग्रह, भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

बीमार के जन्मपत्र से जानना कि जियेगा या मर जायगा

विंशोत्तरी में जन्म लग्न से दूसरे स्थान या तीसरे, छठे, सातवें, आठवें, बारहवें के स्वामी की दशा हो, अथवा इन स्थानों में से किसी स्थान में वह ग्रह पड़ा हो जिसकी दशा वर्तमान हो और योगिनी दशा में पिंगला २, भ्रामरी ४, उल्का ६, या संकटा ८, दशा में से कोई भी दशा इस समय वर्तमान हो और योगिनी दशा में अन्तर सप्तमेश का अथवा सप्तम में जो ग्रह पड़ा हो, या सप्तम को पूर्ण दृष्टि से देखता हो उसका अन्तर योगिनी दशा में हो और गोचर में जन्मराशि से जन्म के चौथे सातवें आठवें या बारहवें स्थानों में शनि गुरु राहु या केतु हो, गोचर में मंगल जन्मराशि में हो या जन्मराशि को देखता हो और गोचर मे सूर्य जिस राशि के हों। (समराशि या विषम राशि) यदि सम हो और उस राशि का स्वामी जन्मपत्र में विषम राशि का हो और सूर्य विषम राशि के हों तो उस राशि का स्वामी जन्मपत्र में सम राशि में हो तो बीमार की अवश्य मृत्यु हो जावेगी और इसके विपरीत होने से निश्चय करके नहीं मरेगा। यह गुप्त रहस्य पञ्चांग प्रेमियों को भेंट है।

ज्ञातव्य विषय

बिना संकल्प और शास्त्रविधि के सकाम कर्म निष्फल है।
बिना तिल और तर्पण के पितृ कार्य निष्फल है।
बिना तुलसी और पुरुषसूक्त के विष्णुपूजा निष्फल है।
बिना विल्वपत्र और जलधारा के शिवपूजा निष्फल है।
बिना मिष्ठान्न और दक्षिणा के ब्राह्मणभोजन निष्फल है।
बिना दूर्वा और गुड़ के गणेशपूजा निष्फल है।
बिना लाल पुष्प और अर्घ्य के सूर्यपूजा निष्फल है।
बिना लाल पुष्प और लाल चन्दन के दुर्गापूजा निष्फल है।
[illegible] निष्फल है।

बिना ईश्वरभजन के मनुष्यजीवन निष्फल है।
बिना दम्पति-प्रीति के गृहस्थ निष्फल है।
बिना नियम श्रद्धा के तीर्थयात्रा निष्फल है।
बिना माता पिता की सेवा के तपस्या निष्फल है।
बिना श्रद्धा शुद्धि व सात्त्विक भोजन के श्राद्ध निष्फल है।

सुगम प्रश्न पर विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धतापूर्वक "ॐ श्री कीर्तिसवार्य्यै नमः" इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़ कर नीचे दिये गये चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अङ्कों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़ कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपने अभीष्ट प्रश्नवाली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकदमे का प्रश्न हो तो "मुकदमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में....इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिये—आपका प्रश्न मुकदमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं ? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७, एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकदमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिये बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा

अंगुली रखने के लिये चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	[illegible]

उत्तरावली

मित्र मिलन का फल (१)
१ मित्र [illegible] मिलेगा।
२ मित्र [illegible] है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र [illegible] है।
६ मित्र [illegible] है।
७ मित्र [illegible] है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र [illegible] है।
९ मित्र तुम्हारे से [illegible] रखता है।

मुकदमे का फल (२)
१ मुकदमा देर से होगा।
२ मुकदमे में जीत होगी।
३ [illegible] काम नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ [illegible]
७ तुम्हारी हार होगी।
८ [illegible]
९ [illegible] फैसला होगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ [illegible] में हानि खर्च बराबर है।
३ [illegible], हानि होगी।
४ [illegible] लाभ होगा।
५ [illegible] है।
६ [illegible]
७ यात्रा [illegible] होगी।
८ यात्रा में [illegible] मिलेगा।
९ यात्रा [illegible] पर विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ कम।
३ पशु [illegible] खरीदो पता नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ [illegible] पशु [illegible] बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ [illegible] ठीक नहीं हानि [illegible]

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ [illegible] काम घाटे का है।
४ [illegible] नुकसान का भय है।
५ [illegible] या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से ज्यादा लाभ होगा।
७ [illegible] कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, धक्का है तो बेचो।
९ [illegible] में गहरा [illegible] मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, [illegible]
३ काम नहीं बनेगा, [illegible]
४ [illegible] से [illegible] बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और [illegible]
६ [illegible]
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होगी।
४ विद्या [illegible] होगी।
५ [illegible] होगी।
६ उत्तीर्ण होने में [illegible]
७ अच्छे दरजे में पास होगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या [illegible] न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेसी शीघ्र ही [illegible]
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में [illegible] आ रहा है।
४ [illegible] में [illegible] है।
५ [illegible] है।
६ [illegible]
७ [illegible] है।
८ [illegible]
९ परदेशी [illegible]

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु [illegible] न [illegible]
२ शत्रु से [illegible]
३ शत्रु [illegible] हानि [illegible]
४ मित्र की सहायता से [illegible] हो।
५ शत्रु निर्बल हो क्या डरो मत।
६ [illegible] न करो उससे भय है।
७ [illegible] की सहायता से [illegible]
८ [illegible] हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण [illegible] होगा।

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं

साहूकार (जिससे नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दे, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले। २ शेष रहे तो न मिले। तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले।

विवाह होगा कि नहीं—यदि लग्न से २।३।६।७।१०।११ इन स्थानों में चन्द्रमा को बृहस्पति देखे तो विवाह हो जाएगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हों या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो या लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जावेगा।

गुप्त चिन्ता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट से [illegible] पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद की।

कर्ज लेने देने का फल (११)

१ यहाँ से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ कैसा प्रेम बना है आगे नहीं रहे।
३ लेनी देनी का [illegible] रहेगी।
४ लाभ में मुश्किल होगी।
५ बिना दो [illegible] कमाया।
६ इस समय हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अन्य समय [illegible] में बाधा होगा।
९ [illegible] बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है फल (१४)

१ इस गर्भ की तुलना नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ भोली कन्या जन्मेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

अनाज खरीद फल (१७)

१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ बड़ा टोटा नुकसान रहेगा।
३ लाभ रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ ऐसा व्यापार न करें।
६ देर से मिलेगा।
७ अनाज में नुकसान होंगे।
८ देखना ठीक है, लेना मत।
९ इसका काम अशुभ है।

खेती करूं या नहीं फल (१२)

१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में घोटे का भय है।
८ पाला के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

चोरी गई का फल (१५)

१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर [illegible] है।
२ कष्ट करने पर माल मिलेगा।
३ बड़ा बुरा कष्ट पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोर से तेरी वस्तु और की देगी।
७ माल बाहर खर्च हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर [illegible] माल मिलेगा।

विवाह शादी का फल (१८)

१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह [illegible] नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह अवश्य होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ धर्म करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुणवती मिलेगी।

रोगी का प्रश्न फल (१३)

१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ कठिनता [illegible] है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की औषधि बदली करो।
६ रोगी को वायु से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी हैं।
८ [illegible] पर खर्च अधिक है।
९ [illegible] में किसी का वश नहीं चलता।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)

१ गोद लेने से लाभ रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी मिलेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ [illegible]
८ घर में कलह रहेगी।
९ बुराई नहीं है।

रोजगार प्रश्न फल (१९)

१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेष परिश्रम करके रोजगार होगा।
३ किसी प्रकार की [illegible] करो।
४ [illegible] की कोशिश से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ [illegible] करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ थोड़े महँगी क्या है अभी चुप रहो।
९ जो विचारा है वह पूरा नहीं होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (२०)

१ इस साधना में उपद्रव होगा।
२ मन निश्चित चंचल होगा।
३ यह साधना शुभ नहीं।
४ साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५ प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६ साधना सफल नहीं होगी।
७ देरी बाद सिद्धि होगी।
८ परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९ [illegible]

मकान बनाने का फल (२१)

१ मकान बनाना सुखप्रद होगा।
२ बहुत दिनों में पूरा होगा।
३ यह कार्य लाभप्रद नहीं।
४ खर्च अधिक होगा।
५ शत्रु विघ्न करेगा।
६ मकान ठीक नहीं बन पावेगा।
७ इस स्थान को खरीदने से धन मिले।
८ यह मकान झगड़े का कारण होगा।
९ [illegible]

बाग लगाने का फल (२२)

१ बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२ बाग देर से फल देगा।
३ बाग लगाने में लाभ नहीं।
४ बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५ जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६ बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७ बाग लाभप्रद होगा।
८ बाग लगाना कलह का मूल होगा।

संतान भाग्य में क्या है ? फल (२३)

१ संतान आपके भाग्य में नहीं।
२ प्रेतशांति से होगी।
३ संतान होगी कमजोर।
४ अपने इष्टदेव की पूजा से।
५ नेमव्रत से होगी।
६ गया या पिहोए विधि से।
७ होकर नष्ट होने का भय है।
८ संतान की आशा छोड़ो।
९ सप्ताह श्रवण से होगी।

कुंआ खोदने का फल (२४)

१ कुंआ बनवाना शुभ है।
२ जल मीठा निकले।
३ जल स्वादु नहीं।
४ ठहरो अभी भय है।
५ जल कम होगा।
६ उत्तम जल है।
७ खर्च और हैरानी होगी।
८ जल दूर निकलेगा।
९ कुंआ अशुभ है।।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथिवार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग देवें शेष ३।७ बचे तो देवता की, २।८ बचे तो पितृबाधा और ६।४ बचे तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना। उदयाद् घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ता द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं बदेत् ॥ १ ॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति, क (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) र्का: (१२) नात्र जीवति ॥२॥

प्रश्न—जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ। मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥१॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः।

कार्य सिद्ध होगा या नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने। अशुभ वार में दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होती है। विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहना।

क्या यह बात सच है ?—प्रश्न काल के वारतात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़ कर वर्तमान तिथि से गुणा दो फिर उसे ४ से भाग देना शेष १।३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचें तो झूठी जानो।

देशान्तर से पत्र आवेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उसके द्वितीय तृतीय स्थान शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा, मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले। प्रश्न लग्न में बुध चन्द्र हों और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इसकी केवल गति घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर, पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ९४	मंगल ८०९
बुध ७०२	बृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुव		२०८५

अथ तिथिध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपदा ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी ३५७
पञ्चमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोदशी ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	अमावस्या १६६

अथ नक्षत्रध्रुवा ॥३॥

अश्वि. १७६	भरणी ६८३	कृत्ति. ३७०	रोहिणी ७७५	मृग. ६८२	आर्द्रा १४६	पुन. ५४०
पुष्य ६३४	आश्ले. १७०	मघा ७३	पू. फा ८५	उ. फा. १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा. ७३४	अनु. ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू. षा. ६१४	उ. षा. ६२३
अभि. ६८३	श्रवण ६५७	धनि. ५००	शत० ५६४	पू. भा. ३२६	उ. भा. १८३	रेवती ७२०

अथ मासध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशाख ६३	ज्येष्ठ ६५
आषाढ़ ६७	श्रावण ६९	भाद्र ७१
आश्वि ७३	कार्तिक ५१	मार्ग. ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गुन ६५

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥ ५ ॥

मेष ५२०	वृष ७६२	मिथुन ५१०
कर्क २१८	सिंह ८३०	कन्या २६०
तुला ५०३	वृश्चिक ७११	धनु २२४
मकर ५५४	कुम्भ २७०	मीन ५८६

अथ देश तथा नगरों की ध्रुवा ॥

कलकत्ता २४७	नागपुर १६६	आसाम ७९१	इटावा ८९०
हरिद्वार २७२	बीकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १३८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगून १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थ की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चांदी ७६०	तांबा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कास २४९	पत्थर १६३	मोती १४२
रुई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हेसियन ७३८	सूत १०३	तमाखू २४०	सुपारी २५२	लोह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड़ २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान. ७१२	गेहूँ २३२	मूग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसों ८५८	राहर ३३३	नीमक ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३२	बैल १६२	महिषी ६१२	भेड़ ६१८	हाथी ८३०	घड़ा ८३५

अथ तेजी-मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १ तेज	चन्द्र २ अतिमन्दा	भौम ३ तेज
राहु ४ अति तेज	बृहस्पति ५ मन्द	शनि ६ तेज
बुध ७ सम	केतु ८ तेज	शुक्र ९ तेज

अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति

जिस देश की जिस वस्तु की, जिस दिन तेजी मन्दी निकालनी हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवों का योग (जोड़) कर ९ का भाग देकर शेष से जिस दिन का विचारना है उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ में आठवें चक्र में देखकर तेजी मन्दी ज्ञात कर लेना।

उदाहरण—कलकत्ता में गत सं० २०१६ को चैत्र सुदी २ शुक्रवार को भरणी नक्षत्र में चांदी की तेजी मन्दी जाननी है तो कलकत्ते की ध्रुवा २४७, चैत्र की ६१, द्वितीया की ७१०, शुक्रवार की ८०८, भरणी नक्षत्र की ६८३, चान्दी की ७६०, सूर्यमीन राशि की ध्रुवा ५८६ है। इन सबका जोड़ ३८५५ हुआ। इसमें ९ के भाग देने से शेष ३ आया। अतः आठवें चक्र में देखा तो शुक्र से तीसरा चन्द्र आया। इसका फल वहीं पर अतिमन्दा लिखा है। विशेष अचूक तेजी मन्दी जानना हो तो हमारा ग्रन्थ "अर्घमार्त्तण्ड" मूल्य ११) देखें।

॥ लग्नसारिणी ॥ (पलभा ७।१२)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	२ ३८	२ ४५	२ ५२	२ ५९	३ ५	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३४	३ ४२	३ ५०	३ ५८	४ ६	४ १४	४ २२
वृषभ १	६ ३२	६ ४०	६ ४८	६ ५६	७ ४	७ १२	७ २०	७ २८	७ ३८	७ ४८	७ ५८	८ ८	८ १८	८ २८	८ ३८
मिथुन २	११ १७	११ २७	११ ३७	११ ४७	११ ५७	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३९	१२ ५०	१३ २	१३ १३	१३ २५	१३ ३६	१३ ४८
कर्क ३	१६ ५३	१७ ५	१७ १६	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २६	१८ ३८	१८ ५०	१९ १	१९ १३	१९ २५	१९ ३७
सिंह ४	२२ ४७	२२ ५९	२३ ११	२३ २३	२३ ३४	२३ ४६	२३ ५८	२४ १०	२४ २२	२४ ३३	२४ ४५	२४ ५७	२५ ८	२५ २०	२५ ३२
कन्या ५	२८ ३८	२८ ५०	२९ २	२९ १३	२९ २५	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० १२	३० २३	३० ३५	३० ४७	३० ५८	३१ १०	३१ २२
तुला ६	३४ २८	३४ ४०	३४ ५२	३५ ३	३५ १५	३५ २७	३५ ३८	३५ ५०	३६ २	३६ १४	३६ २६	३६ ३७	३६ ४९	३७ १	३७ १३
वृश्चि. ७	४० २३	४० ३५	४० ४७	४० ५९	४१ १०	४१ २२	४१ ३४	४१ ४६	४१ ५८	४२ ९	४२ २१	४२ ३२	४२ ४४	४२ ५५	४३ ७
धनु ८	४६ १२	४६ २४	४६ ३५	४६ ४७	४६ ५८	४७ १०	४७ २१	४७ ३३	४७ ४३	४७ ५३	४८ ३	४८ १३	४८ २३	४८ ३३	४८ ४३
मकर ९	५१ २२	५१ ३२	५१ ४२	५१ ५२	५२ २	५२ १२	५२ २२	५२ ३२	५२ ४०	५२ ४८	५२ ५६	५३ ४	५३ १२	५३ २०	५३ २८
कुम्भ १०	५५ ३८	५५ ४६	५५ ५४	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २६	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५५	५७ १	५७ ८	५७ १५	५७ २२
मीन ११	५९ १२	५९ १९	५९ २६	५९ ३३	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २७	० ३४	० ४१	० ४८

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष ०	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५५	५ ३	५ ११	५ १९	५ २७	५ ३५	५ ४३	५ ५१	५ ५९	६ ७	६ १५	६ २३	२०६
वृषभ १	८ ४८	८ ५८	९ ८	९ १८	९ २८	९ ३८	९ ४८	९ ५७	१० ७	१० १७	१० २७	१० ३७	१० ४७	१० ५७	११ ७	२४२
मिथुन २	१४ ०	१४ ११	१४ २३	१४ ३४	१४ ४६	१४ ५७	१५ ९	१५ २०	१५ ३२	१५ ४४	१५ ५५	१६ ७	१६ १८	१६ ३०	१६ ४१	२९९
कर्क ३	१९ ४९	२० १	२० १३	२० २३	२० ३६	२० ४८	२१ ०	२१ १२	२१ २४	२१ ३६	२१ ४८	२१ ५९	२२ ११	२२ २३	२२ ३५	३४७
सिंह ४	२५ ४३	२५ ५५	२६ ७	२६ १८	२६ ३०	२६ ४२	२६ ५३	२७ ५	२७ १७	२७ २८	२७ ४०	२७ ५२	२८ ३	२८ १५	२८ २७	३५६
कन्या ५	३१ ३३	३१ ४५	३१ ५७	३२ ८	३२ २०	३२ ३२	३२ ४३	३२ ५५	३३ ७	३३ १८	३३ ३०	३३ ४२	३३ ५३	३४ ५	३४ १७	३५०
तुला ६	३७ २५	३७ ३७	३७ ४९	३८ १	३८ १२	३८ २४	३८ ३६	३८ ४८	३९ ०	३९ १२	३९ २४	३९ ३५	३९ ४७	३९ ५९	४० ११	३५०
वृश्चि. ७	४३ १९	४३ ३०	४३ ४२	४३ ५३	४४ ५	४४ १६	४४ २८	४४ ३९	४४ ५१	४५ ३	४५ १४	४५ २६	४५ ३७	४५ ४९	४६ ०	३५६
धनु ८	४८ ५३	४९ ३	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५३	५० २	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४२	५० ५२	५१ २	५१ १२	३४७
मकर ९	५३ ३७	५३ ४५	५३ ५३	५४ १	५४ ९	५४ १७	५४ २५	५४ ३३	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५७	५५ ५	५५ १३	५५ २१	५५ २९	२९९
कुम्भ १०	५७ २९	५७ ३६	५७ ४३	५७ ५०	५७ ५६	५८ ३	५८ १०	५८ १७	५८ २४	५८ ३१	५८ ३८	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५८	५९ ५	२४२
मीन ११	० ५५	१ २	१ ९	१ १६	१ २२	१ २९	१ ३६	१ ४३	१ ५०	१ ५७	२ ४	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३१	२०६

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारिणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए। यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारिणी का कोष्ठक हुआ, इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारिणी में देखा तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि ५ अंश लिए। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्ध ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इन को ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्ध ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ॥

```
११) २ (०।१०।५५
    ६०
   ----
   १२०
   ११०
   ----
    १०
    ६०
   ----
   ६००
   ६०५
   ----
```

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्मलग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो, फिर सूर्य की राशि अंश प्रमाण लग्न सारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना। राशि अंश के नीचे स्पष्टसूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्ट युक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला

॥ दशमलग्न सारिणी ॥ (सर्वज्ञोपयोगी)

लङ्कोदयः | द्युदलं हि प्रपातयेत्। दशमस्य ... सारिणी ... सदाङ्गते ॥१॥

॥ दशमलग्न सारिणी ॥

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
वृषभ १	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२
मिथुन २	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६
	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५
कर्क ३	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३
सिंह ४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७
कन्या ५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५
तुला ६	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३७	३५	३५
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८
वृश्चि. ७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२
धनु ८	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५
मकर ९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३
कुम्भ १०	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७
मीन ११	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लग्नोदयः पलानि
मेष ०	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	०	१७	
वृषभ १	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
मिथुन २	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	३२३
	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
कर्क ३	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	३२३
	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
सिंह ४	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
कन्या ५	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	
तुला ६	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२७८
	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृश्चि. ७	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	२९९
	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
धनु ८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
मकर ९	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	३२३
	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
कुम्भ १०	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	
मीन ११	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	

नोट—हमारे यहां से समीपवर्ती जैसे चण्डीगढ़, अम्बाला, पटियाला, नाभा, लुधियाना, मोगा, शिमला, होशियारपुर, जालन्धर आदि स्थानों में स्वल्पान्तर होने के कारण चरान्तरसारणी से दिनमानादि साधन के बिना भी काम चल सकता है ॥

द्युदलं हि प्रपातयेत् । दशमस्य [illegible] सारिणीत-सुखांगने ॥१॥

अर्थः—सूर्योदयात् घट्यादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़ कर घटाना) । इसी दशम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मान कर इस दशमलग्नसारिणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है । कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है । दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है ॥

भावसाधनम्—विलग्नतूर्ये षड्भक्तं पंचवारं तनौ क्षिपेत् । एकद्वियुक्तास्ते व्यस्ता भावाः षट्षड्-युताः परे ॥२॥ अर्थः—चतुर्थभावमें लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भसन्धि होगी फिर उसी आरंभसंधि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होवेगा । इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थ भाव की आरंभसंधि तक चारों भाव हो जावेंगे । इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि से लग्न की विरामसन्धि तक १ से ५ पर्यंत केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचमभाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे । इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन में उपर्युक्त सन्धिसहित (६) छः ही भावों में (६) छः राशि युक्त करने से सन्धिसहित द्वादशभाव होते हैं ॥

अथ वर्षप्रवेश सारणीयम्

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मीन	राशयः
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दि. ल. प.
बृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	बृ	चं	रा. ल. प.

वर्षफल-साधनप्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्मसमय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेश का सामयिक गणित एक ही करण ग्रंथ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारिणी से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकारः—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकीचक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो. उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गत वर्षों में एक युक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्म राशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं परंतु राहु केतु को विपरीत जानना। फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर, भौम के वेध से शरीरपीड़ा होती है, शुभ ग्रहों के [illegible]

अथ हर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु. ५, श० १२. इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१।२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (चं०, बु०, शु०, श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिनके वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्रशत्रुज्ञान—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें में हों तो सम, १।४।७।१० वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५ वें ४५ कला, ३ रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५, और १७ वे पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्र राशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्नको न देखता होतो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो तो वह बल दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

"अथ ३२ सा श्री सूर्य यन्त्र विधान॥ अनार का कलम से हरिद्रा के साथ यंत्र को भूर्जपत्र पर अथवा कागज पर लिखे नीचे अपना मनोरथ अपना कार्य लिखें फिर उस यन्त्र को रुई की खड़ी फूल में बनाकर रविवार को ज्योत जगावे। फिर हरिद्रा की माला बनाकर बीजमन्त्र का ११०० ग्यारह सौ जप करें, जपमन्त्र—"ह्रीं हंसः" इस मन्त्र [illegible] श्री सूर्यनारायण की कृपा [illegible]

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्दादशा क्रमः			
शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	गुरु	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	धा.	भ्र.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टैं: टा. के लिए स्टैण्डर्ड अन्तर जो पृ० १२१-१२२ पर है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		३२°		३४°		३६°		३८°		४०°		४२°		४४°		४६°		उत्तर अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जनवरी	१	७। १	५। ७	७। ६	५। २	७।१०	४।५७	७।१६	४।५१	७।२२	४।४५	७।२८	४।३९	७।३५	४।३३	७।४२	४।२५	३	जुलाई
	७	७। २	५।११	७। ६	५। ७	७।११	५। १	७।१७	४।५६	७।२२	४।५१	७।२८	४।४५	७।३५	४।३८	७।४२	४।३१	९	
	१३	७। १	५।१६	७। ६	५।१२	७।१०	५। ७	७।१६	५। २	७।२१	४।५७	७।२७	४।५१	७।३३	४।४५	७।३९	४।३९	१५	
	१९	७। ०	५।२२	७। ४	५।१८	७। ८	५।१३	७।१३	५। ९	७।१८	५। ४	७।२४	४।५८	७।२९	४।५३	७।३६	४।४६	२२	
	२५	६।५८	५।२७	७। २	५।२३	७। ६	५।१९	७।१०	५।१५	७।१५	५।११	७।२०	५। ६	७।२५	५। ०	७।३०	४।५५	२८	
	३१	६।५५	५।३३	६।५८	५।२९	७। २	५।२६	७। ६	५।२२	७।१०	५।१८	७।१४	५।१४	७।१९	५। ९	७।२५	५। ४	४	अगस्त
फरवरी	६	६।५०	५।३८	६।५३	५।३५	६।५७	५।३२	७। ०	५।२९	७। ४	५।२५	७। ८	५।२१	७।१२	५।१७	७।१७	५।१३	१०	
	१२	६।४५	५।४४	६।४८	५।४१	६।५०	५।३८	६।५४	५।३५	६।५७	५।३२	७। १	५।२९	७। ४	५।२५	७। ८	५।२१	१६	
	१८	६।४०	५।४९	६।४२	५।४७	६।४४	५।४४	६।४७	५।४२	६।४९	५।३९	६।५२	५।३६	६।५५	५।३३	६।५८	५।३०	२२	
	२४	६।३३	५।५४	६।३५	५।५२	६।३७	५।५०	६।३९	५।४८	६।४१	५।४६	६।४३	५।४४	६।४६	५।४२	६।४८	५।३९	२९	
मार्च	२	६।२७	५।५८	६।२८	५।५७	६।२९	५।५६	६।३१	५।५४	६।३२	५।५३	६।३४	५।५१	६।३६	५।४९	६।३८	५।४८	४	सितम्बर
	८	६।१९	६। ३	६।२०	६। २	६।२१	६। १	६।२२	६। ०	६।२३	५।५९	६।२४	५।५८	६।२५	५।५७	६।२७	५।५६	१०	
	१४	६।१२	६। ७	६।१३	६। ७	६।१३	६। ७	६।१३	६। ६	६।१४	६। ६	६।१४	६। ५	६।१५	६। ५	६।१५	६। ४	१६	
	२०	६। ४	६।११	६। ५	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	२२	
	२६	५।५७	६।१६	५।५६	६।१६	५।५६	६।१७	५।५५	६।१७	५।५४	६।१८	५।५४	६।१८	५।५३	६।१९	५।५२	६।२०	२८	
अप्रैल	२	५।४८	६।२०	५।४७	६।२१	५।४५	६।२२	५।४४	६।२४	५।४३	६।२५	५।४१	६।२७	५।४०	६।२८	५।३९	६।२९	६	अक्टूबर
	८	५।४०	६।२४	५।३९	६।२६	५।३७	६।२८	५।३५	६।२९	५।३४	६।३१	५।३२	६।३३	५।३०	६।३५	५।२७	६।३७	१२	
	१४	५।३३	६।२८	५।३१	६।३०	५।२९	६।३३	५।२७	६।३५	५।२४	६।३७	५।२२	६।३९	५।१९	६।४२	५।१६	६।४५	१७	
	२०	५।२६	६।३३	५।२३	६।३५	५।२१	६।३७	५।१८	६।४०	५।१५	६।४३	५।१२	६।४७	५। ९	६।५०	५। ६	६।५३	२३	
	२६	५।१९	६।३७	५।१७	६।४०	५।१३	६।४३	५।१०	६।४६	५। ७	६।४९	५। ३	६।५३	५। ०	६।५७	४।५५	७। १	२९	
मई	१	५।१४	६।४०	५।११	६।४३	५। ८	६।४७	५। ४	६।५१	५। ०	६।५४	४।५६	६।५८	४।५२	७। ३	४।४७	७। ८	३	नवम्बर
	७	५। ९	६।४५	५। ५	६।४८	५। २	६।५२	४।५८	६।५६	४।५३	७। ०	४।४९	७। ५	४।४४	७।१०	४।३९	७।१५	९	
	१३	५। ४	६।४९	५। ०	६।५३	४।५६	६।५७	४।५२	७। २	४।४७	७। ६	४।४२	७।१२	४।३७	७।१७	४।३१	७।२३	१५	
	१९	५। ०	६।५३	४।५६	६।५७	४।५२	७। २	४।४७	७। ७	४।४२	७।१२	४।३६	७।१७	४।३०	७।२३	४।२४	७।३०	२०	
	२५	४।५७	६।५७	४।५३	७। २	४।४७	७। ७	४।४३	७।१२	४।३७	७।१७	४।३१	७।२३	४।२५	७।२९	४।१८	७।३६	२६	
	३१	४।५५	७। ०	४।५०	७। ५	४।४५	७।११	४।४०	७।१६	४।३४	७।२२	४।२८	७।२८	४।२१	७।३५	४।१४	७।४२	२	दिसम्बर
जून	६	४।५४	७। ४	४।४९	७। ९	४।४३	७।१४	४।३८	७।२०	४।३२	७।२६	४।२५	७।३२	४।१८	७।३९	४।१०	७।४७	७	
	१२	४।५३	७। ६	४।४८	७।१२	४।४२	७।१७	४।३७	७।२३	४।३१	७।२९	४।२४	७।३६	४।१७	७।४३	४। ९	७।५१	१३	
	१८	४।५४	७। ८	४।४८	७।१४	४।४३	७।१९	४।३७	७।२५	४।३१	७।३१	४।२४	७।३९	४।१७	७।४६	४। ९	७।५४	१९	
	२४	४।५५	७।१०	४।५०	७।१५	४।४४	७।२०	४।३८	७।२६	४।३२	७।३३	४।२५	७।४०	४।१८	७।४७	४।१०	७।५५	२४	
	३०	४।५७	७।१०	४।५२	७।१५	४।४६	७।२१	४।४०	७।२७	४।३४	७।३३	४।२७	७।४०	४।२०	७।४७	४।१२	७।५५	३०	

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टै. टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो पृ० १२१-१२२ पर है, चिह्न के विपरीत जोड़ अथवा घटाव

उत्तर अक्षांश		३२°		३४°		३६°		३८°		४०°		४२°		४४°		४६°		दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.	मास
जुलाई	६	५।०	७।१०	४।५४	७।१५	४।५९	७।३०	४।४३	७।२६	४।३७	७।३२	४।३१	७।३८	४।२४	७।४५	४।१६	७।५३	४	जनवरी
	१२	५।३	७।८	४।५८	७।१३	४।५२	७।१९	४।४७	७।२४	४।४१	७।२९	४।३५	७।३६	४।२८	७।४२	४।२१	७।५०	१०	
	१८	५।६	७।६	५।१	७।११	४।५७	७।१६	४।५१	७।२१	४।४६	७।२६	४।४०	७।३२	४।३३	७।३८	४।२६	७।४५	१५	
	२४	५।१०	७।३	५।५	७।७	५।०	७।११	४।५६	७।१७	४।५१	७।२२	४।४५	७।२७	४।३९	७।३३	४।३३	७।३९	२१	
	३०	५।१४	६।५९	५।१०	७।३	५।६	७।७	५।१	७।११	४।५६	७।१६	४।५१	७।२२	४।४६	७।२७	४।४०	७।३२	२७	
अगस्त	५	५।१८	६।५४	५।१४	६।५७	५।१०	७।१	५।६	७।५	५।२	७।१०	४।५७	७।१४	४।५२	७।१९	४।४७	७।२४	१	फरवरी
	११	५।२२	६।४८	५।१८	६।५२	५।१५	६।५५	५।११	६।५९	५।७	७।२	५।३	७।६	४।५९	७।११	४।५४	७।१६	७	
	१७	५।२६	६।४२	५।२३	६।४५	५।२०	६।४८	५।१६	६।५१	५।१३	६।५४	५।९	६।५८	५।६	७।२	५।१	७।६	१३	
	२३	५।२९	६।३५	५।२७	६।३८	५।२४	६।४१	५।२२	६।४३	५।१९	६।४६	५।१६	६।४९	५।१३	६।५२	५।९	६।५५	१८	
	२९	५।३३	६।२८	५।३१	६।३०	५।२९	६।३२	५।२७	६।३४	५।२४	६।३७	५।२२	६।३९	५।१९	६।४२	५।१६	६।४५	२४	
सितम्बर	४	५।३७	६।२१	५।३५	६।२२	५।३४	६।२४	५।३२	६।२५	५।३०	६।२७	५।२८	६।२९	५।२६	६।३१	५।२४	६।३३	२	मार्च
	१०	५।४१	६।१३	५।४०	६।१४	५।३९	६।१६	५।३७	६।१६	५।३६	६।१८	५।३४	६।१९	५।३३	६।२०	५।३१	६।१२	८	
	१६	५।४४	६।५	५।४४	६।६	५।४३	६।६	५।४२	६।७	५।४२	६।८	५।४१	६।८	५।४०	६।९	५।३९	६।२०	१४	
	२२	५।४८	५।५७	५।४८	५।५७	५।४८	५।५८	५।४७	५।५८	५।४७	५।५८	५।४७	५।५८	५।४७	५।५८	५।४६	५।५८	२०	
	२८	५।५२	५।४९	५।५२	५।४९	५।५३	५।४९	५।५३	५।४८	५।५३	५।४८	५।५३	५।४८	५।५४	५।४७	५।५४	५।४७	२६	
अक्तूबर	३	५।५५	५।४३	५।५६	५।४२	५।५६	५।४१	५।५७	५।४१	५।५८	५।४०	५।५९	५।३९	६।०	५।३८	६।१	५।३७	३०	
	९	५।५९	५।३५	६।०	५।३४	६।१	५।३३	६।३	५।३२	६।४	५।३०	६।५	५।२९	६।७	५।२८	६।८	५।२६	५	अप्रैल
	१५	६।३	५।२८	६।५	५।२६	६।७	५।२५	६।८	५।२३	६।१०	५।२१	६।१२	५।१९	६।१४	५।१७	६।१६	५।१५	१२	
	२१	६।८	५।२१	६।१०	५।१९	६।१२	५।१७	६।१४	५।१५	६।१७	५।१२	६।१९	५।१०	६।२२	५।७	६।२५	५।४	१८	
	२७	६।१२	५।१५	६।१५	५।१३	६।१८	५।१०	६।२०	५।७	६।२३	५।४	६।२७	५।१	६।३०	४।५८	६।३३	४।५४	२४	
नवम्बर	२	६।१७	५।१०	६।२०	५।७	६।२३	५।३	६।२६	५।०	६।३०	४।५७	६।३३	४।५३	६।३७	४।४९	६।४२	४।४५	३०	
	८	६।२२	५।५	६।२६	५।२	६।२९	४।५८	६।३३	४।५४	६।३७	४।५०	६।४१	४।४३	६।४५	४।४२	६।५०	४।३७	६	मई
	१४	६।२८	५।१	६।३१	४।५७	५।३५	४।५३	६।४९	४।४९	६।४४	४।४५	६।४८	४।४०	६।५३	४।३५	६।५९	४।३०	१२	
	२०	६।३३	४।५८	६।३७	४।५४	६।४१	४।५०	६।४६	४।४५	६।५१	४।४०	६।५६	४।३५	७।१	४।३०	७।७	४।२४	१९	
	२६	६।३८	४।५६	६।४३	४।५२	६।४७	४।४७	६।५२	४।४२	६।५७	४।३७	७।३	४।३२	७।९	४।२६	७।१५	४।१९	२५	
दिसम्बर	२	६।४३	४।५५	६।४८	४।५१	६।५२	४।४६	६।५८	४।४१	७।३	४।३५	७।९	४।२९	७।१६	४।२३	७।२२	४।१६	३१	
	८	६।४८	४।५६	६।५३	४।५१	६।५८	४।४६	७।३	४।४०	७।९	४।३५	७।१५	४।२९	७।२२	४।२२	७।२९	४।१५	७	जून
	१४	६।५२	४।५७	६।५०	४।५२	७।२	४।४७	७।८	४।४१	७।१४	४।३५	७।२१	४।२९	७।२७	४।२२	७।३४	४।१५	१३	
	२०	६।५६	४।५९	७।०	४।५४	७।५	४।४९	७।१२	४।४३	७।१८	४।३७	७।२४	४।३१	७।३१	४।२४	७।३८	४।१७	१९	
	२६	६।५९	[illegible]	७।४	[illegible]	७।९	[illegible]	७।१४	४।४५	७।२०	४।४१	७।२७	४।३५	७।३४	४।२८	७।४१	४।२०	२६	

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टैः टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो पृ० १२१-१२२ पर है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटावें

उत्तर अक्षांश		४८°		५०°		५२°		५४°		५६°		५८°		६०°		द. अक्षांश संस्कार	दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त			
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	मिनट	ता.	मास
जनवरी	१	७।५०	४।१७	७।५९	४। ९	८। ८	३।५९	८।१९	३।४८	८।३२	३।३६	८।४६	३।२१	९। ३	३। ५	०	३	जुलाई
	७	७।४९	४।२४	७।५८	४।१६	८। ७	४। ६	८।१८	३।५६	८।३०	३।४४	८।४३	३।३०	८।५९	३।१४	– १	९	
	१३	७।४७	४।३१	७।५५	४।२४	८। ४	४।१५	८।१४	४। ५	८।२५	३।५४	८।३८	३।४१	८।५२	३।२६	– ३	१५	
	१९	७।४२	४।४०	७।५०	४।३२	७।५९	४।२४	८। ८	४।१५	८।१८	४। ५	८।३०	३।५३	८।४३	३।४०	– ४	२२	
	२५	७।३७	४।४९	७।४४	४।४२	७।५२	४।३५	८। ०	४।२६	८। ९	४।१७	८।२०	४। ७	८।३२	३।५५	– ६	२८	
	३१	७।२९	४।५८	७।३५	४।५२	७।४२	४।४६	७।५०	४।३८	७।५८	४।३०	८। ७	४।२१	८।१८	४।१०	– ८	४	अगस्त
फरवरी	६	७।२१	५। ८	७।२६	५। ३	७।३२	४।५७	७।३९	४।५०	७।४६	४।४३	७।५४	४।३५	८। ३	४।२६	– ९	१०	
	१२	७।१२	५।१७	७।१६	५।१३	७।२१	५। ८	७।२८	५। २	७।३४	४।५६	७।४०	४।५०	७।४८	४।४२	–१०	१६	
	१८	७। २	५।२७	७। ६	५।२३	७।१०	५।१९	७।१५	५।१४	७।२०	५। ९	७।२६	५। ४	७।३२	४।५८	–११	२२	
	२४	६।५१	५।३६	६।५४	५।३३	६।५७	५।३०	७। २	५।२६	७। ६	५।२२	७।१०	५।१८	७।१५	५।१३	–१२	२९	
मार्च	२	६।४०	५।४६	६।४२	५।४३	६।४४	५।४१	६।४८	५।३८	६।५१	५।३५	६।५४	५।३२	६।५८	५।२८	–१३	४	सितम्बर
	८	६।२८	५।५५	६।२९	५।५३	६।३१	५।५२	६।३३	५।५०	६।३५	५।४८	६।३७	५।४६	६।४०	५।४४	–१४	१०	
	१४	६।१६	६। ४	६।१७	६। ३	६।१८	६। २	६।१९	६। १	६।२०	६। ०	६।२१	५।५९	६।२२	५।५८	–१४	१६	
	२०	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१३	६। ४	६।१२	६। ४	६।१२	६। ४	६।१३	६। ४	६।१३	–१५	२२	
	२६	५।५१	६।२१	५।५०	६।२२	५।४९	६।२३	५।४९	६।२४	५।४८	६।२५	५।४७	६।२६	५।४६	६।२८	–१५	२८	
अप्रैल	२	५।३७	६।३१	५।३५	६।३३	५।३३	६।३५	५।३२	६।३७	५।३०	६।३९	५।२७	६।४२	५।२४	६।४५	–१५	६	अक्तूबर
	८	५।२५	६।४०	५।२२	६।४२	५।२०	६।४५	५।१७	६।४८	५।१४	६।५१	५।१०	६।५५	५। ६	६।५९	–१५	१२	
	१४	५।१३	६।४८	५।१०	६।५२	५। ६	६।५६	५। ३	६।५९	४।५९	७। ३	४।५४	७। ८	४।४८	७।१४	–१५	१७	
	२०	५। २	६।५७	४।५८	७। १	४।५३	७। ६	४।४९	७।१०	४।४४	७।१६	४।३८	७।२२	४।३०	७।२९	–१५	२३	
	२६	४।५१	७। ६	४।४६	७।११	४।४१	७।१६	४।३५	७।२१	४।२९	७।२८	४।२२	७।३५	४।१३	७।४४	–१४	२९	
मई	१	४।४२	७।१३	४।३७	७।१८	४।३१	७।२४	४।२५	७।३०	४।१७	७।३८	४। ९	७।४६	३।५९	७।५६	–१३	३	नवम्बर
	७	४।३३	७।२१	४।२७	७।२७	४।२०	७।३४	४।१३	७।४१	४। ४	७।५०	३।५४	८। ०	३।४३	८।११	–१३	९	
	१३	४।२४	७।२९	४।१७	७।३६	४।१०	७।४४	४। २	७।५२	३।५२	८। २	३।४१	८।१३	३।२८	८।२५	–१२	१५	
	१९	४।१७	७।३७	४। ९	७।४५	४। १	७।५३	३।५२	८। २	३।४१	८।१३	३।२९	८।२५	३।१४	८।३९	–११	२०	
	२५	४।११	७।४४	४। २	७।५२	३।५३	८। २	३।४३	८।११	३।३१	८।२३	३।१८	८।३६	३। २	८।५२	–१०	२६	
	३१	४। ६	७।५०	३।५७	७।५९	३।४७	८। ९	३।३६	८।१९	३।२४	८।३२	३। ९	८।४७	२।५१	९। ४	– ८	२	दिसम्बर
जून	६	४। २	७।५५	३।५३	८। ५	३।४३	८।१५	३।३१	८।२६	३।१८	८।४०	३। २	८।५५	२।४३	९।१४	– ७	७	
	१२	४। ०	८। ०	३।५१	८। ९	३।४०	८।२०	३।२८	८।३२	३।१४	८।४६	२।५७	९। २	२।३८	९।२२	– ६	१३	
	१८	४। ०	८। २	३।५०	८।१२	३।३९	८।२३	३।२७	८।३५	३।१२	८।३९	२।५६	९। ६	२।३५	९।२६	– ४	१९	
	२४	४। १	८। ४	३।५१	८।१३	३।४०	८।२४	३।२८	८।३६	३।१४	८।५१	२।५७	९। ८	२।३६	९।२८	– ३	२४	
	३०	४। ४	८। ३	३।५४	८।१३	३।४३	८।२४	३।३१	८।३६	३।१७	८।५०	३। ०	९। ६	२।४०	९।२६	– १	३०	

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टैः टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो पृ० १२१-१२२ पर है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटाएं

उत्तर अक्षांश		४८°		५०°		५२°		५४°		५६°		५८°		६०°		द. अक्षांश संस्कार	दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त			
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	मिनट	ता.	मास
जुलाई	६	४। ८	८। १	३।५८	८।११	३।४८	८।२१	३।३६	८।३३	३।२२	८।४६	३। ६	९। २	२।४७	९।२१	०	४	जनवरी
	१२	४।१३	७।५७	४। ४	८। ७	३।५४	८।१६	३।४२	८।२८	३।३०	८।४१	३।१४	८।५६	२।५७	९।१३	+ २	१०	
	१८	४।१९	७।५३	४।११	८। १	४। १	८।१०	३।५०	८।२१	३।३८	८।३३	३।२४	८।४७	३। ८	९। ३	+ ३	१५	
	२४	४।२६	७।४६	४।१८	७।५४	४। ९	८। ३	३।५९	८।१३	३।४८	८।२४	३।३६	८।५६	३।२१	८।५१	+ ५	२१	
	३०	४।३३	७।३९	४।२६	७।४६	४।१८	७।५४	४। ९	८। ३	३।५८	८।१३	३।४७	८।२४	३।३४	८।३७	+ ६	२७	
अगस्त	५	४।४१	७।३०	४।३४	७।३७	४।२७	७।४३	४।१९	७।५२	४।१०	८। १	४। ०	८।११	३।४८	८।२२	+ ८	१	फरवरी
	११	४।४९	७।२१	४।४३	७।२६	४।३७	७।३२	४।२९	७।४०	४।२२	७।४८	४।१३	७।५६	४। ३	८। ६	+ ९	७	
	१७	४।५७	७।१०	४।५२	७।१५	४।४७	७।२०	४।३८	७।२७	४।३१	७।३४	४।२४	७।४१	४।१५	७।४९	+ १०	१३	
	२३	५। ५	६।५९	४।५९	७। ३	४।५६	७। ८	४।५१	७।१४	४।४५	७।१९	४।३९	७।२५	४।३२	७।३२	+ ११	१८	
	२९	५।१३	६।४८	५। ८	६।५१	५। ६	६।५४	५। १	६।५९	४।५७	६। ४	४।५२	६। ९	४।४६	६।१४	+ १२	२४	
सितम्बर	४	५।२२	६।३६	५।१९	६।३८	५।१६	६।४१	५।१२	६।४५	५। ९	६।४८	५। ५	६।५२	५। ०	६।५६	+ १३	२	मार्च
	१०	५।३०	६।२३	५।२८	६।२५	५।२६	६।२७	५।२३	६।३०	५।२०	६।३३	५।१८	६।३५	५।१४	६।३८	+ १४	८	
	१६	५।३८	६।११	५।३७	६।१२	५।३६	६।१३	५।३४	६।१५	५।३२	६।१७	५।३०	६।१८	५।२८	६।२०	+ १४	१४	
	२२	५।४६	५।५९	५।४६	५।५९	५।४५	५।५९	५।४४	६। ०	५।४४	६। १	५।४३	६। १	५।४३	६। २	+ १५	२०	
	२८	५।५५	५।४६	५।५५	५।४६	५।५५	५।४५	५।५५	५।४५	५।५६	५।४५	५।५६	५।४४	५।५७	५।४४	+ १५	२६	
अक्टूबर	३	६। १	५।३६	६। ३	५।३५	६। ४	५।३४	६। ४	५।३३	६। ६	५।३२	६। ७	५।३०	६। ९	५।२८	+ १५	३०	
	९	६।१०	५।२४	६।१२	५।२२	६।१४	५।२०	६।१५	५।१८	६।१८	५।१६	६।२०	५।१४	६।२३	५।१०	+ १५	५	अप्रैल
	१५	६।१९	५।१२	६।२१	५।१०	६।२४	५। ७	६।२७	५। ४	६।३०	५। १	६।३४	४।५७	६।३८	४।५३	+ १५	१२	
	२१	६।२८	५। १	६।३१	४।५७	६।३५	४।५४	६।३८	४।५०	६।४२	४।४६	६।४७	४।४१	६।५३	४।३६	+ १५	१८	
	२७	६।३७	४।५०	६।४१	४।४६	६।४५	४।४२	६।५०	४।३७	६।५५	४।३२	७। १	४।२६	७। ८	४।१९	+ १४	२४	
नवम्बर	२	६।४६	४।४१	६।५१	४।३६	६।५६	४।३०	७। १	४।२५	७। ८	४।१८	७।१५	४।११	७।२३	४। ३	+ १४	३०	
	८	६।५५	४।३२	७। १	४।२६	७। ७	४।२०	७।१३	४।१४	७।२०	४। ६	७।२९	३।५८	७।३९	३।४८	+ १३	६	मई
	१४	७। ४	४।२४	७।११	४।१८	७।१८	४।११	७।२५	४। ४	७।३३	३।५५	७।४३	३।४५	७।५४	३।३४	+ १२	१२	
	२०	७।१३	४।१७	७।२०	४।१०	७।२८	४। ३	७।३६	३।५५	७।४६	३।४५	७।५६	३।३४	८। ९	३।२१	+ ११	१९	
	२६	७।२२	४।१२	७।२९	४। ५	७।३८	३।५६	७।४७	३।४७	७।५७	३।३७	८। ९	३।२५	८।२३	३।११	+ १०	२५	
दिसम्बर	२	७।३०	४। ९	७।३८	४। १	७।४७	३।५२	७।५६	३।४२	८। ८	३।३१	८।२१	३।१८	८।३६	३। २	+ ८	३१	
	८	७।३७	४। ७	७।४५	३।५९	७।५५	३।४९	८। ५	३।३९	८।१७	३।२७	८।३०	३।१३	८।४७	२।५६	+ ७	७	जून
	१४	७।४२	४। ७	७।५१	३।५८	८। १	३।४८	८।११	३।३८	८।२४	३।२५	८।३८	३।१०	८।५६	२।५३	+ ५	१३	
	२०	७।४६	४। ८	७।५५	४। ०	८। ५	३।५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९। १	[illegible]	[illegible]	२।५४	+ ४	१९	

ध्यान दीजिये-इस सारिणी में दिये गये ... शहरों के स्टैण्डर्ड अन्तर पाकिस्तानी

पाकिस्तान बनने ... काल के लिए कराची लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि स्टै.

ध्यान दीजिए—इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टै. टा. एवं लोकल (स्थानीय) टाईम का अन्तर है। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तर भिन्न था।

देशान्तर—रोपड़ नगर से अभीष्ट नगर का पूर्वापरान्तर मिनटों में
स्टैण्डर्ड अन्तर—वर्तमान स्टैण्डर्ड टाईम का स्थानीय टाईम से अन्तर

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२ अंश ३० कला के अंशादि अन्तर को ४से गुणा करने पर प्राप्त होगा।*

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं क	अं क.	मि. से.	मिनट से.
अकोला (सी.पी.)	२०।४२	७७। २	पू. ७	−२१।५२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	प. ७	−३१।१२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	प. १७	−१०।५२
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	प. ७	−३०।४८
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	पू. १	−२२।३२
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	पू. २३	− १। ४
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	प. १३	−११।२०
अलवर	२७।३४	७६।३८	पू. १	−२३।२८
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	प. ७	−३०।४८
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	प. १५	−३९।२८
अलीगढ़ (यू.पी.)	२७।५४	७८। ६	पू. ६	−१७।३६
आगरा (,,)	२७।१०	७८। ५	प. ६	−१७।४०
आजमगढ़ (")	२६। ५	८३।१२	पू. २७	+ २।४८
आबू	२४।४०	७२।४५	प. १५	−३९। ०
इटावा	२६।४७	७९। २	प. १०	−१३।५२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	प. ३	−२६।४०
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	प. ३	−२७। ८
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	प. ११	−३५।१२
एलिचपुर (सी.पी.)	२१।१८	७७।३३	पू. ४	−१९।४८
औरंगाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	प ४	−२८।२८
कठुआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	प. ४	−२७।३६
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	प. ४	−२८।२०
करनाल	२९।४२	७७। २	पू. २	−२१।५२
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	प. ३८	−३१।४४
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	पू. ४८	+२३।३६
काठमाण्डू (नैपा.)	२७।४२	८५।१२	पू. ३५	+१०।४८
कानपुर	२६।२७	८०।२४	पू. १६	− ८।२४
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	प. २०	−१३।३६
काशी	२५।२०	८३। ०	पू. २६	+ २। ०
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	प. १	−२४।४८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	प. १०	−३४।२४
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	प. १	−२२।४८

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं क.	अं क.	मि	मि से
कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	प. ४	−१९।४४
कुम्भकोणम	१०।५८	७९।२५	प १२	−१२।२०
कोटा (राज)	२५।१०	७५।५२	प ३	−२६।३२
कोलम्बो (सीलोन)	६।५५	७९।५५	प १८	−१०।१६
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	प ९	−३२।५६
कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	प १	−२८।५२
खंभात	२२।१९	७२।३६	प १६	−३९।३६
गया	२४।४९	८५। १	पू ६	+१०। ४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	प. ७	−१३।२०
गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	पू २८	+ ४।२०
गिलगित	३५।५५	७४।२२	प. ९	−३३।३२
गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	प. १०	− ३।४०
गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	प. ९	− ३। ४
गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	प. ४	−२८।१२
गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	पू २८	+ ३।३६
गोवा	१५।३०	७३।५७	प. १०	−३४।१२
चम्बा	३२।२९	७६।१०	प. १	−२५।२०
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	पू. १	−२२।३२
चीरापूञ्जी	२५।१७	९१।४७	पू. ६१	+ ३७। ८
छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	पू. १३	−११।२८
छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	पू. ३३	+ ८।४४
जलपाईगुड़ी	२६।३२	८८।४६	पू. ४९	+२५। ४
जम्मू	३२।४४	७४।५४	प. ६	−३०।२४
जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	पू. १४	−१०। ४
जयपुर	२६।५५	७५।५२	प. ३	−२६।३२
जालन्धर	३१।१९	७५।१८	प. ५	−२८।४८
जामनगर	२२।२७	७०। ७	प. २६	−४९।३२
जीन्द	२९।१९	७६।२३	प. १	−२४।२८
जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	प. २४	−४७।३६
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	प. २२	−४६।१२
जोधपुर	२६।१८	७३। ४	प. १६	−३७।४४
जौनपुर	२५।४६	८२।४४	प २५	+ ०।५६

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं क	अं क.	मि.	मि. से
झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	प १	−२५।१२
झांसी	२५।२७	७८।३३	पू. ८	−१५।१२
झेलम (पा)	३२।३५	७३।४७	प ११	− ८।५२
ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	पू. २	−२२। ०
टोंक (राज)	२६।११	७५।५०	प. ३	−२६।४०
डिबाई	२८।१२	७८।१५	पू. ७	−१७। ०
डेराइस्माइलखां (पा)	३१।५१	७०।५६	प. २२	−१६।१६
डेरागाजीखां (पा)	३०। ४	७०।४९	प. २३	−१६।४४
ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	प.	+ १।४४
तलागंग	३२।५६	७२।२८	प १६	−४०। ८
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	प. ९	−१४।५६
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	पू. ३८	+ १३।४
द्वारिका	२२।१४	६९। १	प. ३०	−५३।५६
दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	पू. ४७	+ २३।१
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	पू. ३	−२१।१२
देहरादून	३०।१९	७८। ४	पू. ६	−१७।४४
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	पू. ६	−१८।२
नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	प. १४	−३८।२०
नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	प. ७	−३०।५६
नागपुर	२१। ९	७९। ९	पू. ११	−१३।२४
नाभा	३०।२५	७६। ९	प. १	−२५।२४
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	प. ११	−३४।३२
नासिक	२०। २	७३।५०	प. ११	−३४।४०
नैनीताल	२९।२३	७९।३०	प. १२	−१२। ०
पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	पू. ३५	+१०।५२
पटियाला	३०।२०	७६।२५	प. १	−२४।२०
पठानकोट	३२।१७	७५।४२	प. ३	−२७।१२
प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	पू. २२	− २।२४
पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	पू. १४	−१०।२८
पुन्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	प. ९	−३३।२८
पूना	१९। ०	७२।५५	प. १४	−३८।२०
पेशावर (पा.)	३४। २	७१।३७	प. २०	−१३।३२

सूर्योदय एवं सूर्यास्त (बिम्ब शीर्ष दृश्य) स्थानीय काल में

स्टैः टा. के लिये स्टैण्डर्ड अन्तर जो पृ० १२१-१२२ पर है, चिह्न के विपरीत जोड़ें अथवा घटाएं

उत्तर अक्षांश		४८°		५०°		५२°		५४°		५६°		५८°		६०°		द. अक्षांश संस्कार	दक्षिण अक्षांश	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त			
मास	ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	मिनट	ता.	मास
जुलाई	६	४। ८	८। १	३।५८	८।११	३।४८	८।२१	३।३६	८।३३	३।२२	८।४६	३। ६	९। २	२।४७	९।२१	०	४	जनवरी
	१२	४।१३	७।५७	४। ४	८। ७	३।५४	८।१६	३।४२	८।२८	३।३०	८।४१	३।१४	८।५६	२।५७	९।१३	+ २	१०	
	१८	४।१९	७।५३	४।११	८। १	४। १	८।१०	३।५०	८।२१	३।३८	८।३३	३।२४	८।४७	३। ८	९। ३	+ ३	१५	
	२४	४।२६	७।४६	४।१८	७।५४	४। ९	८। ३	३।५९	८।१३	३।४८	८।२४	३।३६	८।५६	३।२१	८।५१	+ ५	२१	
	३०	४।३३	७।३९	४।२६	७।४६	४।१८	७।५४	४। ९	८। ३	३।५८	८।१३	३।४७	८।२४	३।३४	८।३७	+ ६	२७	
अगस्त	५	४।४१	७।३०	४।३४	७।३७	४।२७	७।४३	४।१९	७।५२	४।१०	८। १	४। ०	८।११	३।४८	८।२२	+ ८	१	फरवरी
	११	४।४९	७।२१	४।४३	७।२६	४।३७	७।३२	४।२९	७।४०	४।२२	७।४८	४।१३	७।५६	४। ३	८। ६	+ ९	७	
	१७	४।५७	७।१०	४।५२	७।१५	४।४७	७।२०	४।३८	७।२७	४।३१	७।३४	४।२४	७।४१	४।१५	७।४९	+ १०	१३	
	२३	५। ५	६।५९	४।५९	७। ३	४।५६	७। ८	४।५१	७।१४	४।४५	७।१९	४।३९	७।२५	४।३२	७।३२	+ ११	१८	
	२९	५।१३	६।४८	५। ८	६।५१	५। ६	६।५४	५। १	६।५९	४।५७	७। ४	४।५२	७। ९	४।४६	७।१४	+ १२	२४	
सितम्बर	४	५।२२	६।३६	५।१९	६।३८	५।१६	६।४१	५।१२	६।४५	५। ९	६।४८	५। ५	६।५२	५। ०	६।५६	+ १३	२	मार्च
	१०	५।३०	६।२३	५।२८	६।२५	५।२६	६।२७	५।२३	६।३०	५।२०	६।३३	५।१८	६।३५	५।१४	६।३८	+ १४	८	
	१६	५।३८	६।११	५।३७	६।१२	५।३६	६।१३	५।३४	६।१५	५।३२	६।१७	५।३०	६।१८	५।२८	६।२०	+ १४	१४	
	२२	५।४६	५।५९	५।४६	५।५९	५।४५	५।५९	५।४४	६। ०	५।४४	६। १	५।४३	६। १	५।४३	६। २	+ १५	२०	
	२८	५।५५	५।४६	५।५५	५।४६	५।५५	५।४५	५।५५	५।४५	५।५६	५।४५	५।५६	५।४४	५।५७	५।४४	+ १५	२६	
अक्तूबर	३	६। १	५।३६	६। ३	५।३५	६। ४	५।३४	६। ४	५।३३	६। ६	५।३२	६। ७	५।३०	६। ९	५।२८	+ १५	३०	
	९	६।१०	५।२४	६।१२	५।२२	६।१४	५।२०	६।१५	५।१८	६।१८	५।१६	६।२०	५।१४	६।२३	५।१०	+ १५	५	अप्रैल
	१५	६।१९	५।१२	६।२१	५।१०	६।२४	५। ७	६।२७	५। ४	६।३०	५। १	६।३४	४।५७	६।३८	४।५३	+ १५	१२	
	२१	६।२८	५। १	६।३१	४।५७	६।३५	४।५४	६।३८	४।५०	६।४२	४।४६	६।४७	४।४१	६।५३	४।३६	+ १५	१८	
	२७	६।३७	४।५०	६।४१	४।४६	६।४५	४।४२	६।५०	४।३७	६।५५	४।३२	७। १	४।२६	७। ८	४।१९	+ १४	२४	
नवम्बर	२	६।४६	४।४१	६।५१	४।३६	६।५६	४।३०	७। १	४।२५	७। ८	४।१८	७।१५	४।११	७।२३	४। ३	+ १४	३०	
	८	६।५५	४।३२	७। १	४।२६	७। ७	४।२०	७।१३	४।१४	७।२०	४। ६	७।२९	३।५८	७।३९	३।४८	+ १३	६	मई
	१४	७। ४	४।२४	७।११	४।१८	७।१८	४।११	७।२५	४। ४	७।३३	३।५५	७।४३	३।४५	७।५४	३।३४	+ १२	१२	
	२०	७।१३	४।१७	७।२०	४।१०	७।२८	४। ३	७।३६	३।५५	७।४६	३।४५	७।५६	३।३४	८। ९	३।२१	+ ११	१९	
	२६	७।२२	४।१२	७।२९	४। ५	७।३८	३।५६	७।४७	३।४७	७।५७	३।३७	८। ९	३।२५	८।२३	३।११	+ १०	२५	
दिसम्बर	२	७।३०	४। ९	७।३८	४। १	७।४७	३।५२	७।५६	३।४२	८। ८	३।३१	८।२१	३।१८	८।३६	३। २	+ ८	३१	
	८	७।३७	४। ७	७।४५	३।५९	७।५५	३।४९	८। ५	३।३९	८।१७	३।२७	८।३०	३।१३	८।४७	२।५६	+ ७	७	जून
	१४	७।४२	४। ७	७।५१	३।५८	८। १	३।४८	८।११	३।३८	८।२४	३।२५	८।३८	३।१०	८।५६	२।५३	+ ५	१३	
	२०	[illegible]	४। ८	[illegible]	४। ०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	+ ४	१९	

ध्यान दीजिये ... इस सारिणी में दिये गये ... स्टैण्डर्ड अन्तर पाकिस्तानी ... नगर का अक्षांश पूर्वापरान्तर | पाकिस्तान बनने ... काल के लिए कराची लाहौर

ध्यान दीजिए—इस सारिणी में दिये गये पाकिस्तानी शहरों के स्टैण्डर्ड अन्तर' पाकिस्तानी स्टैं. टा. एवं लोकल (स्थानीय) टाईम का अन्तर हैं। पाकिस्तान बनने से पूर्व यह अन्तर भिन्न था।

रेखांश—ग्रीन्विच से अभीष्ट नगर का अंशात्मक पूर्वापरान्तर
देशान्तर—रोपड़ नगर से अभीष्ट नगर का पूर्वापरान्तर मिनटों में
स्टैंडर्ड अन्तर—वर्तमान स्टैंडर्ड टाईम का स्थानीय टाईम से अन्तर

पाकिस्तान बनने से पूर्व काल के लिए कराची लाहौर आदि किसी भी पाकिस्तानी शहर का मिनटादि स्टैण्डर्ड अन्तर' उस नगर के रेखांश एवं ८२अंश ३०कला के अंशादि अन्तर को ४से गुणा करने पर प्राप्त होगा।*

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं क	अं क.	मि. से.	मिनट से.
अकोला (सी.पी.)	२०।४२	७७। २	पू. २	-२१।५२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	प. ७	-३१।१२
अटक (पा.)	३३।५३	७२।१७	प. १७	-१०।५२
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	प. ७	-३०।४८
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	पू. १	-२२।२२
अयोध्या	२६।४८	८२।१८	पू. २३	- १। ४
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	प १३	-११।२०
अलवर	२७।३४	७६।३८	पू. १	-२३।२८
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	प. ७	-३०।४८
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	प. १५	-३९।२८
अलीगढ़ (यू.पी)	२७।५४	७८। ६	पू. ६	-१७।३६
आगरा (,,)	२७।१०	७८। ५	प. ६	-१७।४०
आजमगढ़ (")	२६। ५	८३।१२	प. २७	+ २।४८
आबू	२४।४०	७२।४५	प. १५	-३९। ०
इटावा	२६।४७	७९। २	प. १०	-१३।५२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	प. ३	-२६।४०
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	प. ३	-२७। ८
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	प. ११	-३५।१२
एलिचपुर (सी.पी.)	२१।१८	७७।३३	पू. ४	-१९।४८
औरंगाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	प ४	-२८।२८
कठुआ (काश्मीर)	३२।१७	७५।३६	प. ४	-२७।३६
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	प. ४	-२८।२०
करनाल	२९।४२	७७। २	पू. २	-२१।५२
कराची (पा.)	२४।५१	६७। ४	प. ३८	-३१।४४
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	पू. ४८	+ २३।३६
काठमाण्डू (नैपा.)	२७।४२	८५।१२	पू. ३५	+ १०।४८
कानपुर	२६।२७	८०।२४	पू. १६	- ८।२४
कालाबाग (पा.)	३२।५८	७१।३६	प. २०	-१३।३६
काशी	२५।२०	८३। ०	पू. २६	+ २। ०
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	प. १	-२४।४८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	प. १०	-३४।२४
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	पू. १	-२२।४८

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अ क.	अ. क	मि	मि से
कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	प. ४	-१९।४४
कुम्भकोणम	१०।५८	७९।२५	प १२	-१२।२०
कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	प. २	-२६।३२
कोलम्बो (सीलोन)	६।५६	७९।५६	प १४	-१०।१६
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	प. ९	-३२।५६
कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	प. १	-२५।५२
खम्भात	२२।१९	७२।३६	प. १६	-३९।३६
गया	२४।४९	८५। १	प ६	+१०। ४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	प ७	-१३।२०
गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	प २८	+ ४।२०
गिलगित	३५।५५	७४।२२	प. ९	-३२।३२
गुजरात (पा.)	३२।३६	७४। ५	प १०	- ३।४०
गुजरांवाला (पा.)	३२।१०	७४।१४	प ९	- ३। ४
गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	प. ४	-२८।१२
गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	प २८	+३।३६
गोवा	१५।३०	७३।५७	प. १०	-३४।१२
चम्बा	३२।२९	७६।१०	प. १	-२५।२०
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	पू. १	-२२।३२
चीरापूञ्जी	२५।१७	९१।४०	पू. ६१	+ ३७। ८
छतरपुर (वि.प्र.)	२४।५४	७९।३८	पू १३	-११।२८
छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	पू. ३३	+ ८।४४
जलपाईगुड़ी	२६।३२	८८।४६	पू. ४९	+२५। ४
जम्मू	३२।४४	७४।५४	प. ६	-३०।२४
जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	पू. १४	-१०। ४
जयपुर	२६।५५	७५।५२	प. ३	-२६।३२
जालन्धर	३१।१९	७५।१८	प. ५	-२८।४८
जामनगर	२२।२७	७०। ७	प. २६	-४९।३२
जीन्द	२९।१९	७६।२३	प. १	-२४।२८
जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	प. २४	-४७।३६
जैसलमेर	२९।५५	७०।५७	प. २२	-४६।१२
जोधपुर	२६।१८	७३। ४	प. १४	-३७।४४
जौनपुर	२५।४६	८२।४४	प २५	+ ०।५६

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशान्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं क.	अं क.	मि.	मि. से
झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	प. १	-२५।१२
झांसी	२५।२७	७८।३७	पू. ८	-१५।३२
झेलम (पा.)	३२।३५	७३।४७	प ११	- ४।५२
ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	पू. २	-२२। ०
टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	प. ३	-२६।४०
डिबाई	२८।१२	७८।१५	पू. ७	-१७। ०
डेराइस्माइलखां (पा.)	३१।५१	७०।५६	प. २२	-१६।१६
डेरागाजीखां (पा.)	३०। ४	७०।४९	प. २३	-१६।४४
ढाका (पा.)	२३।४३	९०।२६	प.	+ २।४४
तलागंग	३२।५६	७२।२८	प १६	-४०। ८
त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	प. ९	-१४।५६
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	पू. ३८	+ १२।४८
द्वारिका	२२।१४	६९। १	प. ३०	-५३।५६
दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	पू. ४७	+ २३।१२
दिल्ली	२८।३८	७७।१२	पू. ३	-२१।१२
देहरादून	३०।१९	७८। ४	पू. ६	-१७।४४
धौलपुर	२९।४२	७७।५३	पू. ६	-१८।१२
नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	प. १४	-३८।२०
नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	प. ७	-३०।५६
नागपुर	२१। ९	७९। ९	पू. ११	-१३।२४
नाभा	३०।२५	७६। ९	प. १	-२५।२४
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	प. ११	-३४।३२
नासिक	२०। २	७३।५०	प. ११	-३४।४०
नैनीताल	२९।२३	७९।३०	प. १२	-१२। ०
पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	पू. ३५	+१०।५२
पटियाला	३०।२०	७६।२५	प. १	-२४।२०
पठानकोट	३२।१७	७५।४२	प. ३	-२७।१२
प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	पू. २२	- २।२४
पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	पू. १४	-१०।२८
पुन्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	प. ९	-३३।२८
पूना	१९। ०	७२।५५	प. १४	-३८।२०
पेशावर (पा.)	३४। २	७१।३७	प. २०	-१३।३२

* नगर के रेखांश ८२°३०' से अधिक या कम होने पर स्टैण्डर्ड अन्तर क्रमश: धन या ऋण होगा।

अक्षांशादि सारणी

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क	अं क	मिनट	मि. से.
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	प. २७	−५०।४४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	पू. १२	−११।३२
फरीदकोट	३०।४०	७४।५७	प. ६	−३०।१२
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	प. ७	−३१।२०
बड़ौदा	२२। ०	७३।३०	प. १२	−३६। ०
बम्बई	१९। ०	७२।५४	प. १४	−३८।२४
बरेली	२८।२२	७९।२७	पू. १२	−१२।१७
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	पू. १२	−११।५२
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	पू. ४५	+२१।२८
बहावलपुर	२८।२४	७१।४७	प. १९	−४२।५२
बिलासपुर (म. प्र.)	२२। ५	८२।१३	पू. २३	− १। ८
बीकानेर	२८। १	७३।२२	प. १३	−३६।३२
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	प. ३	−२६।५२
बंगलोर	१२।५८	७७।३८	पू. ५	−१९।२८
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	प. ६	−३०। ०
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	पू. ४	−२०। ०
भागलपुर (बि.	२५।१४	[illegible]। ९	पू. ४२	−१७।५६
भोपाल (म.भा.)	२३।१[illegible]	७७।३६	पू. ४	−१९।३६
भूटान (स्टेट)	२७।३०	९०। ०	पू. ५४	+३०। ०
मद्रास	१३। ४	८०।१७	पू. १५	− ८।५२
मथुरा	२७।२८	७७।४१	पू. ५	−१९।१६
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५९	प. २	−२६। ४
मियांवाली (पा.)	३२।३५	७१।३३	प. २०	−१३।४८
मिंटगुमरी (पा.)	३०।५८	७३।२१	प. १३	− ६।३६
मुल्तान (पा.)	३०।१२	७१।३१	प. २०	−१३।५६
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	पू. ३६	+११।४८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	पू. ७०	+४५।५२
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	पू. ९	−१४।४४
मेरठ	२९। १	७७।४५	पू. ५	−१९। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४[illegible]	पू. २	−२३।१२
[illegible] (बि. [illegible])	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	देशांतर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं क.	मिनट	मि से
रतलाम	२३।३१	७५। ७	प ६	−२९।३२
रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	प १३	−३६।४४
रामेश्वरम	९।१७	७९।२२	पू. ११	−१२।३२
रावलपिण्डी (पा.)	३३।३७	७३। ६	प. १४	− ७।३६
राजमहेन्द्री (आन्ध्र)	१७। ०	८१।४८	पू. २१	− २।४८
रिवाडी	२८।१२	७६।४०	प. १	−२३।२०
रेवा (वि.प्र.)	२४।३१	८१।१९	पू. १९	− ४।४४
रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	पू. २१	− ३।१६
राजकोट	२२।१८	७०।५६	प. २२	−४६।१६
रोहतक	२८।५४	७६।३८	प. १	−२३।२८
रोपड (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	पू. ०	−२४।००
लखनऊ	२६।५५	८०।५९	पू. १८	− ६। ४
लायलपुर (पा.)	३१।४४	७३। ५	प. १४	− ७।४०
लाहौर (पा.)	३१।३७	७४।२६	प. ८	− २।१६
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	प २	−२६।२४
शिकारपुर (सिंध)	२७।५७	६८।४०	प. ३१	−५५।२०
शिमला	३१। ६	७७।१३	पू. ३	−२१। ८
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	प ७	−३०।३६
सरगोधा (पा.)	३२। २	७२।४०	प. १५	− २।२०
सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	पू. ४	−२०।२८
सियालकोट (पा.)	३२।३१	७४।३६	प ८	− १।३६
सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। [illegible]	प. १०	−३३।५२
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	पू ९	−१५। ०
सूरत	२१।१२	७२।५२	प १५	−३८।३२
सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। [illegible]	प ३	−२१।२४
हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	प ७	−१७। ८
हिसार	२९।१०	७५।४६	प ३	−२६।५६
हैदराबाद (सिंध.)	२५।२५	६८।३८	प ३१	−५५।२८
हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	पू ८	−१८। ०
होशियारपुर	३१।३२	[illegible]	प २	−२६।१२

। कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टैं.टा से. देशीय स्टैं. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क	अं. क.	घ. मि.	मि. से.
काबुल (अफगा.)	उ ३४।१३	पू. ६९।१८	− १। ०	+ ७।१२
कन्दहार "	उ. ३१।१३	पू. ६५।३०	− १। ०	− ८। ०
क्वेटा (बिलोचि.)	उ ३०।१२	पू. ६७। ०	− ०।३०	−३२। ०
माण्डले (ब्रह्मा)	उ २१।५९	पू. ९६। ८	− १। ०	− ५।२८
रंगून (ब्रह्मा)	उ १६।४५	पू. ९६।१३	− १। ०	− ५। ८
सिंगापुर (मलाया)	उ १।१७	१०३।५१	+ २। ०	−३४।३६
बगदाद (इराक)	उ. ३३।२०	पू. ४४।२७	− २।३०	− २।१२
मक्का (अरब)	उ. २१।२५	पू. ३९।५४	− २।३०	−२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ ३५।४१	पू. ५१।२५	− २। ०	− ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ ३०। २	पू. ३१।१५	− ३।३०	+ ५। ०
जेनेवा (स्विटजर)	उ ४६।१३	पू. ६। ९	− ४।४०	−३१।३६
जेरूशलम (इजरा.)	उ ३१।४६	पू. ३५।१४	− ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमरिका)	उ ४०।४३	प. ७४। ०	−१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन "	उ ३८।५५	प ७७। ४	−१०।३०	− ८।१६
बर्लिन (पू जर्मनी)	उ ५२।३२	पू. १३।२५	− ४।३०	− ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ ४७।२९	पू. १९। ३	− ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ. ५१।३०	प. ०। ५	− ५।३०	− ०।२०
ग्रीनविच	उ ५१।३०	० ०	− ५।३०	− ० ०
ल्हासा (तिब्बत)	उ. २९।४०	पू. ९१। ५	०। ०	+३४।२०
लिस्बन (पुर्तगाल)	उ ३८।४४	प ९।	[illegible]।३०	−३६।३६
ढाका (पू. पाकि.)	उ २३।४३	पू ९०।२६	+ ०।३०	+ १।४४
कराची (प. पाकि.)	उ. २४।५१	पू ६७। ४	− ०।३०	−३१।४४
नैरोबी (केन्या)	द १।१८	पू. ३६।५२	− २।३०	−३२।३२
मोम्बासा	द ४। ०	पू ३९।४०	− २।३०	−२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द २।३[illegible]	पू ३२।५६	− २।३०	−४८।१६
मोशी	द ३।२[illegible]	पू ३७।२०	− २।३०	−३०।४०
टोकियो (जापान)	उ ३५।४०	पू १३९।४५	+ ३।३०	+१९। ०
पेरिस (फ्रांस)	उ ४८।५०	पू २।२०	− ४।३०	−५०।४०
मास्को (रूस)	उ ५५।४५	पू ३७।३७	− २।३०	−२९।३८
रोम (इटली)	उ ४१।५४	पू १२।२८	− ४।३०	−१०। [illegible]
हांगकांग (चीन)	उ. २२।१८	पू ११४।१०	+ २।३०	−२३।१२

मिनट	घं ०	घं १	घं २	घं ३	घं ४	घं ५	घं ६	घं ७	घं ८	घं ९	घं १०	घं ११	घं १२	घं १३	घं १४	घं १५	घं १६	घं १७	घं १८	घं १९	घं २०	घं २१	घं २२	घं २३	मिनट
०	अनन्त	१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	०
१	३.१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७९५	३३८२	३००४	२६५७	२३३६	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७६	०३७५	०१८२	१
२	२.८५७३	१.३६६०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९७	५३३१	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२६५२	२३३१	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	२
३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	४२३६	३७८०	३३६८	२९९२	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	३
४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२	२९८६	२६४०	२३२०	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	४
५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१५	८९१२	७६९२	६७४१	५९६१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	५
६	२.३८०२	१.३३८८	१.०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२९०	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	६
७	२.३१३३	१.३३२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६७	०५५६	०३५५	०१६३	७
८	२.२५५३	१.३२५९	१.०५१२	८८४२	७६३९	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	८
९	२.२०४१	१.३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९१	४१८८	३७३७	३३२९	२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४५९	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	९
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३०	३३२३	२९५०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५३	१०
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२	३७२३	३३१६	२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	८७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०	२९३९	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६७	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	०९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४	१३
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५३५	६६१४	५८५५	५२०९	४६४६	४१४९	३७०२	३२९७	२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४१	०५३२	०३३२	०१४१	१४
१५	१.९८२३	१.२८३३	१.०२८०	८६८३	७५१८	६६०१	५८४३	५१९९	४६३८	४१४१	३६९५	३२९१	२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११८९	०९५८	०७३८	०५२९	०३२९	०१३८	१५
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८६	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	३२७८	२९०९	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	८६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	४६११	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४११०	३६६७	३२६५	२८९७	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२५	१९
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४५९४	४१०२	३६६०	३२५९	२८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५१२	०३१३	०१२२	२०
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१६	०५०८	०३०९	०११९	२१
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२५४२	२२२९	१९३६	१६६३	१४०५	११६२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.००३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२५३६	२२२४	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७	२८६२	२५२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९२	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२५२०	२२०८	१९१८	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१९	६४३८	५७०७	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०२	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२५१०	२१९८	१९०८	१६३६	१३८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८४	०२८७	००९८	२८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८६	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	४०३३	३५९७	३२०१	२८३९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०५	०६८८	०४८१	०२८४	००९५	२९
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२६	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
३२	१.६५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१९	१३६३	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३९९५	३५६३	३१७०	२८१०	२४७७	२१६९	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७०	०४६४	०२६७	००७९	३४
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००४	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	२४७२	२१६४	१८७६	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
३६	१.६०२१	१.१७६१	०.९६५२	८२३९	७१७५	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५८	२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६३	०४५८	०२६१	००७३	३६
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	६२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६८	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३९
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९१	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१	४०
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४९४७	४४१५	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२६	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०४३८	०२४२	००५५	४२
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०२	३११४	२७५८	२४३०	२१२४	१८३९	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३५	००४९	४४
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६२	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४६	०६३२	०४२८	०२३२	००४५	४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२८	०४२४	०२२९	००४२	४६
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६६	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३१	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२१	०४१८	०२२३	००३६	४८
४९	१.४६८२	१.१२०९	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१	२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१५	०४११	०२१६	००३०	५०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४८	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२५	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३५	४८४४	४३२५	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३७	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८	५४
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५५	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
५७	१.४०२५	१.०९०२	०.९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	२३५६	२०५६	१७७५	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०	सन्	सां० का०
	घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०		घं०मि०से०
१८७६	६।३९। ९	१८८८	६।३९।३०	+१९००	६।३९।५४	१९१२	६।३६।१८	१९२४	६।३६।३९	१९३६	६।३७। ४	१९४८	६।३७।२४	१९६०	६।३७।४७
१८७७	६।४२। ८	१८८९	६।४२।२९	१९०१	६।३८।५७	१९१३	६।३९।१८	१९२५	६।३९।३९	१९३७	६।४०। ३	१९४९	६।४०।२४	१९६१	६।४०।४७
१८७८	६।४१।११	१८९०	६।४१।३२	१९०२	६।३७।५९	१९१४	६।३८।२१	१९२६	६।३८।४२	१९३८	६।३९। ६	१९५०	६।३९।२७	१९६२	६।३९।५०
१८७९	६।४०।१४	१८९१	६।४०।३४	१९०३	६।३७। १	१९१५	६।३७।२४	१९२७	६।३७।४४	१९३९	६।३८। ८	१९५१	६।३८।३०	१९६३	६।३८।५३
१८८०	६।३९।१७	१८९२	६।३९।३७	१९०४	६।३६। ४	१९१६	६।३६।२७	१९२८	६।३६।४७	१९४०	६।३७।११	१९५२	६।३७।३३	१९६४	६।३७।५६
१८८१	६।४२।१६	१८९३	६।४२।३७	१९०५	६।३९। ३	१९१७	६।३९।२६	१९२९	६।३९।४६	१९४१	६।४०।१०	१९५३	६।४०।३३	१९६५	६।४०।५५
१८८२	६।४१।१९	१८९४	६।४१।४०	१९०६	६।३८। ५	१९१८	६।३८।२९	१९३०	६।३८।४९	१९४२	६।३९।१२	१९५४	६।३९।३५	१९६६	६।३९।५७
१८८३	६।४०।२१	१८९५	६।४०।४३	१९०७	६।३७। ७	१९१९	६।३७।३२	१९३१	६।३७।५२	१९४३	६।३८।१५	१९५५	६।३८।३८	१९६७	६।३९। ०
१८८४	६।३९।२४	१८९६	६।३९।४६	१९०८	६।३६। ९	१९२०	६।३६।३४	१९३२	६।३६।५६	१९४४	६।३७।१७	१९५६	६।३७।४१	१९६८	६।३८। ३
१८८५	६।४२।२३	१८९७	६।४२।४५	१९०९	६।३९। ९	१९२१	६।३९।३३	१९३३	६।३९।५५	१९४५	६।४०।१६	१९५७	६।४०।४०	१९६९	६।४१। २
१८८६	६।४१।२५	१८९८	६।४१।४८	१९१०	६।३८।१२	१९२२	६।३८।३५	१९३४	६।३८।५८	१९४६	६।३९।१९	१९५८	६।३९।४३	१९७०	६।४०। ५
१८८७	६।४०।२८	१८९९	६।४०।५१	१९११	६।३७।१५	१९२३	६।३७।३८	१९३५	६।३८। १	१९४७	६।३८।२२	१९५९	६।३८।४५	१९७१	६।३९। ७

+ सन् १९०० प्लुतवर्ष (लीप इयर) नहीं था।

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० २)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०
१	०। ०। ०	२। २।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३। ७	९।५५।२०
२	०। ३।५७	२। ६। ९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७। ४	९।५९।१७
३	०। ७।५३	२।१०। ६	४। ०।३०	६। २।४३	८। १। ०	१०। ३।१४
४	०।११।५०	२।१४। २	४। ४।२६	६। ६।४०	८। ४।५७	१०। ७।१०
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४। ८।२३	६।१०।३६	८। ८।५३	१०।११। ७
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५। ३
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९। ०
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४। ९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८। ५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९
११	०।३९।२५	२।४१।३८	४।३२। २	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१२	८।३६।२९	१०।३८।४२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५५	६।४२। ९	८।४०।२५	१०।४२।३९
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६। ६	८।४४।२२	१०।४६।३५
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०। २	८।४८।१८	१०।५०।३२
१६	०।५९। ८	३। १।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८
१७	१। ३। ४	३। ५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५
१८	१। ७। १	३। ९।१४	४।५९।३८	७। १।५२	९। ०। ८	११। २।२१
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५। ३।३५	७। ५।४८	९। ४। ४	११। ६।१८
२०	१।१४।५४	३।१७। ८	५। ७।३१	७। ९।४५	९। ८। १	११।१०।१५
२१	१।१८।५१	३।२१। ५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।११
२२	१।२२।४८	३।२५। १	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८। ८
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२। ५
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६। १
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५। ८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९। ५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३। १	७।४५।१४	९।४३।३०	११।४५।४४
३०	१।५४।२०	...	५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१
३१	१।५८।१६	...	५।५०।५४	...	९।५१।२४	...

तारीख	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०	घं०मि०से०
१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८। ४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०
२	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६। २। ०	१८। ०।१७	२०। २।३१	२२। ०।४७
३	१२। १।३१	१४। ३।४४	१६। ५।५७	१८। ४।१४	२०। ६।२७	२२। ४।४३
४	१२। ५।२७	१४। ७।४०	१६। ९।५३	१८। ८।१०	२०।१०।२४	२२। ८।४०
५	१२। ९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२। ७	२०।१४।२०	२२।१२।३६
६	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६। ३	२०।१८।१७	२२।१६।३३
७	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०। ०	२०।२२।१३	२२।२०।३०
८	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२६
९	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०। ६	२२।२८।२३
१०	१२।२९। ६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४। ३	२२।३२।२०
११	१२।३३। ३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८। ०	२२।३६।१६
१२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३
१३	१२।४०।५६	१४।४३। ९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५३	२२।४४। ९
१४	१२।४४।५२	१४।४७। ६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८। ६
१५	१२।४८।४९	१४।५१। २	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२। २
१६	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९
१७	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७। १। ९	१८।५९।२६	२१। १।३९	२२।५९।५५
१८	१३। ०।३८	१५। २।५२	१७। ५। ५	१९। ३।२३	२१। ५।३६	२३। ३।५२
१९	१३। ४।३५	१५। ६।४८	१७। ९। २	१९। ७।१९	२१। ९।३२	२३। ७।४९
२०	१३। ८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६
२१	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२
२२	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९। ८	२१।२१।२२	२३।१९।३९
२३	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३। ५	२१।२५।१८	२३।२३।३५
२४	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७। १	२१।२९।१५	२३।२७।३२
२५	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८
२६	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७। ८	२३।३५।२५
२७	१३।३६। ८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१। ४	२३।३९।२१
२८	१३।४०। ४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५। १	२३।४३।१८
२९	१३।४४। १	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४
३०	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११
३१	१३।५१।५४	१५।५४। ७	...	१९।५४।३८	...	२३।५५। ७

साम्पातिक काल (कोष्ठक नं० १)

सूर्य भोगांश	सां०का० संस्कार
अं० क०	सेकण्ड
८। ०	+ ४५
१०। ०	+ ४४
१२। ०	+ ४२
१४। ०	+ ४१
१६। ०	+ ४०
१८। ०	+ ३८
२०। ०	+ ३७
२२। ०	+ ३६
२४। ०	+ ३४
२६। ०	+ ३३
२८। ०	+ ३२
३०। ०	+ ३१
३२। ०	+ २९
३४। ०	+ २८
३६। ०	+ २७
३८। ०	+ २५
४०। ०	+ २४
४२। ०	+ २३
४४। ०	+ २१
४६। ०	+ २०
४८। ०	+ १९
५०। ०	+ १७
५२। ०	+ १६
५४। ०	+ १५
५६। ०	+ १३
५८। ०	+ १२
६०। ०	+ ११
६२। ०	+ १०
६४। ०	+ ८
६६। ०	+ ७
६८। ०	+ ६
७०। ०	+ ४
७२। ०	+ ३
७४। ०	+ २
७६।१३०	०
७९। ०	− २
८१। ०	− ३
८३। ०	− ४
८५। ०	− ६
८७। ०	− ७
८९। ०	− ८
९१। ०	− १०
९३। ०	− ११
९५। ०	− १२
९७। ०	− १३
९९। ०	− १५
१०१। ०	− १६
१०३। ०	− १७

घं० मि०	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०	मि०से०
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	१।३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। ३	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।१२	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२८	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारिणी (भाग २ ख)

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०	वि०
जनवरी	०	१	१	२	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

अयनांश सारिणी (भाग २ क)

ई०सन्	अयनांश	ई०सन्	अयनांश
	अं०क०वि०		अं०क०वि०
१८७६	२२। ६।३७	१९२४	२२।४६।४९
१८७७	२२। ७।२७	१९२५	२२।४७।३९
१८७८	२२। ८।१७	१९२६	२२।४८।३०
१८७९	२२। ९। ७	१९२७	२२।४९।२०
१८८०	२२। ९।५८	१९२८	२२।५०।१०
१८८१	२२।१०।४८	१९२९	२२।५१। ०
१८८२	२२।११।३८	१९३०	२२।५१।५१
१८८३	२२।१२।२८	१९३१	२२।५२।४१
१८८४	२२।१३।१९	१९३२	२२।५३।३१
१८८५	२२।१४। ९	१९३३	२२।५४।२१
१८८६	२२।१४।५९	१९३४	२२।५५।१२
१८८७	२२।१५।५०	१९३५	२२।५६। २
१८८८	२२।१६।४०	१९३६	२२।५६।५२
१८८९	२२।१७।३०	१९३७	२२।५७।४२
१८९०	२२।१८।२०	१९३८	२२।५८।३३
१८९१	२२।१९।११	१९३९	२२।५९।२३
१८९२	२२।२०। १	१९४०	२३। ०।१३
१८९३	२२।२०।५१	१९४१	२३। १। ४
१८९४	२२।२१।४१	१९४२	२३। १।५४
१८९५	२२।२२।३२	१९४३	२३। २।४४
१८९६	२२।२३।२२	१९४४	२३। ३।३४
१८९७	२२।२४।१२	१९४५	२३। ४।२५
१८९८	२२।२५। २	१९४६	२३। ५।१५
१८९९	२२।२५।५३	१९४७	२३। ६। ५
१९००	२२।२६।४३	१९४८	२३। ६।५५
१९०१	२२।२७।३३	१९४९	२३। ७।४६
१९०२	२२।२८।२३	१९५०	२३। ८।३६
१९०३	२२।२९।१४	१९५१	२३। ९।२६
१९०४	२२।३०। ४	१९५२	२३।१०।१६
१९०५	२२।३०।५४	१९५३	२३।११। ७
१९०६	२२।३१।४४	१९५४	२३।११।५७
१९०७	२२।३२।३५	१९५५	२३।१२।४७
१९०८	२२।३३।२५	१९५६	२३।१३।३८
१९०९	२२।३४।१५	१९५७	२३।१४।२८
१९१०	२२।३५। ५	१९५८	२३।१५।१८
१९११	२२।३५।५६	१९५९	२३।१६। ८
१९१२	२२।३६।४६	१९६०	२३।१६।५९
१९१३	२२।३७।३६	१९६१	२३।१७।४९
१९१४	२२।३८।२६	१९६२	२३।१८।३९
१९१५	२२।३९।१७	१९६३	२३।१९।२९
१९१६	२२।४०। ७	१९६४	२३।२०।२०
१९१७	२२।४०।५७	१९६५	२३।२१।१०
१९१८	२२।४१।४७	१९६६	२३।२२। ०
१९१९	२२।४२।३८	१९६७	२३।२२।५०
१९२०	२२।४३।२८	१९६८	२३।२३।४०
१९२१	२२।४४।१८	१९६९	२३।२४।३१
१९२२	२२।४५। ८	१९७०	२३।२५।२१
१९२३	२२।४५।५९	१९७१	२३।२६।११

२२°१५' अयनांशीय निरयण लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° के लिए

हरिद्वार, भटिण्डा, करनाल, अम्बाला एवं [illegible] आदि नगरों के लिए उपयोगी।

राशि →	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति
↓	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.
०	१९। ४।५९	१७३	२०।३८।३८	२०७	२२।३३। ५	२५४	०।४७।५७	२८२	३। ९।४८	२८२	५।२९। १	[illegible]
१	१९। ७।५२	१७४	२०।४२। ५	२०८	२२।३७।१८	२५५	०।५२।३९	२८३	३।१४।३०	२८२	५।३३।३६	[illegible]
२	१९।१०।४६	१७५	२०।४५।३३	२०९	२२।४१।३३	२५६	०।५७।२२	२८२	३।१९।१२	२८१	५।३८।१२	[illegible]
३	१९।१३।४१	१७५	२०।४९। २	२११	२२।४५।४९	२५७	१। २। ४	२८३	३।२३।५३	२८१	५।४२।४८	[illegible]
४	१९।१६।३६	१७७	२०।५२।३३	२१२	२२।५०। ६	२५८	१। ६।४७	२८४	३।२८।३४	२८१	५।४७।२३	[illegible]
५	१९।१९।३३	१७७	२०।५६। ५	२१४	२२।५४।२४	२६०	१।११।३१	२८४	३।३३।१५	२८१	५।५१।५८	[illegible]
६	१९।२२।३०	१७८	२०।५९।३९	२१५	२२।५८।४४	२६१	१।१६।१५	२८४	३।३७।५६	२८१	५।५६।३३	[illegible]
७	१९।२५।२८	१७८	२१। ३।१४	२१७	२३। ३। ५	२६३	१।२०।५९	२८४	३।४२।३७	२८०	६। १। ९	[illegible]
८	१९।२८।२६	१८०	२१। ६।५१	२१८	२३। ७।२८	२६४	१।२५।४३	२८४	३।४७।१७	२८०	६। ५।४४	[illegible]
९	१९।३१।२६	१८१	२१।१०।२९	२२०	२३।११।५२	२६५	१।३०।२७	२८४	३।५१।५७	२७९	६।१०।१९	[illegible]
१०	१९।३४।२७	१८२	२१।१४। ९	२२२	२३।१६।१७	२६६	१।३५।११	२८४	३।५६।३६	२७९	६।१४।५४	[illegible]
११	१९।३७।२९	१८३	२१।१७।५१	२२३	२३।२०।४३	२६७	१।३९।५५	२८५	४। १।१५	२८०	६।१९।३१	[illegible]
१२	१९।४०।३२	१८४	२१।२१।३४	२२५	२३।२५।१०	२६९	१।४४।४०	२८५	४। ५।५५	२७९	६।२४। ६	[illegible]
१३	१९।४३।३५	१८५	२१।२५।१९	२२७	२३।२९।३९	२७०	१।४९।२५	२८५	४।१०।३४	२७८	६।२८।४१	[illegible]
१४	१९।४६।४०	१८५	२१।२९। ६	२२८	२३।३४। ९	२७०	१।५४।१०	२८४	४।१५।१२	२७८	६।३३।१७	[illegible]
१५	१९।४९।४५	१८७	२१।३२।५४	२२९	२३।३८।३९	२७२	१।५८।५४	२८४	४।१९।५०	२७८	६।३७।५३	[illegible]
१६	१९।५२।५२	१८८	२१।३६।४३	२३२	२३।४३।११	२७३	२। ३।३८	२८४	४।२४।२८	२७८	६।४२।२८	[illegible]
१७	१९।५६। ०	१८९	२१।४०।३५	२३३	२३।४७।४४	२७३	२। ८।२२	२८५	४।२९। ६	२७८	६।४७। ४	[illegible]
१८	१९।५९। ९	१९१	२१।४४।२८	२३४	२३।५२।१७	२७४	२।१३। ७	२८५	४।३३।४४	२७७	६।५१।४०	[illegible]
१९	२०। २।२०	१९१	२१।४८।२२	२३६	२३।५६।५१	२७५	२।१७।५२	२८४	४।३८।२१	२७७	६।५६।१७	[illegible]
२०	२०। ५।३१	१९३	२१।५२।१८	२३८	०। १।२६	२७६	२।२२।३६	२८४	४।४२।५८	२७७	७। ०।५३	[illegible]
२१	२०। ८।४४	१९४	२१।५६।१६	२३९	०। ६। २	२७७	२।२७।२०	२८४	४।४७।३५	२७७	७। ५।३०	[illegible]
२२	२०।११।५८	१९५	२२। ०।१५	२४१	०।१०।३९	२७७	२।३२। ४	२८४	४।५२।१२	२७७	७।१०। ६	[illegible]
२३	२०।१५।१३	१९७	२२। ४।१६	२४२	०।१५।१६	२७९	२।३६।४८	२८४	४।५६।४९	२७६	७।१४।४३	[illegible]
२४	२०।१८।३०	१९८	२२। ८।१८	२४४	०।१९।५५	२७९	२।४१।३१	२८३	५। १।२५	२७७	७।१९।२०	[illegible]
२५	२०।२१।४८	१९९	२२।१२।२२	२४५	०।२४।३४	२८०	२।४६।१५	२८४	५। ६। २	२७६	७।२३।५७	[illegible]
२६	२०।२५। ७	२०१	२२।१६।२७	२४७	०।२९।१४	२८०	२।५०।५८	२८३	५।१०।३८	२७६	७।२८।३५	[illegible]
२७	२०।२८।२८	२०२	२२।२०।३४	२४९	०।३३।५४	२८०	२।५५।४१	२८३	५।१५।१४	२७६	७।३३।१३	[illegible]
२८	२०।३१।५०	२०३	२२।२४।४३	२५१	०।३८।३४	२८१	३। ०।२४	२८३	५।१९।५०	२७५	७।३७।५१	[illegible]
२९	२०।३५।१३	२०५	२२।२८।५४	२५१	०।४३।१५	२८२	३। ५। ७	२८२	५।२४।२५	२७६	७।४२।२९	[illegible]
३०	२०।३८।३८		२२।३३। ५		०।४७।५७		३। ९।४८		५।२९। १		७।४७। ७	

राशि →	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धनु (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति
↓	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.
०	७।४७। ७	२७९	१०। ८।१३	२८५	१२।२८। ७	२६९	१४।३२।४८	२२५	१६।१४।५३	१८४	१७।४१।२४	[illegible]
१	७।५१।४६	२७९	१०।१२।५८	२८४	१२।३२।३६	२६८	१४।३६।३३	२२४	१६।१७।५७	१८३	१७।४४।१०	[illegible]
२	७।५६।२५	२७९	१०।१७।४२	२८४	१२।३७। ४	२६७	१४।४०।१७	२२३	१६।२१। ०	१८२	१७।४६।५५	[illegible]
३	८। १। ४	२८०	१०।२२।२६	२८५	१२।४१।३१	२६५	१४।४४। ०	२२१	१६।२४। २	१८१	१७।४९।४१	[illegible]
४	८। ५।४४	२७९	१०।२७।११	२८४	१२।४५।५६	२६४	१४।४७।४१	२१९	१६।२७। ३	१८१	१७।५२।२६	[illegible]
५	८।१०।२३	२८०	१०।३१।५५	२८४	१२।५०।२०	२६४	१४।५१।२०	२१८	१६।३०। ४	१७९	१७।५५।११	[illegible]
६	८।१५। ३	२८०	१०।३६।३९	२८४	१२।५४।४४	२६२	१४।५४।५८	२१६	१६।३३। ३	१७८	१७।५७।५६	[illegible]
७	८।१९।४३	२८१	१०।४१।२३	२८४	१२।५९। ६	२६०	१४।५८।३४	२१५	१६।३६। १	१७७	१८। ०।४१	[illegible]
८	८।२४।२४	२८१	१०।४६। ७	२८४	१३। ३।२६	२६१	१५। २। ९	२१२	१६।३८।५९	१७६	१८। ३।२६	[illegible]
९	८।२९। ५	२८१	१०।५०।५१	२८३	१३। ७।४७	२५९	१५। ५।४१	२१२	१६।४१।५६	१७५	१८। ६।११	[illegible]
१०	८।३३।४६	२८२	१०।५५।३४	२८३	१३।१२। ६	२५७	१५। ९।१३	२१०	१६।४४।५१	१७६	१८। ८।५६	[illegible]
११	८।३८।२८	२८२	११। ०।१७	२८३	१३।१६।२३	२५५	१५।१२।४३	२०८	१६।४७।४७	१७४	१८।११।४१	[illegible]
१२	८।४३।१०	२८२	११। ५। ०	२८२	१३।२०।३८	२५४	१५।१६।११	२०७	१६।५०।४१	१७४	१८।१४।२७	[illegible]
१३	८।४७।५२	२८२	११। ९।४२	२८२	१३।२४।५२	२५२	१५।१९।३८	२०६	१६।५३।३५	१७३	१८।१७।१२	[illegible]
१४	८।५२।३३	२८३	११।१४।२४	२८२	१३।२९। ४	२५१	१५।२३। ४	२०४	१६।५६।२८	१७२	१८।१९।५८	[illegible]
१५	८।५७।१५	२८३	११।१९। ६	२८१	१३।३३।१५	२४९	१५।२६।२८	२०३	१६।५९।२०	१७१	१८।२२।४४	[illegible]
१६	९। १।५८	२८३	११।२३।४६	२८१	१३।३७।२४	२४८	१५।२९।५१	२०२	१७। २।११	१७१	१८।२५।३०	[illegible]
१७	९। ६।४१	२८३	११।२८।२६	२८०	१३।४१।३२	२४६	१५।३३।१३	२००	१७। ५। २	१७०	१८।२८।१७	[illegible]
१८	९।११।२४	२८३	११।३३। ६	२८०	१३।४५।३८	२४५	१५।३६।३३	१९८	१७। ७।५२	१६९	१८।३१। ४	[illegible]
१९	९।१६। ७	२८४	११।३७।४६	२८०	१३।४९।४३	२४३	१५।३९।५१	१९७	१७।१०।४१	१७०	१८।३३।५१	[illegible]
२०	९।२०।५१	२८४	११।४२।२६	२७८	१३।५३।४६	२४२	१५।४३। ८	१९६	१७।१३।३१	१६८	१८।३६।३८	[illegible]
२१	९।२५।३५	२८४	११।४७। ४	२७७	१३।५७।४८	२४०	१५।४६।२४	१९५	१७।१६।१९	१६८	१८।३९।२६	[illegible]
२२	९।३०।१९	२८४	११।५१।४२	२७६	१४। १।४८	२३८	१५।४९।३९	१९४	१७।१९। ७	१६७	१८।४२।१४	[illegible]
२३	९।३५। ३	२८४	११।५६।१६	२७५	१४। ५।४६	२३७	१५।५२।५३	१९२	१७।२१।५४	१६७	१८।४५। ३	[illegible]
२४	९।३९।४७	२८४	१२। ०।५१	२७५	१४। ९।४३	२३५	१५।५६। ५	१९१	१७।२४।४१	१६५	१८।४७।५२	[illegible]
२५	९।४४।३१	२८५	१२। ५।२६	२७४	१४।१३।३८	२३४	१५।५९।१६	१८९	१७।२७।२७	१६६	१८।५०।४२	[illegible]
२६	९।४९।१६	२८५	१२।१०। ०	२७३	१४।१७।३२	२३२	१६। २।२५	१८८	१७।३०।२०	१६६	१८।५३।३२	[illegible]
२७	९।५४। १	२८५	१२।१४।३३	२७२	१४।२१।२४	२३१	१६। ५।३३	१८७	१७।३३। ६	१६५	१८।५६।२३	[illegible]
२८	९।५८।४६	२८५	१२।१९। ५	२७१	१४।२५।१५	२२९	१६। ८।४०	१८८	१७।३५।५२	१६६	१८।५९।१४	[illegible]
२९	१०। ३।२९	२८४	१२।२३।३६	२७१	१४।२९। ४	२२७	१६।११।४८	१८५	१७।३८।३८	१६४	१९। २। ६	[illegible]
३०	१०। ८।१३		१२।२८। ७		१४।३२।४८		१६।१४।५३		१७।४१।२४		१९। ४।५९	

३१°१९' अक्षांशीय निरयण लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° के लिए

जालन्धर, अमृतसर, शिमला, लुधियाना एवं फिरोजपुर आदि नगरों के लिए उपयोगी।

राशि→	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश ↓	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति
	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.
०	१९। ४। ६	१७२	२०।३६।४७	२०५	२२।३०।४१	२५३	०।४५।४६	२८३	३। ८।२८	२८४	५।२८।४६	२७८
१	१९। ६।५८	१७२	२०।४०।१२	२०६	२२।३४।५४	२५४	०।५०।२९	२८४	३।१३।१२	२८४	५।३३।२४	२७९
२	१९। ९।५०	१७३	२०।४३।३८	२०८	२२।३९। ८	२५६	०।५५।१३	२८४	३।१७।५६	२८३	५।३८। ३	२७७
३	१९।१२।४३	१७३	२०।४७। ६	२०९	२२।४३।२४	२५७	०।५९।५७	२८५	३।२२।३९	२८३	५।४२।४०	२७७
४	१९।१५।३६	१७४	२०।५०।३५	२११	२२।४७।४१	२५८	१। ४।४२	२८५	३।२७।२२	२८४	५।४७।१७	२७७
५	१९।१८।३०	१७५	२०।५४। ६	२१३	२२।५१।५९	२६०	१। ९।२७	२८५	३।३२। ६	२८३	५।५१।५४	२७८
६	१९।२१।२५	१७६	२०।५७।३९	२१३	२२।५६।१९	२६१	१।१४।१२	२८५	३।३६।४९	२८२	५।५६।३२	२७८
७	१९।२४।२१	१७६	२१। १।१२	२१५	२३। ०।४०	२६३	१।१८।५७	२८६	३।४१।३१	२८२	६। १।१०	२७७
८	१९।२७।१७	१७७	२१। ४।४७	२१७	२३। ५। ३	२६४	१।२३।४३	२८५	३।४६।१३	२८२	६। ५।४७	२७८
९	१९।३०।१४	१७९	२१। ८।२४	२१९	२३। ९।२७	२६५	१।२८।२८	२८६	३।५०।५५	२८२	६।१०।२५	२७७
१०	१९।३३।१३	१८०	२१।१२। ३	२२०	२३।१३।५२	२६६	१।३३।१४	२८६	३।५५।३७	२८२	६।१५। २	२७८
११	१९।३६।१३	१८१	२१।१५।४३	२२२	२३।१८।१८	२६८	१।३८। ०	२८६	४। ०।१९	२८१	६।१९।४०	२७७
१२	१९।३९।१४	१८२	२१।१९।२५	२२४	२३।२२।४६	२६९	१।४२।४६	२८६	४। ५। ०	२८१	६।२४।१७	२७८
१३	१९।४२।१६	१८२	२१।२३। ९	२२५	२३।२७।१५	२७०	१।४७।३२	२८७	४। ९।४१	२८०	६।२८।५५	२७८
१४	१९।४५।१८	१८४	२१।२६।५४	२२७	२३।३१।४५	२७१	१।५२।१९	२८६	४।१४।२१	२८१	६।३३।३३	२७८
१५	१९।४८।२२	१८५	२१।३०।४१	२२९	२३।३६।१६	२७२	१।५७। ५	२८६	४।१९। २	२८०	६।३८।११	२७८
१६	१९।५१।२७	१८६	२१।३४।३०	२३०	२३।४०।४८	२७३	२। १।५१	२८६	४।२३।४२	२८०	६।४२।४९	२७८
१७	१९।५४।३३	१८७	२१।३८।२०	२३२	२३।४५।२१	२७४	२। ६।३७	२८७	४।२८।२२	२८०	६।४७।२७	२७९
१८	१९।५७।४०	१८८	२१।४२।१२	२३३	२३।४९।५५	२७५	२।११।२४	२८६	४।३३। २	२८०	६।५२। ६	२७८
१९	२०। ०।४८	१९०	२१।४६। ५	२३५	२३।५४।३०	२७५	२।१६।१०	२८६	४।३७।४२	२७९	६।५६।४४	२७९
२०	२०। ३।५८	१९१	२१।५०। १	२३६	२३।५९। ५	२७७	२।२०।५६	२८६	४।४२।२१	२७९	७। १।२३	२७८
२१	२०। ७। ९	१९२	२१।५३।५७	२३९	०। ३।४२	२७८	२।२५।४२	२८६	४।४७। ०	२७९	७। ६। १	२७९
२२	२०।१०।२१	१९३	२१।५७।५६	२४०	०। ८।२०	२७९	२।३०।२८	२८५	४।५१।३९	२७९	७।१०।४०	२७९
२३	२०।१३।३४	१९५	२२। १।५६	२४२	०।१२।५९	२७९	२।३५।१३	२८६	४।५६।१८	२७९	७।१५।१९	२८०
२४	२०।१६।४९	१९६	२२। ५।५८	२४३	०।१७।३८	२८०	२।३९।५९	२८५	५। ०।५७	२७८	७।१९।५९	२७९
२५	२०।२०। ५	१९८	२२।१०। १	२४५	०।२२।१८	२८०	२।४४।४४	२८५	५। ५।३५	२७८	७।२४।३८	२८०
२६	२०।२३।२३	१९९	२२।१४। ६	२४७	०।२६।५८	२८१	२।४९।२९	२८५	५।१०।१३	२७९	७।२९।१८	२८०
२७	२०।२६।४२	२००	२२।१८।१३	२४८	०।३१।३९	२८२	२।५४।१४	२८४	५।१४।५२	२७८	७।३३।५८	२८०
२८	२०।३०। २	२०२	२२।२२।२१	२४९	०।३६।२१	२८२	२।५८।५८	२८५	५।१९।३०	२७८	७।३८।३८	२८०
२९	२०।३३।२४	२०३	२२।२६।३०	२५१	०।४१। ३	२८३	३। ३।४३	२८५	५।२४। ८	२७८	७।४३।१८	२८१
३०	२०।३६।४७		२२।३०।४१		०।४५।४६		३। ८।२८		५।२८।४६		७।४७।५९	

राशि→	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धनु (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश ↓	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति	साम्पा. काल	गति
	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.	घ. मि. से.	से.
०	७।४७।५९	२८०	१०।१०। ३	२८७	१२।३०।३०	२६९	१४।३४।५८	२२४	१६।१६।११	१८२	१७।४१।४०	१६४
१	७।५२।३९	२८१	१०।१४।५०	२८६	१२।३४।५९	२६८	१४।३८।४२	२२३	१६।१९।१३	१८१	१७।४४।२४	१६२
२	७।५७।२०	२८१	१०।१९।३६	२८६	१२।३९।२७	२६७	१४।४२।२५	२२१	१६।२२।१५	१८०	१७।४७। ६	१६३
३	८। २। १	२८२	१०।२४।२२	२८६	१२।४३।५४	२६६	१४।४६। ६	२२०	१६।२५।१६	१७९	१७।४९।४९	१६३
४	८। ६।४३	२८२	१०।२९। ८	२८६	१२।४८।२०	२६५	१४।४९।४६	२१८	१६।२८।१५	१७८	१७।५२।३२	१६३
५	८।११।२५	२८२	१०।३३।५४	२८५	१२।५२।४५	२६३	१४।५३।२४	२१६	१६।३१।१३	१७८	१७।५५।१५	१६३
६	८।१६। ७	२८२	१०।३८।३९	२८६	१२।५७। ८	२६२	१४।५७। ०	२१५	१६।३४।११	१७७	१७।५७।५८	१६३
७	८।२०।४९	२८३	१०।४३।२५	२८५	१३। १।३०	२६०	१५। ०।३५	२१३	१६।३७। ८	१७५	१८। ०।४१	१६३
८	८।२५।३२	२८३	१०।४८।१०	२८५	१३। ५।५०	२६०	१५। ४। ८	२११	१६।४०। ३	१७४	१८। ३।२४	१६२
९	८।३०।१५	२८३	१०।५२।५५	२८५	१३।१०।१०	२५८	१५। ७।३९	२१०	१६।४२।५७	१७३	१८। ६। ६	१६३
१०	८।३४।५८	२८४	१०।५७।४०	२८४	१३।१४।२८	२५६	१५।११। ९	२०८	१६।४५।५०	१७२	१८। ८।४९	१६३
११	८।३९।४२	२८४	११। २।२४	२८४	१३।१८।४४	२५५	१५।१४।३७	२०७	१६।४८।४२	१७१	१८।११।३२	१६३
१२	८।४४।२६	२८४	११। ७। ८	२८३	१३।२२।५९	२५३	१५।१८। ४	२०६	१६।५१।३३	१७१	१८।१४।१५	१६३
१३	८।४९।१०	२८४	११।११।५१	२८३	१३।२७।१२	२५२	१५।२१।३०	२०४	१६।५४।२४	१७०	१८।१६।५८	१६४
१४	८।५३।५४	२८४	११।१६।३४	२८२	१३।३१।२४	२५०	१५।२४।५४	२०२	१६।५७।१८	१७०	१८।१९।४२	१६४
१५	८।५८।३८	२८५	११।२१।१६	२८२	१३।३५।३४	२४९	१५।२८।१६	२०१	१७। ०। ८	१६९	१८।२२।२६	१६४
१६	९। ३।२३	२८५	११।२५।५८	२८१	१३।३९।४३	२४७	१५।३१।३७	२००	१७। २।५७	१६८	१८।२५।१०	१६४
१७	९। ८। ८	२८५	११।३०।३९	२८१	१३।४३।५०	२४६	१५।३४।५७	१९८	१७। ५।४५	१६८	१८।२७।५४	१६५
१८	९।१२।५३	२८५	११।३५।२०	२८०	१३।४७।५६	२४४	१५।३८।१५	१९७	१७। ८।३३	१६७	१८।३०।३९	१६४
१९	९।१७।३८	२८५	११।४०। १	२८०	१३।५२। ०	२४३	१५।४१।३२	१९५	१७।११।२०	१६७	१८।३३।२३	१६५
२०	९।२२।२३	२८६	११।४४।४१	२७९	१३।५६। ३	२४१	१५।४४।४७	१९४	१७।१४। ७	१६६	१८।३६। ८	१६६
२१	९।२७। ९	२८६	११।४९।२०	२७८	१४। ०। ४	२३९	१५।४८। १	१९३	१७।१६।५३	१६६	१८।३८।५४	१६६
२२	९।३१।५५	२८६	११।५३।५८	२७७	१४। ४। ३	२३७	१५।५१।१४	१९२	१७।१९।३९	१६५	१८।४१।४०	१६७
२३	९।३६।४१	२८५	११।५८।३५	२७६	१४। ८। ०	२३६	१५।५४।२६	१९०	१७।२२।२४	१६५	१८।४४।२७	१६७
२४	९।४१।२६	२८६	१२। ३।११	२७६	१४।११।५६	२३५	१५।५७।३६	१८९	१७।२५। ९	१६५	१८।४७।१४	१६८
२५	९।४६।१२	२८६	१२। ७।४७	२७४	१४।१५।५१	२३२	१६। ०।४५	१८७	१७।२७।५४	१६४	१८।५०। २	१६९
२६	९।५०।५८	२८६	१२।१२।२१	२७४	१४।१९।४३	२३१	१६। ३।५२	१८८	१७।३०।३८	१६४	१८।५२।५१	१६९
२७	९।५५।४४	२८७	१२।१६।५५	२७३	१४।२३।३४	२२९	१६। ७। ०	१८५	१७।३३।२२	१६४	१८।५५।३८	१७०
२८	१०। ०।३१	२८६	१२।२१।२८	२७१	१४।२७।२३	२२८	१६।१०। ५	१८४	१७।३६। ६	१६४	१८।५८।२९	१७०
२९	१०। ५।१७	२८६	१२।२५।५९	२७१	१४।३१।११	२२६	१६।१३। ९	१८२	१७।३८।५०	१६४	१९। १।१९	१७०
३०	१०।१०। ३		१२।३०।३०		१४।३४।५८		१६।१६।११		१७।४१।४०		१९। ४। ६	

१९°१५' अक्षांशीय निरयण दशम लग्न सारिणी (सर्वत्र उपयोगी)

राशि→	मेष (०)		वृष (१)		मिथुन (२)		कर्क (३)		सिंह (४)		कन्या (५)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	१।२६। ३	२२६	३।२३।२६	२४५	५।३०।३६	२६१	७।४०।२२	२५४	९।४२।२०	२३३	११।३५।१३	२२०
१	१।२९।४९	२२६	३।२७।३१	२४६	५।३४।५७	२६१	७।४४।३६	२५३	९।४६।१३	२३३	११।३८।५३	२२१
२	१।३३।३५	२२७	३।३१।३७	२४७	५।३९।१८	२६१	७।४८।४९	२५३	९।५०। ६	२३२	११।४२।३४	२२०
३	१।३७।२२	२२७	३।३५।४४	२४८	५।४३।३९	२६१	७।५३। २	२५२	९।५३।५८	२३१	११।४६।१४	२२०
४	१।४१।१०	२२८	३।३९।५२	२४८	५।४८। ०	२६२	७।५७।१४	२५१	९।५७।४९	२३१	११।४९।५४	२२१
५	१।४४।५८	२२९	३।४४। ०	२४९	५।५२।२२	२६२	८। १।२५	२५१	१०। १।४०	२३०	११।५३।३५	२२०
६	१।४८।४७	२२९	३।४८। ९	२५०	५।५६।४४	२६१	८। ५।३६	२५०	१०। ५।३०	२२९	११।५७।१५	२२०
७	१।५२।३६	२३०	३।५२।१९	२५०	६। १। ५	२६२	८। ९।४६	२४९	१०। ९।१९	२२९	१२। ०।५५	२२०
८	१।५६।२६	२३०	३।५६।२९	२५१	६। ५।२७	२६२	८।१३।५५	२४९	१०।१३। ८	२२८	१२। ४।३५	२२०
९	२। ०।१६	२३१	४। ०।४०	२५२	६। ९।४९	२६१	८।१८। ४	२४८	१०।१६।५६	२२८	१२। ८।१५	२२१
१०	२। ४। ७	२३१	४। ४।५२	२५२	६।१४।१०	२६१	८।२२।१२	२४७	१०।२०।४४	२२७	१२।११।५६	२२०
११	२। ७।५८	२३२	४। ९। ४	२५३	६।१८।३१	२६२	८।२६।१९	२४७	१०।२४।३१	२२७	१२।१५।३६	२२०
१२	२।११।५०	२३३	४।१३।१७	२५३	६।२२।५३	२६१	८।३०।२६	२४६	१०।२८।१८	२२६	१२।१९।१६	२२१
१३	२।१५।४३	२३३	४।१७।३०	२५४	६।२७।१४	२६१	८।३४।३२	२४५	१०।३२। ४	२२६	१२।२२।५७	२२१
१४	२।१९।३६	२३४	४।२१।४४	२५५	६।३१।३५	२६१	८।३८।३७	२४४	१०।३५।५०	२२५	१२।२६।३८	२२१
१५	२।२३।३०	२३५	४।२५।५९	२५६	६।३५।५६	२६०	८।४२।४१	२४४	१०।३९।३५	२२५	१२।३०।१९	२२१
१६	२।२७।२५	२३६	४।३०।१५	२५६	६।४०।१६	२६०	८।४६।४५	२४३	१०।४३।२०	२२४	१२।३४। ०	२२१
१७	२।३१।२१	२३६	४।३४।३१	२५६	६।४४।३६	२६०	८।५०।४८	२४२	१०।४७। ४	२२४	१२।३७।४१	२२१
१८	२।३५।१७	२३७	४।३८।४७	२५७	६।४८।५६	२६०	८।५४।५०	२४१	१०।५०।४८	२२४	१२।४१।२२	२२२
१९	२।३९।१४	२३७	४।४३। ४	२५७	६।५३।१६	२५९	८।५८।५१	२४१	१०।५४।३२	२२३	१२।४५। ४	२२२
२०	२।४३।११	२३८	४।४७।२१	२५८	६।५७।३५	२५९	९। २।५२	२४०	१०।५८।१५	२२३	१२।४८।४६	२२२
२१	२।४७। ९	२३९	४।५१।३९	२५८	७। १।५४	२५८	९। ६।५२	२३९	११। १।५८	२२३	१२।५२।२८	२२२
२२	२।५१। ८	२४०	४।५५।५७	२५९	७। ६।१२	२५८	९।१०।५१	२३८	११। ५।४१	२२२	१२।५६।१०	२२३
२३	२।५५। ८	२४०	५। ०।१६	२५९	७।१०।३०	२५८	९।१४।४९	२३९	११। ९।२३	२२२	१२।५९।५३	२२३
२४	२।५९। ८	२४१	५। ४।३५	२५९	७।१४।४८	२५७	९।१८।४८	२३७	११।१३। ५	२२२	१३। ३।३६	२२४
२५	३। ३। ९	२४२	५। ८।५४	२६०	७।१९। ५	२५६	९।२२।४५	२३६	११।१६।४७	२२२	१३। ७।२०	२२४
२६	३। ७।११	२४३	५।१३।१४	२६०	७।२३।२१	२५६	९।२६।४१	२३६	११।२०।२९	२२१	१३।११। ४	२२४
२७	३।११।१४	२४३	५।१७।३४	२६०	७।२७।३७	२५६	९।३०।३७	२३५	११।२४।१०	२२१	१३।१४।४८	२२४
२८	३।१५।१७	२४४	५।२१।५४	२६१	७।३१।५३	२५५	९।३४।३२	२३४	११।२७।५१	२२१	१३।१८।३२	२२५
२९	३।१९।२१	२४५	५।२६।१५	२६१	७।३६। ८	२५४	९।३८।२६	२३४	११।३१।३२	२२१	१३।२२।१७	२२६
३०	३।२३।२६		५।३०।३६		७।४०।२२		९।४२।२०		११।३५।१३		१३।२६। ३	

राशि→	तुला (६)		वृश्चिक (७)		धनु (८)		मकर (९)		कुम्भ (१०)		मीन (११)	
अंश ↓	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.	साम्पा. काल घं. मि. से.	गति से.
०	१३।२६। ३	२२६	१५।२३।२६	२४५	१७।३०।३६	२६१	१९।४०।२२	२५४	२१।४२।२०	२३३	२३।३५।१३	२२०
१	१३।२९।४९	२२६	१५।२७।३१	२४६	१७।३४।५७	२६१	१९।४४।३६	२५३	२१।४६।१३	२३३	२३।३८।५३	२२१
२	१३।३३।३५	२२७	१५।३१।३७	२४७	१७।३९।१८	२६१	१९।४८।४९	२५३	२१।५०। ६	२३२	२३।४२।३४	२२०
३	१३।३७।२२	२२७	१५।३५।४४	२४८	१७।४३।३९	२६१	१९।५३। २	२५२	२१।५३।५८	२३१	२३।४६।१४	२२०
४	१३।४१।१०	२२८	१५।३९।५२	२४८	१७।४८। ०	२६२	१९।५७।१४	२५१	२१।५७।४९	२३१	२३।४९।५४	२२१
५	१३।४४।५८	२२९	१५।४४। ०	२४९	१७।५२।२२	२६२	२०। १।२५	२५१	२२। १।४०	२३०	२३।५३।३५	२२०
६	१३।४८।४७	२२९	१५।४८। ९	२५०	१७।५६।४४	२६१	२०। ५।३६	२५०	२२। ५।३०	२२९	२३।५७।१५	२२०
७	१३।५२।३६	२३०	१५।५२।१९	२५०	१८। १। ५	२६२	२०। ९।४६	२४९	२२। ९।१९	२२९	०। ०।५५	२२०
८	१३।५६।२६	२३०	१५।५६।२९	२५१	१८। ५।२७	२६२	२०।१३।५५	२४९	२२।१३। ८	२२८	०। ४।३५	२२०
९	१४। ०।१६	२३१	१६। ०।४०	२५२	१८। ९।४९	२६१	२०।१८। ४	२४८	२२।१६।५६	२२८	०। ८।१५	२२१
१०	१४। ४। ७	२३१	१६। ४।५२	२५२	१८।१४।१०	२६१	२०।२२।१२	२४७	२२।२०।४४	२२७	०।११।५६	२२०
११	१४। ७।५८	२३२	१६। ९। ४	२५३	१८।१८।३१	२६२	२०।२६।१९	२४७	२२।२४।३१	२२७	०।१५।३६	२२०
१२	१४।११।५०	२३३	१६।१३।१७	२५३	१८।२२।५३	२६१	२०।३०।२६	२४६	२२।२८।१८	२२६	०।१९।१६	२२१
१३	१४।१५।४३	२३३	१६।१७।३०	२५४	१८।२७।१४	२६१	२०।३४।३२	२४५	२२।३२। ४	२२६	०।२२।५७	२२१
१४	१४।१९।३६	२३४	१६।२१।४४	२५५	१८।३१।३५	२६१	२०।३८।३७	२४४	२२।३५।५०	२२५	०।२६।३८	२२१
१५	१४।२३।३०	२३५	१६।२५।५९	२५६	१८।३५।५६	२६०	२०।४२।४१	२४४	२२।३९।३५	२२५	०।३०।१९	२२१
१६	१४।२७।२५	२३६	१६।३०।१५	२५६	१८।४०।१६	२६०	२०।४६।४५	२४३	२२।४३।२०	२२४	०।३४। ०	२२१
१७	१४।३१।२१	२३६	१६।३४।३१	२५६	१८।४४।३६	२६०	२०।५०।४८	२४२	२२।४७। ४	२२४	०।३७।४१	२२१
१८	१४।३५।१७	२३७	१६।३८।४७	२५७	१८।४८।५६	२६०	२०।५४।५०	२४१	२२।५०।४८	२२४	०।४१।२२	२२२
१९	१४।३९।१४	२३७	१६।४३। ४	२५७	१८।५३।१६	२५९	२०।५८।५१	२४१	२२।५४।३२	२२३	०।४५। ४	२२२
२०	१४।४३।११	२३८	१६।४७।२१	२५८	१८।५७।३५	२५९	२१। २।५२	२४०	२२।५८।१५	२२३	०।४८।४६	२२२
२१	१४।४७। ९	२३९	१६।५१।३९	२५८	१९। १।५४	२५८	२१। ६।५२	२३९	२३। १।५८	२२३	०।५२।२८	२२२
२२	१४।५१। ८	२४०	१६।५५।५७	२५९	१९। ६।१२	२५८	२१।१०।५१	२३८	२३। ५।४१	२२२	०।५६।१०	२२३
२३	१४।५५। ८	२४०	१७। ०।१६	२५९	१९।१०।३०	२५८	२१।१४।४९	२३९	२३। ९।२३	२२२	०।५९।५३	२२३
२४	१४।५९। ८	२४१	१७। ४।३५	२५९	१९।१४।४८	२५७	२१।१८।४८	२३७	२३।१३। ५	२२२	१। ३।३६	२२४
२५	१५। ३। ९	२४२	१७। ८।५४	२६०	१९।१९। ५	२५६	२१।२२।४५	२३६	२३।१६।४७	२२२	१। ७।२०	२२४
२६	१५। ७।११	२४३	१७।१३।१४	२६०	१९।२३।२१	२५६	२१।२६।४१	२३६	२३।२०।२९	२२१	१।११। ४	२२४
२७	१५।११।१४	२४३	१७।१७।३४	२६०	१९।२७।३७	२५६	२१।३०।३७	२३५	२३।२४।१०	२२१	१।१४।४८	२२४
२८	१५।१५।१७	२४४	१७।२१।५४	२६१	१९।३१।५३	२५५	२१।३४।३२	२३४	२३।२७।५१	२२१	१।१८।३२	२२५
२९	१५।१९।२१	२४५	१७।२६।१५	२६१	१९।३६। ८	२५४	२१।३८।२६	२३४	२३।३१।३२	२२१	१।२२।१७	२२६
३०	१५।२३।२६		१७।३०।३६		१९।४०।२२		२१।४२।२०		२३।३५।१३		१।२६। ३	

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यह मानना पड़ेगा कि पाश्चात्य गणना-पद्धति सूक्ष्मता, सरलता एवं लाघव की दृष्टि से भारतीय गणना-पद्धति से कहीं आगे बढ़ चुकी है। हम चाहते हैं—हमारे पाठक इन पद्धतियों के आवश्यक ज्ञान से वञ्चित न रहें। यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अपेक्षित सूक्ष्मता नहीं आती, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिक काल (Sidereal-time) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिक काल क्या है ?" इस विषय में कुछ भी सैद्धान्तिक विवेचन न करते हुए इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्वसाधारणोपयोगी विधि ही प्रस्तुत करते हैं—

विधि:—सां० का० (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण, जो इस पञ्चाङ्ग में दिए गए कोष्ठकों (सारिणियों) से बिना किसी परिश्रम के प्रस्तुत किये जा सकते हैं, प्रस्तुत कीजिए—

†(१) **अभीष्ट नगर के अक्षांश** (उत्तर या दक्षिण)
§(२) **अभीष्ट नगर के रेखांश** (पूर्व या पश्चिम)
(३) **अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर** (+या−)

} ये तीनों उपकरण १२१–२२ पृष्ठस्थ "अक्षांशादि सारिणी" से उठाइए।

विशेष:—यदि 'अक्षांशादि सारिणी' में अभीष्टनगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि उपयोग में लाए जा सकते हैं।

(४) **अभीष्ट नगर का स्थानीय समय:**—जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्टनगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटादि या (घण्टादि) को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्टनगर का स्थानीय समय बन जाता है। '+' यह चिह्न जोड़ने की एवं '—' यह चिह्न घटाने की क्रिया को बतलाता है।

(५) **अभीष्ट तारीख का अयनांश** :—पृ० १२५ पर अयनांश सारिणी को दो (१म एवं २य) भागों में दिया गया है। सारिणी के १म भाग में से अभीष्ट ईस्वी सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश ले और उनमें सारिणी के २य भाग में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का कलादि फल लेकर जोड़ देने से अभीष्ट दिन के स्पष्ट अयनांश होंगे।

(६) **इष्टकालिक साम्पातिक काल** :—पृष्ठ १२४—१२५ पर साम्पातिक काल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर इष्टकालिक सां० का० इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—सां० का० कोष्ठक नं० (१) में से अभीष्ट सन का सां० का० उठाएं। उसमें सां० का० कोष्टक नं० (२) से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का (लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां० का० लेकर जोड़ने से रोपड़ शहर में अभीष्ट तारीख के प्रारम्भ (स्थानीय समय ० घं. ०मि.) का सां० का० प्राप्त होगा। इसमें सां० का० कोष्टक नं० (३) से अभीष्टनगर के रेखांशों द्वारा सेकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से यह अभीष्टनगर [illegible] (स्थानीय समय ०घं.० मि.) का सां० का० बन जाएगा। अब इस अभीष्ट समय का बनाने के लिए इसमें अभीष्ट स्थानीय समय, जिसका साधन पहिले बताया जा चुका है, के घण्टा मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीय समय के घण्टा मिनटों द्वारा सां० का० कोष्ठक नं० (४) से प्राप्त किया गया मिनटादि काल संस्कार जोड़ देने से घण्टादि इष्ट सां० का० होगा। यहाँ यदि घण्टे २४ हों या २४ से अधिक हों तो उनमें से २४ घटाकर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

इस पञ्चाङ्ग में दिये गए सां० का० कोष्ठकों से सन् १८७६ से सन् १९७१ तक का सां० का० जाना जा सकता है।

सारिणी से लग्न स्पष्ट करने की विधि :—पृ० १२६—१२७ पर ३० एवं ३१ अक्षांश वाले नगरों के लग्न स्पष्ट करने की दो सारिणिएं दी गई हैं, जो पंजाब के अधिकतर नगरों के लिए उपयोगी हैं। अभीष्टनगर के अक्षांश वाली लग्नसारिणी में उक्त रीति से बनाए गए सां० का० के घण्टामिनटादि को ढूंढे। यदि वहाँ इष्ट सां० का० पूरा २ न मिले (पूरा कभी ही मिलता है) तो सारिणी में उसके बिल्कुल समीप वाला परन्तु उससे कम सां०का० जहां हो उसके कालम के बिल्कुल ऊपर की लाईन में दी गई राशि एवं बाईं ओर की सबसे पहिली लाइन में दिया गया अंश देखकर दोनों को एक ओर अलग लिख लें। फिर सारिणी में देखे गए सां० का० एवं इष्ट सां० का० के सेकण्डात्मक अन्तर को ६० से गुणा करें। इस गुणनफल को सारिणी में देखे गए सां० का० एवं सारिणीस्थित उससे नीचे के सां० का० के मध्य आगे ही गति वाले कालम में दिए गए सेकण्डों से भाग देकर क्रमशः दो लब्धि कला एवं विकला प्राप्त कर एक ओर रखे राशि एवं अंशों में जोड़ दें। इस प्रकार यह २३°।१५' अयनांश सम्बन्धी निरयण लग्न स्पष्ट होगा। इसे इष्टदिवसीय निरयण बनाने के लिए उस दिन के अयनांश का २३ अंश १५ कला से अन्तर करें। यदि इष्ट अयनांश २३°।१५' से अधिक हो तो इस अंशादि, कलादि या विकलादि अन्तर को पूर्वसाधित लग्न में से घटाए, अन्यथा उसमें जोड़ दे। इस प्रकार यह इष्ट निरयण सूक्ष्म लग्न स्पष्ट होगा।

ठीक इसी प्रकार जिससे लग्न स्पष्ट किया गया है उसी सां० का० से पृ० १२८ पर दी गई दशमलग्नसारिणी से दशम लग्न स्पष्ट करें। दशमलग्नसारिणी सभी अक्षांशों के लिए एक सी ही होती है।

उदाहरण—सन् १९५९ की १२ जून को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार दिन के २ बजकर ३० मिनट (अर्थात् १४ बजकर ३० मिनट) पर भटिण्डा (पंजाब) में लग्न स्पष्ट करें।

"अक्षांशादि सारिणी" से {
भटिण्डा के अक्षांश उ० ३०°।११'
भटिण्डा के रेखांश पू० ७५।००
मि० से०
भटिण्डा का स्टैण्डर्ड अन्तर— ३०।००

घं० मि०
भा. स्टैं. टा. १४।३०
स्टैण्डर्ड अन्तर — ३०
स्थानीय समय १४।००

सन् १९५९ ई० २३°।१६'। ८" 'अयनांश सारिणी' १म भाग से
जून + २२ 'अयनांश सारिणी' २य भाग से

इष्ट अयनांश २३।१६।३०

---

† भारत के समस्त नगरों के अक्षांश उत्तर ही हैं।
§ भारत के समस्त नगरों के रेखांश पूर्व ही हैं

साम्पातिक काल साधन

	घं०मि०से०	
सन् १९५९ ई०	६।३८।४५	सां० का० कोष्ठक नं० (१) से
१२ जून	+ १०।३८।४२	सां० का० कोष्ठक नं० (२) से
रोपड़ में १२जून सन् १९५९के प्रारम्भ का सां.का.	१७।१७।२७	
रेखांश सम्बन्धी संस्कार	+ १	सां०का०कोष्ठक नं० (३) से
भटिण्डा में १२ जन सन् १९५९के प्रारम्भ का सां.का.	१७।१७।२८	
स्थानीय समय	+ १४।००।००	
काल संस्कार	+ २।१८	सां.का. कोष्ठक नं० (४) से
इष्टकालिक साम्पातिक काल	७।१९।४६	

भटिण्डा के अक्षांश लगभग ३० उत्तर हैं, अतः इस इष्ट सां० का० को ३० अक्षांश वाली लग्नसारिणी में देखा तो इसके निकटतम एवं इससे कम सां० का० ७।१९।२० प्राप्त हुआ, जिसके बिल्कुल ऊपर ५ राशि एवं बाईं ओर सबसे पहिले कालम में २४ अंश लिखे हैं। इन्हें (५ राशि २४ अंशों को) एक ओर लिख लिया। सारिणीस्थित सां० का० ७।१९।२० एवं इष्ट सां० का० के अन्तर २६ सेकण्ड को ६० से गुणा किया। इस गुणनफल को ७।१९।२० एवं सारिणी में इससे नीचे दिए गए ७।२३।'१७ सां० का० के मध्य आगे ही गति वाले कालम में लिखे २७७ सेकण्डों से भाग देकर क्रमशः दो लब्धिएं ५ कला एवं ३८ विकला प्राप्त हुई। इन्हें एक ओर लिखे हुए ५ राशि २४ अंश में जोड़ा तो ५।२४।५।३८ यह २३°।१५' अयनांश-सम्बन्धी निरयण राश्यादि लग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से २३°।१५' एवं १२ जून सन्१९५९ के अयनांश २३।१६।३० के अन्तर १ कला ३० विकला को घटाया (क्योंकि इष्ट अयनांश २३°।१५' से अधिक है) तो ५।२४।४।८ हमारा अभीष्ट निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

इसी साम्पातिक काल द्वारा दशम सारिणी से इसी प्रकार दशम भी स्पष्ट किया जा सकता है।

मुहूर्त (सं० २०१८)

समय शुद्धि—वै. कृ. ८ श. से वै. कृ. १२ बु. तक तथा पौष कृ. ८ शनिवार (पौष प्र. ३) से माघ शु. १५ चं. (फाल्गु. प्र. ८) तक शुक्र एवं माघ कृ. ७ रवि (माघ प्र. १६) से फाल्गुन कृ. ८ मं. (फाल्गु. प्र. १६) तक गुरु अस्त रहेगा। गुरु शुक्र के अस्तकाल में शुभ कार्य वर्जित होने से इन दिनों विवाह आदि नहीं होंगे। गुरु शुक्र के अस्त होने से पूर्व ३ दिन वृद्धत्व दोष के एवं उदय होने के बाद ३ दिन बाल्य दोष के शुभ कार्यों में त्याज्य है। इस वर्ष ज्येष्ठ अधिक मास है। इस अधिक मास में (ज्ये.प्र.२ से ३१तक) विवाहादि मांगलिक कृत्य नहीं होंगे।

सूचना—नीचे दिए गए मुहूर्त्तों में जहां कहीं भी युति, वेध एवं दग्धा तिथि दोषों के परिहार लिख गए हैं [illegible]

यहां क्रांतिसाम्य (महापात)-दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चाङ्ग-कार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

शुद्ध सपरिहार विवाह मुहूर्त (सं० २०१८)

सब प्रदेशों के लिये

वैशा.प्र. १३	वैशा.शु.१०मं.	मघा ।ऽऽरा.ऽगु.।ऽअ.।ऽ।ल.गोधू. वा ल.८ (अंश १५ या.) (राहुयुतिपरिहार) आव.
वैशा.प्र. १५	वैशा.शु.१२गु.	उ.फा ऽ्सू. (घ.६।२७ या.) ।।ऽ्शु।।ऽ (घ. ६।२७उ.) ।।। दि.ल.२ वा. धूलिमुख (शुक्रवेध परिहार)
वैशा.प्र. १५	वैशा.शु.१२गु.	हस्त ऽ्सू.ऽ।।।।।। ल. १२ चं. दा.
वैशा.प्र. १६	वैशा.शु.१३शु.	हस्त ऽ्सू.ऽ।।।।।। ल. ८-९
वैशा.प्र. १६	वैशा.शु.१३शु.	चित्रा ।।।ऽ्शुऽ्चौऽ।। ल. १२ (अंश ११ उ.) चं.दा.
वैशा.प्र. १७	वैशा.शु.१४श.	चित्रा ।।।ऽ्शुऽ्चौऽ।।दि.ल.२, रा.ल.८ वा ९ (अंश २० या.)
वैशा.प्र. २२	प्र.ज्ये.कृ. ४गु.	मूल ।।।।ऽअ.।ऽ।ल. गोधूलि
वैशा.प्र. २५	प्र.ज्ये.कृ. ७र.	धनि. ऽ्शु.।।।।ऽऽ।। ल. ९-१२
वैशा.प्र. २६	प्र.ज्ये.कृ. ८चं.	धनि. ऽ्शु.।।।ऽ्चौऽऽ।। दि.ल. २
वैशा.प्र. २८	प्र.ज्ये.कृ.११बु.	उ.भा. ।ऽ।।ऽरो।।।।ल.९
वैशा.प्र. २९	प्र.ज्ये.कृ.१२गु.	उ.भा. ।।।।ऽऽ।।दि.ल.२
आषा.प्र. ८	द्वि.ज्ये.शु. ८बु.	हस्त ।ऽ।।ऽ्चौऽ।ऽ ल.धूलिमुख
आषा.प्र.१३	द्वि.ज्ये.शु१३चं.	अनु. ऽ्सूऽ।ऽ्शु.।ऽअ.।।।।ल.धूलिमुख (शुक्रवेध परिहार)
आषा.प्र.२१	आषा.कृ. ७मं.	उ.भा. ऽ्शु.।।।।।ऽ।ल. धूलिमुख वा१
आषा.प्र.२२	आषा.कृ. ८बु.	रेव. ऽ।।।ऽअ.।ऽ।ल.२ (घ.५३उ.)
आषा.प्र.२३	आषा.कृ. ९गु.	अश्वि. ऽश.।।।ऽअ. (घ.५५या.)ऽऽ।ल. धूलिमु. वा. रा. ल. २
आषा.प्र.२६	आषा.कृ.१२र.	रोहि. ।ऽ।।।ऽ।दि.ल.६
श्रा.प्र. ३	आषा.शु. ५मं.	उ.फा. (मृत्यु घ.३२ या.)।।।।ऽअ.।।।ऽल.धूलिमुख वा १२ चं.दा.
श्रा.प्र. ३	आषा.शु. ५मं.	हस्त ऽमं.।।।ऽअ.ऽऽ।ऽल.२ (अंश २ उ.) आव.
श्रा.प्र. ४	आषा.शु. ६बु.	हस्त ऽमं.।।।।।ऽऽ।ल.धूलिमुख, २ वा १२ चं.दा.
श्रा.प्र. ४	आषा.शु. ६बु.	चित्रा ।।।।।ऽ(घ.५७उ.)ऽ।ल.३आव.
श्रा.प्र. ६	आषा.शु. ८गु.	स्वा. ।ऽ।।ऽ्न.(घ.४२या.)ऽ।ल.धूलिमु. वा १ चं.दा.
श्रा.प्र. ८	आषा.शु.१०र.	अनु.(भ.४०।५५उ.)।।।।ऽ्चौ.।ऽ।दि.ल.६ वा गोधू.

देशाचार से केवल पंजाब के लिए

श्रा.प्र. १० आषा.शु.१२मं. मूल (घं.३१उ.)ऽ्सू.।।।ऽ्शु.ऽरो. ।।।दि.ल. ६

श्रा.प्र.१६ श्राव.कृ. ४चं. उ.भा. ऽगु.।।।।।ऽ।ल.

श्रा.प्र.१७ श्राव.कृ. ५मं. उ.भा. ऽगु.।।।ऽमं.ऽचौ.।ऽ।दि.ल. ६

श्रा.प्र.१८ श्राव.कृ. ६बु. अश्वि. ऽचं.गु.श.।।।।।।ऽ।ल. ३, आव.गु.दा.

श्रा.प्र.३० श्राव.शु. ३चं. उ.फा. ।।ऽमं.।।ऽमृ.(घ. ४८ उ.)।।।। दि. ल. ७, धूलिमुख (भौमयुति परिहार)

भा.प्र. २ श्राव.शु. ६गु. स्वा. ।।।।।।।।।ल.धूलिमुख

भा.प्र. ४ श्राव.शु. ८श. अनु. ।।।।ऽअ.।ऽ।ल.धूलिमुख वा २ चं.दा.,

भा.प्र. १५ भाद्र.कृ. ५बु. अश्वि. ऽश.ऽ।।ऽनृ. (घ. २४ उ.)।ऽ।ल.७ (इसके बाद लग्नाभाव एवं गणित से कां.ता.)

भा.प्र. १८ भाद्र.कृ. ८श. रोहि. ऽगु.ऽ।।ऽचौ.(घ. ३० या.)।ऽ।ल. धूलिमुख

भा.प्र. २७ भाद्र.शु. १चं. हस्त ।।ऽवृ.मं. (मं. युति ४३।७ या.) ।।।ऽ।।। ल. २ (भौमयुतिपरिहार)

भा.प्र. २८ भाद्र.शु. २मं. हस्त ।।ऽवृ.।।ऽ।।दि.ल. ७-८

भा.प्र. २८ भाद्र.शु. २मं. चि. ।।ऽमं.।।ऽरो.(घ. ४७उ.)।।।। लग्न चिन्त्य (भौमयुति परिहार)

भा.प्र. ३० भाद्र.शु. ४गु. स्वा. ।।ऽचं.।।।।।दि.ल. ८ (चन्द्रवेध परिहार)

आश्वि.प्र.२८ आश्वि.शु.४गु. अनु. ऽमं.।।।।।।।।दि.ल. ९ (अं. १६ या.)

आश्वि.प्र.३० आश्वि.शु.६र. मू. (मृत्यु घ. १९ उ.) ।।।।।।।। दि. ल. ८ आव. अनि. ग्र.दा.

का.प्र. ५ आश्वि.शु. १२श. उ.भा. ऽगु.।।ऽगु.।ऽनृ.।।।ल. २ वा ६ चं.दा. (शुक्रवेध-परिहार)

का.प्र. ६ आश्वि.शु. १३र. उ.भा. ऽगु.।।ऽगु.।ऽनृ.।।।दि.ल. ८(शुक्रवेध परिहार)

का.प्र. ६ आश्वि.शु. १३र. रेव. ।।।ऽगु.।ऽऽ।ल. धूलिमुख वा २

का.प्र. ७ आश्वि.शु. १५चं. अश्वि. ऽश.।।।ऽवृ.ऽचौ.ऽऽ।ल. २ वा ३ गु.दा.

का.प्र. ८ कार्ति.कृ. १मं. अश्वि. ऽश.।।।ऽवृ.ऽचौ.ऽऽ।दि.ल. ९ आव.

का.प्र. १० कार्ति.कृ. ३गु. रोहि. ।।।।।।।।।ल. ६

का.प्र. १६ कार्ति.कृ. ९बु. मघा ऽगु.।।।ऽके.ऽचौ ।ऽ।ल. ६

का.प्र. १७ कार्ति.कृ. १०गु. मघा ऽगु.।।।ऽके.ऽचौ.।ऽ।दि.ल. ८-९ धूलिमुख

का.प्र. १८ कार्ति.कृ. १०शु. उ.फा. ।।।।ऽरो.।ऽ।ल. ६ (अं.१४उ.)

का.प्र. २६ कार्ति.शु. ३श. मूल ऽमं.।।।।।।।।ल. धूलिमुख

सब प्रवेशों के लिए

मार्ग.प्र. ३ कार्ति.शु. ११श. रेव. ऽगु.।।।ऽअ.ऽ।।ल.६चं.दा.

मार्ग.प्र. ४ कार्ति.शु. १२र. रेव. ऽगु.।।।।ऽ।।ल. गो.धू. वा रा. ल. ३

मार्ग.प्र. ७ कार्ति.शु. १५बु. रोहि ।।ऽगु.ऽगु.ऽचौ.।ऽ।। ल. ५-६ (गुरुवेध परिहार)

मार्ग.प्र.१६ मार्ग.कृ. ९गु. उ.फा. ऽगु.।।।।ऽचौ. ।ऽ।ल. धूलिमुख—५-७

मार्ग.प्र.१७ मार्ग.कृ. १०श. हस्त (भ. ५०।३१ या.)ऽगु.।।।।।ऽ।ल.७

मार्ग.प्र.१८ मार्ग.कृ. ११र. हस्त ऽगु.।।।ऽरो.।ऽ।दि.ल. १२,

मार्ग.प्र. १८ मार्ग.कृ. ११र. चित्रा ।।।।ऽरा.ऽऽ।ल. धूलिमुख आव. रा. ल. ५

मार्ग.प्र. १९ मार्ग.कृ. १२चं. स्वा. ।।।।।।ऽ।ल. ५-६,

मार्ग.प्र. २६ मार्ग.शु. ४चं. श्रव. ।।ऽगु.।।ऽरो. ।ऽ।ल.७ (अं. १० उ.) आव.

मार्ग.प्र. २७ मार्ग.शु. ५मं. श्रव. ।।ऽगु.।।ऽरो.।ऽ।दि.ल. १२

फाल्गु.प्र.२४ फाल्गु.शु. १बु. उ.भा. ।।।।।।।।।ल. ८-९

फाल्गु.प्र.२५ फाल्गु.शु. २गु. रेव. ।।।।ऽचौ.ऽ।।ल. ८-९

फाल्गु.प्र.२६ फाल्गु.शु. ३गु. अश्वि. ऽगु.।।।ऽचौ.(घ. १८ या.) ।।।ऽ(घ. ६ उ.) दि.ल. २-३ वा धूलिमुख

फाल्गु.प्र.२९ फाल्गु.शु. ७चं. रोहि. ।।।।।ऽऽ।दि.ल. १२-१

उपनयन मुहूर्त

चैत्र.शु. ३र. अश्वि

चैत्र.शु.१०र. पुष्य

चैत्र.शु.११चं. आश्ले.

वैशा.कृ. ४बु. अनु.

वैशा.शु.१२गु. उ.फा. (शुक्रवेध परिहार)

प्र.ज्ये.कृ. २मं. अनु.

प्र.ज्ये.कृ. ५गु. पू.षा.

द्वि.ज्ये.शु. ३गु. पुष्य

द्वि.ज्ये.शु. ५र. आश्ले.

फाल्गु.शु. २गु. रेव.

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त

वैशा.शु. ८र. पुष्य, ल.२ अभिजिति च

वैशा.शु.१२गु. उ.फा. (शुक्रवेध परिहार) अभिजिति

वैशा.शु.१३शु. हस्त.अभिजित

प्र.ज्ये.कृ. ७र. श्रव. (बुधवेध परिहार) अभिजिति

प्र.ज्ये.कृ. ८चं. धनि. ल.२

द्वि.ज्ये.शु. २गु.पुन. अभिजिति

द्वि.ज्ये.शु. ३शु. पुष्य अभिजिति

द्वि.ज्ये.शु.१०गु. चित्रा, अभिजिति दक्षिणायन (उग्रदेव प्रतिष्ठा)

द्वि.ज्ये.शु.१३चं. अनु. अभिजिति उग्र देव प्रतिष्ठा

आषाढ़.शु. २शु. पुष्य ल. ६, अभिजिति उग्र-देव प्रतिष्ठा

आषा.शु. ८शु. स्वा. (रिक्ता १४।२८ उ.) ल. ६ (घ. १४।२८ या.)

फाल्गु.शु. २गु.रेव., अभिजिति

फाल्गु.शु. ७चं. रोहि. अभिजिति

द्विरागमन मुहूर्त

वैशा.शु. ४बु.(८।५४उ.) रोहि.

वैशा.शु. ४बु. मृग.

वैशा.शु. ५गु. मृग.

वैशा.शु.१२गु. उ.फा.

वैशा.शु.१३शु. हस्त

प्र.ज्ये.कृ. ८चं.(८।०या.) धनि.

प्र.ज्ये.कृ.११बु. उ.भा.

प्र.ज्ये.कृ.१२गु. उ.भा.

मार्ग.कृ. १गु. रोहि.

मार्ग.कृ. २शु. मृग.

मार्ग.कृ.१२चं. चित्रा.

फा.शु. २गु. रेवती

फा.शु. ७चं. रोहि.

साम्पातिक काल साधन

		घं०मि०से०	
सन् १९५९ ई०		६।३८।४५	सां० का० कोष्ठक नं०(१) से
१२ जून	+	१०।३८।४२	सां० का० कोष्ठक नं०(२) से
रोपड़ में १२जून सन् १९५९के प्रारम्भ का सां.का.		१७।१७।२७	
रेखांश सम्बन्धी संस्कार	+	१	सां०का०कोष्ठक नं० (३) से
भटिण्डा में १२ जन सन् १९५९के प्रारम्भ का सां.का.		१७।१७।२८	
स्थानीय समय	+	१४।००।००	
काल संस्कार	+	२।१८	सां.का. कोष्ठक नं०(४) से
इष्टकालिक साम्पातिक काल		७।१९।४६	

भटिण्डा के अक्षांश लगभग ३० उत्तर हैं, अतः इस इष्ट सां० का० को ३० अक्षांश वाली लग्नसारिणी में देखा तो इसके निकटतम एवं इससे कम सां० का० ७।१९।२० प्राप्त हुआ, जिसके बिल्कुल ऊपर ५ राशि एवं बाईं ओर सबसे पहिले कालम में २४ अंश लिखे हैं। इन्हें (५ राशि २४ अंशों को) एक ओर लिख लिया। सारिणीस्थित सां० का० ७।१९।२० एवं इष्ट सां० का० के अन्तर २६ सेकण्ड को ६० से गुणा किया। इस गुणनफल को ७।१९।२० एवं सारिणी में इससे नीचे दिए गए ७।२३।'१७ सां० का० के मध्य आगे ही गति वाले कालम में लिखे २७७ सेकण्डों से भाग देकर क्रमशः दो लब्धिएं ५ कला एवं ३८ विकला प्राप्त हुईं। इन्हें एक ओर लिखे हुए ५ राशि २४ अंश में जोड़ा तो ५।२४।५।३८ यह २३°।१५′ अयनांश-सम्बन्धी निरयण राश्यादि लग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से २३°।१५′ एवं १२ जून सन् १९५९ के अयनांश २३।१६।३० के अन्तर १ कला ३० विकला को घटाया (क्योंकि इष्ट अयनांश २३°।१५′ से अधिक है) तो ५।२४।४।८ हमारा अभीष्ट निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

इसी साम्पातिक काल द्वारा दशम सारिणी से इसी प्रकार दशम भी स्पष्ट किया जा सकता है।

मुहूर्त (सं० २०१८)

समय शुद्धि—वै. कृ. ८ श. से वै. कृ. १२ बु. तक तथा पौष कृ. ८ शनिवार (पौष प्र. ३) से माघ शु. १५ चं. (फाल्गु. प्र. ८) तक शुक्र एवं माघ कृ. ७ रवि (माघ प्र. १६) से फाल्गुन कृ. ८ मं. (फाल्गु. प्र. १६) तक गुरु अस्त रहेगा। गुरु शुक्र के अस्तकाल में शुभ कार्य वर्जित होने से इन दिनों विवाह आदि नहीं होंगे। गुरु शुक्र के अस्त होने से पूर्व ३ दिन वृद्धत्व दोष के एवं उदय होने के बाद ३ दिन बाल्य दोष के शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। इस वर्ष ज्येष्ठ अधिक मास है। इस अधिक मास में (ज्ये.प्र.२ से ३१तक) विवाहादि मांगलिक कृत्य नहीं होंगे।

सूचना—नीचे दिए गए मुहूर्तों में जहां कहीं भी यति, वेध एवं दग्धा तिथि दोषों के परिहार किए गए हैं [illegible]

यहां क्रांतिसाम्य (महापात)-दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चाङ्ग-कार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है।

शुद्ध सपरिहार विवाह मुहूर्त (सं० २०१८)

सब प्रदेशों के लिये

वैशा.प्र. १३ वैशा.शु.१०मं. मघा ।ऽऽरा.ऽगु.।ऽअ.।ऽ।।ल.गोधू. वा ल.८ (अंश १५ या.) (राहुयुतिपरिहार) आव.
वैशा.प्र. १५ वैशा.शु.१२गु. उ.फा ऽसू. (घ.६।२७ या.) ।।ऽशु।।ऽ (घ. ६।२७उ.) ।।। दि.ल.२ वा. धूलिमुख (शुक्रवेध परिहार)
वैशा.प्र. १५ वैशा.शु.१२गु. हस्त ऽसू.ऽ।।।।।।। ल. १२ चं. दा.
वैशा.प्र. १६ वैशा.शु.१३शु. हस्त ऽसू.ऽ।।।।।।। ल. ८-९
वैशा.प्र. १६ वैशा.शु.१३शु. चित्रा ।।।।ऽशुऽचौऽ।।। ल. १२ (अंश ११ उ.) चं.दा.
वैशा.प्र. १७ वैशा.शु.१४श. चित्रा ।।।।ऽशुऽचौऽ।।दि.ल.२, रा.ल.८ वा ९(अंश २० या.)
वैशा.प्र. २२ प्र.ज्ये.कृ. ४गु. मूल ।।।।।ऽअ.।ऽ।।ल. गोधूलि
वैशा.प्र. २५ प्र.ज्ये.कृ. ७र. धनि. ऽशु.।।।।।ऽऽ।। ल. ९-१२
वैशा.प्र. २६ प्र.ज्ये.कृ. ८चं. धनि. ऽशु.।।।।ऽचौऽऽ।। दि.ल. २
वैशा.प्र. २८ प्र.ज्ये.कृ.११बु. उ.भा. ।ऽ।।ऽरो।।।।ल.९
वैशा.प्र. २९ प्र.ज्ये.कृ.१२गु. उ.भा. ।।।।।ऽऽ।।।दि.ल.२
आषा.प्र. ८ द्वि.ज्ये.शु. ८बु. हस्त ।ऽ।।ऽचौऽ।।ऽ ल.धूलिमुख
आषा.प्र.१३ द्वि.ज्ये.शु१३चं. अनु. ऽसूऽ।ऽशु.।ऽअ.।।।।ल.धूलिमुख (शुक्रवेध परिहार)
आषा.प्र.२१ आषा.कृ. ७मं. उ.भा. ऽशु.।।।।।।ऽ।।ल. धूलिमुख वा १
आषा.प्र.२२ आषा.कृ. ८बु. रेव. ऽ।।।ऽअ.।ऽ।।ल.२ (घ.५३उ.)
आषा.प्र.२३ आषा.कृ. ९गु. अश्वि. ऽश.।।।।ऽअ.(घ.५५या.)ऽऽ।।ल. धूलिमु. वा. रा. ल. २
आषा.प्र.२६ आषा.कृ.१२र. रोहि. ।ऽ।।।।ऽ।।दि.ल.६
श्रा.प्र. ३ आषा.शु. ५मं. उ.फा.(मृत्यु घ.३२ या.)।।।।।ऽअ.।।।ऽल.धूलिमुख वा १२ चं.दा.
श्रा.प्र. ३ आषा.शु. ५मं. हस्त ऽमं.।।।।ऽअ.ऽऽ।ऽल.२ (अंश २ उ.) आव.
श्रा.प्र. ४ आषा.शु. ६बु. हस्त ऽमं.।।।।।ऽऽ।।ल.धूलिमुख, २ वा १२ चं.दा.
श्रा.प्र. ४ आषा.शु. ६बु. चित्रा ।।।।।।ऽ(घ.५७उ.)ऽ।।ल.३आव.
श्रा.प्र. ६ आषा.शु. ८शु. स्वा. ।ऽ।।ऽनृ.(घ.४२या.)।ऽ।।ल.धूलिमु. वा १ चं.दा.
श्रा.प्र. ८ आषा.शु.१०र. अनु.(भ.४०।५५उ.)।।।।।ऽची.।ऽ।।दि.ल.६ वा गोधू.

देशाचार से केवल पंजाब के लिए

[illegible]

श्रा.प्र.१६ श्राव.कृ. ४चं. उ.भा. ऽगु.।।।।।ऽ।।ल.गोधू. [illegible]

श्रा.प्र.१६ श्राव.कृ. ४चं. उ.भा. ऽगु.।।।।।ऽ।।ल.गो...

श्रा.प्र.१७ श्राव.कृ. ५मं. उ.भा. ऽगु.।।।ऽमं.ऽचौ.।ऽ।।दि.ल. ६

श्रा.प्र.१८ श्राव.कृ. ६बु. अश्वि. ऽचं.गु.श.।।।।।ऽ।।ल. ३, आव.गु.दा.

श्रा.प्र.३० श्राव.शु. ३चं. उ.फा. ।।ऽमं.।।ऽमृ.(घ. ४८ उ.)।।।। दि. ल. ७, धूलिमुख (भौमयुति परिहार)

भा.प्र. २ श्राव.शु. ६गु. स्वा. ।।।।।।।।।ल.धूलिमुख

भा.प्र. ४ श्राव.शु. ८श. अनु. ।।।।ऽअ.।ऽ।।ल.धूलिमुख वा २ चं.दा.,

भा.प्र. १५ भाद्र.कृ. ५बु. अश्वि. ऽश.ऽ।।ऽनृ. (घ. २४ उ.)।ऽ।।ल.७ (इसके बाद लग्नाभाव एवं गणित से क्रां.सा.)

भा.प्र. १८ भाद्र.कृ. ८श. रोहि. ऽश.ऽ।।ऽचौ.(घ. ३० या.)।ऽ।।ल. धूलिमुख

भा.प्र. २७ भाद्र.शु. १चं. हस्त ।।ऽबु.मं. (मं. युति ४३।७ या.) ।।।ऽ।।। ल. २ (भौमयुतिपरिहार)

भा.प्र. २८ भाद्र.शु. २मं. हस्त ।।ऽबु.।।।ऽ।।।दि.ल. ७-८

भा.प्र. २८ भाद्र.शु. २मं. चि. ।।ऽमं.।।ऽरा.(घ. ४७उ.)।।।। लग्न चिन्त्य (भौमयुति परिहार)

भा.प्र. ३० भाद्र.शु. ४गु. स्वा. ।।।ऽचं.।।।।।दि.ल. ८ (चन्द्रवेध परिहार)

आश्वि.प्र.२८ आश्वि.शु.४गु. अनु. ऽमं.।।।।।।।।दि.ल. ९ (अं. १६ या.)

आश्वि.प्र.३० आश्वि.शु.६र. मू. (मृत्यु घ. १९ उ.) ।।।।।।।।। दि. ल. ८ आव. अनि. ग्र.दा.

का.प्र. ५ आश्वि.शु. १२श. उ.भा. ऽगु.।।ऽबु.।ऽनृ.।।।।ल. २ वा ६ चं.दा. (शुक्रवेध-परिहार)

का.प्र. ६ आश्वि.शु. १३र. उ.भा. ऽगु.।।ऽबु.।ऽनृ.।।।।दि.ल. ८(शुक्रवेध परिहार)

का.प्र. ६ आश्वि.शु. १३र. रेव. ।।।।ऽबु.।ऽऽ।।ल. धूलिमुख वा २

का.प्र. ७ आश्वि.शु. १५चं. अश्वि. ऽश.।।।ऽबु.ऽचौ.ऽऽ।।ल. २ वा ३ गु.दा.

का.प्र. ८ कार्ति.कृ. १मं. अश्वि. ऽश.।।।ऽबु.ऽचौ.ऽऽ।।दि.ल. ९ आव.

का.प्र. १० कार्ति.कृ. ३गु. रोहि. ।।।।।।।।।ल. ६

का.प्र. १६ कार्ति.कृ. ९बु. मघा ऽशु.।।।ऽके.ऽचौ ।ऽ।।ल. ६

का.प्र. १७ कार्ति.कृ. १०गु. मघा ऽशु.।।।ऽके.ऽचौ.।ऽ।।दि.ल. ८-९, धूलिमुख

का.प्र. १८ कार्ति.कृ. १०शु. उ.फा. ।।।।ऽरो.।ऽ।।ल. ६ (अं.१४उ.)

का.प्र. २६ कार्ति.शु. ३श. मूल ऽमं.।।।।।।।।ल. धूलिमुख

सब प्रदेशों के लिए

मार्ग.प्र. ३ कार्ति.शु. ११श. रेव. ऽसू.।।।।ऽअ.ऽ।।।ल.६चं.दा.

मार्ग.प्र. ४ कार्ति.शु. १२र. रेव. ऽसू.।।।।।ऽ।।।ल. गोधू. वा रा. ल. ३

मार्ग.प्र. ७ कार्ति.शु. १५बु. रोहि ।।।ऽगु.ऽसू.ऽचौ.।ऽ।। ल. ५-६ (गुरुवेध परिहार)

मार्ग.प्र.१६ मार्ग.कृ. ९शु. उ.फा. ऽशु.।।।।ऽचौ. ।ऽ।।ल. धूलिमुख—५-७

मार्ग.प्र.१७ मार्ग.कृ. १०श. हस्त (भ. ५०।३१ या.)ऽशु.।।।।।ऽ।।ल.७

मार्ग.प्र.१८ मार्ग.कृ. ११र. हस्त ऽशु.।।।।ऽरो.।ऽ।।दि.ल. १२,

मार्ग.प्र. १८ मार्ग.कृ. ११र. चित्रा ।।।।ऽरो.ऽऽ।।ल. धूलिमुख आव. रा. ल. ५

मार्ग.प्र. १९ मार्ग.कृ. १२चं. स्वा. ।।।।।।ऽ।।ल. ५-६,

मार्ग.प्र. २६ मार्ग.शु. ४चं. श्रव. ।।ऽगु.।।ऽरो. ।ऽ।।ल.७ (अं. १० उ.) आव.

मार्ग.प्र. २७ मार्ग.शु. ५मं. श्रव. ।।ऽगु.।।ऽरो.।ऽ।।दि.ल. १२

फाल्गु.प्र.२४ फाल्गु.शु. १बु. उ.भा. ।।।।।।।।।ल. ८-९

फाल्गु.प्र.२५ फाल्गु.शु. २गु. रेव. ।।।।ऽचौ.ऽ।।।ल. ८-९

फाल्गु.प्र.२६ फाल्गु.शु. ३गु. अश्वि. ऽगु.।।।।ऽचौ.(घ. १८ या.) ।।।ऽ(घ. ६ उ.) दि.ल. २-३ वा धूलिमुख

फाल्गु.प्र.२९ फाल्गु.शु. ७चं. रोहि. ।।।।।ऽऽ।।दि.ल. १२-१

उपनयन मुहूर्त

चैत्र.शु. ३र. अश्वि

चैत्र.शु.१०र. पुष्य

चैत्र.शु.११चं. आश्ले.

वैशा.कृ. ४बु. अनु.

वैशा.शु.१२गु. उ.फा. (शुक्रवेध परिहार)

प्र.ज्ये.कृ. २मं. अनु.

प्र.ज्ये.कृ. ५गु. पू.षा.

द्वि.ज्ये.शु. ३गु. पुष्य

द्वि.ज्ये.शु. ५र. आश्ले.

फाल्गु.शु. २गु. रेव.

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त

वैशा.शु. ८र. पुष्य, ल.२ अभिजिति च

वैशा.शु.१२गु. उ.फा. (शुक्रवेध परिहार) अभिजिति

वैशा.शु.१३शु. हस्त.अभिजित

प्र.ज्ये.कृ. ७र. श्रव. (बुधवेध परिहार) अभिजिति

प्र.ज्ये.कृ. ८चं. धनि. ल.२

द्वि.ज्ये.शु. २गु.पुन. अभिजिति

द्वि.ज्ये.शु. ३शु. पुष्य अभिजिति

द्वि.ज्ये.शु.१०गु. चित्रा, अभिजिति दक्षिणायन (उग्रदेव प्रतिष्ठा)

द्वि.ज्ये.शु.१३चं. अनु. अभिजिति उग्र देव प्रतिष्ठा

आषाढ़.शु. २शु. पुष्य ल. ६, अभिजिति उग्र-देव प्रतिष्ठा

आषा.शु. ८शु. स्वा. (रिक्ता १८।२८ उ.) ल. ६ (घ. १८।२८ या.)

फाल्गु.शु. २गु.रेव., अभिजिति

फाल्गु.शु. ७चं. रोहि. अभिजिति

द्विरागमन मुहूर्त

वैशा.शु. ४बु.(८।५४उ.) रोहि.

वैशा.शु. ४बु. मृग.

वैशा.शु. ५गु. मृग.

वैशा.शु.१२गु. उ.फा.

वैशा.शु.१३शु. हस्त

प्र.ज्ये.कृ. ८चं.(८।०या.) धनि.

प्र.ज्ये.कृ.११बु. उ.भा.

प्र.ज्ये.कृ.१२गु. उ.भा.

मार्ग कृ. १गु. रोहि.

मार्ग कृ. २शु. मृग.

मार्ग कृ.१२चं. चित्रा.

फा.शु. २गु. रेवती

फा.शु. ७चं. रोहि.

नूतन गृह-प्रवेश-मुहूर्त

वैशा.शु.१२गु. उ.फा. अभिजिति
प्र.ज्ये.कृ. ८चं. धनि.ल.२
फाल्गु.शु. ७चं. रोहि. अभिजिति

गेहारम्भ मुहूर्त

वैशा.शु.१२गु. उ.फा. अभिजिति (शुक्रवेध परिहार)
श्राव.शु.१५श. शत. अभिजिति
कार्ति.शु.११श. उ.भा. ल. ९ (घ. ८।१८वा.)
मार्ग.कृ. १गु. रोहि. अभिजिति (गुरुवेध परिहार)
मार्ग.शु. ७गु. शत. पूर्वाभिजिति (घ. १२।२७ वा.)

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (सं० २०१८)

गत पृष्ठ पर शुद्ध सपरिहार विवाह-मुहूर्त दिए गए हैं। यहाँ हम उन विवाह नक्षत्रों का निर्देश कर रहे हैं जिनमें अपरिहार्य दोष या दोषों के कारण विवाह नहीं हो सकते। साथ २ दोषों का निर्देश किया गया है, ताकि उनमें विवाह की अग्राह्यता के हेतु का ज्ञान हो सके।

वै.शु. ३ मं. रोहि. भद्रा लग्नाभाव
" " ४ बु. रोहि. भद्रा
" " " " मृग. भद्रा. शनिवेध
" " ५ गु. मृग. शनिवेध
" " ९ चं. मं. गणित से क्रां.सा.
" " ११ बु. उ.फा. व्याघात नव घटी दोष
" " १५ र. स्वा. केतुवेध

प्र.ज्ये.कृ. २ मं. अनु. सूर्यवेध
" " " ३ बु. मूल कालाल्पता
" " " ५ शु. उ.षा. शनियुति
" " " ६ श. उ.षा. शनियुति
" " " श्रव. राहुवेध
" ७ र. श्रव. राहुवेध
" " " १२ गु. रेव. शुक्रयुति

द्वि.ज्ये.शु. ५ र. म. राहु-भौमयुति
" " " ७ मं. उ.फा. भद्रा.व्यति.
" " " ९ मं. हस्त लग्नाभाव
" " " [illegible]

द्वि.ज्ये.शु.१० शु. स्वा. } केतुवेध
" " " ११ श.स्वा. } केतुवेध
" " " १२ र. अनु. मृत्यु पं.
" " " १४ मं. मू. भद्रा
" " " १५ बु. मू. लग्नाभाव

आषा.कृ. १ गु. उ.षा. शनियुति
" " २ शु. श्रव. } राहुवेध
" " ३ श. श्रव. } राहुवेध
" " ३ श. धनि. } केतुयुति
" " ४ र. धनि. } केतुयुति
" " १० गु. अश्वि. नक्षत्रान्त

आषा.शु. ३ श. म. मासान्त एवं राहुयुति
" " ४ र. म. राहुयुति व्यति.

आषा.शु. ४ चं. उ.फा. मृत्यु पं.
" " ७ गु. चि. लग्नाभाव
" " १३ बु. उ.षा. शनियुति
" " १५ गु. उ.षा. मृत्यु श.यु.
" " १५ गु. श्रव. मृत्यु पं.
[illegible]

श्राव.कृ. ५ मं. रेव. } भौमवेध.
" " ६ बु. रेव. } भौमवेध.
" " ७ गु. अश्वि. भुजङ्गपात
" " ९ श. रोहि. } मृत्यु पं.
" " १० र. रोहि. } मृत्यु पं.

श्राव.कृ. १० र. मृग. } शनिवेध
" " ११ चं. मृग. } शनिवेध

श्राव.शु. ४ मं. हस्त मृत्यु. लग्नाभाव
" " ५ बु. चि. संक्रान्ति
" " ६ गु. चि. लग्नाभाव
" " ७ शु. स्वा. मृत्यु पं.
" " ९ र.अनु. वैधृति
" " १० चं. मू. लग्नाभाव
" " ११ मं. मू. भद्रा
" " १२ बु. उ.षा. } शनियुति
" " १३ गु. उ.षा. } शनियुति
" " १३ गु. श्रव. } सूर्य-राहु-वेध
" " १४ शु. श्रव. } सूर्य-राहु-वेध
" " १४ शु. धनि. केतुयुति

भाद्र.कृ. १ र. उ.भा. } भौमवेध मृत्यु
" " ३ चं. उ.भा. } भौमवेध मृत्यु
" " ३ चं. रेव. } भुजंगपात
" " ४ मं. रेव. } भुजंगपात
" " ४ मं. अश्वि. लग्नाभाव

भाद्र.कृ. ८ श. मृग. } शनिवेध
" " ९ र. मृग. } शनिवेध

भाद्र.शु. ३ बु. स्वा. लग्नाभाव, भद्रा
" " ३ बु. चि. भौमयुति
" " ५ शु. अनु. मासान्त
" " ६ श. अनु. संक्रान्ति
" " ७ र. मू. लग्नाभाव
" " ८ चं. मू. मृत्युपं.
" " ९ मं. उ.षा. } शनियुति
" " ११ बु. उ.षा. } शनियुति
" " ११ बु. श्रव. } राहुवेध
" " १२ गु. श्रव. } राहुवेध
" " १२ गु. धनि. } केतुयुति
" " १३ शु. धनि. } केतुयुति
[illegible]

आश्वि. शु. २ बु. स्वा. भौमयुति
" " ३ गु. अ.ग. लग्नाभाव
" " ५ श. मू. लग्नाभाव
" " ७ चं. उ.षा. शनियुति
" " ८ मं. उ.षा. शनियुति
" " ८ मं. श्रव. } राहुवेध
" " ९ बु. श्रव. } राहुवेध
" " ९ बु. धनि. } केतुयुति
" " १० बु. धनि. } केतुयुति
" " १५ चं. रेव. भद्रा

कार्ति.कृ. ४ शु. रोहि. परिघार्ध पूर्व-लग्नाभाव
" " ४ शु. मृग. शनिवेध मृत्युपञ्चक
" " ५ श. मृग. शनिवेध मृत्युपञ्चक
" " ११ श. उ.फा. वैधृति
" " १२ र. हस्त. (कृष्णानंग १३।३७ उ.) दग्धा.
" " १३ चं. हस्त [योगचन्द्र]

कार्ति.शु. १ गु. अनु. } भौमयुति
" " २ शु.अनु. } भौमयुति
" " ४ र. मू. भद्रा
" " ५ चं. उ.षा. } शनियुति
" " ६ मं. उ.षा } शनियुति
" " ६ मं. श्रव. भद्रा, गणित से क्रां.सा.
" " १० शु. उ.भा मृत्यु पं.
" " ११ श.उ.भा. मृत्यु पं., भद्रा, लग्नाभाव
" " १२ र. अश्वि } व्यतिपात
" " १३ चं. अश्वि } व्यतिपात

मार्ग.कृ. १ गु. रोहि लग्नाभाव
" " १ गु. मृग. } शनिवेध
" " २ शु. मृग. } शनिवेध
" " ७ बु. मघा वैधृति. लग्नाभाव
" " १० श. उ.फा. लग्नाभाव
" " १२ चं. चित्रा कर्तरी

मार्ग.शु. २ श. म. भुजंगपात
" " ३ र. उ.षा. शनियुति
" " ५ मं. धनि. } केतुयुति
" " ६ बु. धनि. } केतुयुति
फाल्गु.शु. २ गु. उ.भा. [illegible]

सूर्य नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
१७- ३-६१	उ. भा.	
३१- ३-६१	रेव.	
१३- ४-६१	अश्वि.	मेष
- ४-६१	भरि.	
१- ५-६१	कृत्ति.	
४- ५-६१	...	वृष
२५- ५-६१	रोहि.	
८- ६-६१	मृग.	
१५- ६-६१	...	मिथुन
२२- ६-६१	आर्द्रा	
६- ७-६१	पुन.	
१६- ७-६१	...	कर्क
२०- ७-६१	पुष्य	
३- ८-६१	आश्ले.	
१७- ८-६१	मघा	सिंह
३१- ८-६१	पू. फा.	
१३- ९-६१	उ. फा.	
१७- ९-६१	...	कन्या
२७- ९-६१	हस्त	
१०-१०-६१	चित्रा	
१७-१०-६१	...	तुला
२४-१०-६१	स्वाती	
६-११-६१	विशा.	
१६-११-६१	...	वृश्चि.
१९-११-६१	अनुरा.	
२-१२-६१	ज्येष्ठा	
१५-१२-६१	मूल	धनु
२९-१२-६१	पू. षा.	
११- १-६२	उ. षा.	
१४- १-६२	...	मकर
२४- १-६२	श्रव.	
६- २-६२	धनि.	
१२- २-६२		कुम्भ
१९- २-६२	शत	
४- ३-६२	पू. भा.	
१४- ३-६२	...	मीन
१७- ३-६२	उ. भा.	
३१- ३-६२	रेवती	

भौम नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
३०- ३-६१	पुन.	
२२- ४-६१	...	कर्क
२९- ४-६१	पुष्य	
२४- ५-६१	आश्ले.	
१७- ६-६१	मघा	सिंह
१०- ७-६१	पू. फा.	
१- ८-६१	उ. फा.	
६- ८-६१	...	कन्या
२२- ८-६१	हस्त	
११- ९-६१	चित्रा	
२२- ९-६१	...	तुला
१-१०-६१	स्वाती	
२१-१०-६१	विशा.	
४-११-६१	...	वृश्चि.
९-११-६१	अनु.	
२७-११-६१	ज्येष्ठा	
१५-१२-६१	मूल	धनु
२- १-६२	पू. षा.	
२०- १-६२	उ. षा.	
२४- १-६२	...	मकर
६- २-६२	श्रव.	
२३- २-६२	धनि.	
४- ३-६२	...	कुम्भ
१२- ३-६२	शत.	
२९- ३-६२	पू. भा.	

बुध नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
१८- ३-६१	शत.	
३०- ३-६१	पू. भा.	
६- ४-६१	...	मीन
८- ४-६१	उ. भा.	
१६- ४-६१	रेवती.	
२३- ४-६१	अश्वि.	मेष
३०- ४-६१	भरि.	
६- ५-६१	कृत्ति.	
७- ५-६१	...	वृष
१२- ५-६१	रोहि.	
१९- ५-६१	मृग.	
२३- ५-६१	...	मिथुन
२८- ५-६१	आर्द्रा	
२५- ७-६१	पुन.	
३१- ७-६१	...	कर्क
२- ८-६१	पुष्य	
९- ८-६१	आश्ले.	
१५- ८-६१	मघा	सिंह
२२- ८-६१	पू. फा.	
३०- ८-६१	उ. फा.	
१- ९-६१	...	कन्या
७- ९-६१	हस्त	
१६- ९-६१	चित्रा	
२१- ९-६१	...	तुला
२७- ९-६१	स्वा.	
११-१०-६१	वक्री.	
२२-१०-६१	व. चित्रा	
२९-१०-६१	...	व. कन्या
१-११-६१	मार्गी.	
४-११-६१	...	तुला
११-११-६१	स्वाती	
२०-११-६१	विशा.	
२६-११-६१	...	वृश्चि.
२९-११-६१	अनु.	
७-१२-६१	ज्येष्ठा	
१५-१२-६१	मूल	धनु
२४-१२-६१	पू. षा.	
१- १-६२	उ. षा.	
३- १-६२	...	मकर
९- १-६२	श्रव.	
१९- १-६२	धनि.	
२७- १-६२	वक्री.	
५- २-६२	व. श्रव.	
१८- २-६२	मार्गी	
५- ३-६२	धनि.	
१०- ३-६२	...	कुम्भ
१५- ३-६२	शत.	
२४- ३-६२	पू. भा.	
३०- ३-६२	...	मीन
१- ४-६२	उ. भा.	

गुरु नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
४- ४-६१	श्रव.	
२५- ५-६१	वक्री	
१७- ७-६१	व. उ. षा.	
२४- ९-६१	मार्गी	
२६-११-६१	श्रव.	
२७- १-६२	धनि.	
२४- २-६२	...	कुम्भ
२६- ३-६२	शत.	

शुक्र नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
७- ४-६१	व. रेव.	मीन
२- ५-६१	मार्गी	
२८- ५-६१	अश्वि.	मेष
१३- ६-६१	भरि.	
२७- ६-६१	कृत्ति.	
१- ७-६१	...	वृष
१०- ७-६१	रोहि.	
२२- ७-६१	मृग.	
२८- ७-६१	...	मिथुन
३- ८-६१	आर्द्रा	
१५- ८-६१	पुन.	
२४- ८-६१	...	कर्क
२६- ८-६१	पुष्य	
७- ९-६१	आश्ले.	
१८- ९-६१	मघा	सिंह
२९- ९-६१	पू. फा.	
१०-१०-६१	उ. फा.	
१२-१०-६१	...	कन्या
२१-१०-६१	हस्त	
३१-१०-६१	चित्रा	
६-११-६१	..	तुला
११-११-६१	स्वा.	
२२-११-६१	विशा.	
३०-११-६१	...	वृश्चिक
२-१२-६१	अनु.	
१३-१२-६१	ज्येष्ठा	
२३-१२-६१	मूल	धनु
३- १-६२	पू. षा.	
१४- १-६२	उ. षा.	
१६- १-६२	...	मकर
२४- १-६२	श्रव.	
४- २-६२	धनि.	
९- २-६२	...	कुम्भ
१४- २-६२	शत.	
२५- २-६२	पू.भा.	
५- ३-६२	...	मीन
८- ३-६२	उ. भा.	
१९- ३-६२	रेव.	
२९- ३-६२	अश्वि.	मेष

शनि नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
१४- ९-६१		व. धनु
२७- ९-६१	मार्गी	
११-१०-६१	...	मकर
१- २-६२	श्रव.	

राहु नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
३०-१०-६१	आश्ले.	कर्क

केतु नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
२६- ६-६१	धनि.	
३०-१०-६१	...	मकर
५- ३-६२	श्रव.	

वरुण नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
४- ७-६१	मघा	सिंह

इन्द्र नक्षत्रराशिचार

तारीख	नक्षत्र	राशि
१५- १-६२	विशा.	
१४- २-६२	वक्री	
१६- ३-६२	व. स्वा.	

पन्यास श्री विकाश विजय जी द्वारा प्राप्त जैन पर्वनिर्णय

वीर संवत् २४८७-८८ आत्म संवत् ६५-६६ शके १८८३ विक्रम संवत् २०१८

प्रविष्टा	सन् १९६१-६२	तिथि	तारीख
चैत्र ४	श्रीबुद्धिविजय (बुटेराय) जी म.का स्वर्गदिन और श्री विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी म०का जन्मदिन	चैत्र शु. १ शुक्र	ता. १७- ३-६१
" ११ "	सिद्ध चक्र आंबिल ओली शुरु	चैत्र शु. ८ शुक्र	ता. २४- ३-६१
" १७ "	महावीर स्वामी का जन्मदिन (जयंति)	चैत्र शु. १३ गुरु	ता. ३०- ३-६१
" १९ "	आंबिल ओली पूर्ण-चैत्रपूर्णिमा-सि. का मेला	चैत्र शु. १५ शनि	ता. १- ४-६१
वैशा. ६ "	ऋषभदेव वर्षीतप पारणा (अक्षयतृतीया)	वै. शु. ३ मंगल	ता. १८- ४-६१
ज्ये. १० "	विजयानंदसूरि (आत्माराम) जी स्व.दिन	अ. ज्ये. शु. ८ मंगल	ता. २३- ५-६१
आ. ४ "	चौमासी अट्ठाइ प्रारम्भ	आषा. शु. ६ बुध	ता. १९- ७-६१
" ११ "	चौमासी चौदस	आषा. शु. १४ बुध	ता. २६- ७-६१
" १२ "	चौमासी अट्ठाइ सम्पूर्ण	आषा. श. १५ गुरु	ता. २७- ७-६१
भा. १ "	नेमनाथ भगवान का जन्मदिन	श्राव. शु. ५ बुध	ता. १६- ८-६१
" २३ "	पर्युषणपर्व अट्ठाइ प्रारंभ	भादो व. १३ गुरु	ता. ७- ९-६१
" २५ "	कल्पसूत्र गृह स्थापना रात्रि जागरण	" " १४ शनि	ता. ९- ९-६१
" २६ "	कल्पसूत्र वांचना प्रारंभ	" " ३० रवि	ता. १०- ९-६१
" ३० "	संवत्सरी पर्व	" शु. ४ गुरु	ता. १४- ९-६१
आ. ४ "	जगद्गुरु विजयहीर सूरि स्वर्ग दिन	" " ११ बुध	ता. २०- ९-६१
" २० "	युगवीर आ. श्रीविजय वल्लभ सूरि स्वर्गदिन	आ. व. ११ गुरु	ता. ५-१०-६१
" ३० "	सिद्धचक्र आंबिल ओली प्रारंभ	" शु. ६ रवि	ता. १५-१०-६१
का. ७ "	सिद्धचक्र आंबिल ओली संपूर्ण	" " १५ सोम	ता. २३-१०-६१
" २३ "	महावीर प्रभु निर्वाण दिवाली पर्व	का.व. ३० बुध	ता. ८-११-६१
" २४ "	गौतम स्वामी केवल ज्ञान-वीर सं० २४८८	" शु. १ गुरु	ता. ९-११-६१
" २५ "	भाई दूज श्रीविजय वल्लभ सूरि जन्म दिन	" " २ शुक्र	ता. १०-११-६१
२८ "	ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	" " ५ सोम	ता. १३-११-६१
२९ "	चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	" " ६ मंगल	ता. १४-११-६१
[illegible] "	चौमासी चौदस	" " १४ मंगल	ता. २१-११-६१
[illegible] "	चौमासी अट्ठाइ पूर्ण कार्तिक पूर्णिमा सिद्धाचल, हस्तिनापुर, शौरीपुर का मेला	" " १५ बुध	ता. २२-११-६१
[illegible]	मौन एकादशी (१५० कल्याणक दिन)	मार्ग.शु. ११ सोम	ता. १८-१२-६१
" १८ "	पोष दशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन	पौ.वदि १० सोम	ता. १- १-६२
माघ. १८ "	मेरुत्रयोदशी ऋषभदेव मोक्ष दिन	माघवदि १३ शुक्र	ता. २- २-६२
फा. ३० "	चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	फा. शु. ८ मंगल	ता. १३- ३-६२
चैत्र ७ "	चौमासी चौदस	" " १४ मंगल	ता. २०- ३-६२
" ८ "	चौमासी अट्ठाइ पूर्ण [illegible] मेला	" " [illegible]	[illegible]

श्रीसिद्ध महालक्ष्मी यन्त्र

हिमालय पर्वत की

लड़के एवं लड़कियाँ चाहिए ?

एक भारतीय फिल्म के वास्ते, जो एक सुप्रसिद्ध डाइरेक्टर द्वारा निर्माण की जा रही है। महत्व-पूर्ण अभिनय करने के लिये इच्छुक तथा बुद्धिमान लड़के लड़कियों के लिये स्वर्ण अवसर है। इन्टरव्यू दिल्ली, बम्बई, मद्रास, तथा कलकत्ता में होगा। सिफारिश नहीं मानी जायगी। चुनाव के बाद दो साल का कन्ट्रैक्ट जरूरी है। लिखें—

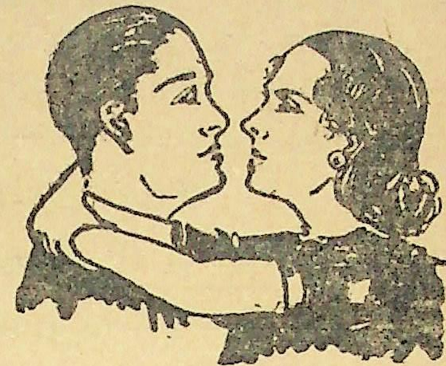
स्क्रीन आर्ट प्राडक्शन्स

फिल्म प्रोड्यूसर्ज

गोपाल नगर, अमृतसर।

खूबसूरत घुंघरियाले बाल

होलीवुड हेयर कर्लिंग-क्रीम रजिस्टर्ड—इस जमाने के फेशनेबिल स्त्री पुरुष जो अपने बालों को घुंघरियाले लहरियेदार और खूबसूरत बनाने के लिये इच्छुक हैं उनके लिये कई सालों से कठिन कोशिश के बाद हम एक अमरीकन डाक्टर से लाजवाव नुस्खा प्राप्त करने में सफल हो गये हैं। इस हेयर-क्रीम की खूबी यह है कि तीन दिन में सिर के बाल पेचदार हो जाते हैं और सात दिन के अन्दर-अन्दर स्थायी रूपसे सिर के बालों की घुंघांवाले लहरियेदार और खूबसूरत बना देता है। और जड़ से घुंघूरियाले पैदा होने लगते हैं। और नहाने के बाद भी वर्षों ऐसे ही बने रहते हैं। प्राय: फिल्म ऐक्टर और ऐक्ट्रेसें और कालेज के विद्यार्थी इसके शौकीन है। इतनी बहुमूल्य भेंट होने पर भी कीमत एक शीशी ३) रु० डाक खर्च अलग।



नोट—तीन शीशियां एक साथ मंगाने पर डाक खर्च माफ। इस्तेमाल करने की तरकीब दवाई के साथ हर भाषा में भेजी जाती है। कोने-कोने से असंख्य प्रशंसा के पत्र आ रहे हैं और घर-घर इस लाभदायक निर्माण का डंका बज रहा है। कृपया अपना पता साफ लिख कर भेजा करें।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर्स

पैरिस आर्ट हाऊस

गोल बाग, अमृतसर।

जो पूछोगे जवाब मिलेगा | १०,००० रुपये की घड़ियाँ | त्रिकालदर्शी 'असली करामात

जो पूछोगे जवाब मिलेगा

आपके भाग्य में क्या लिखा है ?

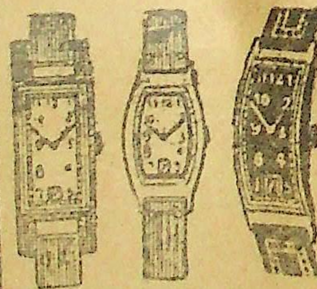


यदि आप एक साल के अन्दर पेश आने वाले नेक या बद हालात समय से पहले जानना चाहते हैं तो आज ही एक पोस्ट-कार्ड पर किसी दिल पसन्द फूल का नाम लिखकर भेज दें—बस फिर हम ज्योतिष के हिसाब से आपके आने वाले १२ मास के लाभ हानि, किस व्यापार में फायदा, किस प्रकार रोजगार मिलेगा, नौकरी, उन्नति, तबदीली, स्त्री व सन्तान का सुख, किसी से नया मेल मिलाप, या किसी प्रकार से धन का मिलना, यानी पोस्टकार्ड की तारीख से लेकर १ साल तक होने वाली कुल बातों के खुलासे का मासिक वर्ष फल बनाकर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे डाक खर्च अलग। साथ ही बुरे ग्रहों के शान्ति का उपाय भी लिखा जायगा। एक बार की परीक्षा से ही आप को पता लग जायगा कि ज्योतिष विद्या में हमें कहां तक ज्ञान प्राप्त है।

श्री पंडित देवदत्त शास्त्री राज ज्यतिषी,

(G. D. M. 61) जालन्धर शहर [पंजाब]

१०,००० रुपये की घड़ियां



मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध 'बाल काला तेल' के इस्तेमाल से सफेद बाल काले हो जाते हैं और फिर काले ही पैदा होते हैं। बेनजीर सन्यासी तोहफा है। सिवाय हमारे दूसरी जगह से न मिलेगा। गिरते हुए बालों को रोकता है, बालों को लम्बा, घुंघर वाले और चमकदार बनाता है। गंजापन दूर कर आंखों और दिमाग को ताकत देता है, याददास्त को बढ़ाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ १॥।) एक रुपया बारह आने, डाक खर्च अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ४॥) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी तथा सुन्दर रिस्ट वाच जिसकी खूबसूरती तथा मजबूती की गारन्टी ५ साल है और एक अंगूठी न्यू गोल्ड और तीन शीशी के खरीदार को रिस्ट वाच तथा ६ अंगूठी मुफ्त भेजी जाती हैं। नापसन्द होने पर दाम वापिस। जल्दी करें वरना ऐसा मौका हाथ न आवेगा।

मिलने का पता:—शाइनिंग फार्मेसी

(G. D. M. 61) जालन्धर सिटी ३

त्रिकालदर्शी 'असली करामात यंत्रक रूमाल' सबसे बढ़िया



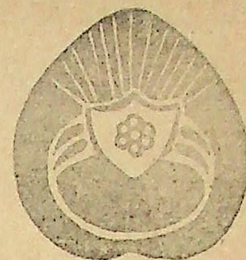
यह एक सन्यासी का दिया हुआ चमत्कारी रूमाल है इसे केवल अपनी जेब में रखें ईश्वर की कृपा से आपके दिल की मुराद शीघ्र ही पूरी होगी। जिससे आपको मुहब्बत हो या जिससे शादी की इच्छा हो वह घर बैठे बिठाये आपसे मिलने के लिये तड़फने लगेगा। मन चाही सुन्दर स्त्री मिलेगी। राजसभा में मान, मुकदमे में जीत, चोरी का पता, परीक्षा में पास होना, दौलत से मालामाल हो जायेंगे। पहेली में नफा होगा। दुश्मन अधीन होंगे। नौकरी जल्दी मिलेगी अर्थात् दुनियां के सब मुश्किल काम अवश्य पूरे होंगे। आजमायश करने पर इसके जौहर खुलेंगे। मूल्य असली रूमाल का एक रुपया पन्द्रह आने १॥।≡) तीन रूमाल ५) रु०। डाक खर्च एक या तीन रूमाल पर १) अलग। गलत निकले तो दाम वापिस।

प्रोफेसर शाइनिंग मिस्मरेजम हाउस

(G. D. M. 61) जालन्धर शहर [पंजाब]



१०००) रुपये नकद इनाम



जो मांगोगे वही मिलेगा

अब आप किसी तरफ से निराश न हों। इस तान्त्रिक अंगूठी को पहनने से दिल में आप जिस स्त्री या पुरुष का नाम लेंगें, वह देखते ही देखते फौरन वश में हो जायगा, चाहे कितना पत्थर दिल क्यों न हों सात समुद्र फाँद, सात ताले तोड़, आपके कदमों में हाजिर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई शादी होगी, नौकरी मिलेगी, मुर्दा रूहों से बात-चीत होगी, जमीन में दबी दौलत सपने में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्योपार में लाभ होगा, दुष्ट ग्रह शान्त होंगे। बद-किस्मती दूर होगी, खुश-किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शान्ति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।



तान्त्रिक अंगूठी १-१५-०, स्पेशल पावरफुल ३-१५-० तीन रुपये पन्द्रह आने जिसका २४ घन्टों में फौरन असर होता है। यह तान्त्रिक अँगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय हो सकता है लेकिन इस तान्त्रिक अँगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत वापस की गारण्टी है। मिथ्या साबित करने वाले को १०००) नकद इनाम। एक बार जरूर आजमायश करें।

राज ज्योतिषी पं० देवदत्त शास्त्री तान्त्रिकाचार्य [G.D.M. 61] जालंधर सिटी ३

१००० रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

१००० रुपये की [illegible] मुफ्त इनाम

हमारी प्रसिद्ध दवाई "असली जौहर हुस्न" के लगाने से हर जगह के बाल बगैर तकलीफ के दूर हो जाते हैं और फिर उस जगह बाल पैदा नहीं होते। जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और साफ हो जाती है। कीमत प्रति शीशी की सिर्फ १।।।) डाकखर्च १) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ५) पाँच रु०। इस दवाई को मशहूर करने के लिये हर शीशी के साथ दो अंगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त और दो खूबसूरत न्यू रिस्टवाच बतौर इनाम मुफ्त भेजी जाती हैं। जल्दी करें और फायदा हासिल करें। माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। तीन शीशी के खरीदार से डाकखर्च माफ और छः घड़ियाँ और ६ अंगूठियाँ सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम दी जाती हैं।

* असली बाल काला तेल नं० ५१० सबसे बढ़िया *

हमारे प्रसिद्ध "बाल काला तेल" के इस्तेमाल से सफेद बाल काले हो जाते हैं और फिर काले ही पैदा होते हैं। यह बेनजीर सन्यासी तोफा है। सिवाय हमारे दूसरी जगह से न मिलेगा। गिरते हुए बालों को रोकता है। बालों को लम्बा, घुंघर वाले और चमकदार बनाता है गंजापन दूर करता है। आँखों और दिमाग को ताकत देता है। याद-दास्त बढ़ाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ १।।।) एक रुपया बारह आने, डाक खर्च १ =) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ५) पाँच रुपया, इस तेल को मशहूर करने के लिये हर एक शीशी के साथ दो फैन्सी न्यू रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। माल पसंद न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है, तीन शीशी के खरीदार को डाकखर्च माफ और छः घड़ियाँ और छः अँगूठियाँ सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम, जल्दी करिये वर्ना ऐसा मौका फिर हाथ न आयेगा।

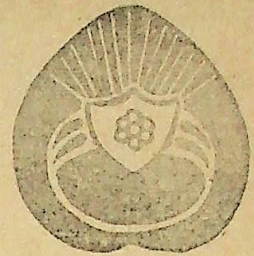
* काले गोरे हो गए *

यदि आप अपने चेहरे या शरीर का रङ्ग काले से गोरा करना चाहते हैं और मुख के बदनुमा दाग, कील, छाइयाँ, झुरियाँ, बदरौनकी, खुश्की आदि को दूर करके चेहरा गुलाब की तरह मुलायम चमकदार खूबसूरत बनाना चाहते हैं, तो हमारा तैयार किया हुआ "लण्डन ब्यूटी लोशन" इस्तेमाल करें। इससे आपके जिसम या चेहरे का रङ्ग काले से गोरा हो जायेगा। यह लोशन स्त्रियों और पुरुषों सबको खुश करने वाला तोफा है। कीमत प्रति शीशी १।।। =) एक रुपया पन्द्रह आने है। तीन शीशी की कीमत ५)। डाक खर्च एक से तीन शीशी तक १ −) अलग। इस दवा को मशहूर करने के लिये एक शीशी के साथ दो फैन्सी न्यू रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। माल पसन्द न हो तो दाम वापिस किया जाता है। जल्दी करें वर्ना ऐसा अवसर हाथ न आवेगा।

मनेजर—लण्डन ट्रेडिंग एजेन्सी (G.D.M. 61) जालन्धर सिटी।



१०००) रुपये नकद इनाम



जो मांगोगे वही मिलेगा

अब आप किसी तरफ से निराश न हों। इस तान्त्रिक अंगूठी को पहनने से दिल में आप जिस स्त्री या पुरुष का नाम लेंगें, वह देखते ही देखते फौरन वश में हो जायगा, चाहे कितना पत्थर दिल क्यों न हों सात समुद्र फांद, सात ताले तोड़, आपके कदमों में हाजिर होगा, कठोरता तथा शत्रुता को छोड़ आपका हुक्म मानने लगेगा, दिल पसन्द सगाई शादी होगी, नौकरी मिलेगी, मुर्दा रूहों से बात-चीत होगी, जमीन में दबी दौलत सपने में दिखाई देगी, मुकदमे में जीत मिलेगी, परीक्षा में पास होंगे, व्योपार में लाभ होगा, दुष्ट ग्रह शान्त होंगे। बद-किस्मती दूर होगी, खुश-किस्मत बन जाओगे, जीवन सुख शान्ति तथा प्रसन्नता से व्यतीत होगा।

तान्त्रिक अंगूठी १-१५-०, स्पेशल पावरफुल ३-१५-० तीन रुपये पन्द्रह आने जिसका २४ घन्टों में फौरन असर होता है। यह तान्त्रिक अँगूठी ग्रहण तथा शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व के बजाय पश्चिम से उदय हो सकता है लेकिन इस तान्त्रिक अँगूठी का असर कभी खाली नहीं जाता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत वापस की गारण्टी है। मिथ्या साबित करने वाले को १०००) नकद इनाम। एक बार जरूर आजमायश करें।

…ज ज्योतिषी पं० देवदत्त शास्त्री तान्त्रिकाचार्य [G.D.M. 61] जालंधर सिटी ३

१००० रुपये की घड़ियां मुफ्त इनाम

१०००) रुपये की घड़ियाँ मुफ्त इनाम

हमारी प्रसिद्ध दवाई "असली जौहर हुस्न" के लगाने से हर जग के बाल बगैर तकलीफ के दूर हो जाते हैं और फिर उस जगह बाल पैदा नहीं होते। जगह रेशम की तरह मुलायम नरम और साफ हो जाती है। कीमत प्रति शीशी की सिर्फ १।।।) डाकखर्च १) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ५) पाँच रु०। इस दवाई को मशहूर करने के लिये हर शीशी के साथ दो अंगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त और दो खूबसूरत न्यू रिस्टवाच बतौर इनाम मुफ्त भेजी जाती हैं। जल्दी करें और फायदा हासिल करें। माल पसन्द न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है। तीन शीशी के खरीदार से डाकखर्च माफ और छः घड़ियाँ और ६ अंगूठियाँ सोना लंडन न्यू गोल्ड मु त इनाम दी जाती हैं।

*** असली बाल काला तेल नं० ५१० सबसे बढ़िया ***

हमारे प्रसिद्ध "बाल काला तेल" के इस्तेमाल से सफेद बाल काले हो जाते हैं और फिर काले ही पैदा होते हैं। यह बेनजीर सन्यासी तोफा है। सिवाय हमारे दूसरी जगह से न मिलेगा। गिरते हुए बालों को रोकता है। बालों को लम्बा, घुंघर वाले और चमकदार बनाता है गंजापन दूर करता है। आँखों और दिमाग को ताकत देता है। याद-दास्त बढ़ाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत प्रति शीशी सिर्फ १।।।) एक रुपया बारह आने, डाक खर्च १=) अलग। तीन शीशी की रियायती कीमत ५) पाँच रुपया, इस तेल को मशहूर करने के लिये हर एक शीशी के साथ दो फैन्सी न्यू रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लण्डन न्यू गोल्ड मु त बतौर इनाम भेजी जाती हैं। माल पसंद न होने पर मूल्य वापिस किया जाता है, तीन शीशी के खरीदार को डाकखर्च माफ और छः घड़ियाँ और छः अँगूठियाँ सोना लण्डन न्यू गोल्ड मुफ्त इनाम, जल्दी करिये वर्ना ऐसा मौका फिर हाथ न आयेगा।

*** काले गोरे हो गए ***

यदि आप अपने चेहरे या शरीर का रङ्ग काले से गोरा करना चाहते हैं और मुख के बदनुमा दाग, कील, छाइयाँ, झुरियाँ, बदरौनकी, खुश्की आदि को दूर करके चेहरा गुलाब की तरह मुलायम चमकदार खूबसूरत बनाना चाहते हैं, तो हमारा तैयार किया हुआ "लण्डन ब्यूटी लोशन" इस्तेमाल करें। इससे आ के जिसम या चेहरे का रङ्ग काले से गोरा हो जायेगा। यह लोशन स्त्रियों और पुरुषों सबको खुश करने वाला तोफा है। कीमत प्रति शीशी १।।।≡) एक रुपया पन्द्रह आने है। तीन शीशी की कीमत ५)। डाक खर्च एक से तीन शीशी तक १-) अलग। इस दवा को मशहूर करने के लिये एक शीशी के साथ दो फैन्सी न्यू रिस्टवाच और दो अँगूठी सोना लंडन न्यू गोल्ड मुफ्त बतौर इनाम भेजी जाती है। माल पसन्द न हो तो दाम वापिस किया जाता है। जल्दी करें वर्ना ऐसा अवसर हाथ न आवेगा।

मनेजर—लण्डन ट्रेडिंग एजेन्सी (G.D.M. 61) जालन्धर सिटी।

प्यारी बहिनों !

अपना बच्चा ! प्यारा बच्चा ! ! एक विवाहित स्त्री के लिये सन्तान कितनी प्रिय वस्तु है परन्तु आज कितनी ही स्त्रियाँ ऐसी हैं जो कि संतान उत्पत्ति के योग्य हैं किन्तु उनके यहां संतान नहीं। विवाह को कई वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु इस प्रिय वस्तु को तरसती हैं या एक दो बच्चे पैदा होने के पश्चात् फिर बच्चा पैदा नहीं हुआ। निम्नलिखित नुस्खा ऐसी ही बे-औलाद बहिनों के लिये है। यह गर्भ धारण करने में सहायक है। इसके सेवन करने से न जाने कितनी ऐसी स्त्रियों के संतान पैदा हुई है जो कि अज्ञानता से अपने आपको बांझ समझे हुई थीं। शक्ति तथा स्वास्थ्य की वृद्धि के लिये भी यह दवा अपूर्व है। निरोग रहने के लिये इसे प्रत्येक स्त्री को सेवन करना चाहिये।

नुस्खा यह है:—कपूर, दूधिया बच, नागरमोथा, मीठा चिरायता, गिलोय, देवदारु, हल्दी, अतीस, दारू-हल्दी, पीपरामूल, चीते की जड़ की छाल, धनियाँ, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गज़पीपर, सोंठ, पीपर, गोल मिर्च, सोना माखी की शुद्ध भस्म, जवाखार, सज्जीखार, सेंधा नोन, काला नोन और बिड़ नोन—हरेक ३-३ माशे। निशोथ, दन्ती, तेजपात, दालचीनी, बीज इलायची और बंसलोचन १०-१० माशे। भस्म फौलाद (१०१ आँच की) २० माशे, मिश्री २ तोले, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोले और शुद्ध गुगल ५ तोले। सब दवाओं को कूट पीसकर कपड़े से छान करके ३-३ रत्ती की गोलियाँ बनालें। एक गोली प्रतिदिन दूध के साथ सेवन करें। याद रखिये कि सभी दवायें विशेषत: शिलाजीत और भस्म फौलाद लिखे अनुसार होनी चाहिये। अशुद्ध अथवा बाजारू दवाओं से बजाय लाभ के हानि हो सकती है।

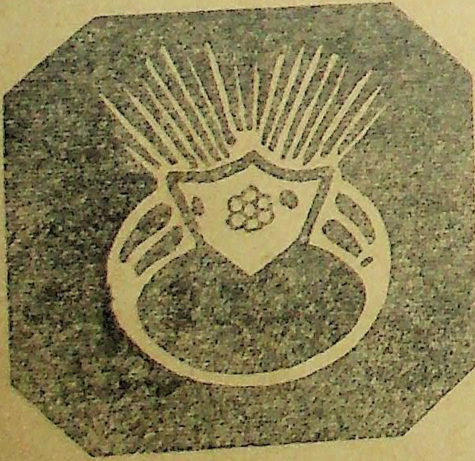
प्रिय पाठको ! आप इसे साधारण दवा न समझें। यह नुस्खा मेरा स्वयं परीक्षित है। और इसे मैंने हजारों बहनों पर अजमाया है। विवाह के एक वर्ष पश्चात् दुर्भाग्य से मैं भी कई एक विकारों में फँस गई थी जिनके कारण मैं प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी। चेहरे का रंग पीला पड़ गया था। हर समय सिर चकराता, कमर दर्द करती और बदन टूटता रहता था। प्रातः समय पर पेट और नलों में सख्त दर्द रहता। मैंने सुपारी पाक, कारडियल राउ कई एक औषधियाँ सेवन कीं, किन्तु अन्त में इस नुस्खे के प्रयोग से न केवल मेरे स्वास्थ्य सम्बन्धी सब विकार ही दूर हो गये बल्कि मेरे यहाँ एक बालक ने भी जन्म लिया अब मैं इस नुस्खे को अपनी अन्य बहिनों की भलाई के लिए प्रकाशित कर रही हूँ। यदि कोई बहन अज्ञानता या समय अभाव के कारण स्वयं तैयार न कर सके तो मैं उसे इसी नुस्खे से निर्मित अपनी दवा "स्त्री कल्याण" वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूंगी। मूल्य १५ दिन की दवा २ रुपये १४ आने। डाक खर्च अलग।

सूचना—यदि कोई व्यक्ति यह साबित कर दे कि मेरी दवा 'स्त्री कल्याण' उपरोक्त नुस्खे के अनुसार तैयार नहीं होती, तो उसे एक हजार रुपया इनाम।

[illegible] जिला हिसार (पञ्जाब)

१००० रुपये नकद इनाम

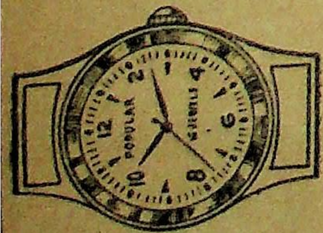
जो चाहोगे वही मिलेगा



अब आप किसी ओर से निराश न हों इस तिलस्मी अंगूठी को पहनने से आप जिस पुरुष या स्त्री का नाम लोगे वह देखते ही फौरन बस में हो जायगा। चाहे वह कितना ही पत्थर हृदय क्यों न हो। सात समुद फांदकर सात ताले तोड़कर आपके चरणों में हाजिर होगा। पत्थर दिल और दुश्मनी को छोड़कर आपकी आंज्ञा मानने लगेगा। मन चाही सगाई शादी होगी। मृतात्माओं से बातचीत होगी। जमीन में गड़ा धन सपने में दिखाई देगा। मुकदमे में जीत होगी। परीक्षा में पास होंगे। व्योपार में लाभ होगा। बुरे ग्रह टल जायंगे। बदकिस्मती दूर होगी। खुश किस्मत बन जाओगे। जीवन आराम में बीतेगा। मूल्य तांत्रिक अंगूठी १।।। ≡) स्पेशल ३) स्पेशल पावरफुल ३।।। ≡) जिसका असर बिजली के करन्ट की तरह होता है। चाँदी की बनी १५) चाँदी की बनी स्पेशल पावरफुल २१) सोने की बनी ४१) सोने की स्पेशल पावर फुल ५१) डाक खर्च १)

यह तांत्रिक अंगूठी ग्रहण और शुभ मुहूर्त में तैयार की गई है। सूर्य पूर्व के बजाय पश्चिम से निकल सकता है। परन्तु इस तांत्रिक अंगूठी का असर कभी खाली नहीं जा सकता। ठीक न होने पर दुगनी कीमत की गारन्टी। गलत साबित करने वाले को एक हजार रुपया नकद इनाम। एक बार अवश्य आजमायें। नोट—आर्डर देते समय अपना पता पूरा व साफ और सुन्दर लिखें।

प्रिन्सिपल शाइनिङ्ग मिस्मरेजम हाऊस (G.D.M. 61) जालंधर सिटी ३



६) रुपये में घड़ी

१५ ज्यूल रिस्टवाच गारन्टी पाँच वर्ष केवल ६ रुपये में। चेन सिस्टम स्कीम द्वारा प्राप्त करें। डाक खर्च १रु० २५ नये पैसे अलग। नोट—यह स्कीम अपने हनीमून सेंट के व्योपार की प्रगति के लिये जारी की गई है। स्कीम नापसंद होने पर दाम वापिस.

लन्दन ट्रेडिंग एजेन्सी वाच सप्लायर्स (G.D.M. 61)

जालन्धर सीटी



त्रिकालदर्शी करामाती दर्पण—किसी भी उम्र का मनुष्य इस करामाती दर्पण में देख सकता है। चोरी गई वस्तु व गुमशुदा का पता, बीमार के स्वस्थ होने या न होने का हाल, आने वाले और गुजरे हुए हालात, भावी दुखों से बचने के उपाय, गड़े धन का पता, किसी मुश्किल काम का हल होना या न होना, प्रेम, नौकरी, अदालती केस, परीक्षा आदि में विजय पाना, स्वर्गवासी माता-पिता मित्रों, शहीदों से मुलाकात, जिसे कभी न देखा हो या जिसकी स्वप्न में भी आशा न हो उसे आप इसमें आसानी से देख लेंगे। मूल्य मय परचा तरकीब दो रुपये आठ आने २।।) रु०। दो दर्पण चार रुपये आठ आने ४।।) रु० महसूल डाक १) अलग।

…जम हाउस (G.D.M. 61), जालंधर शहर ३

जन्म नाम रते

जन्म कुण्डली पं. मदन लाल जी कैलखेल वाले

